वैदिक ज्योतिष श्रृंखला

प्रश्न शास्त्र

प्रश्न ज्योतिष का वैज्ञानिक उपयोग

भाग 2

दीपक कपूर

संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण

विषय सूची

भाग 2

10
विवाह

हिन्दू धर्म और परम्परा के अनुसार विवाह एक सर्वाधिक पवित्र प्रथा है जो न केवल मानव-जाति की निरंतरता सुनिश्चित करती है बल्कि बचपन से लेकर वयस्कता तक हमारे शारीरिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक संक्रमण का पक्का ढाँचा बनाती है और अंततः विमुक्ति अथवा मोक्ष की ओर ले जाती है। इसीलिए मानव जीवन को चार भागों में विभक्त किया गया है। पहला ब्रह्मचर्य आश्रम, जब एक व्यक्ति शिक्षा अथवा अनुभव द्वारा ज्ञान प्राप्त करता है। दूसरा गृहस्थ आश्रम जब वह पवित्र वैवाहिक-बंधन में प्रवेश करता है, बच्चों को जन्म देता है, अपने पूर्वजों के कर्ज को चुकाने के लिए उनका पालन-पोषण करता है, जिसे पितृ ऋण कहा जाता है। तीसरा वानप्रस्थ आश्रम, जब वह त्याग की भावना को लिए हुए सन्यास की तैयारी के लिए सांसारिक सुखों को छोड़ देता है। अंततः सन्यास आश्रम, जब वह सांसारिक बंधनों का परित्याग करता है और अंतिम मुक्ति एवं मोक्ष के लिए स्वयं को तैयार करता है। ये चार आश्रम अथवा जीवन के चरण निरंतर और सुसंबद्ध हैं, जिसमें एक व्यक्ति किसी विशेष आश्रम में जीवन जीते हुए निरंतर अगले आश्रम के लिए तैयारी करता है।

हिन्दुओं के सोलह पवित्र धार्मिक कार्यों अथवा समारोहों, जिन्हें षोडश संस्कार कहा जाता है, में से विवाह एक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण संस्कार है जो एक दृढ़ सांस्कृतिक और भावनात्मक बंधन पर बल देता है यह आधुनिक संस्कृति के केवल यौन-संबंध के लिए साथ रहने से संबंधित नहीं हो सकता। ईश्वरीय अनुबंध की कमी के कारण कुछ विवाह भावनात्मक सम्पन्नता के अभाव के कारण सफल नहीं हो पाते। वास्तव में विवाह के संदर्भ में हम 'मृत्युपर्यंत साथ निभाएंगे' अब "जब तक सुविधा रहेगी तब तक हम साथ निभाऐंगे" में परिवर्तित हो गया है अथवा अधिकांश मामलों में यह असुविधा है, क्या ऐसा कहना चाहिए?

अब हम इसकी हिन्दू विवाह के साथ तुलना करते हैं जो वर वधू के

गुरूओं और संबंधियों की उपस्थिति में धार्मिक समारोह का एक विस्तृत कार्य है। पवित्र अग्नि के सामने धार्मिक मंत्रोच्चारण के बीच में सात फेरे लेना सृजन के लिए आजीवन बंधन की ईश्वरीय अनुकम्पा और अपने से ऊपर नैतिक मूल्यों के साथ संवेदनशील अस्तित्व प्रदान करता है।

मानव अस्तित्व के चार आधारभूत उद्देश्यों-धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष (धार्मिक शुचिता, आर्थिक स्थिरता, आंनद और विमुक्ति), में से कम से कम पहले तीन इस पवित्र बंधन के द्वारा जीवन-साथी के सहयोग और समर्थन के बिना पूर्ण नहीं माने जाते, जिसे विवाह कहा जाता है। भावों की गहराई और निरन्तरता, धार्मिक विचार और क्रियाओं द्वारा सुनिश्चित की जा सकती है। मन पर ऐसे सुसंस्कृत प्रभावों को ही संस्कार कहा गया है। वस्तुतः विवाह का महत्त्व एक व्यक्ति को विभिन्न प्रश्नों के उत्तरों को प्राप्त करने के लिए ज्योतिषी के पास पहुँचाता है। यह वर वधू के कुंडलियों के मिलान की एक विस्तृत योजना को भी सम्मिलित करता है जिसे अष्टकूट और कुछ स्थानों पर दशकूट कहा जाता है, आठ अथवा दस संगत बिंदु, जिनका मिलान अत्यावश्यक है। अतः व्यावसायिक ज्योतिष में नकारात्मक पक्षों पर अधिक बल देने जैसे, मंगल दोष, जीवन साथी की असामयिक मृत्यु, त्रृटिपूर्ण ढंग से मिलान की गई कुंडलियों के कारण दुर्भाग्य का घटना, प्रेतात्मा का अभिशाप इत्यादि। ये सभी और ऐसे कई प्रश्नों का उत्तर न केवल ज्योतिषी को भविष्य कथन के रूप में परन्तु परामर्श के माध्यम से देना है। प्रश्नकर्त्ता को वास्तविकता स्वीकार कराने में, चाहे यह वास्तविकता शुभ हो अथवा अशुभ, उसके नेक आचरण एवं शुभ कार्यों से सम्बंध बताकर परामर्श देना ज्योतिष एवं ज्योतिषी की एक बड़ी भूमिका है।

विवाह से संबंधित प्रश्नों में भी, जैसा कि अन्य क्षेत्रों में है, अनेक प्रश्नों का उत्तर जन्मकुंडली की अपेक्षा प्रश्नकुंडली के द्वारा उत्तम ढंग से दिया जा सकता है। अब हम जटिलताओं को सीखने का प्रयास करते हैं, जिन्हें हमारे ऋषियों द्वारा सुंदर ढंग से सुलझाया गया है और असंख्य ज्योतिषियों द्वारा उनके अनुभव से परिपूर्ण किया गया है। उनकी टिप्पणियों और परिकल्पनाओं को हजारों कुंडलियों पर परीक्षित किया गया और इस प्रकार, उन परिकल्पनाओं को ज्योतिष के नियमों में परिवर्तित किया गया। यद्यपि, यहाँ चेतावनी का एक शब्द भी है। जैसा कि विवेचित किया गया है कि आजकल अनेक मामलों में, विवाद की गंभीरता और प्रगाढ़ता कम हो रही है। इस प्रकार के विवाह में जो कि केवल साथ रहने की सुविधा पर आधारित होते हैं और केवल मामूली बहाने पर टूट जाते हैं, रीति-रिवाजों, कानूनों और परामर्श लेने वाले की धार्मिक पृष्ठभूमि के ज्ञान द्वारा परामर्श प्रदान करने की आवश्यकता है।

उदाहरणार्थ, कुछ धर्मों में तलाक यदि असंभव नहीं है तो मुश्किल तो अवश्य है। परंपरागत रोमन कैथोलिक अपने साथी को तलाक नहीं दे सकते। जबकि कुछ संस्कृतियों में तलाक देना बहुत सरल है। कुछ परामर्शी समुदायों में कामुक स्वच्छंद संभोग एक दूसरा पक्ष है जिसे एक ज्योतिषी को अवश्य मन में रखना है। ईश्वरीय कोप से होने वाली एड्स जैसी भयानक बीमारियां हमें स्मरण कराती हैं कि विवाह पूर्व और विवाहेतर स्वच्छंद संभोग की वर्तमान प्रवृत्ति की तुलना में हमारे नैतिक मूल्यों और आदर्शों का नवीनीकरण और पुनः खोज करने की आवश्यकता है।

विवाह से संबंधित प्रश्न बहुत विविध होते हैं। प्रेमी-प्रेमिका यह जानने की इच्छा रखते हैं कि क्या उनका संबंध सफलतापूर्वक विवाह के पवित्र बंधन की पराकाष्ठा तक पहुँचेगा? अभिभावक यह जानने की इच्छा रखते है कि क्या उन के बच्चे उनकी सहमति और आशीर्वाद से विवाह करेंगे, क्या वे अपनी जाति या धर्म से बाहर विवाह करेंगे, सुखी और समृद्ध वैवाहिक जीवन की संभावना और स्वस्थ बच्चों की प्राप्ति आदि। नीचे वर्णित तथ्यों में, जहां कहीं भी वधू शब्द प्रयोग किया गया है, वह वर शब्द भी सम्मिलित करता है, और यह इस पर निर्भर करेगा कि प्रश्न लड़की के विवाह से सम्बन्धित है या लड़के के विवाह से। विवाह के लिए प्रश्न कुंडली का परीक्षण जीवन के अन्य पहलुओं की सम्पूर्णता से करना चाहिए। दोनों परिवार पारिवारिक पृष्ठभूमि, आयु, शिक्षा, व्यवसाय, परिचितों, आर्थिक स्थिति आदि के संबंध में पूछताछ करते हैं। तब न केवल वर और वधू की क्षमताओं के परीक्षण और जीवन साथी की आयु के विश्लेषण के लिए बल्कि वैवाहिक जीवन की आयु, संतानयोग और समृद्धि, जैसे धन योग, अरिष्ट योग, दरिद्र योग, वैधव्य योग, विधुर योग और संन्यास योग आदि के लिए भी परस्पर जन्मकुंडलियों का आदान प्रदान किया जाता है।

विवाह सम्पन्न करवाने में प्रयत्नों की सफलता

हिन्दू समाज में, अन्य समाजों की तरह माता पिता अपनी सन्तानों को वैवाहिक सम्बन्धों में बांधने के लिये चिन्तित रहते हैं। इससे भी ज्यादा परम्परागत हिन्दू परिवारों में पुत्री के विवाह के लिये माता-पिता के मन में अधिक उत्सुकता होती है। इसीलिये प्रश्न, जो कि ज्योतिषी से इस सम्बन्ध में पूछे जाते हैं वह अधिकतर इसी तथ्य से सम्बन्धित होते हैं कि जो प्रयत्न वह अपनी पुत्री या पुत्र के लिये उचित साथी ढूँढने हेतु कर रहे हैं वह सफल होगें या नहीं।

यदि लग्नेश तथा सप्तमेश एक साथ स्थित हों या अनुकूल ताजिक योग बना रहे हो तो गठबन्धन में सफलता मिलती है। इसी प्रकार लग्नेश सप्तम

भाव में या सप्तमेश लग्न में हो तो उपरोक्त परिणाम देता है। इस योग में शुक्र की एक प्रमुख भूमिका होती है। शुक्र, लग्नेश, सप्तमेश यदि उच्च हो कर लग्न या सप्तम भाव अथवा परिवर्तन में हों तो सफल गठबन्धन दर्शाता है और शीघ्र विवाह होता है। शुक्र और इसका राशीश उपचय भावों में सुखी वैवाहिक जीवन प्रदान करते हैं।

शीघ्र विवाह

शीघ्र, देरी से, विलम्ब अथवा विवाह का निषेध परिवर्तित समयानुसार और समुदायों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अनुसार समझना चाहिए। अतः शीघ्र विवाह एक सापेक्षिक शब्द है जिसे विवेकपूर्वक मन में रखना चाहिए।

जब चंद्रमा सप्तम या द्वितीय भाव अथवा 3, 6, 10 अथवा 11 उपचय भावों में स्थित होकर बृहस्पति द्वारा दृष्ट हो तो शीघ्र विवाह दर्शाता है, लेकिन यदि यह पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो विवाह की सम्भावना कम हो जाती है। विवाह की देरी और निषेध पर विचार करते समय यह अवश्य समझना चाहिए कि विलम्ब का मतलब प्रश्न के क्षेत्र में निषेध नहीं है। यहाँ समय की अवधि सामान्यतः लगभग एक वर्ष तक होती है विलम्ब अथवा निषेध इस समयावधि अथवा निकट भविष्य में विवाह की अनुपस्थिति बताता है। 3, 5, 6, और 11वें भावों में बृहस्पति द्वारा दृष्ट चंद्रमा भी शीघ्र विवाह तथा 1, 4, 5, 8, 9 और 12वें भावों में पाप ग्रहों से दृष्ट चंद्रमा वधू की प्राप्ति में बाधाएं बताता है।

एक सम भाव में स्थित शनि निश्चित रूप से वधू प्रदान करता है जबकि एक विषम भाव में शनि निषेध सूचित करता है। यह एक सशक्त योग है जो कि एक प्रेमी या भोगवादी द्वारा स्त्री की प्राप्ति के प्रति संकेत करता है। किसी कुंडली में बृहस्पति और शनि की संयुक्त भूमिका अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। बृहस्पति द्वारा संकेतित आश्वासन शनि के आशीर्वाद से यथार्थ में परिवर्तित होता है। यहां तक कि शनि एक विषम भाव में भी जब अपनी स्वराशि अथवा मूलत्रिकोण राशि में लग्न अथवा 7वें भाव में स्थित हो, तो भी यह वधू प्रदान करता है। सदैव की भांति, केंद्रों और त्रिकोणों में शुभ ग्रहों बृहस्पति, शुक्र, बुध और चंद्रमा किसी प्रश्न की कार्य सिद्धि को प्रोत्साहित करते हैं और ऐसे प्रश्नों में विवाह दर्शाते हैं। 7वें भाव में लग्नेश अथवा चंद्रमा या लग्न में सप्तमेश बिना किसी प्रयास के वधू प्रदान करता है। शीघ्र विवाह के अन्य योग निम्नलिखित हैं :

1. 7वें भाव में लग्नेश और चंद्रमा हों।
2. सप्तमेश के साथ लग्नेश और चंद्रमा इत्थसाल रखते हों।

3. बलवान चंद्रमा और शुक्र या तो एक सम राशि में अथवा सम नवांश में स्थित हों और लग्न को देख रहे हों।
4. लग्न में स्त्री द्रेष्काण शीघ्र विवाह देता है। 36 में से 11 स्त्री द्रेष्काण हैं ये वृष, मिथुन कन्या और वृश्चिक का प्रथम द्रेष्काण कर्क, वृश्चिक धनु, मकर, कुंभ, मीन का द्वितीय द्रेष्काण और कन्या का तृतीय द्रेष्काण हैं [I-2, 3, 6, 8. II-4, 8, 9 ,10, 11, 12. III-6]
5. लग्न में मिथुन, कन्या, तुला अथवा कुंभ, और लग्न अथवा 7वें भाव में चंद्रमा अथवा शुक्र भी शीघ्र विवाह प्रदान करता है।
6. शुभ भावों में शुक्र अथवा चंद्रमा उच्च हों।

विवाह में बातचीत किसे करनी चाहिए

यह कभी-कभी पूछा जाता है कि विवाह में बातचीत किसे करनी चाहिए, पिता अथवा माता को, ताकि प्रयास फलप्रद हों। भाव के स्वामी अथवा कारक द्वारा संकेतित कोई भी संबंध जिसका द्वितीयेश के साथ संबध हो उसे बातचीत करनी चाहिए क्योंकि द्वितीयेश वाणी और विचार विमर्श का स्वामी है।

क्या माता और पिता जीवित हैं

यदि प्रश्न कुंडली में सूर्य अथवा चंद्रमा नीच होकर लग्न अथवा आरूढ़ को नहीं देखते तो विवाह के समय माता पिता क्रमशः जीवित नही होंगे। इसी प्रकार, यदि लग्न अथवा आरूढ़ से 7वें भाव को नीच सूर्य अथवा चन्द्रमा नहीं देखते तो दूसरी पार्टी के माता अथवा पिता क्रमशः जीवित नहीं होंगे। लग्न अथवा 7वें भाव को बलवान सूर्य का न देखना यह बताता है कि पिता जीवित है लेकिन उससे वर अथवा बधू को कोई लाभ नहीं होगा। इन दो शास्त्रीय योगों में अनेक विचित्रताएं हैं। प्रथमतः, यदि नीच ग्रह लग्न अथवा आरूढ़ को नहीं देखता तो यह लग्न से 7वें भाव को अथवा आरूढ़ से 7वें भाव को भी नहीं देखेगा। इस मामले में किसके माता अथवा पिता जीवित नहीं होंगे, प्रश्नकर्त्ता के अथवा दूसरे दल के। अतः यह योग न तो तार्किक है और न ही व्यवहार में कार्य करता है लेकिन यह निश्चित रूप से अप्रत्यक्ष अर्थ रखता है जो इस अध्याय में एक उदाहरण से स्पष्ट विवेचित किया गया है। इस योग के संबंध में, मैं निम्नलिखित टिप्पणियाँ प्रस्तुत करता हूँ।

1. उपरोक्त परिणामों को इंगित करने के लिए उक्त योगों को नीच के सूर्य अथवा चंद्रमा, जो लग्नेश अथवा सप्तमेश को न देख रहा हो, से जांचा जाना चाहिए। विलोमतः प्रश्नकर्त्ता से संबंधित इन परिणामों के लिए केवल लग्न देखना चाहिए और दूसरे पक्ष के लिए नहीं।

2. इस योग को विवाह के समय माता अथवा पिता की अनुपस्थिति के लिए देखना चाहिए और मृत्यु के लिए नहीं। तथापि अनुपस्थिति मृत्यु के कारण भी हो सकती है जो एक अलग स्थिति है।

3. ये टिप्पणियां तभी परिणाम देंगी जब इस संबंध में विशिष्ट प्रश्न हो कि क्या माता अथवा पिता विवाह में शामिल होने में समर्थ होंगे अथवा नहीं।

पिता की मृत्यु को सूचित करने का एक "नाड़ी" सिद्धांत भी है। यदि बुध सूर्य के पीछे है और शनि से दृष्ट है, जहां 8वें भाव में सूर्य और 7वें भाव में बुध स्थित हो, तब यह योग काम करता प्रतीत होता है। इस अध्याय की उदाहरण संख्या 1 देखें, जहां यह योग उपस्थित है, लेकिन इस सिद्धांत ने पूर्णतः भिन्न और विचित्र रूप से कार्य किया। अतः उपरोक्त वर्णित प्रथम दोनों टिप्पणियों का परीक्षण तीसरी टिप्पणी के दृष्टिकोण से करने की आवश्यकता है।

कुछ विद्वान सुझाव देते हैं कि पिता का कारक दिन के समय पूछे गए प्रश्न में सूर्य अथवा शनि में बलवान और मां का कारक रात्रि के समय पूछे गये प्रश्न में चंद्रमा और शुक्र में बलवान हो। कुछ अन्य विद्वान मानते है कि रात्रि के समय पूछे गए प्रश्न में पिता का कारक शनि है और दिन के समय पूछे गए प्रश्न में मां का कारक शुक्र है।

संबंध तय होने के बाद विवाह में बाधाएँ

8वां भाव और अष्टमेश विवाह में विघ्नों के कारण हैं। 8वें भाव में किसी दूसरे पाप ग्रह से दृष्ट स्थित पाप ग्रह अथवा जब कभी अष्टमेश 7वें भाव, सप्तमेश अथवा कारक शुक्र में से किसी के साथ संयुक्त हो, तब संबंध तय हो जाने के उपरांत विवाह में बाधाएं उत्पन्न करता है। इसी प्रकार 6ठा भाव बीमारियों, विवादों आदि को सूचित करता है। 6ठे भाव में स्थित पाप ग्रह अथवा 7वें भाव, सप्तमेश अथवा कारक शुक्र को प्रभावित करने वाला षष्ठेश बीमारियों, विवादों और गलत फहमियों के कारण बाधाओं का कारण बनता है।

7वें भाव में स्वराशि अथवा उच्च राशि में पीड़ित मंगल विवाह से पूर्व लड़की की मृत्यु दर्शाता है।

विवाह के उपरांत समृद्धि

यह प्रश्न पूछा जाता हे कि क्या वैवाहिक संबंध परिवार अथवा दम्पति के लिए सौभाग्य और समृद्धि लाएगा। एक पवित्र विवाह का बंधन-ऋणानुबंधन, पिछले जीवन के कर्मों के कारण है जिसके द्वारा दो शरीर

और आत्माएं संयुक्त होती हैं। यह प्रश्न इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति न केवल आर्थिक, बल्कि भावात्मक और भावनात्मक समृद्धि भी साथ में प्राप्त करने की आशा करता है।

शास्त्रीय रूप से, यह कहा जाता है कि जब कभी सप्तमेश और शुक्र उपचय भावों 3, 6, 10 या 11 में स्थित हों, तो यह दम्पति के लिए विवाह के उपरांत समृद्धि लाता है। यदि सप्तमेश और शुक्र की 6ठे भाव में स्थिति को समृद्धि दर्शाने वाला सकारात्मक योग माने तो मैं अनुभव करता हूँ कि उपरोक्त योग पाप प्रभावों से मुक्त होना चाहिए और वास्तव में, शुभ ग्रहों से अवश्य दृष्ट होना चाहिए। इसके अतिरिक्त, 7वें भाव के साथ-साथ कारक शुक्र भी इसी प्रकार शुभ ग्रहों के साथ स्थिति अथवा दृष्टि द्वारा अच्छी तरह सुव्यवस्थित होना चाहिए, अन्यथा 6ठे भाव में उनका स्थापन एक खुशहाल और समृद्ध विवाह नहीं दर्शाता। सप्तमेश और शुक्र के साथ में लग्नेश, चंद्रमा और द्वितीयेश को भी जोड़ना चाहता हूँ, जिनका स्थापना अथवा दृष्टि द्वारा शुभ संबंध प्रसन्न समृद्ध वैवाहिक जीवन को बताते हैं। दूसरी ओर, जब वे 6, 8, 12वें भावों में क्रूर ग्रहों अथवा उनके अधिपतियों से दृष्ट, नीच या अस्त होकर स्थित हों तो विवाह बहुत सौभाग्यशाली नहीं होगा।

संक्षेप में दोहराते हुए, यदि सप्तमेश और शुक्र उपचय भावों में स्थित हैं तब वहां विवाह के बाद समृद्धि है। इसी प्रकार, यदि समृद्धि वैभव और संतान का कारक बृहस्पति और पंचमेश उपचय भावों में स्थित हैं तब भाग्य एक बच्चे के जन्म (6ठे भाव के अतिरिक्त, अन्यथा शुभ ग्रहों से दृष्ट और अशुभ प्रभावों से मुक्त हो, जैसा ऊपर व्याख्यायित किया गया है) के बाद उदय होगा। यदि मंगल और तृतीयेश उपचय भावों में स्थित हैं तो यह भाई के जन्मोपरांत समृद्धि सूचित करता है। यह सिद्धांत जन्म कुंडलियों पर भी प्रभावी रूप से प्रयुक्त हो सकता है।

वधू का रूप-रंग और जाति

7वां भाव जीवन साथी को बताता है सप्तमेश ग्रह की विशेषताओं के अनुरूप वधू की विशेषताएं होती हैं। इसी प्रकार, 7वें भाव में शुभ ग्रह का स्थापन सुन्दर और सुसंस्कृत पत्नी देता है। जबकि इस स्थिति में पाप ग्रह कुरूप पत्नी प्रदान करता है। यदि 7वें भाव में कोई ग्रह स्थित नहीं है, तब 7वें भाव में स्थित राशि के अनुरूप विशेषताएं होती हैं।

वधू अथवा वर की विशेषताएं आरूढ़ लग्नेश से 7वें भाव से भी देखी जाती हैं। जब शुक्र और चंद्रमा समराशि अथवा नवांश में बलवान होकर स्थित हों तो एक सुंदर सुसंस्कृत और धार्मिक पत्नी प्राप्त होती है।

लड़की का चरित्र

अनेक लड़के लड़की के चरित्र को जानने की इच्छा रखते हैं जिसे निम्नप्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है। मेरे विचार में यदि विशेष रूप से प्रश्न पूछा जाए तो लड़के के चरित्र को जानने के लिए भी यही योग कारगर है।

संकेत	*योग*
पवित्र और अक्षत	स्थिर राशि में लग्न, लग्नेश और चंद्रमा
अपवित्र	चर राशि में लग्न, लग्नेश ओर चंद्रमा
पवित्र नहीं, तथापि उसका दोष उपेक्षणीय है	चर राशि में लग्न और द्विस्वभाव राशि में चंद्रमा
आनंद के लिए कुछ गुप्त संबंध	स्थिर अथवा द्विस्वभाव राशियों में चंद्रमा और मंगल संयुक्त रूप से स्थित हो
खुलेआम संबंध	चर राशि में चंद्रमा और मंगल संयुक्त रूप से स्थित हों
खुलेआम आनंद	लग्न में शनि और चंद्रमा स्थित हों
व्यभिचारी लड़की	1. केंद्र में मंगल और शनि, तथा वृश्चिक राशि अथवा द्रेष्काण में शुक्र चंद्रमा से दृष्ट हो। 2. 5वें भाव में एक नीच पाप ग्रह दूसरे पाप ग्रह से दृष्ट हो। 3. लग्न में सूर्य हो। 4. 6, 7 और 11 सभी भाव पाप ग्रहों से गृहीत हों।

स्त्री और पुरुष के बीच मिलाप

क्या वहां यौन-संबंध के समय कोई प्रणय था? यदि लग्न शुभ ग्रहों के साथ संबद्ध है तब स्त्री ने प्रेमवश यौन-संबंध किया। लेकिन यदि लग्न पाप ग्रहों के साथ संबद्ध है तब कोई प्रेम नहीं था और संभोग विवशता अथवा दबाव के कारण हुआ। यह ज्ञात करने के लिए कि किस ने यौन-संबंध के लिए दबाव डाला, तो यदि चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ स्थित है तब पुरुष ने औरत को संभोग के लिए बाध्य किया। लेकिन यदि सूर्य शुभ ग्रहों के साथ है तो औरत ने पुरुष को बाध्य किया।

प्रेम विवाह

सामान्यतः निम्नलिखित योग प्रेम विवाह दर्शाते हैं।

1. 3, 6, 7, 10 और 11वें भावों में शुभ राशि में चंद्रमा (7वां भाव और उपचय) स्थित हो और बुध, सूर्य और बृहस्पति से दृष्ट हो तो व्यक्ति अपनी प्रेयसी को अपनी वधू बनाता है।
2. लग्नेश और द्वादशेश में परिवर्तन हो।
3. लग्नेश और सप्तमेश में परिवर्तन हो।
4. शुक्र और चंद्रमा अपनी उच्च अथवा स्वराशि में हों।
5. प्रेम विवाह के लिए सदैव पंचमेश और सप्तमेश का दृष्टि, स्थिति अथवा एक अनुकूल ताजिक योग से संबंध देखें।
6. पंचमेश के साथ लग्नेश का संबंध एक प्रणय-संबंध दिखाता है। जब यह आगे 7वें भाव अथवा सप्तमेश से संबंध बनाए तब प्रेम-संबंध विवाह में परिणत होता है, अन्यथा नहीं।

पति और पत्नी के बीच प्रेम

1. लग्नेश का सप्तमेश के साथ मित्र इत्थसाल (5, 9, 3, 11) दोनों के बीच प्रेम और प्रसन्नता दिखाता है। तथापि, यदि वहां शत्रु इत्थसाल है (1, 4, 7, 10) तो वे सदैव तनाव में रहेंगे।
2. उपर्युक्त विरोधी अथवा प्रतिकूल दृष्टि में, यदि लग्नेश और सप्तमेश संयुक्त रूप से स्थित हैं, तब वहां तनाव होंगे और तब भी वे समझौता करेंगे।
3. पति और पत्नी के बीच प्रभुत्व शनि के लग्नेश अथवा सप्तमेश होने से देखा जाता है। यदि शनि न तो लग्नेश है और न सप्तमेश तब लग्न अथवा 7वें भाव में मंगल की राशि इस बात का निर्णय करती है। यदि कोई द्विस्वभाव राशि लग्न में है, तब लग्नेश और सप्तमेश बृहस्पति या बुध ही होंगे। ऐसे मामलों में, दोनों के बीच अनुचित प्रभुत्व का कोई प्रश्न नहीं है।
4. पत्नी का कारक शुक्र है और पति का बृहस्पति अथवा सूर्य। उनका निजी वल क्रमशः पत्नी अथवा पति की अति प्रसन्नता बताते हैं। दूसरी ओर जब वे बलहीन हैं तब वे दोनों अप्रसन्न हैं या उनमें एक बलहीन है तो कारक के अनुसार पत्नी या पति अप्रसन्न है।
5. यदि लग्नेश और सप्तमेश द्वि-द्वादश अथवा 2-12 स्थिति में हैं तब पति और पत्नी के बीच विचारों का मतभेद है।

6. यदि लग्नेश और सप्तमेश षडाष्टक अथवा 6-8 स्थिति में है तब दोनों के बीच विवाद और झगड़े हैं।

विलम्बित विवाह

यदि अष्टमेश पाप ग्रह होकर लग्न अथवा 7वें भाव को प्रभावित करता है अथवा 8वें भाव में एक क्रूर ग्रह स्थित है तब विवाह में देरी है।

वधू किस दिशा से

यह भी प्रायः पूछा जाता है कि वधू किस दिशा से आएगी। इसके लिए प्रश्न कुंडली में लग्न अथवा आरूढ़ लग्न से, जो बलवान है, दिशा निर्धारण कीजिए।

विवाह निषेध

विवाह से संबंधित प्रश्नों में निम्नलिखित योग बताते हैं कि विवाह परिणत नहीं होगा।

1. कृष्ण पक्ष का चंद्रमा 6ठे भाव अथवा 8वें भाव में सम राशि में स्थित हो और क्रूर ग्रहों से संबद्ध (युत अथवा दृष्ट) हो।
2. इसी प्रकार, 6ठे भाव अथवा 8वें भाव में सम राशि में शुक्र, क्रूर ग्रहों से संबद्ध (युत अथवा दृष्ट) हो तो विवाह निषेध है।
3. प्रश्न लग्न से विषम भाव में स्थित शनि विवाह का निषेध बताता है, शनि की लग्न में स्थिति को छोड़ के जिसे एक अपवाद के रूप में लिया जा सकता है। उस मामले में अन्य तथ्यों द्वारा पुष्टिकरण करना चाहिए।

जीवन साथी की मृत्यु

जीवन-साथी की मृत्यु 8वें भाव और कारक शुक्र से देखी जाती है। शुक्र से 8वें भाव में क्रूर ग्रह जीवन-साथी की अस्वाभाविक मृत्यु दर्शाता है। शुक्र से 8वें भाव में मंगल और शनि जीवन-साथी की एक दुर्घटना में मृत्यु बताता है। शुक्र से 8वें भाव में शनि और राहु अकस्मात अस्वाभाविक मृत्यु सूचित करता है। इसके अतिरिक्त यदि शुक्र मेष, सिंह अथवा वृश्चिक में है और इसके अधिपति मंगल अथवा सूर्य से दृष्ट है, जैसा कि मामले में संभव हो, तब जीवन-साथी अग्नि से मरता है। इसी प्रकार यदि शुक्र एक जलीय राशि में है और शुक्र से 8वें भाव में क्रूर ग्रह है तब डूबने के कारण मृत्यु होती है। यदि यह शुक्र, चंद्रमा के साथ है तब समुद्र में डूबने से मृत्यु होती है।

वैधव्य

1. प्रश्न कुंडली में लग्न, 6ठे भाव अथवा 8वें भाव में चंद्रमा और 7वें भाव में क्रूर ग्रह हों तो आठ वर्षों के भीतर जीवन-साथी की मृत्यु हो जाती है।

2. पीड़ित सप्तमेश लग्न, 6ठे भाव, 9वें भाव अथवा 12वें भाव में स्थित पापग्रह से युत या दृष्ट हो तो उसे अपनी पहली पत्नी को खोना पड़ता है।

3. कमजोर 7वां भाव क्रूर ग्रह से दृष्ट अथवा ग्रहीत हो।

4. सप्तमेश अथवा शुक्र नीच, अस्त अथवा क्रूर ग्रह से दृष्ट हो।

5. सप्तमेश अथवा शुक्र 6, 8, 12वें भाव में 6, 8, 12वें भावों के स्वामियों अथवा क्रूर ग्रहों के साथ स्थित अथवा दृष्ट हों।

6. लग्न या 8वें भाव में पीड़ित शुक्र अथवा बुध हो अथवा 7वें भाव अथवा 11वें भाव में पीड़ित बुध और शुक्र हो।

दम्पति की मृत्यु

ऐसे अनेक उदाहरण है, जहां विवाह के तुरंत बाद दम्पत्ति की अस्वाभाविक मृत्यु हो जाती है। ऐसी किसी दुर्भाग्यशाली घटना के लिए निम्नलिखित योग देखने चाहिएं।

1. लग्न अथवा 7वें भाव में चंद्रमा और मंगल संयुक्त होकर स्थित हों अथवा लग्न में चंद्रमा और 7वें भाव में मंगल हो।

2. चंद्रमा से 6ठे भाव अथवा 8वें भाव में मंगल है।

3. 6ठे भाव अथवा 8वें भाव में क्रूर ग्रहों से दृष्ट चंद्रमा स्थित हो।

4. लग्न, 7वें भाव अथवा 8वें भाव में क्रूर ग्रहों से दृष्ट होकर नीच क्रूर ग्रह हों।

विवाद, अलगाव अथवा तलाक

प्रश्न कुंडली में, यदि मंगल और चंद्रमा लग्न या 5, 7 अथवा 9वें भावों में सयुक्त रूप से स्थित हैं, तब दम्पति ने पिछली रात लड़ाई झगड़े में व्यतीत की होगी। प्राकृतिक भचक्र का 6ठा भाव, कन्या में सप्तमेश वैवाहिक समस्याएं देता है। इसी प्रकार, जब विवाह से संबंधित प्रश्नों में बृहस्पति उच्च है तब वहां वैवाहिक मतभेद है। शुक्र से 7वें भाव में स्थित शनि वैवाहिक मनमुटाव

दर्शाता है और यदि शुक्र एवं शनि 6/12 अक्ष में हैं तब इसका परिणाम तलाक होता है। 6ठा भाव विवादों का भाव है। राहु, केतु, सूर्य और द्वादशेश स्वभाव से पृथकतावादी ग्रह हैं। शनि, मंगल और अष्टमेश तलाक देने में सक्षम होते हैं।

7वें भाव को मंगल और/अथवा शनि प्रभावित करें तो क्रमशः तलाक अथवा संबंध-विच्छेद दर्शाते हैं। 6ठे भाव में स्थित सप्तमेश, अथवा 7वें भाव में क्रूर ग्रहों अथवा अष्टमेश से युति अथवा दृष्टि द्वारा पीड़ित षष्ठेश विवाद, अदालती मामले और मृत्यु तक दे सकते हैं। उदाहरणार्थ मंगल द्वारा शासित राशि वृश्चिक सातवें भाव में है और शुक्र षष्ठेश होकर 7वें भाव में है। इसी प्रकार शनि द्वारा शासित राशि मकर 7वें भाव में है (इस मामले में यह अष्टमेश भी है) और बृहस्पति षष्ठेश होकर 7वें भाव में नीच है अथवा 7वें भाव में मीन राशि है और षष्ठेश उसमें है तो इन सभी स्थितियों में पत्नी की मृत्यु भी हो सकती है।

जब पृथकतावादी ग्रह राहु, केतु, सूर्य अथवा द्वादशेश 7वें भाव, सप्तमेश अथवा शुक्र को प्रभावित करते हैं तो यह पति और पत्नी के बीच अलगाव लाता है। यह निम्नलिखित योगों के कारण घटित हो सकता है।

1. लग्न-7वें भाव में राहु/केतु और 12वें भाव में सप्तमेश अथवा 7वें भाव में द्वादशेश हो।
2. सप्तमेश अथवा द्वादशेश राहु/केतु अक्ष में हों।
3. 7वें भाव में पीड़ित सूर्य स्थित हो।

अलगाव संकेतित करने वाले यह योग दर्शाते हैं कि पति और पत्नी बिना किसी विवाद के पृथक रहेंगे। यद्यपि तलाक नहीं होगा लेकिन एक स्थायी अलगाव होगा। जब तलाक में इससे संबंधित कानूनी अनुमति है, तब 6ठे भाव अथवा षष्ठेश का उपरोक्त वर्णित योगों से संबंध अवश्य होता है। इनके योग निम्नलिखित है।

1. जब राहु, केतु अथवा द्वादशेश 7वें भाव, सप्तमेश अथवा शुक्र को प्रभावित करता है, तब यह अलगाव बताता है। इसके अतिरिक्त, यदि शनि और मंगल इस योग को पीड़ित करें तो यह तलाक दे सकते हैं।
2. शुक्र और शनि राहु/केतु के साथ 6/12 अथवा 2/8 भावों के अक्ष में हों।
3. 7वें भाव में क्रूर ग्रह, शुक्र या सप्तमेश कमज़ोर और पीड़ित हों तो तलाक तक दे सकते हैं।
4. 7वें भाव में शुक्र और चंद्रमा पीड़ित हों।

5. एक स्त्री की ओर से प्रश्न में, यदि सूर्य 7वें भाव में है और सप्तमेश पीड़ित अथवा कमजोर है, तब पति ऐसी पत्नी को छोड़ देता है। विलोमतः पुरुष की ओर से प्रश्न हो तो पत्नी अपने पति को छोड़ देती है।
6. 7वां भाव राहु, मंगल अथवा शनि से पीड़ित हो सप्तमेश अथवा द्वादशेश युति अथवा परिवर्तन में हो, तो यह तलाक दर्शाता है। यदि इस योग में षष्ठेश भी संबद्ध है तब विवादों और कानूनी लड़ाइयों के कारण तलाक की प्रक्रिया अति कटु हो जाती है।
7. लग्नेश और सप्तमेश मंगल के साथ शत्रु दृष्टि में हों या राहु केतु अक्ष में हों।

तलाक का फलित करते समय सदैव प्रश्नकर्त्ता की सामाजिक, धार्मिक और विधि सम्मत पृष्ठभूमि को ध्यान में रखना चाहिए। हिन्दू समाज में इससे सयुंक्त सामाजिक निषेधों के कारण तलाक एक अत्यंत कठोर प्रक्रिया है, जबकि कुछ संस्कृतियों में यह अत्यंत सरल है और ऐसे मामालें में 7वें भाव में क्रूर ग्रह की केवल उपस्थिति मात्र विवाह में विवाद और परिणामस्वरूप अलगाव अथवा तलाक दर्शाती है अतः इस पृष्ठभूमि को समझने के बाद ही कुंडली के पाप प्रभावों को व्याख्यायित करना चाहिए।

वैवाहिक मन-मुटाव के कारण हत्या अथवा आत्महत्या

इस प्रकार की घटना के लिए 8वें भाव अथवा अष्टमेश का प्रभाव दृश्य में उभरता है।

1. जब पीड़ित लग्नेश अथवा सप्तमेश 8वें भाव में स्थित हो और लग्न क्रूर ग्रहों से पीड़ित हो, तब व्यक्ति वैवाहिक मनमुटाव के कारण आत्महत्या करता है।
2. शुक्र विवाह का कारक है। शुक्र से 4था भाव और 8वां भाव क्रूर ग्रहों से पीड़ित हो तो आत्महत्या दर्शाता है।
3. 7वें भाव में तीन क्रूर ग्रह व्यक्ति को अपने जीवन साथी को मारने वाला बनाता है।
4. बुध सप्तमेश होकर यदि पाप ग्रहों के साथ अथवा दृष्ट होकर, षष्ट या अष्टम भाव में पाप कर्तरी में स्थित हो तो स्त्री अपने पति और बच्चों को अत्यधिक उत्तेजना के कारण मार देती है। इन दोनों मामलों में शुक्र की राशियों में से एक राशि या तो 6ठे भाव अथवा 8वें भाव में होगी और मंगल तथा शनि द्वितीयेश और द्वादशेश अथवा

विलोमतः होंगे। इस प्रकार शनि और मंगल की राशि मात्र से लग्न के दोनों ओर अपने अशुभ प्रभाव से एक अदृश्य पाप कर्तरी योग बनता है। यह स्थिति केवल धनु और मीन लग्नों के लिए सत्य है। ऐसे मामलों में सप्तमेश बुध, जो तर्क और पृथक्करण का कारक है, जब अत्यधिक पीड़ा में आता है, तो उन्माद और स्नायु रोग के अस्थायी हमले के कारण ऐसी प्रचण्ड घटना घटित होते दिखाता है।

उदाहरण संख्या : 1

पुत्री का विवाह

सूर्य 19°38'	शुक्र 8°12'	केतु 0°52'	
शनि 13°48' मंगल 27°23' बुध 26°19'	उदाहरण : 1 सायं 3:30 3 अप्रैल 1994 नई दिल्ली		
			लग्न 8°46'
चन्द्रमा 23°13'	राहु 0°52'	बृहस्पति (व) 19°10'	

इस लड़की की मां ने अपनी पुत्री के विवाह के विषय में पूछा। इस मामले में लग्न शीर्षोदय है और इच्छाओं की पूर्ति के लिए अनुकूल है। लग्न स्थिर भी है जो शीघ्र विवाह नहीं बताता। लग्न केतु के नक्षत्र में है जो विवाह के कारक शुक्र की राशि में स्थित है और सूर्य के नक्षत्र में है जो लग्नेश है अतः दोनों अनुकूल हैं। लग्नेश सूर्य बुध के नक्षत्र में है जो 7वें भाव में स्थित होकर विवाह से संबंधित प्रश्न दिखा रहा है। लग्न 7वें भाव में स्थित दो क्रूर ग्रहों से दृष्ट है, लेकिन ये योगकारक मंगल एवं सप्तमेश शनि हैं और इसीलिए इस प्रश्न के लिए अनुकूल हैं। लग्नेश 8वें भाव में स्थित है जो अनुकूल नहीं है। अष्टमेश वक्री बृहस्पति लग्नेश सूर्य के समान अंशों में है लेकिन उन दोनों के बीच कोई दृष्टि नहीं है। यह कुछ व्यवधान बताता है जो स्थगन के निकट हो सकता है।

यद्यपि शनि एक विषम भाव में स्वराशि में है और इसीलिए अपने हितों को अवश्य देखेगा। यह इस नियम का एक अपवाद है कि शनि एक विषम भाव में विवाह नहीं कराता।

कारक शुक्र से 7वें भाव में वक्री बृहस्पति है जो 7वें भाव में शुभ ग्रह होकर स्थित है और अनुकूल है लेकिन वक्री ग्रह के कारण कुछ बाधा देता है। शुक्र और बृहस्पति के बीच कोई ताजिक योग नहीं है क्योंकि वे दीप्तांश सीमा के बाहर हैं और इसीलिए बृहस्पति के वक्रत्व से संभावित स्थगन सत्य नहीं हो सकता। कारक शुक्र लग्न के समान अंशों में है जो इस प्रश्न की कार्यसिद्धि और लड़की के विवाह के लिए अत्यंत अनुकूल है।

क्योंकि लग्न एक स्थिर राशि है और लग्नेश द्विस्वभाव राशि में है, यह शीघ्र विवाह नहीं देता। इसके अतिरिक्त लग्नेश का किसी ग्रह के साथ कोई इत्थसाल नहीं है। अष्टमेश बृहस्पति की 7वें भाव पर दृष्टि भी विवाह में विलम्ब देती है। उपरोक्त निष्कर्षों को जोड़ने पर, यह सारांश दे सकते हैं कि विवाह निकट भविष्य में नहीं होगा। जब लग्नेश सूर्य गोचर में लग्न में पहुंचेगा, यह 7वें भाव और सप्तमेश शनि को देखेगा तभी शादी की संभावना बनेगी। यह अगस्त/सितम्बर 1994 में होगा। तभी लड़की का विवाह तय हुआ। जब लग्नेश का किसी ग्रह से इत्थसाल न हो तब विवाह का समय गोचर द्वारा उत्तम ढंग से सूचित किया जा सकता है। लग्नेश सूर्य, कारक शुक्र और चंद्रमा से सप्तमेश बुध, ये सभी नवंबर 1994 में शुक्र से सप्तम तुला राशि में संचरण करेंगे, तब विवाह होगा। विवाह 13 नवंबर 1994 को संपन्न हुआ

एक सिद्धांत था कि जब नीच का सूर्य लग्न को नहीं देखता है तब विवाह के समय पिता उपस्थित नहीं होगा। मैंने भी पिछले पृष्ठों में वर अथवा वधू के पिता की पहचान की समस्या का विवेचन किया है। इस प्रश्न कुंडली में पिता का कारक सूर्य 8वें भाव में अष्टमेश के समान अंशों में है। क्या यह पिता के लिए खतरनाक हो सकता है और किसके पिता के लिए, लड़की के अथवा लड़के के?

विवाह के दिन वर के पिता का स्वर्गवास हो गया। इस तथ्य को खोले बिना विवाह सम्पन्न हुआ यद्यपि पिता की अनुपस्थिति अथवा मृत्यु के शास्त्रीय सिद्धांत यहां प्रयुक्त नहीं होते तथापि यहां नाड़ी सिद्धांत प्रयोग करने योग्य है। बुध, सूर्य के पीछे है और न केवल शनि बल्कि मंगल के साथ स्थित है तथा अष्टमेश बृहस्पति से दृष्ट है। सूर्य 8वें भाव में है और बुध 7वें भाव में है।

विवाह के दिन का गोचर

इस गोचर कुंडली में सूर्य नीच का है और लग्न एवं 7वें भाव को नहीं देखता। यह 7वें भाव से 9वें भाव में वर के पिता के भाव में स्थित है। अब हम इसे

विवाह के दिन का गोचर

चंद्रमा	केतु		
शनि	गोचर		मंगल
	13 नवम्बर 1994		
	बृहस्पति	शुक्र सूर्य राहु बुध	

पुष्ट करने के लिए इसका 7वें भाव से विश्लेषण करते हैं। अष्टमेश बुध 9वें भाव में राहु/केतु अक्ष में नीच सूर्य के साथ है और 6ठे भाव से तृतीयेश नीच मंगल से दृष्ट है। पिता की मृत्यु के बावजूद, विवाह संपन्न हुआ। क्या यह 7वें भाव से 9वें भाव में बलवान कारक एवं योगकारक शुक्र के कारण हुआ, जिसने विवाह समारोह को सम्पन्न होने दिया।

उदाहरण संख्या : 2

विवाह कब होगा और कैसी पत्नी मिलेगी?

केतु 14°19' शनि (व) 8°29'		लग्न 26°13'	
	उदाहरण :2 सायं 8:52		मंगल 29°35'
	18 अक्तूबर 1996 नई दिल्ली		शुक्र 23°11'
बृहस्पति 17°04' चन्द्र 17°05'		सूर्य 1°43'	बुध 21°54' राहु 14°19'

लग्न पृष्ठोदय और स्थिर है जो शीघ्र परिणाम और इच्छाओं की पूर्ति नहीं देता। यहां इच्छित घटना में विलम्ब होना निशचित् है। लग्न मंगल के नक्षत्र में है, जो सप्तमेश होकर विवाह से संबंधित प्रश्न दिखा रहा है। चंद्रमा विवाह के कारक शुक्र के नक्षत्र में स्थित होकर प्रश्न की विषयवस्तु बताता है।

प्रश्नकर्त्ता अपने माता-पिता का एक मात्र पुत्र है और वे धन सम्पन्न हैं। तथापि कुंडली उस पहलू से कुछ व्यवधान बताती है जिसके कारण विवाह

में देरी हो सकती है। लग्नेश शुक्र 4थे भाव में अच्छी स्थिति में बैठा है लेकिन पाप कर्तरी में है। यह 8वें भाव से अष्टमेश बृहस्पति से दृष्ट भी है। शुक्र अपने नक्षत्र में है और इसीलिए बलवान है, दिग्बली है और सप्तमेश मंगल के राशि-अधिपति चंद्रमा के साथ इत्थसाल में है। शुक्र बुध के साथ चंद्रमा द्वारा निर्मित नक्त योग द्वारा निकटतम अंशों में दुहरे इत्थसाल में संयुक्त है। सप्तमेश भी बुध के नक्षत्र में है जो द्वितीयेश होकर 5वें भाव में उच्च का है। लग्नेश शुक्र और बुध का यह अतः संबंध अष्टमेश बृहस्पति द्वारा निर्मित यमया योग में भी है।

विवाह की देरी के कारण में संभावित विपत्ति अथवा रूकावट धन की भूमिका के कारण हो सकती है। अष्टमेश बृहस्पति एकादशेश भी है और 8वें भाव से यह लग्नेश शुक्र को भी देखता है। द्वितीयेश बुध राहु/केतु अक्ष में है और 11वें भाव से शनि द्वारा दृष्ट है। 11वां भाव और द्वितीयेश दोनों पीड़ित हैं और बाधाएं अष्टमेश एवं एकादशेश बृहस्पति के कारण हैं। कोई भी ग्रह जब अष्टमेश हो तो उसकी दूसरी राशि एवं भाव पीड़ित हो जाते हैं। लग्नेश और सप्तमेश द्वितीयेश बुध के साथ संबंध रखते हैं जैसा कि ऊपर व्याख्यायित किया गया है। बृहस्पति और चंद्रमा 8वें भाव में स्थित हैं और दोनों कारक शुक्र के नक्षत्र में है। अतः मां बाप भी विवाह चाहते हैं लेकिन उनकी इच्छाएं किंचित भिन्न हैं। शुक्र से सप्तमेश शनि 8वें भाव में राहु/केतु अक्ष में स्थित है और द्वितीयेश/एकादशेश बुध से दृष्ट होकर धन की भूमिका दिखा रहा है। कारक से चतुर्थेश और नवमेश मंगल क्रमशः मां और पिता है। यह 12वें भाव में बिना किसी शुभ दृष्टि के नीच है। एक नीच ग्रह निश्चित रूप से इच्छाओं की कुछ नीचता दिखाता है।

इस कुंडली में दूसरा सनसनी खेज पहलू भी है। चन्द्रमा बड़ों के कारक बृहस्पति के साथ न केवल पूर्ण इत्थसाल में वरन् उस के साथ ग्रह युद्ध में भी है। कम अंशों में स्थित ग्रह सदैव ग्रह युद्ध में जीतता है और इसीलिए अग्रज धन की भूमिका के कारण संभवतः इस लड़के के किसी प्रस्ताव को अंतिम रूप देने में बाधाएं निर्मित कर रहे हैं। इस तथ्य की चिंता किए बिना कि वह उनका एक मात्र पुत्र है और परिवार समृद्ध है। चंद्रमा और बृहस्पति दोनों शुक्र के नक्षत्र में हैं, जिसमें चंद्रमा विवाह के लिए लड़के की इच्छा की मानसिक अभिरूचि दिखा रहा है।

एक विषम भाव में स्थित शनि वधू नहीं देता। स्थिर लग्न और स्थिर राशि में स्थित लग्नेश भी देरी का कारण बनता है, लेकिन सप्तमेश थोड़ी देर में लग्नेश शुक्र के साथ 4थे भाव में युति करने वाला है। लग्नेश शुक्र किसी ग्रह के साथ कोई इत्थसाल नहीं रखता, सिवाय चंद्रमा के कारण

बनने वाले दुहरे इत्थसाल और नक्त योग के। केन्द्र और स्थिर राशि में स्थित शुक्र सप्ताह बताता है और पणफर और द्विस्वभाव राशि में बुध वर्षों को बताता है। स्थिर लग्न के साथ परिणामी समय घटना में देरी सूचित करता है। अतः प्रश्न में समय की व्याप्ति के निकट भविष्य में लगभग एक वर्ष के भीतर विवाह नहीं होगा। लग्नेश का राशि अधिपति 6ठे भाव में नीच है और सप्तमेश 3सरे भाव में नीच है।

सप्तमेश का राशि-अधिपति 8वें भाव में अष्टमेश के साथ गया है, ये सभी बाधाएं दिखाते हैं। जब कभी सप्तमेश एक उपचय भाव में जाता है, तब विवाह के उपरांत समृद्धि आती है। यहां सप्तमेश नीच है और नीचता का संकेत दे रहा है। क्या इस मानसिक नीचता से समृद्धि प्राप्त हो सकेगी?

लग्नेश शुक्र और कार्येश सप्तमेश मंगल में कोई संबंध नहीं है लेकिन शीघ्र मंगल के सिंह राशि में संचरण से संबंध उत्पन्न होगा। लेकिन शुक्र तीव्र गति होने के कारण धीरे-धीरे आगे निकल जाएगा। चंद्रमा 8वें भाव में अष्टमेश के साथ है और क्रूर ग्रह शनि के द्वारा दृष्ट होकर वधू की प्राप्ति में बाधाएं बताता है।

किस प्रकार की वधू प्राप्त होगी। सप्तमेश मंगल नीच है अतः वधू की विशेषताएं परिवार की आशाओं के अनुरूप नहीं होंगी। सप्तमेश उपचय में नीच है पर क्रूर ग्रह के प्रभाव से मुक्त है और इसलिए विवाह के उपरांत और अधिक समृद्धि होगी और अंततः विवाह के द्वारा धन प्राप्ति का संभावित उद्देश्य पूर्ण हो जाएगा।

उदाहरण संख्या : 3

30 वर्षीय पुत्री के विवाह का प्रस्ताव

शुक्र 15°53'	केतु 11°49' सूर्य 15°35' चन्द्र 20°33'	बुध 2°01'	लग्न 20°05'
शनि 27°29'	उराहरण : 3 प्रातः 9:55 30 अप्रैल 1995 नई दिल्ली		मंगल 26°07'
	बृहस्पति (व) 20°21'	राहु 11°49'	

पुत्री, जो कि लगभग 30 वर्ष की है, उसकी विवाह की इच्छा नहीं है। उसके विवाह का भविष्य क्या है? द्विस्वभाव लग्न विलम्ब दिखा रहा है। लग्न वक्री

बृहस्पति के नक्षत्र में है, जो सप्तमेश होकर 6ठे भाव में स्थित है। लग्न सप्तमेश/दशमेश बृहस्पति एवं द्वितीयेश चंद्रमा के समान अंशों में है जो 11वें भाव में स्थित होकर व्यवसाय और धन की ओर झुकाव दिखा रहा है। इन कारणों के कारण लड़की विवाह के बारे में रुचि नहीं लेती। लग्न, चंद्रमा और बृहस्पति समान अंशों में हैं। द्वितीयेश चंद्रमा 11वें भाव में स्थित है और दशमेश बृहस्पति 6ठे भाव में स्थित है। ये तीन बिंदु उसके व्यवसाय के कार्यक्षेत्र में कठोर प्रतियोगिता के द्वारा धन-प्राप्ति के लिए लड़की की मानसिक अभिरुचि की ओर संकेत करते हैं। पंचमेश/द्वादशेश शुक्र 10वें भाव में उच्च का है और दशमेश बृहस्पति से दृष्ट है। पंचमेश शुक्र भावनाएं भी दिखा रहा है। क्या कार्यस्थान पर कोई भावनात्मक संबंध है? द्वितीयेश और एकादशेश चंद्रमा और मंगल परस्पर परिवर्तन में हैं और जीवन में व्यावसायिक और आर्थिक रूप से लड़की की उन्नति में अभिरुचि दिखा रहे हैं। चंद्रमा का राशि अधिपति मंगल नीच है और मंगल का राशि अधिपति चन्द्रमा राहु/केतु अक्ष में सूर्य के साथ और शनि से दृष्ट है। 5वें भाव में स्थित नीच मंगल से दृष्ट राहु लड़की के व्यभिचारी होने की ओर भी संकेत करता है।

इस कुंडली में विलम्बित विवाह के अनेक योग उपस्थित हैं। शनि विषम भाव में स्थित है और नीच षष्ठेश मंगल से दृष्ट है। सप्तमेश बृहस्पति एवं चन्द्रमा शनि से दृष्ट होकर विलंब दिखा रहा है। अतः विवाह की शीघ्र संभावना नहीं है।

उदाहरण संख्या : 4

छोटी बहन का विवाह और परवर्ती सुख-शांति

	केतु 19°54'		
शनि 13°27'	उराहरण : 4 प्रातः 10:10		चंद्रमा 23°13'
लग्न 23°01'	22 दिसंबर 1994 नई दिल्ली		मंगल 8°03'
सूर्य 6°18' बुध 10°52'	बृहस्पति 8°56'	राहु 19°54' शुक्र 21°41'	

इस कुंडली में दो प्रश्न हैं। छोटी बहन का विवाह और उसके आगे की सुख-शांति। चर लग्न शीघ्र परिणाम दे रहा है। लग्न पृष्ठोदय भी है, अतः सम्पूर्ण प्रयास अत्यंत अनुकूल नहीं हो सकते। लग्न तथा कार्येश सप्तमेश

चंद्रमा समान अंशों में है और लग्न 7वें भाव से चंद्रमा से दृष्ट है। लग्न स्वयं सप्तमेश चंद्रमा के नक्षत्र में है और 7वें भाव से संबंधित परिणामों को शीघ्र देगा। चंद्रमा सप्तमेश होकर अपने भाव में स्थित है और 11वें भाव से बृहस्पति से दृष्ट है तथा शनि एक सम भाव में स्थित होकर शीघ्र विवाह देता है। शुक्र भी स्वराशि में स्थित है जबकि चंद्रमा सम नवांश में है। ये सभी संकेत एक शीघ्र विवाह के लिए अनुकूल हैं।

एक लड़के की शादी के लिए एक स्त्री द्रेष्काण शीघ्र विवाह के लिए अनुकूल है। एक लड़की के विवाह के मामले में क्या हमें पुरुष द्रेष्काण को वरीयता देनी चाहिए? ग्रंथों में इसका कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है, यह विचार मुझे युक्तियुक्त तार्किक लगता है। इस मामले में भी लग्न, पुरुष द्रेष्काण में है जो इस लड़की को अवश्य शीघ्र विवाह देगा। वह एक माह के भीतर जनवरी 1995 में विवाहित हो गई।

इस प्रश्न का दूसरा भाग अत्यंत महत्त्वपूर्ण और उद्घाटित करने योग्य है। सुख-शांति एक सापेक्षिक शब्द है और विभिन्न कारण अप्रसन्नता, अशांति, विवादों और झगड़ों की ओर ले जा सकते हैं। प्रसन्नता, विवाह में पारस्परिक प्रेम का एक परिणाम है। जब कभी लग्नेश और सप्तमेश षडाष्टक में हों तो वहां विवाद और झगड़े होते हैं, जैसा कि इस कुंडली में है।

इस विपत्ति का क्या कारण है? इस पर पहले ही बल दिया जा चुका है कि कोई दो ग्रह चाहे वे लग्नेश, कार्येश हों अथवा न हों तो भी अत्यंत निकट अंशों में निश्चित रूप से कुछ संकेत करते हैं। बृहस्पति और मंगल पूर्ण इत्थसाल में हैं, दोनों शनि से दृष्ट हैं। सप्तमेश बुध के नक्षत्र में है जो स्वयं केतु के नक्षत्र में है। एकादशेश और चतुर्थेश मंगल उस राशि का स्वामी है जहां केतु स्थित है। मंगल उन ग्रहों में से एक है जिसका हम बृहस्पति के साथ अंशों की निकटता के कारण विश्लेषण कर रहे हैं। मंगल उस राशि का स्वामी भी है जहां बृहस्पति स्थित है। बृहस्पति, शनि के नक्षत्र में है जो स्वयं राहु के नक्षत्र में होकर अत्यधिक अशुभ प्रभाव लिए हुए है। ये सभी योग किसी ऐसे तथ्य को दर्शा रहे हैं जो निश्चित रूप से गलत है।

इस मामले में पति के भाव 7वें भाव से विश्लेषण करने पर आकर्षण और प्रेम संबंध के 5वें भाव में बृहस्पति है जो निकट अंशों में पंचमेश मंगल के साथ सम्बन्ध रखता है। ये दोनों 8वें भाव से सप्तमेश शनि से दृष्ट हैं। पति के प्रेम-संबंधों का पत्नी द्वारा विरोध किया गया और इसीलिए विपत्तियां और विवाद उभरे। अब हम इसे कारक शुक्र से विश्लेषण करके भी पुष्ट करते हैं। शुक्र राहु/केतु अक्ष में है और सप्तमेश मंगल, 5वें भाव से शनि से दृष्ट है, जिसका जब शुक्र (मेष) से 7वें भाव से विश्लेषण किया तो पाया

कि 5वां भाव लग्नेश मंगल द्वारा ग्रहीत है जो द्वादशेश बृहस्पति के साथ निकट अंशों में, शैया-सुख के लिए पति का इन मामलों में उलझना दर्शा रहा है। ये दोनों 11वें भाव से एकादशेश शनि से दृष्ट होकर संबंधों की बहुविधता के साथ-साथ आर्थिक लाभों को दिखा रहा है। संभवतः उसका पति शैया-सुख के साथ साथ आर्थिक लाभ के लिए ऐसा कर रहा हो। विवाह में इस विवाद का भविष्य क्या होगा? राहु और केतु कारक शुक्र के साथ हैं जो पृथकता दे सकते हैं। जबकि शुक्र से सप्तमेश मंगल और 7वां भाव शनि से दृष्ट होकर तलाक की ओर भी ले जा सकता है। परंपरागत हिन्दू परिवार में तलाक यदि असंभव नही तो कठिन अवश्य होगा। तलाक के लिए विवाद के योगों में षष्ठेश और 6ठा भाव अवश्य शामिल होता है। लग्न से षष्ठेश बुध और शुक्र से षष्ठेश बृहस्पति, शनि, शुक्र, मंगल, राहु और केतु के साथ प्रत्यक्ष रूप से शामिल नहीं है। अतः तलाक की संभावना नहीं है। 8वें भाव में मंगल की केवल उपस्थिति खराब है जो शनि से दृष्ट होकर वैवाहिक मनमुटाव का कारण बनता है। उन मामलों में, जहां तलाक संभव न हो, वहां ज्योतिषीय परामर्श ही एक मात्र उपाय है।

11
सन्तान

विवाह का एक प्रमुख उद्देश्य बच्चों को जन्म देना और उनका पालन-पोषण करना है। यह ईश्वरीय रूप में मानवता के विस्तार का साधन है और इसीलिए इसे हमारे पूर्वजों के ऋणों अथवा पितर ऋण को चुकाने के रूप में माना जाता है। बच्चे मानव अस्तित्व को रूप प्रदान करते हैं जिसके चारों ओर हमारे प्रयास, स्वप्न और अभिलाषाएं घूमती हैं। ये अनुभूतियां स्त्री में अधिक हैं जो वास्तव में, अपने गर्भाशय में गर्भधारण से लेकर प्रसूति तक और तत्पश्चात् बच्चे का पालन-पोषण करती है। इसीलिए, एक स्त्री को अपनी शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए बच्चे की अत्यधिक आवश्यकता होती है।

विभिन्न कारणों से, कुछ दम्पत्ति अभिभावक होने के सुख से वंचित रह जाते हैं। बच्चे की प्राप्ति में विलम्ब, गर्भावस्था से संबंधित समस्याओं, गर्भपातों और मृत प्रसव जैसे बहुत से मामले हैं जो वास्तव में हमारे पिछले अच्छे अथवा बुरे कर्मों की प्रशाखाएं हैं जिन्हें पूरा करने के लिए हमें अपने कर्मों को अवश्य भोगना पड़ता है। इन सब के बावजूद प्रत्येक मानव, जीवन में स्वयं के लिए सर्वोत्तम उपलब्धियां प्राप्त करने की इच्छा रखता है और इन अशुभ प्रभावों को निष्फल करने के लिए उपायों को जानना चाहता है।

इस क्षेत्र से संबंधित प्रश्नों के अनेक तथ्यों को नीचे उपयुक्त शीर्षकों के अंतर्गत विवेचित किया गया है।

संतान के लिए आश्वासन

प्रश्न कुंडली में, यदि लग्नेश अथवा चन्द्रमा 5वें भाव में है अथवा पंचमेश लग्न में है अथवा वे एक दूसरे से शुभ भावों में स्थित होकर स्थिति अथवा दृष्टि द्वारा संबंधित हैं तो वहां संतान के लिए आश्वासन है। इसी प्रकार, जब लग्नेश अथवा चन्द्रमा पंचमेश के साथ इत्थसाल रखता है तो संतान की संभावना है। प्रश्न में, कि क्या मैं इस वर्ष में संतान प्राप्त करूंगा, यदि उपरोक्त

योगों की उपस्थिति है तो उस वर्ष के दौरान संतान की प्राप्ति की पुष्टि होती है, अन्यथा नहीं।

संतान की संभावना वहां नहीं है जहां यदि स्त्री और पुरुष के क्षेत्र और बीज त्रुटिपूर्ण हैं अथवा उनका बल समाप्त हो चुका है। यदि लग्न से लग्नेश और पंचमेश अस्त है, तो पुरुष प्रजनन के योग्य नहीं है। इसी प्रकार, यदि आरुढ़ लग्न से आरुढ़ लग्नेश और नवमेश अस्त हैं तो स्त्री क्षेत्र अनुर्वर है। अतः इन दोनों मामलों में, संतान की संभावना अनुपस्थित होगी।

मैं कब गर्भ धारण करूंगी

इस प्रकार के प्रश्न में गर्भधारण उस वर्ष में होगा जब मंगल और शुक्र प्रश्न कुंडली में एक शुभ राशि पर संयुक्त रूप से संचरण करेंगे। मंगल और शुक्र क्रमशः रक्त और वीर्य का प्रतिनिधित्व करते हैं।

सूर्य की होरा में लग्न और ज्योतिषी की बायीं नासिका से प्रवाहित श्वास, इसी प्रकार, चन्द्रमा की होरा में लग्न और ज्योतिषी की दाहिनी नासिका से प्रवाहित श्वास बताती है कि व्यक्ति को शीघ्र संतान लाभ होगा।

गर्भावस्था

निम्नलिखित योग बताते हैं कि स्त्री गर्भवती है :

1. प्रश्न के समय 5वें भाव और 11वें भाव में शुभ ग्रह स्थित हों।
2. लग्न में बुध बताता है कि स्त्री गर्भवती है।
3. स्थिर लग्न शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट या युत हों तो यह ज्ञात होता है कि स्त्री गर्भवती है।
4. अपने स्व नवांशों में स्थित सूर्य, चन्द्रमा, मंगल और शुक्र क्रमशः गर्भावस्था दिखाते हैं।
5. पुरुष की ओर से प्रश्न में सूर्य और शुक्र स्वराशि या नवांश में उपचय भावों 3, 6, 10 अथवा 11 में स्थित हों। इसी प्रकार स्त्री के प्रश्न में, अपनी राशि या नवांश में चन्द्रमा और मंगल का उपचय भावों में स्थापन गर्भावस्था बताता है।
6. 5वें भाव में लग्नेश और चन्द्रमा गर्भावस्था सूचित करता है।
7. लग्न, आरुढ़ अथवा छत्र राशि में राहु स्थित हो।
8. पंचमेश शीर्षोदय राशि में स्थित हो।
9. शुक्र, लग्न अथवा 5वें भाव में स्थित हो अथवा दृष्टि डालता हो।

10. चन्द्रमा शुभ ग्रहों के साथ स्थित हो। जब यह बृहस्पति के साथ स्थित हो तो एक लड़का जब यह शुक्र के साथ स्थित हो तो एक लड़की होती है।

कोई गर्भावस्था नहीं

जब प्रश्न कुंडली में उपरोक्त योग उपस्थित नहीं हैं तो एक प्रश्न के लिए कि स्त्री गर्भवती है या नहीं, हम सरलता से फलित कर सकते हैं कि वहां गर्भावस्था नहीं है। दूसरे, यदि लग्नेश अथवा चन्द्रमा आपोक्लिम भावों 3, 6, 9 अथवा 12 में से किसी भाव में है और लग्न अथवा 5वें भाव के साथ इत्थसाल में है या पंचमेश से दृष्ट है, तब वहां गर्भावस्था नहीं है। लग्न या 5वें भाव के साथ इत्थसाल योग कैसे देखें। लग्न के अंशों को 5वें भाव में रखें और उसका लग्नेश या चन्द्रमा के अंशों से संबंध देखें जैसा किसी इत्थसाल योग में देखते हैं। यह ज्ञात करने के लिए कि 5वें भाव के अंश तीव्र गति या मंद गति हैं, उसे पंचमेश के समान मानें। इसी प्रकार लग्न के अंशों को भी विवेचित करें। स्थिर नवांश में स्थित पंचमेश गर्भावस्था न होना बताता है।

बच्चे का लिंग

विषम राशियां पुरुष लिंग है और सम राशियां स्त्री लिंग हैं। जब कभी लग्न, बृहस्पति, सूर्य और चन्द्रमा विषम राशियों और विषम नवांश को गृहीत करते हैं तो यह सिद्धान्त एक लड़का दर्शाता है और सम राशियों तथा सम नवाशों में लड़की दर्शाता है। लग्न हमेशा की तरह बहुत महत्त्वपूर्ण है। बृहस्पत्ति बच्चों का कारक है, सूर्य और चन्द्रमा दोनों प्रकाश पुंज हैं। इन चारों में से कुछ विषम में होंगे और कुछ सम में होंगे। ऐसे मामलों में, हमें बच्चे का लिंग निर्धारण विषम राशियों अथवा सम राशियों में इनकी बहुलता से करना है। इस योग का दूसरा सिद्धान्त भी है। विषम राशियों में बृहस्पति और सूर्य लड़का सूचित करते हैं जबकि सम राशियों में चन्द्रमा, शुक्र और मंगल लड़की सूचित करते हैं।

एक योग है जो व्यवहार में अत्युत्तम परिणाम देता है। विषम भाव में शनि (राशि में नहीं, क्योंकि शनि एक राशि में लगभग ढाई वर्ष निरंतर गमन करेगा) लड़का देता है और सम भाव में लड़की देता है। इस मामले में, शनि प्रथम भाव अथवा लग्न में होने पर अपवाद के रूप में दिखाई देता है जो लड़की सूचित करता है।

जब एक विषम राशि में चन्द्रमा एक पुरुष ग्रह के साथ इत्थसाल योग बनाए तो लड़का तथा सम राशि में चन्द्रमा का स्त्री ग्रह के साथ इत्थसाल लड़की बताता है।

विषम राशियों में बलवान बृहस्पति और शुक्र द्वारा भी लड़का सूचित होता है। लड़की के लिए बृहस्पति, मंगल और चन्द्रमा सम राशियों में होने चाहिएं।

उपर्युक्त विवेचित योगों पर शीघ्र किया गया विश्लेषण हमें इस निष्कर्ष की ओर ले जाता है कि जब भी ग्रहों की बहुलता विषम राशियों में हो, तब लड़का और सम राशियों में होने पर लड़की की आशा करनी चाहिए। यद्यपि शनि के विश्लेषण का, जैसा कि ऊपर व्याख्यायित है अथवा पंचमेश और 5वें भाव का पुष्टिकारक परीक्षण अभी तक शेष है कि क्या पंचमेश पुरुष अथवा स्त्री ग्रह है, क्या 5वां भाव पुरुष अथवा स्त्री ग्रहों की दृष्टि अथवा स्थिति द्वारा प्रभावित है और अंततः पुरुष नक्षत्रों में पंचमेश लड़के की उत्पत्ति की ओर तथा स्त्री नक्षत्रों में लड़की की उत्पत्ति की ओर संकेत करता है। पुरुष और स्त्री नक्षत्र प्रथम अध्याय में विवेचित किए गए हैं।

पुरुष ग्रह का स्वामित्व रखने वाले नक्षत्रों में पंचमेश लड़का देता है और स्त्री ग्रह का स्वामित्व रखने वाले नक्षत्रों में पंचमेश लड़की देता है। इसी प्रकार, यदि पंचमेश पुरुष ग्रह है, तो यह लड़का देता है और यदि यह स्त्री ग्रह है, तो लड़की देता है। यद्यपि यहां एक अपवाद भी है। यदि पुरुष ग्रह नीच है तो लड़की देता है और स्त्री ग्रह उच्च है, तो यह लड़का प्रदान करता है।

विषम भावों में स्थित लग्नेश और पंचमेश लड़का देता है और सम भावों में लड़की देता है। इसके अतिरिक्त शुभ ग्रहों से दृष्ट और प्रश्न कुंडली एवं उसके षड्वर्गों- होरा, द्रेष्काण, नवांश, द्वादशांश और त्रिंशांश में बलवान पुरुष ग्रहों से प्रभावित उदित विषम राशि लड़का बताती है। इसी प्रकार, प्रश्न लग्न और उसके षड्वर्गों में बलवान स्त्री ग्रहों से प्रभावित स्त्री राशि लड़की सूचित करती है।

होरा पर आधारित बच्चे का लिंग

प्रश्न के समय यदि होराधिपति एक पुरुष ग्रह होकर पुरुष राशि में स्थित है तब लड़का और यदि होराधिपति स्त्री ग्रह होकर स्त्री राशि में है तब लड़की प्रत्याशित है। यदि कृष्ण पक्ष की अष्टमी से अमावस्या के बीच अपराह्न में प्रश्न पूछा जाए, तो लड़की पैदा होती है।

पुत्रियों के योग

व्यक्ति को अनेक पुत्रियों का सुख मिलता है यदि चन्द्रमा 5वें भाव में है। 5वें भाव में उच्च का बृहस्पति भी पुत्री देता है, क्योंकि बृहस्पति, चन्द्रमा द्वारा शासित राशि कर्क में उच्च होता है। अतः 5वें भाव में चन्द्रमा की भूमिका पुत्रियों का जन्म दर्शाती है। सम राशि या सम नवांश में शुक्र, चन्द्रमा अथवा पंचमेश भी अनेक पुत्रियां देता है।

बच्चे-शीघ्र अथवा विलम्ब से

प्रश्नकर्ता को शीघ्र बच्चा होगा यदि लग्नेश और कार्येश-पंचमेश के बीच संबंध है। लग्नेश पंचम भाव में या पंचमेश लग्न में या दोनों लग्न में, 5वें भाव में अथवा किसी शुभ भाव में संयुक्त रूप से हों, तो संतान की शीघ्र प्राप्ति होती है। दूसरी ओर, यदि लग्नेश और पंचमेश नक्त योग के द्वारा संबंध रखते है तब संतान प्राप्ति में विलम्ब है।

जुड़वाँ बच्चों का जन्म

1. बच्चों के जन्म से संबंधित प्रश्न में शुभ ग्रहों द्वारा गृहीत द्विस्वभाव लग्न जुड़वाँ बच्चों का संकेत करता है।
2. द्विस्वभाव राशि अथवा नवांश में स्थित चन्द्रमा, शुक्र अथवा मंगल बुध से दृष्ट होने पर भी जुड़वाँ बच्चों को जन्म देता है। यदि ये ग्रह विषम द्विस्वभाव राशि में स्थित हैं तब दो पुत्र, यदि यह ग्रह सम द्विस्वभाव राशि में हैं तो दो पुत्रियां और यदि दोनों प्रकार की द्विस्वभाव राशियों में हैं, तब एक लड़का और एक लड़की का फलित करना चाहिए। यह जुड़वाँ बच्चों के जन्म को सूचित करने वाला एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण योग है और इसमें बुध की दृष्टि अत्यंत निर्णायक तथ्य है।

बच्चों की संख्या

बच्चों की संख्या बताने वाले अनेक योग हैं जबकि व्यवहार में यह सभी कार्य नहीं करते।

1. 5वें भाव को देखने वाले बलवान पुरुष और स्त्री ग्रहों की संख्या अनेक लड़के अथवा लड़कियां देती है।
2. यह देखिए कि पंचमेश ने कितने नवांश प्राप्त किए हैं तो उतने बच्चों की आशा की जा सकती है। परिवार नियोजन के आधुनिक युग में, जहां प्रत्येक दम्पत्ति, सामान्य परिस्थितियों में दो से अधिक बच्चे नहीं चाहते, वहां यह सिद्धान्त कार्य नहीं करेगा।
3. यदि लग्न अथवा चन्द्रमा से 5वां भाव वृष, सिंह, कन्या और वृश्चिक राशि में है और प्रश्न एवं जन्म कुंडली में पाप ग्रहों से दृष्ट है, तब बच्चों की संख्या बहुत सीमित होगी।
4. पंचमेश के नक्षत्राधिपति निर्धारित कीजिए। तत्पश्चात् परिणामी नक्षत्राधिपति निर्धारित कीजिए। ऐसा तब तक निरंतर कीजिए, जब

तक कोई ग्रह पुनरावृत्ति नहीं प्राप्त करता। इन सभी ग्रहों की संख्या को जोड़ें और तब उपरोक्त गणना द्वारा संकेतित अनेक बच्चे होंगे।

क्या बच्चा वैध है

इस प्रकार के प्रश्न में, यदि पंचमेश उच्च अथवा बलवान है, तब बच्चा वैध है। इसी प्रकार, यदि 5वें भाव में चन्द्रमा अथवा बुध की पंचमेश के साथ दृष्टि अथवा युति है, तब भी बच्चा वैध है। यह केवल तभी देखना चाहिए यदि ज्योतिषी से ऐसा विशिष्ट प्रश्न पूछा जाए, अन्यथा नहीं।

माता अथवा पिता की मृत्यु

पापकर्तरी योग में और शुभ ग्रहों से अदृष्ट लग्न और चन्द्रमा बच्चे के जन्म के दौरान स्त्री की मृत्यु बताता है। लग्न अथवा चन्द्रमा में से किसी एक पर कोई शुभ दृष्टि इस दुष्प्रभाव को कम करती है, जबकि उन दोनों पर शुभ ग्रहों का प्रभाव, बच्चे और मां दोनों के लिए सुरक्षित प्रसूति दर्शाता है।

मंगल, शनि, राहु अथवा केतु तीनों पाप ग्रहों से पीड़ित चन्द्रमा गर्भावस्था के दौरान स्त्री की मृत्यु बताता है। इसी प्रकार शनि, राहु/केतु और मंगल से यदि पिता का कारक सूर्य, पीड़ित है तो बच्चे के जन्म से पूर्व पिता की मृत्यु हो जाती है। यदि चन्द्रमा अथवा सूर्य केवल एक ग्रह द्वारा पीड़ित है, जैसे शनि द्वारा पीड़ित चन्द्रमा अथवा मंगल द्वारा पीड़ित सूर्य, तब माता अथवा पिता क्रमशः गर्भावस्था के दौरान बीमार पड़ेंगे।

बच्चे की मृत्यु

1. 8वें भाव में स्थित शुक्र और बृहस्पति, बच्चे के जन्म के उपरांत बच्चे की मृत्यु दर्शाता है। वास्तव में, यदि बच्चे का कारक बृहस्पति कमज़ोर, पाप कर्तरी अथवा पाप प्रभाव में है तो यह बच्चे के नाश का योग है।
2. 8वें भाव में पाप ग्रहों के साथ शुक्र और सूर्य हो और पापकर्तरी योग में लग्न हो।
3. अशुभ एवं अस्त द्वादशेश अगर आपोक्लिम भाव 3, 6, 9, 12 में स्थित हो तो नवजात शिशु को मृत्यु का खतरा हो जाता है अथवा जन्म लेते समय बच्चा गर्भाशय में मर जाता है।
4. लग्न में स्थित मंगल और शनि गर्भाशय में बच्चे की मृत्यु देता है।
5. मंगल अथवा शनि की राशि में चन्द्रमा उनकी युति अथवा दृष्टि से गर्भावस्था में बच्चे की मृत्यु देता है।

6. पंचमेश और अष्टमेश में परिवर्तन हो अथवा पंचमेश नीच, अस्त, पाप ग्रहों से पीड़ित हो तो बच्चों की लगातार मृत्यु होती है। इस योग में पंचमेश बिना किसी शुभ प्रभाव के होना चाहिए।
7. यदि बच्चों का कारक बृहस्पति तीनों पाप ग्रहों मंगल, शनि और राहु/केतु से पीड़ित है, तो गर्भाशय में बच्चे की मृत्यु हो जाती है।

स्वस्थ और दीघार्यु बच्चे का जन्म

1. लग्न, स्वराशि अथवा उच्च राशि में पंचमेश, चन्द्रमा अथवा शुभ ग्रह स्वस्थ, दीघार्यु बच्चा देता है।
2. इसी प्रकार, जब पंचमेश, चन्द्रमा अथवा शुभ ग्रह 5वें भाव में स्थित हों अथवा 5वें भाव को देखते हों।
3. शुभ ग्रहों से दृष्ट द्वादशेश अथवा चन्द्रमा केन्द्र में हो।
4. शुक्ल पक्ष के दौरान पूछे गए प्रश्न में, और 12वें भाव में शुभ ग्रहों के साथ चन्द्रमा बताता है कि बच्चा गर्भाशय में जीवित रहेगा।
5. पंचम भाव शुभ ग्रहों के प्रभाव में, शुभकर्त्तरी योग में, या अपने स्वामी द्वारा गृहीत या दृष्ट हो।
6. 6, 8, 12वें भावों की अपेक्षा दूसरे भावों में शुभ प्रभाव के अंतर्गत स्थित बलवान पंचमेश स्वस्थ, दीघार्यु बच्चे देता है।

बच्चे के जन्म के समय पर उपस्थित लोगों की संख्या

इस सन्दर्भ में दो योग देखे जाते हैं :

1. लग्न और चन्द्रमा के बीच ग्रहों की संख्या बच्चे के जन्म समय पर उपस्थित लोगों की संख्या बताती है।
2. कुंडली के अंधकार अथवा अदृश्य भाग में ग्रहों की संख्या बच्चे के जन्म-समय पर प्रसूति कक्ष में उपस्थित लोगों की संख्या बताती है, जबकि प्रकाशित अथवा दृष्ट भाग में ग्रहों की संख्या प्रसूति कक्ष के बाहर शुभचिंतकों की संख्या बताती है।

गर्भावस्था अथवा गर्भपात के दौरान समस्याएँ

गर्भावस्था से प्रसूति की अवधि सात से दस माह की हो सकती है और सामान्य मामलों में, यह लगभग नौ माह होती है। गर्भावस्था से प्रारम्भिक दस महीनों के स्वामी निम्नलिखित हैं :

माह	स्वामी	माह	स्वामी
पहला माह	शुक्र	छठा माह	शनि
दूसरा माह	मंगल	सातवां माह	बुध
तीसरा माह	बृहस्पति	आठवां माह	लग्नेश
चौथा माह	सूर्य	नवां माह	सूर्य
पांचवां माह	चन्द्रमा	दसवां माह	चन्द्रमा

जब इनमें से कोई ग्रह, कमजोर अथवा पीड़ित हो तो गर्भावस्था के दौरान उस महीने में स्त्री को कष्ट होता है। दुष्प्रभाव की अधिकता, जैसे पाप दृष्टियां, शत्रु राशियों अथवा भावों में स्थिति, अस्त अथवा ग्रह युद्ध आदि निश्चित करते हैं कि क्या ये विपत्तियां गर्भपात अथवा गर्भस्त्राव देंगी।

अन्य योगों के बावजूद, 8वें भाव में मंगल गर्भपात दर्शाता है। इसी प्रकार लग्न अथवा 5वें भाव में मंगल यदि शनि अथवा राहु के साथ संयुक्त हो अथवा इत्थसाल योग बनाए तो बच्चे के जन्म के दौरान कठिनाइयां और समस्याएं सूचित करता है। यदि बृहस्पति की दृष्टि उपस्थित हो तब समस्याओं के बावजूद गर्भावस्था ठीक रहेगी, अन्यथा गर्भपात हो सकता है।

लग्न में शनि, 8वें भाव में मंगल और केन्द्र में बृहस्पति गर्भपात इंगित करता है। प्रश्न कुंडली में, प्रश्नकर्ता के स्त्री अथवा पुरुष होने पर क्रमशः बीज स्फुट अथवा क्षेत्र स्फुट की गणना करें। यदि वे पाप प्रभाव में हैं, तब बच्चे के जन्म में कठिनाइयां हैं।

शुक्र और मंगल की परस्पर युति अथवा दृष्टि गर्भपात दर्शाती है। जब शुक्र और मंगल के बीच मित्र इत्थसाल है तो गर्भपात सोच समझकर अथवा इच्छा से किया गया है। जबकि दोनों के बीच विरोधी अथवा शत्रु इत्थसाल का परिणाम आकस्मिक गर्भपात है अथवा जो ऐच्छिक नहीं है। जब मंगल बृहस्पति को चतुर्थ दृष्टि से देखता है तब स्त्री रोगजन्य समस्याओं के कारण गर्भपातों की पुनरावृत्ति होती है।

प्रसव की विधि

प्रसूति में शल्य-क्रिया स्पष्ट रूप से, प्रश्न कुंडली एवं सप्तमांश में 5वें भाव/पंचमेश, कारक बृहस्पति अथवा बृहस्पति से 5वें भाव के साथ मंगल के सहयोग के कारण निर्दिष्ट होती है।

सौम्य शल्यक हस्तक्षेप के श्रेणीकरण में, प्रसव में चिमटे के प्रयोग से या शल्यक्रिया से बच्चे को पेट से निकालने के योग नीचे बढ़ते हुए क्रम में संकेतित किए गए हैं :

1. मंगल का युति अथवा 7वीं दृष्टि से प्रभाव हो।
2. मंगल का चौथी दृष्टि से प्रभाव हो।
3. मंगल का आठवीं दृष्टि से प्रभाव हो।

ये तीन संभावनाएं खतरा बढ़ाती हैं जब मंगल, पंचमेश, बृहस्पति अथवा अष्टमेश पुनः पापग्रहों शनि, राहु/केतु और 8वें भाव/अष्टमेश के प्रभाव में युति या दृष्टि से पीड़ित हों।

बांझपन अथवा अनुर्वरता

1. सूर्य और शनि 8वें भाव में, सूर्य अथवा शनि की राशि में स्थित हों तो पत्नी बांझ होती है।
2. 8वें भाव में चन्द्रमा और बुध उसे बांझ बनाते हैं।
3. 8वें भाव में स्थित अष्टमेश बताता है कि स्त्री में मां बनने की अथवा बच्चों को जन्म देने की सामर्थ्य नहीं है।
4. 5वें भाव में नीच पाप ग्रह किसी अन्य पाप ग्रह से दृष्ट होने पर स्त्री को बांझ बनाता है।

यह बुद्धिमानी नहीं है कि केवल स्त्री पर बच्चा पैदा न कर पाने का दोष लगाया जाए। चिकित्सकीय रूप से अनुर्वरता मैथुन अथवा पुरुष के पुरुषत्व की योग्यता से संबंधित नहीं है। अनुर्वरता का कारण पति, पत्नी अथवा दोनों के साथ हो सकता है। मैंने इन कारणों को अवलोकित किया है और उनके संभावित योग निम्मलिखित हैं :

1. प्रश्न तथा सप्तमांश कुंडली दोनों में पाप ग्रहों से पीड़ित बीज स्फुट का सम राशियों में, 8वें भाव में या अष्टमेश के साथ स्थित होने से मृत अथवा अप्रभावी शुक्राणु सूचित किए जाते हैं।
2. अंडाशय समस्या, जिसमें डिम्बक्षरण नहीं हो रहा है अथवा अंडाशय विकसित नहीं है, प्रश्न तथा सप्तमांश कुंडली में चन्द्रमा के पीड़ित होने से सूचित होता है।
3. प्रश्न तथा सप्तमांश कुंडली दोनों में, गर्भाशय में बच्चे का विकास न होना क्रूर ग्रहों से पीड़ित क्षेत्र स्फुट का विषम राशियों में, 8वें भाव में या अष्टमेश के साथ स्थिति से सूचित होता है। जब कभी गर्भाशय में भ्रूण का विकास न हो तो बृहस्पति क्रूर ग्रहों की युति अथवा दृष्टि से अवश्य पीड़ित होता है और स्त्री हार्मोनों का त्रुटिपूर्ण होना भी सूचित करता है।

4. बांझपन का चौथा संभावित कारण यह है कि डिंबग्रंथियों और गर्भाशय से संयुक्त डिंबवाही नली या तो रुकी हुई है अथवा कुछ नलाकार दुष्क्रिया है जिसके कारण पुरुष शुक्राणु अंडाशय को उर्वर करने में समर्थ नहीं हैं। मार्ग सदैव 7वें भाव को मानना चाहिए और ग्रह जो रुकावट का कारण बनता है, वह शनि है। अतः क्षेत्र स्फुट से 7वें भाव में स्थित पीड़ित शनि कुछ डिंबवाही नली में रुकावट अथवा दुष्क्रिया सूचित करेगा। मैं शोधार्थियों से इस टिप्पणी के परीक्षण का अनुरोध करता हूं।

प्रसव का समय

1. गर्भावस्था उतने माह पुरानी है जितने नवाशों की संख्या लग्न में व्यतीत हो चुकी है। मान लो, लग्न 10°02' है, तब तीन नवांश बीत चुके है और चौथा चल रहा है। इसीलिए तीन माह बीत चुके है और गर्भावस्था चौथे माह में प्रवेश कर रही है। इसी प्रकार, लग्न में शेष नवांश महीनों और दिनों की संख्या बताता है जिसके उपरांत प्रसूति होगी।

2. गर्भावस्था की आयु तथा प्रसूति का समय प्राप्त करने का दूसरा प्रभावी तरीका यह है कि कुंडली में शुक्र का स्थापन देखें। लग्न से शुक्र की स्थिति गिनने पर महीनों में, गर्भावस्था की आयु प्राप्त होती है। यद्यपि, यदि शुक्र नवें भाव से आगे स्थित है, तब लग्न के स्थान पर 5वें भाव से गिनिए।

3. दिन के समय पर किए जाने वाला प्रश्न और दिवाबली राशि में लग्न बच्चे का दिन के समय जन्म होना बताता है। इसी प्रकार, रात्रि के समय पर किया जाने वाला प्रश्न और रात्रिबली राशि में लग्न बताता है कि बच्चा रात्रि के समय पैदा होगा। यदि उपरोक्त दोनों से भिन्न परिणाम प्राप्त हों तब देखें कि लग्नेश दिन के समय बलवान है अथवा रात्रि के समय। यह भी देखें कि लग्नेश जिस राशि में स्थित है, वह दिन के समय बलवान है अथवा रात्रि के समय। तत्पश्चात प्रश्न के समय पर होरा देखें और देखें कि होरा का स्वामी दिन के समय बलवान है अथवा रात्रि के समय। इन संकेतों की विस्तृत जानकारी के लिए प्रथम अध्याय देखें।

कोई बच्चा नहीं

बीज अथवा क्षेत्र स्फुट की दुर्बलता बच्चों की उत्पत्ति में नकारात्मक संकेत देती है। बृहस्पति, सूर्य और शुक्र के भोगांशों का योग हमें बीज स्फुट प्रदान

करता है और बृहस्पति, मंगल और चन्द्रमा के भोगांशों का योग हमें क्षेत्र स्फुट प्रदान करता है। बीज स्फुट विषम राशियों, विषम नवांशों और शुभ भावों में पड़ना चाहिए और शुभ ग्रहों से दृष्ट होना चाहिए। इसी प्रकार क्षेत्र स्फुट सम राशियों और सम नवांशों में पड़ना चाहिए और यह पुनः शुभ ग्रहों से दृष्ट होकर संतान का आश्वासन देता है। इसका विलोम बच्चे न होना दर्शाता है। संतान न होने के अन्य योग इस प्रकार हैं :

1. बृहस्पति, पंचमेश और सप्तमेश बलहीन, अस्त अथवा 6, 8 या 12वें भाव में हों और क्रूर ग्रहों के साथ संयुक्त हों तो बच्चों का सुख प्राप्त नहीं होता।
2. पंचमेश 6, 8, 12वें भाव में नीच अथवा पाप प्रभाव में तथा 5वां भाव पाप ग्रह द्वारा गृहीत हो।
3. लग्न, चन्द्रमा या संतान के कारक बृहस्पति से पांचवें भाव में बिना शुभ ग्रहों के प्रभाव के अशुभ ग्रहों की स्थिति निःसंतान योग बनाती है।

बच्चा गोद लेना

5वां भाव पूर्व पुण्यों अथवा पिछले जीवन के शुभ कर्मों का भाव है। विशेषतः 5वें भाव में मांदि के साथ पाप ग्रह पिछले जन्म के अशुभ मानसिक कर्मों के कारण ईश्वरीय कोप से ऐसे व्यक्ति के लिए बच्चे की संभावना समाप्त कर देते हैं। यदि 5वें भाव में नपुंसक ग्रहों बुध अथवा शनि द्वारा शासित राशियां हों और शनि तथा मांदि वहां स्थित हों तो बच्चे गोद लेने से ही प्राप्त हो सकेंगे। इसी प्रकार, यदि नवमेश 8वें भाव में स्थित हो लेकिन कारक बृहस्पति कुंडली में या तो लग्न में या 9वें भाव में स्थित हो जहां से यह 5वें भाव को देखे, तब व्यक्ति गोद लेने से संतान प्राप्त करता है।

बच्चा प्राप्त करने में कठिनाइयाँ

प्रश्न के सिद्धान्तों में, ज्योतिषी की नासिकाओं से प्रवाहित हो रही श्वास की भूमिका का विश्लेषण किया जा चुका है। बहुत से मामलों में, अभिभावकों के क्रोध के कारण और चिकित्सीय इलाज, उपायों, उपवास और दान के परिणाम स्वरूप बच्चा काफी विलम्ब से पैदा होता है। कठिनाइयां दिखाने वाले कुछ योग इस प्रकार हैं :

1. 5वां भाव न केवल संतान का भाव है, बल्कि पूर्व पुण्यों का भाव भी है। हमें लग्न, लग्नेश, चन्द्रमा, 5वां भाव, पंचमेश, कारक बृहस्पति और बृहस्पति से पंचम भाव का विश्लेषण करना है। यदि पंचम भाव पापकर्तरी

योग में, क्रूर ग्रहों से युत अथवा दृष्ट हो तो सन्तानोत्पत्ति कठिनाइयों से होती है।

2. इसी प्रकार क्रूर ग्रहों की स्थिति अथवा दृष्टि से पीड़ित 6, 8, 12वें भावों में स्थित नीच अथवा अस्त पंचमेश हो तो सन्तानोत्पत्ति में कठिनाइयां आती है।
3. बिना किसी शुभ प्रभाव के राहु या केतु 5वें भाव में हों।
4. 5वें भाव और लग्न से पंचमेश, बीज स्फुट, क्षेत्र स्फुट अथवा चन्द्रमा पर पाप प्रभाव बच्चों की उत्पत्ति में कठिनाइयां पैदा करते हैं।

बच्चों के निषेध में श्रापों की भूमिका

शाप हमारे पिछले जीवन में किए गए बुरे कर्मों के परिणाम हैं जो वर्तमान जीवन में वास्तविक सुखों से वंचित करते हैं अथवा पीड़ाओं के रूप में व्यक्त होते हैं। विषय के विस्तृत अध्ययन के लिए कर्म और दुरात्माएं पर लिखित अध्याय को देखें।

बच्चों की प्राप्ति में निषेध अथवा कठिनाइयां ईश्वर या देवताओं, माता, पिता या अन्य पितरों, सर्पों या काला जादू के श्रापों के कारण हो सकती हैं। मांदि और राहु की युति बुरे कर्मों के कारण शाप बताती है।

अशुभ भाव में पाप प्रभाव के अंतर्गत स्थित पंचमेश और दशमेश पिछले जीवन के बुरे मानसिक या कायिक कर्मों को बताते हैं। बलहीन या पीड़ित लग्नेश, पंचमेश और कारक बृहस्पति, तथा अशुभ भावों में पीड़ित पंचमेश और दशमेश वर्तमान जीवन में बच्चों के निषेध या नाश दर्शाने वाले पिछले बुरे कर्मों को सूचित करते हैं। इसी प्रकार बलहीन अथवा पाप प्रभाव के अंतर्गत लग्नेश, पंचमेश या बृहस्पति, 5वें भाव में पीड़ित षष्ठेश और मांदि काला जादू या शत्रुओं के श्रापों को बताता है। ईश्वरीय कोप सूचित होता है यदि 5वां भाव और पंचमेश बिना किसी शुभ प्रभाव के पीड़ित हों जिसके लिए देवताओं का उपयुक्त प्रायश्चित करने का परामर्श दिया जाना चाहिए।

चौथा भाव मां का भाव है और 9वां भाव पिता का भाव है। चन्द्रमा और सूर्य क्रमशः मां और पिता के कारक हैं। 5वां भाव और 9वां भाव पिछले और वर्तमान कर्मों को बताते हैं। पीड़ित चौथा भाव और चन्द्रमा, 9वां भाव और सूर्य, 5वें भाव अथवा 9वें भाव में शनि अथवा मांदि क्रमशः मां और पिता के शाप सूचित करते हैं। विशेषतः 5वें भाव या 9वें भाव में शनि और मांदि बच्चों का नाश या निषेध दर्शाने वाले पितरों के श्रापों को बताते हैं।

5वें भाव में पीड़ित राहु या बिना किसी शुभ प्रभाव के राहु के साथ स्थित

पंचमेश सर्पों के श्रापों के कारण बच्चों का नाश दर्शाता है और प्रायश्चित के लिए सर्प प्रतिकृति पहनने की सलाह दी जाती है।

उदाहरण संख्या : 1

शादी और संतान संबंधित चिंताएं

बृहस्पति (व) 2°39'	शनि 9°47'		चन्द्रमा 19°50'
लग्न 19°49' केतु 7°38'	उदाहरण : 1 सायं 7:48 18 अगस्त 1998 नई दिल्ली		मंगल 4°44' शुक्र 12°32' बुध (व) 23°49'
			सूर्य 1°36' राहु 7°38'
		बीज स्फुट 16°47	

इस प्रश्न में लग्न शीर्षोदय और स्थिर राशि में और राहु के नक्षत्र में स्थित है जो सातवें भाव में सप्तमेश के साथ स्थित होकर दर्शाता है कि शीघ्र होने वाली शादी को लेकर प्रश्नकर्त्ता चिंतित है। लग्न सप्तम भाव में स्थित सप्तमेश सूर्य से तथा छठे भाव से मंगल से दृष्ट है। मंगल लग्नेश का राशीश भी है। यह सब मैथुन अनुर्वरता आदि से पीड़ित बीमारी दर्शाता है। चन्द्र, लग्न के समान अंशों में पंचम भाव में स्थित होकर संतान की चाह भी दिखा रहा है। लेकिन पंचमेश, जो अष्टमेश भी है, छठे भाव में स्थित है और वक्री भी है, तथा दो प्रकार के अशुभ प्रभाव लिए हुए है।

लग्नेश शनि तीसरे भाव में नीच का स्थित है। तीसरा भाव क्रिया का भी है। शनि केतु के नक्षत्र में स्थित है तथा केतु लग्न में राहु के नक्षत्र में स्थित होकर व्यक्ति को पीड़ित किए हुए भ्रम दिखा रहा है कि क्या वह शादी के बाद मैथुन क्रिया कर पाएगा अथवा नहीं जो सहवास और संतति के लिए अति आवश्यक है।

इस जातक की पहले भी शादी हुई थी जो इस कारण तलाक में परिवर्तित हो गई क्योंकि वह सहवास करने में असफल रहा। अब उसका पुनः विवाह होने वाला है और यह व्यक्ति चिंतित है। यह कुंडली एक ऐसा रोग दर्शा रही है जो मनोवैज्ञानिक अधिक और शारीरिक कम है। षष्ठेश चन्द्रमा पंचम भाव में लग्न के समान अंशों में और लग्न के समान राहु के नक्षत्र में स्थित है जो पुनः सप्तम भाव में सप्तमेश के साथ केतु के नक्षत्र में स्थित है। प्रश्नकर्ता को मैंने किसी मनोवैज्ञानिक से परामर्श करने की सलाह दी।

बीज स्फुट से सातवें भाव में शनि की स्थिति शुक्र वाहक नलिका में रुकावट दर्शाती हैं। इस विश्लेषण के पश्चात उसने शुक्राणु की गिनती करवाई जो शून्य पाई गई। मेरे विश्लेषण में बीज स्फुट से सातवें भाव में शनि की स्थिति से या तो शुक्र वाहक नलिका के मुड़ जाने से अथवा नलिका में अवरोध या बाधा से शुक्राणु अंड ग्रंथि से वीर्य कोष तक नहीं पहुंच रहे।

पुरुषों में भी इसी प्रकार, शुक्राणु अंड ग्रंथि में उत्पन्न होकर शुक्र वाहक नलिका से वीर्य कोष तक पहुंचते है। अनुर्वरता का निरीक्षण करने के लिए और पुरुष जनन ग्रंथियों की त्रुटियों को जानने के लिए शुक्राणुओं की शून्य संख्या के दो कारण हो सकते हैं। पहला शुक्र वाहक नलिका में बाधा या रुकावट जो बीज स्फुट से सातवें भाव में शनि की उपस्थिति से इंगित होता है। दूसरा शुक्राणुओं का अभाव जो हार्मोन की त्रुटियों के कारण हो सकता है। यह बृहस्पति पर पाप प्रभाव द्वारा इंगित होता है। पुरुषों एवं महिलाओं में हार्मोनल त्रुटियों को प्रश्न कुंडली से कैसे देखें। अन्य योगों के साथ-साथ पीड़ित बृहस्पति का बीज स्फुट या क्षेत्र स्फुट से छठे भाव या षष्ठेश के साथ संबंध क्रमशः पुरुष और स्त्री की हार्मोनल त्रुटियां दर्शाएगा।

उदाहरण संख्या : 2

गर्भ में लड़का है कि लड़की

मंगल 18°28'	बुध 15°57' सूर्य 16°01'	केतु 0°04' शुक्र 11°13'	
शनि 16°21'	उदाहरण : 2 अपराह्न 2:30 30 अप्रैल 1994 नई दिल्ली		
			लग्न 19°03'
चन्द्रमा 18°25'	राहु 0°04'	बृहस्पति (व) 16°00'	

शीर्षोदय और स्थिर लग्न स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं दिखाता। लग्न शुक्र के नक्षत्र में है जो राहु/केतु अक्ष में पीड़ित है।

लग्नेश सूर्य 9वें भाव में उच्च है, अष्टमेश वक्री बृहस्पति से दृष्ट होकर और अष्टमेश के साथ पूर्ण इत्थसाल द्वारा बाधाएं, स्थगन और नाश दिखा रहा है। वास्तव में, चार ग्रह पूर्ण इत्थसाल के बहुत निकट अंशों में हैं। ये हैं- लग्नेश सूर्य, पंचमेश/अष्टमेश वक्री बृहस्पति, द्वितीयेश/एकादशेश बुध और षष्ठेश/सप्तमेश शनि। अतः लग्नेश षष्ठेश और अष्टमेश द्वारा अत्यंत निकट

अंशों में पीड़ित है। एकमात्र शुभ ग्रह, बुध लग्नेश के साथ स्थित है, लेकिन यह अस्त है। लग्न पर षष्ठेश एवं सप्तमेश शनि भी पूर्ण पाराशरी दृष्टि डालकर पत्नी के लिए बीमारी की समस्याएं दिखा रहा है।

चन्द्रमा 5वें भाव में स्थित होकर संतान से संबंधित प्रश्न दिखा रहा है। यह राहु/केतु से पीड़ित शुक्र के नक्षत्र में है। 5वें भाव में स्थित द्वादशेश चन्द्रमा प्रश्न के लिए अनुकूल नहीं है, तब जबकि यह किसी शुभ दृष्टि से रहित है। 5वें भाव में शुक्र के नक्षत्र में चन्द्रमा लड़की बताता है जबकि विषम राशि में पंचमेश बृहस्पति के साथ-साथ विषम भाव में शनि, दोनों लड़का बताते हैं, लेकिन यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका उत्तर हमें बच्चे की सकुशल प्रसूति के निर्णय के उपरांत देना चाहिए।

5वें भाव में चन्द्रमा और 8वें भाव में मंगल अत्यंत निकट पूर्ण इत्थसाल में हैं जो एक खतरनाक स्थिति है जिससे गर्भाशय में बच्चे की मृत्यु भी हो सकती है। 8वें भाव में केवल मंगल की उपस्थिति ही गर्भपात दे सकती है जबकि यहां तो मंगल 5वें भाव में स्थित चन्द्रमा के साथ निकट संबंध में है। चन्द्रमा और मंगल शत्रु दृष्टि में 1° के भीतर पूर्ण इत्थसाल में हैं। अतः प्रश्न के समय पर कुछ समस्याएं उत्पन्न हो चुकी थीं। ऐसे मामलों में, पीड़ित बृहस्पति और चन्द्रमा गर्भाशय या डिंबग्रंथियों से संबंधित समस्या दिखाता है। यहां दोनों पीड़ित हैं। बच्चों के कारक के साथ-साथ पंचमेश बृहस्पति न केवल वक्री है बल्कि 8वें भाव से मंगल से दृष्ट भी है। अतः 5वें भाव में स्थित चन्द्रमा के साथ-साथ कारक बृहस्पति भी 8वें भाव से मंगल से पीड़ित है। उसी प्रकार, लग्नेश सूर्य और सप्तमेश शनि भी समान अंशों में होने के कारण अष्टमेश से पीड़ित हैं।

कारक बृहस्पति से विश्लेषण करने पर, पंचमेश शनि, षष्ठेश बृहस्पति और द्वादशेश बुध के समान अंशों में बच्चे के लिए समस्याएं सूचित कर रहा है। बृहस्पति और पंचमेश शनि दोनों, अष्टमेश शुक्र के साथ इत्थसाल में हैं। कारक बृहस्पति से, द्वादशेश बुध पापकर्तरी योग में एवं अस्त है और शनि से दृष्ट होकर गर्भाशय में बच्चों का नाश बता रहा है। राहु और केतु पंचमेश और लग्नेश को पीड़ित करने के लिए थोड़ी देर में राशि परिवर्तन करेगा।

प्रश्नकर्ता के मन में एकाधिक चिंता के सिद्धान्तों को मूक प्रश्न वाले अध्याय में विवेचित किया गया है। इस मामले में, शनि लग्न और लग्नेश दोनों को देख रहा है अतः यहां दो प्रश्न हैं। लग्न और चन्द्रमा 10वें भाव में स्थित दशमेश शुक्र के नक्षत्र में हैं। प्रश्नकर्ता ने पुष्ट किया कि वह एक साक्षात्कार

के द्वारा नौकरी की संभावना भी जानना चाहता है, जो हाल ही में, उसकी पत्नी द्वारा दिया गया है।

संतान पर अपने विश्लेषण पर वापस आते हैं। 5वें भाव में चन्द्रमा लग्न के समान अंशों में बताता है कि महिला थोड़े समय बाद पुनः गर्भधारण करेगी।

इस प्रश्न की सप्तमांश कुंडली

	चन्द्रमा	शनि राहु	
	सप्तमांश डी - 7		सूर्य बुध
बृ० (व) मंगल शुक्र			
लग्न	केतु		

मंगल शुक्र बृ० (व) 10
11
लग्न
केतु 8
7
9
12
6
3
1
चन्द्रमा
2
शनि राहु
5
4
बुध सूर्य

अष्टमेश चन्द्रमा, द्वादशेश मंगल से दृष्ट होकर 5वें भाव में है। पंचमेश मंगल उच्च का होकर बृहस्पति और षष्ठेश शुक्र के साथ स्थित है। बृहस्पति प्रश्नकुंडली का पंचमेश भी है जो संतान का कारक होकर सप्तमांश में नीच है और षष्ठेश शुक्र और द्वादशेश मंगल के साथ स्थित है।

घटना का समय निर्धारित करने के लिए, लग्नेश सूर्य पंचमेश बृहस्पति के साथ निकटतम ताजिक योग में है जो एक इशराफ की स्थिति है। सूर्य का निकटतम इत्थसाल 0°4' की दूरी पर बुध के साथ है। दोनों आपोक्लीम भाव में स्थित हैं और चर राशि महीने दिखा रही है। स्थिर लग्न के साथ यह वर्षों में समय देता है। 1° के अनुपात में 0°4' को एक वर्ष के बराबर दिनों में परिवर्तित करने पर, हम 24 दिन पाते हैं। प्रश्न से ठीक 24 दिन बाद 23 मई 1994 को, जब चन्द्रमा पंचमेश/अष्टमेश बृहस्पति के ऊपर संचरण कर रहा था, तब बच्चा गर्भाशय में स्वतः मर गया।

उदाहरण संख्या : 3

गर्भपात

प्रश्न बच्चे के जन्म से संबंधित था। स्थिर लग्न स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं दिखा रहा। लग्न राहु के नक्षत्र में है जो चन्द्रमा और कारक बृहस्पति को पीड़ित कर रहा है। वक्री लग्नेश शनि लग्न में राहु के नक्षत्र में स्थित है।

	केतु 28°08'	मंगल 15°52'	बुध 10°41'
लग्न 12°04' शनि (व) 18°08'	उदाहरण : 3 रात्रि 9:30 17 जुलाई 1994 नई दिल्ली		सूर्य 1°03'
			शुक्र 13°24'
		राहु 28°08' बृ 11°21' चन्द्र 22°27'	

सप्तमेश सूर्य ने अभी बीमारी के भाव, 6ठें भाव में प्रवेश किया है। यह एक अनुकूल संकेत नहीं है, क्योंकि बच्चे की सकुशलता के अतिरिक्त हमें मां की स्थिति को भी देखना है।

पंचमेश बुध अष्टमेश भी है। मैं टिप्पणी कर चुका हूं कि प्रश्नों में, जहां कार्येश एक अष्टमेश भी हो तो प्रश्न की कार्य सिद्धि संदेहास्पद हो जाती है। कार्येश बुध राहु के नक्षत्र में और बृहस्पति के निकट अंशों में है। लग्नेश और कार्येश घटनाओं के समय की गणना में सहयोग देते हैं।

कारक बृहस्पति से गणना करने पर, पंचमेश शनि अष्टमेश शुक्र से दृष्ट है। 7वां भाव केतु द्वारा गृहीत है और सप्तमेश मंगल 8वें भाव में स्थित है। गर्भपातों और गर्भस्त्रावों का कारक मंगल 8वें भाव में स्थित होकर अष्टमेश शुक्र पर दृष्टि डाल रहा है। कारक षष्ठेश बृहस्पति लग्न में, राहु/केतु अक्ष में स्थित है। लग्न से विश्लेषण करने पर, कारक बृहस्पति षष्ठेश चन्द्रमा, राहु/केतु अक्ष और द्वादशेश शनि से पीड़ित है यदि हम वक्री दृष्टि लें तो। कार्येश बुध संतान के कारक बृहस्पति से 0°40' की दूरी पर निकटतम इत्थसाल में है। द्विस्वभाव और पणफर भाव में बुध वर्षों को प्रदान करता है, आपोक्लीम भाव और चर राशि में बृहस्पति महीने प्रदान करता है। स्थिर लग्न के साथ संयुक्त करने पर, यह संतान की प्राप्ति में विलंब देंगे।

कुंडली में गर्भ की सुरक्षा के लिए संकेत अनुकूल नहीं हैं। जब कभी बृहस्पति पीड़ित हो तो, जैसा कि इस मामले में राहु/केतु अक्ष में, षष्ठेश चन्द्रमा और अष्टमेश बुध के साथ निकटतम इत्थसाल में है, तो गर्भाशय में भ्रूण के विकास के संकट की स्थिति बताता है। गर्भपात और गर्भास्त्राव के लिए उत्तरदायी ग्रह मंगल, वक्री लग्नेश शनि के साथ निकटतम इत्थसाल में 2°16' की दूरी पर रद्द योग दिखा रहा है तथा समयावधि में सप्ताहों का संकेत कर रहा है। इस अंश को समय में परिवर्तित करने पर, हम 16 दिन

प्राप्त करते हैं और प्रश्न के दिन 17 जुलाई 1994 रात्रि 9:30 बजे से गिनने पर 16वां दिन 1 अगस्त और 2 अगस्त 1994 पड़ता है। 2 अगस्त 1994 को बच्चा गर्भपात के कारण नष्ट हो गया।

2 अगस्त 1994 का गोचर

	केतु	चन्द्रमा मंगल	
लग्न शनि (व)	गोचर 2 अगस्त 1994		सूर्य बुध
		बृहस्पति राहु	शुक्र

पंचमेश (बच्चा) और सप्तमेश (पत्नी, बच्चे की मां) दोनों बिना किसी शुभ दृष्टि के 6ठे भाव में चले गए हैं। षष्ठेश चन्द्रमा मंगल के साथ है और उनका राशीश शुक्र 8वें भाव में नीच का है। कारक बृहस्पति राहु/केतु अक्ष में है। ये सभी गोचरीय स्थितियां गर्भपात के कारण बच्चे के नाश को पूरी तरह तर्कसंगत ठहराती हैं।

उदाहरण संख्या : 4

लड़का होगा अथवा लड़की

	केतु 21°01'		
श (व) 11°54'	उदाहरण : 4 प्रातः 10:35 6 नवम्बर 1994 नई दिल्ली		मंगल 23°05'
लग्न 11°22'	चंद्रमा 26°59'	सूर्य 19°46' बुध 1°02' शुक्र (व) 14°34' बृ० 28°53' राहु 21°01'	

पृष्ठोदय और द्विस्वभाव लग्न प्रश्न के लिए अनुकूल नहीं है। अजन्में बालक के लिंग को जानने के प्रश्न में अधिकांश मामलों में आधारभूत इच्छा लड़का प्राप्त करने की होती है। इस तथ्य के बावजूद कि इच्छा मुक्त रूप

से व्यक्त की गई है या नहीं। लग्न केतु के नक्षत्र में है जो 5वें भाव में स्थित है और इसीलिए प्रश्न संतान से संबंधित हैं। चन्द्रमा 12वें भाव में नीच है और द्वादशेश मंगल 8वें भाव में नीच है अतः एक ग्रह परिवर्तन योग है। जब कभी 3, 6, 8 या 12वें भावों के स्वामी इन्हीं भावों में स्थित होकर बलहीन भी हों तो वे अच्छे परिणाम देते हैं और इसीलिए मंगल और चन्द्रमा दोनों की नीच स्थिति इस अवस्था को संतुष्ट करती है। वे कोई हानि नहीं पहुंचाएंगे और वास्तव में, इस कुंडली में अनुकूल परिणाम देंगे।

शुक्ल पक्ष के समय पूछा गया प्रश्न जहां चन्द्रमा 12वें भाव में, जैसा कि इस मामले में है, सूचित करता है कि बच्चा गर्भाशय में जीवित रहेगा। 5वां भाव राहु/केतु अक्ष में है, लेकिन तीनों शुभ ग्रहों बृहस्पति, शुक्र, बुध और नवमेश सूर्य से दृष्ट है। यद्यपि पुरुष ग्रह पंचमेश स्त्री राशि में है लेकिन नीच है। जब कभी एक पुरुष ग्रह नीच होता है, तो लड़की देता है। 5वें भाव में स्थित केतु, शुक्र के नक्षत्र में स्थित होकर, पुनः लड़की दर्शा रहा है।

बच्चे के जन्म या गर्भावस्था के समय की गणना में, गर्भावस्था की आयु को महीनों में देने हेतु लग्न नवांश को मानने का एक दृष्टिकोण है। लेकिन प्रश्न कुंडली में समय की उत्तम विधि शुक्र स्थापन द्वारा दी गई है। लग्न से गिनने पर, यह गर्भावस्था की अवधि महीनों में देता है। यदि शुक्र 9वें भाव से आगे स्थित हो तब 5वें भाव से शुक्र की स्थिति गिनिए। इस प्रकार प्रश्न के दिन पर गर्भावस्था लगभग 7 माह थी और जनवरी 1995 में लड़की का जन्म हुआ।

उदाहरण संख्या : 5

मैं कब संतान प्राप्त करूंगा

लग्न 12°00'	क्षेत्र स्फुट 17°38'	बीज स्फुट 1°46' केतु 26°06'	मंगल (व) 22°35'
शुक्र 14°05'	उदाहरण : 5 प्रातः 11:15 11 जनवरी 1993 नई दिल्ली		
शनि 23°42'			चंद्रमा 4°37'
बुध 19°37' सूर्य 27°15'	राहु 26°06'		बृहस्पति 20°26'

2 क्षेत्र स्फुट 17°38'
शुक्र 14°05'
बीज स्फुट 1°46' केतु 26°06' 1
लग्न 12°00'
11
10 शनि 23°42'
मंगल (व) 22°35'
12
3
9 बुध 19°37' सूर्य 27°15'
6
बृहस्पति 20°26'
4
5 चंद्रमा 4°37'
8 राहु 26°06'
7

उभयोदय लग्न अच्छे अथवा बुरे परिणाम देने में मध्यम है और द्विस्वभाव लग्न इच्छाओं की शीघ्र पूर्ति के लिए अनुकूल नहीं है। लग्नेश बृहस्पति 7वें भाव में पंचमेश चन्द्रमा के नक्षत्र में है। पंचमेश प्रश्नकर्ता की संतान

प्राप्ति की इच्छा दिखा रहा है। कार्येश चन्द्रमा 6ठे भाव में केतु के नक्षत्र में बीमारी की स्थिति दिखा रहा है। कारक बृहस्पति से विश्लेषण करने पर पंचमेश/षष्ठेश शनि अष्टमेश मंगल से दृष्ट होकर संतान-प्राप्ति में समस्याएं दिखा रहा है। इस संकेत को पुष्ट करने के लिए, हमें बच्चा देने में बीज और क्षेत्र की शक्ति और क्षमता जानने के लिए बीज स्फुट और क्षेत्र स्फुट की गणना अवश्य करनी चाहिए।

प्रश्न कुंडली का बीज स्फुट है :

बृहस्पति	$5^{\text{रा}}$	20°	26'
सूर्य	$8^{\text{रा}}$	27°	15'
शुक्र	$10^{\text{रा}}$	14°	05'
बीज स्फुट	$15^{\text{रा}}$	01°	46'

प्रश्न कुंडली का क्षेत्र स्फुट है :

बृहस्पति	$5^{\text{रा}}$	20°	26'
चन्द्रमा	$4^{\text{रा}}$	04°	37'
मंगल	$2^{\text{रा}}$	22°	35'
क्षेत्र स्फुट	$12^{\text{रा}}$	17°	38'

बीज स्फुट सम राशि में स्थित है और क्षेत्र स्फुट विषम राशि में, अतः न तो बीज में प्रजनन की शक्ति है और न ही क्षेत्र विकास को पुष्ट रखने की शक्ति रखता है। बीज स्फुट वृषभ राशि में है जो कि राहु केतु अक्ष में है, लेकिन 7वें भाव से बृहस्पति से दृष्ट भी है। बीज स्फुट का स्वामी शुक्र 12वें भाव में चला गया है। अतः बीज स्फुट अत्यंत पीड़ित है। बीज स्फुट से 7वें भाव में बिना किसी शुभ प्रभाव के स्थित राहु प्रवाही नलिका में रुकावट दिखा रहा है, वह मार्ग, जिसमें से शुक्राणु यात्रा करता है। लग्न से 6ठे भाव में स्थित चन्द्रमा केतु के नक्षत्र में है और 12वें भाव से अष्टमेश शुक्र से दृष्ट होकर यह अत्यन्त पीड़ित स्थिति अंडाशय के विकास में समस्याएं दिखाती है, जिसे डिम्बजन कहा जाता है। प्राकृतिक भचक्र के छठे भाव कन्या में पीड़ित बृहस्पति और मंगल की दृष्टि वह समस्याएं दिखाती हैं जहां गर्भाशय में भ्रूण का विकास नहीं होता।

इस कुंडली में संतान प्राप्ति में कठिनाइयाँ दिखाने वाले अन्य अनेक योग हैं। लग्न द्वादशेश शनि के नक्षत्र में और शनि से दृष्ट है। पंचमेश चन्द्रमा केतु के नक्षत्र में है। 5वां भाव शनि से दृष्ट है और शनि पंचमेश मंगल से दृष्ट है। कारक बृहस्पति से विश्लेषण करने पर 5वें भाव में, मंगल से

दृष्ट शनि है। लग्नेश बुध द्वादशेश सूर्य के साथ और अष्टमेश मंगल से दृष्ट है। पंचमेश शनि 5वें भाव में अष्टमेश मंगल की दृष्टि और नक्षत्र में है। चूंकि संतान के गोद लेने के योग उपस्थित नहीं है, हमें अन्य प्रकार के उपायों को देखना पड़ेगा।

क्षेत्र स्फुट बिना किसी दृष्टि के मेष में स्थित है और क्षेत्र का स्वामी मंगल षष्ठेश सूर्य और चतुर्थेश/सप्तमेश बुध से दृष्ट है। बीज के उपचार के लिए उम्मीद है क्योंकि यह बीमारी के भाव, 7वां भाव से बृहस्पति से दृष्ट है। बीज स्फुट के राहु/केतु अक्ष में होने के कारण अपरम्परागत उपचार करना पड़ेगा। क्षेत्र स्फुट का स्वामी मंगल षष्ठेश सूर्य और क्रमशः उपचार और बीमारी के भावों के स्वामी चतुर्थेश/सप्तमेश बुध से दृष्ट हैं अतः स्त्री और पुरुष दोनों को अपनी बीमारी अथवा कमियों की निजी स्थितियों का उपचार अवश्य कराना चाहिए।

इस मामले में कोई प्रगति नहीं हुई है और दम्पति अभी भी संतान हीन हैं। लेकिन अब तक कोई उपचार लिया गया प्रतीत नहीं होता, जैसा कि सुझाया गया था।

12
व्यवसाय, व्यापार, रोजगार

हम एक व्यावसायिक, व्यावहारिक और संवेदनहीन संसार में रह रहे हैं जहां भावनाएं भौतिकवाद की ओर उन्मुख हो चुकी हैं। प्रतिस्पर्द्धा और होड़ के इस युग में सम्पूर्ण प्रयासों को उपलब्धियों की ओर निर्देशित कर दिया है जहां भावनात्मक अथवा आध्यात्मिक विकास के लिए कोई गुंजाइश नहीं है। अतः बहुत कम व्यक्ति ज्योतिषी के पास मुक्ति का प्रश्न पूछने के लिए आते हैं। प्रत्येक प्रश्नकर्ता केवल व्यवसाय से संबंधित आर्थिक सम्पन्नता, व्यापार, नौकरी, जीविका में उतार-चढ़ाव की चिन्ताओं, प्राप्तियों और हानियों, अथक परिश्रम और मुसीबतों के बारे में जानने की इच्छा रखता है।

उपलब्धियों की यह दौड़ लोगों को अपनी नौकरियां या व्यवसाय बदलने की इतनी तीव्र लालसा देती है जितना कि हम कभी सोच भी नहीं सकते। वास्तव में, यह ज्योतिषी पर परामर्श देने के लिए दबाव बढ़ा देती है कि क्या नौकरी अथवा व्यापार का आगामी परिवर्तन अनुकूल और संस्तुत करने योग्य है? इसी प्रकार बदलते समय में व्यावसायिक क्षेत्रों की बढ़ती संख्या के साथ अध्ययन या विशिष्टीकरण के क्षेत्र में परामर्श देने के लिए अनिवार्यतः ज्योतिष में शोध रखने की आवश्यकता है। कुछ वर्ष पहले, हम ज्ञान के नवीन क्षेत्रों की चर्चा करते थे, जैसे संगणक। लेकिन अब संगणकों (कम्प्यूटर) में विशिष्टीकरण के दूसरे क्षेत्र उभर आए हैं, जैसे कृत्रिम बुद्धि, तंत्रिकीय जाल, विकसित यंत्र मानव आदि। अत्यंत तीव्रता से उभर रहे इन क्षेत्रों का संकेत करने के लिए ज्योतिषी को न केवल भली प्रकार अध्ययन करना चाहिए बल्कि सामान्य ज्ञान में भी परिपूर्ण होना चाहिए।

इस अध्याय में, व्यवसाय और नौकरी और उनसे संबंधित सभी पहलुओं पर बल दिया गया है।

व्यवसाय का प्रकार

व्यवसाय के प्रकार का निरीक्षण करने की अनेक विधियां हैं। इसमें दशमेश और 10वें भाव का परीक्षण, उनकी राशियां, स्थापन और दृष्टियां, दशमांश

कुंडली का विश्लेषण इत्यादि अवश्य शामिल करना चाहिए। नीचे दिया गया वर्गीकरण सामान्य और केवल संकेतपरक है। व्यावहारिक रूप से व्यवसाय की पहचान करने के विशिष्ट योगों को प्रयुक्त करना चाहिए।

10वें भाव में, मेष, सिंह और धनु-अग्नि राशियां शल्य-चिकित्सक, इंजीनियर जैसे व्यवसायों को दर्शाती हैं। ऐसे लोग जो अग्रयामी या अन्वेषक हों और अपने समय से आगे हों, यह दर्शाती हैं। यह व्यवसाय अग्नि, नवाचारों, ताप तथा ऊर्जा अथवा तकनीकी क्षेत्रों के साथ जुड़े हो सकते हैं।

10वें भाव में, वृष, कन्या, और मकर-पृथ्वी राशियां पृथ्वी से जुड़े हुए व्यवसाय देती हैं, जैसे कृषक, खनिज, भूगर्भवेता, श्रमिक, मार्गवाहक, रेलवे आदि।

10वें भाव में मिथुन, तुला और कुंभ-वायु राशियां उच्च स्तर के व्यवसाय प्रदान करती हैं जैसे परिभार्जन से संबंधित व्यवसाय, पाण्डित्य बौद्धिक कार्य करने वाला लेखक, कलाकार तथा जो लेखा, कागजों, दस्तावेजों से संबंधित होते हैं, जैसे लेखाकार, वकील, प्रबंधन सलाहकार आदि।

10वें भाव में कर्क, वृश्चिक और मीन-जलीय राशियां तरल पदार्थों, नौसेना कर्मचारी, मछुआरे, औषध-विक्रेता, तैराक, चालक, पैट्रोलियम उत्पादों का व्यापारी आदि से संबंधित व्यवसायों को देती हैं।

नौकरी की प्राप्ति

लग्न में उदित स्थिर राशि नियुक्ति प्राप्ति के लिए अनुकूल है। लग्नेश का कार्येश दशमेश के साथ किसी भी रूप में संबंध शीघ्र रोजगार प्राप्ति की ओर संकेत करता है। यदि लग्नेश और दशमेश के इस योग में, सूर्य भी शामिल हो, तो निश्चित रूप से नौकरी प्राप्त होती है क्योंकि सूर्य प्रभुत्व अथवा सरकार का कारक है और प्रश्न कुंडली में इसका बल नौकरी के प्रकार के निर्धारण में निर्णायक घटक है, जो एक व्यक्ति प्राप्त करेगा। अनुकूल स्थिति में सूर्य, जैसे मित्र राशि में नवांश और दशमांश में शुभ भाव में, नौकरी प्रदान करता है, लेकिन अशुभ भावों और नवांश और दशमांश में शत्रु राशियों में असफलता का प्रतीक होता है।

सूर्य के पद, प्रभुत्व या सरकार का कारक होने के समान चन्द्रमा मानसिक अभिरुचि बताता है और इसीलिए प्राप्त परिणामों में उपस्थित इच्छित प्रयासों के लक्ष्य को प्रकट करता है। नौकरी या व्यवसाय आर्थिक समृद्धि की संरचना को निर्धारित करता है तथा भाग्य, कर्म और इससे प्राप्त लाभों का सम्मिश्रण है। 9वें, 10वें या 11वें भाव में स्थित ग्रहों या उनके स्वामियों के साथ लग्नेश या चन्द्रमा का संबंध नौकरी प्राप्ति की इच्छा की शीघ्र पूर्ति का एक योग है।

चन्द्रमा का सहयोग सम्मानित उच्च पद प्रदान करता है अन्यथा नौकरी सामान्य या निम्न पद वाली होगी।

केन्द्रों और त्रिकोणों में शुभ ग्रह अनुकूल हैं। आधारभूत रूप से नौकरी, व्यवसाय या व्यापार अधिकतम उपलब्धियों की ओर निर्देशित है, अतः 11वें भाव में बलवान शुभ ग्रह की उपस्थिति शीघ्र नौकरी प्राप्त करने के लिए अत्यंत अनुकूल है।

नौकरी दो विधियों के द्वारा संभव है लिखित परीक्षा और साक्षात्कार। लिखित परीक्षा में सफलता के लिए लग्नेश का तृतीयेश, दशमेश और एकादशेश के साथ अनुकूल संबंध होना चाहिए। इसी प्रकार, साक्षात्कार में सफलता के लिए लग्नेश का द्वितीयेश, दशमेश और एकादशेश के साथ अनुकूल संबंध वांछनीय है।

अनुकूल नौकरी की प्राप्ति

लग्नेश और दशमेश के सभी अनुकूल योग, जैसे, मित्र इत्थसाल, पाप ग्रहों और स्वामियों के प्रभाव के बिना लग्न, 10वें भाव या अन्य शुभ भावों में स्वराशि या उच्च राशियों में लग्नेश और दशमेश की स्थिति अनुकूल और इच्छित नौकरी देते हैं। चन्द्रमा का लग्नेश या दशमेश से इत्थसाल, स्थिति या दृष्टि द्वारा संबंध सम्मानित उच्च पद प्रदान करता है।

स्थायी अथवा अस्थायी नौकरी

लग्नेश का दशमेश के साथ सकारात्मक संबंध या योग स्थायी नौकरी प्रदान करता है। जब शनि केन्द्र में स्थित हो तब भी नौकरी स्थायी होती है। स्थायी नौकरी आय का नियमित प्रवाह देती है और इसीलिए द्वितीयेश और एकादशेश के साथ लग्नेश का संबंध या परस्पर दृष्टि आय के नियमित अंतर्प्रवाह के साथ स्थायी नौकरी देती है। केन्द्र में स्थित मंद गति ग्रह के साथ लग्नेश और दशमेश की युति भी स्थायी नौकरी देती है। लग्नेश और दशमेश के बीच इशराफ अस्थायी नौकरी दर्शाता है। जब कभी लग्नेश और दशमेश कमजोर, अस्त और नीच हैं तो नौकरी अस्थायी है। वास्तव में, कमजोर लग्नेश और दशमेश की चन्द्रमा के साथ युति बताती है कि नौकरी अस्थायी होने के बावजूद चलते रहने की संभावना है और इसे अर्ध-स्थायी कहा जा सकता है

नौकरी का स्थान

सामान्यतः प्रश्नकर्ता द्वारा नौकरी का स्थान पूछा जाता है और यदि यह स्थान अनुकूल हो तभी वह अपनी क्षमताओं को उस दिशा में लगाए। सामान्य रूप

से कहा जाता है कि केन्द्र में स्थित बलवान ग्रह नौकरी प्राप्त होने की दिशा बताता है जैसा कि प्रथम अध्याय में दिया गया है। यदि केन्द्र में कोई ग्रह स्थित नहीं है तब दिशा ज्ञात करने के लिए उदित राशि से दिशा देखें। यदि लग्नेश और दशमेश लग्न में अथवा 10वें भाव में संयुक्त रूप से स्थित हैं, तब नौकरी वहां प्राप्त होती है जहां प्रश्नकर्ता रहता है। दूसरी ओर, यदि वे 12वें भाव/द्वादशेश के साथ संयुक्त है, तब नौकरी किसी दूर के स्थान पर है। जब लग्नेश और दशमेश तृतीयेश या नवमेश के साथ संबद्ध हैं तो स्थान क्रमशः निकट या दूर है। यदि लग्नेश या दशमेश वक्री ग्रह के साथ इत्थसाल रखें और कुंडली शीघ्र नौकरी बताए, तब नौकरी का स्थान परिवर्तित हो जाता है।

नौकरी प्राप्त करने में बाधाएँ या नौकरी का निषेध

शीघ्र नौकरी प्राप्त करने के योगों को पिछले पृष्ठों में दिया गया है लेकिन प्रायः नौकरी प्राप्त करना इतना आसान नहीं है। जब कभी लग्नेश और दशमेश 6, 8, 12वें भाव या 6, 8, 12वें भाव के स्वामियों से संबंध रखते हैं, तब यह तनाव और बाधाएं देता है। इसी प्रकार लग्नेश और दशमेश का राशीश 6, 8, 12वें भावों में बाधाएं प्रदान करता है। नीच, अस्त, 6, 8, 12वें भावों में लग्नेश की स्थिति और पाप ग्रहों के साथ संबंध बहुत तनाव तथा देरी देता है और पीड़न की प्रचंडता पर निर्भर होकर नौकरी की प्राप्ति का निषेध करता है।

ऊपर विवेचित शीघ्र नौकरी-प्राप्ति के योग जब प्रश्न कुंडली में अनुपस्थित हों तो असफलता की ओर संकेत होता है तथा नौकरी नहीं मिलती। लग्नेश और दशमेश के बीच जब मंदगति ग्रह पाप ग्रहों से पीड़ित होकर मणऊ योग का उलट योग बनाए तो नौकरी की संभावना करीब होने के बावजूद प्रश्नकर्ता को नौकरी नहीं मिलती।

लग्न या 10वें भाव में मंदगति ग्रह, अथवा प्रश्न कुंडली में कमजोर चन्द्रमा उपयुक्त नौकरी प्राप्त करने में अनेक बाधाओं और तनावों को इंगित करता है। इसके अतिरिक्त, यदि लग्नेश और दशमेश के बीच इत्थसाल भी है तो नौकरी बाधाओं और बिलम्ब के बाद प्राप्त होती है। यदि लग्नेश और दशमेश के बीच ऐसा कोई योग नहीं है तो नौकरी नहीं मिलती।

नौकरी का छूटना

लग्नेश और दशमेश चौथे भाव में स्थित वक्री अथवा मंदगति ग्रह के साथ संबंध रखें तो नौकरी निलंबन के कारण छूट जाती है। यदि दशमेश अपनी

नीच राशि के स्वामी के साथ स्थिति या दृष्टि द्वारा संबंध या इत्थसाल रखे तो नौकरी निलंबन के कारण छूट जाती है। जैसे तुला लग्न में दशमेश चन्द्रमा है तथा चन्द्रमा की नीच राशि वृश्चिक है जिसका स्वामी मंगल है। जब चन्द्रमा मंगल के साथ संबंध या इत्थसाल रखे तो निलंबन के कारण नौकरी छूट जाती है। यदि इस इत्थसाल अथवा संबंध में द्वितीयेश या एकादशेश भी सम्मिलित हो तो भ्रष्टाचार के आरोपों के कारण नौकरी छूट जाती है। उपरोक्त सभी मामलों में, यदि चन्द्रमा योग में शामिल हो जैसे कंबूल योग (सिवाय वहां, जहां चन्द्रमा स्वयं इस योग का निर्माण करे) या जहां बृहस्पति इस योग को दृष्टि या युति द्वारा प्रभावित करे तो निलंबन रद्द हो जाता है और नौकरी बहाल हो जाती है।

कुछ मामलों में, निलंबन दण्ड की प्रक्रिया का भी संकेत करता हैं। जब केन्द्र और त्रिकोण पाप ग्रहों द्वारा गृहीत हों, 10वें भाव में पाप ग्रह हो और यह पाप ग्रह द्वादशेश के साथ इत्थसाल में हो या जब लग्नेश और दशमेश 6, 8, या 12वें भाव में पाप ग्रहों के प्रभाव में हों, तब अभियुक्त व्यक्ति अपने कर्मों के लिए दंड पाता है। ये परिणाम सावधानीपूर्वक देखने चाहिएं। शुभ ग्रहों का प्रभाव ऐसे पीड़ित लग्नेश और दशमेश को बचा सकता है, लेकिन जब शुभ ग्रह और चन्द्रमा अस्त या नीच हों तब ऐसे शुभ ग्रह भी दण्ड से नहीं बचा सकते और नौकरी की संभावित क्षति बताते हैं। चौथे भाव में पाप दृष्टि से पीड़ित मंदगति ग्रह प्रतिष्ठा की हानि दर्शाता है।

पदोन्नति

जीविका की ओर अभिमुख व्यक्ति के मन में यह एक सामान्य चिन्ता है कि पदोन्नति होगी या नहीं। लग्नेश, दशमेश और चन्द्रमा अनुकूल संबंध या योग में, जैसा कि ऊपर व्याख्यायित है, चर राशियों में स्थित होकर त्वरित पदोन्नति की ओर संकेत करते हैं। स्थिर राशियों में इसका निषेध है और द्विस्वभाव राशि में पदोन्नति में विलम्ब है। लग्न, लग्नेश, 10वें भाव या दशमेश के साथ शुभाशुभ ग्रहों के संबंध पर निर्भर करता है कि यह देरी सफलता में परिवर्तित होगी या असफलता में।

स्थानांतरण

स्थानांतरण या निवास परिवर्तन को षट्पंचासिका में च्युति नाम दिया गया है जिसका तात्पर्य पद से नीचे गिरना भी है। वर्तमान सन्दर्भ में स्थानांतरण का तात्पर्य सदैव पद से गिरना नहीं है बल्कि पदोन्नति भी हो सकता है, जैसा कि अनेक मामलों में, स्थानांतरण पदोन्नति से जुड़ा होता है।

किसी स्थानांतरण के लिए आधारभूत नियम है कि लग्न में चर राशि हो, जिसका सामान्यतः अर्थ है कि 10वें भाव में भी चर राशि हो। विश्लेषण में एक प्रमुख निर्णय यह है कि क्या प्रश्नकर्ता स्थानांतरण चाहता है अथवा नहीं। शुभ ग्रहों से दृष्ट चर लग्न स्थानांतरण देता है जो इच्छित भी है। लग्नेश का तृतीयेश या नवमेश के साथ संबंध या दृष्टि स्थानांतरण देती है। तीसरा भाव छोटी यात्रा बताता है और नवां भाव लम्बी यात्रा। लग्न में स्थित नवमेश अथवा लग्न या लग्नेश को देख रहा 9वें भाव में स्थित ग्रह भी स्थानांतरण देता है।

सामान्यतः कोई भी व्यक्ति अपने निवास-स्थान से दूर जाता है जब चौथा भाव पीड़ित हो। अतः लग्नेश और चौथे भाव पर पाप प्रभाव वर्तमान स्थान पर समस्याएं उत्पन्न करके स्थानांतरण दर्शाते हैं।

प्रश्न कुंडली में उच्च या बलवान कार्येश दशमेश स्थानांतरण के योगों के साथ पदोन्नति के साथ स्थानांतरण देता है। लग्न या 10वें भाव में कार्येश या दशमेश स्थानीय स्थानांतरण बताता है। यह तब भी होता है जब चन्द्रमा 10वें भाव में स्थित हो। जब कभी दशमेश या चन्द्रमा वक्री ग्रह के साथ युति दृष्टि या निकटतम ताजिक योग बनाए तो स्थानांतरण के आदेश रद्द हो जाते हैं और प्रश्नकर्ता अपनी पसन्द का स्थान प्राप्त करता है।

सामान्यतः तीसरा भाव और नौवां भाव क्रमशः निकट की अथवा दूरस्थ स्थान की गतिविधि दिखाता है। चौथा भाव व्यक्ति का निवास स्थान है। इन तीनों के बीच कोई संबंध स्थानांतरण दिखाता है, लेकिन यदि मंदगति ग्रह बृहस्पति या शनि मार्गी अवस्था में इस संबंध में सम्मिलित हो तो कोई स्थानांतरण नहीं है। यदि इन मंदगति ग्रहों में से कोई वक्री अवस्था में है तो स्थानांतरण का आदेश रद्द हो जाता है।

नौकरी में परिवर्तन

महत्त्वाकांक्षी व्यक्तियों के मन में एक प्रमुख चिन्ता या आकांक्षा रहती है कि किसी भी कीमत पर सफलता प्राप्त करने के लिए उद्यमशील रहना है। इसीलिए जीवन में उन्नति के तीव्र पथ पर बढ़ने के लिए नौकरियों में परिवर्तन महत्वपूर्ण है, लेकिन प्रायः इस परिवर्तन का निर्णय करना कठिन होता है।

यह विवेचित किया जा चुका है कि तृतीयेश और नवमेश के साथ लग्नेश का संबंध स्थानांतरण या स्थिति में परिवर्तन देता है, लेकिन जब वक्री लग्नेश, तृतीयेश या नवमेश के साथ सम्बन्ध बनाए तो यह पद या नौकरी में परिवर्तन देता है। यह फलित का एक प्रमुख क्षेत्र है और मेरी दृष्टि में, लग्नेश/दशमेश के साथ अष्टमेश या पाप ग्रहों के बीच इशराफ वर्तमान नौकरी में असहनीय

स्थिति उत्पन्न कर देते हैं जो व्यक्ति को नई दिशाओं और पथ पर चलने के लिए परिवर्तन की ओर प्रेरित करता है। यह देखने के लिए कि क्या परिवर्तन वांछनीय होगा या नहीं। यदि लग्नेश/दशमेश शुभ ग्रहों के साथ इत्थसाल रखें और शुभ भावों में स्थित हों तो परिवर्तन अनुकूल होगा यदि यही इत्थसाल पाप ग्रहों और 6, 8, 12वें भाव के स्वामियों के साथ हो तो नई नौकरी तनावों, बाधाओं और समस्याओं से पूर्ण होगी।

वर्तमान नौकरी लग्न से और भावी नौकरी 7वें भाव से देखी जाती है। यदि लग्नेश दशमेश के साथ इत्थसाल और चन्द्रमा के साथ कम्बूल योग बनाए, तो वर्तमान नौकरी में लगे रहना ही उपयुक्त है। दूसरी ओर, यदि सप्तमेश दशमेश और चन्द्रमा के साथ इत्थसाल बनाए तो नौकरी में परिवर्तन की संस्तुति की जाती है जहां भविष्य, समृद्धि का आश्वासन देता है।

उदाहरण संख्या : 1

नौकरी से त्याग पत्र

शनि 8°37' केतु 22°12'	मंगल 2°55' सूर्य 14°36'	बुध 3°27' शुक्र 26°40'	
	उदाहरण संख्या : 1 सायं 3:45 बजे 28 अप्रैल 1996 नई दिल्ली आरूढ़ से लग्न		
			चन्द्रमा 13°05'
बृहस्पति 23°47'		लग्न 6°40' से 10°00'	राहु 22°12'

चर और शीर्षोदय लग्न वर्तमान स्थिति में अनुकूल परिवर्तन दिखा रहा है। लग्न 12वें भाव में स्थित राहु के नक्षत्र में स्थित होकर हानि दर्शा रहा है, तब जब दशमेश चन्द्रमा केतु के नक्षत्र में स्थित है जो इसी क्रम में शनि के साथ 6/12 अक्ष में हैं। लग्नेश शुक्र 8वें भाव में अपनी ही राशि में स्थित है और छठे भाव से शनि से दृष्ट होकर बाधाएं और विवादों को दिखा रहा है। लग्नेश शुक्र षष्ठेश बृहस्पति के साथ निकटतम अंशों में है। छठे भाव में पीड़ित शनि विवाद अथवा कमजोरी बताता है, क्योंकि चन्द्रमा भी केतु के नक्षत्र में है जो छठे भाव में स्थित है।

लग्नेश शुक्र 8वें भाव में नवमेश/द्वादशेश बुध के साथ स्थित है और दशमेश चन्द्रमा के साथ कोई सम्बन्ध नहीं रखता, जो प्रश्नकर्ता का तरक्की खोना बताता है जिसकी वह आर्थिक उपलब्धियों के लिए आशा कर रहा था। 11वें

भाव में दशमेश चन्द्रमा का एकादशेश सूर्य के साथ निकटतम इत्थसाल है जो उसकी मानसिक अभिरुचि को दिखा रहा है। उसकी प्रवरता को नज़रअंदाज करके उसके अवर अधिकारी को पदोन्नत किया गया जिस कारण अपने कार्यालय जाए बिना उसने अपना चिकित्सा प्रमाण पत्र भेज दिया। कम्पनी ने उसे स्वयं कम्पनी के चिकित्सा अधिकारी के समक्ष उपस्थित होने का आदेश दिया। छठे भाव में शनि और केतु की भूमिका देखें जो क्रमशः लग्नेश शुक्र और दशमेश चन्द्रमा को प्रभावित कर रहे हैं जैसा कि ऊपर व्याख्यायित किया गया है। दशमेश चन्द्रमा सूर्य से 1°31' की दूरी पर निकटतम इत्थसाल में है। सूर्य केन्द्र और चर राशि में है, चन्द्रमा पणफर और स्थिर राशि में है और लग्न भी चर राशि में है। इन तीनों का संयुक्त प्रभाव घटना के समय-निर्धारण में सप्ताहों को बताता है। शोध पर आधारित इस अवधारणा को विस्तार से समझने के लिए घटनाओं का समय पर लिखित अध्याय को देखें। यह इत्थसाल डेढ़ हफ्ते का अथवा लगभग 11 दिन का समय दिखाता है और प्रश्नकर्ता ने 11 दिन बाद स्वयं को कम्पनी के चिकित्सा अधिकारी के समक्ष प्रस्तुत किए बिना नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। कार्येश दशमेश चन्द्रमा 11वें भाव में एकादशेश सूर्य से निकटतम इत्थसाल में है। त्यागपत्र उच्च तनख्वाह मिलने की आशा में एक अन्य नौकरी की एवज़ में प्रस्तुत किया गया था।

उसका अगला तार्किक प्रश्न था कि क्या उसका त्यागपत्र का निर्णय उचित है अथवा नहीं। इसके लिए हमें सप्तमेश के साथ चन्द्रमा का संबंध अवश्य देखना है जो इस मामले में दशमेश भी है। चन्द्रमा और मंगल दोनों मित्र ताजिक दृष्टियों में हैं, दोनों बृहस्पति से दृष्ट हैं जबकि लग्नेश शुक्र 8वें भाव में दशमेश के साथ शत्रु दृष्टि में एक प्रतिकूल योग दिखा रहा है। लग्नेश और सप्तमेश दोनों चन्द्रमा के साथ कोई इत्थसाल नहीं रखते। इस तथ्य के बावजूद उसे सलाह दी गई कि उसका त्यागपत्र आसन्न है तथापि उसकी अगली नौकरी किंचित दूर है। मंगल, चन्द्रमा और बृहस्पति के बीच और लग्नेश शुक्र और दशमेश चन्द्रमा के बीच अंशों का अंतर देखें।

उदाहरण संख्या : 2
नौकरी में समस्याएं और पदोन्नति

लग्न चर और पृष्ठोदय है जो इच्छित उद्देश्यों के लिए अनुकूल नहीं है। लग्नेश शनि दूसरे भाव में राहु के नक्षत्र में है जो द्वादशेश बृहस्पति के साथ 10वें भाव को पीड़ित कर रहा है। लग्नेश शनि का छठे भाव में स्थित सरकार के कारक सूर्य के साथ निकटतम ताजिक संबंध है। यह एक इशराफ योग

	केतु 29°00'	मंगल 8°07' चन्द्र 24°14'	सूर्य 20°32' बुध (व) 5°39'
शनि (व) 18°28'	उदाहरण संख्या - 2 रात्रि 8:31 बजे 6 जुलाई 1994 नई दिल्ली		
लग्न 11°10'			शुक्र 0°55'
		राहु 29°00' बृहस्पति 11°01'	

है जो पिछली घटना को संकेतित करता है। प्रश्नकर्ता अपनी आर्थिक अनियमितताओं की छान-बीन के आदेश के कारण अपने व्यवसाय में समस्याएं झेल रहा है। देखें कि दूसरे भाव में स्थित लग्नेश शनि छठे भाव में स्थित अष्टमेश सूर्य से निकट अंशों में है। दशमेश शुक्र न केवल 8वें भाव में स्थित है बल्कि इसने अभी 8वें भाव में 0°55' पर केतु के नक्षत्र में प्रवेश किया है और शनि और मंगल दोनों से दृष्ट है। अतः यह अवधि तनावों, बाधाओं और छान-बीन से पूर्ण है। यह स्थिति तब तक निरंतर बनी रहेगी, जब तक 1 अगस्त 1994 तक दशमेश शुक्र 8वें भाव में संचरण करेगा।

क्या उस पर आरोप लगेगा या उसे दंड मिलेगा। उसको बताया गया कि कोई हानि नहीं होगी, क्योंकि नैसर्गिक शुभ ग्रह बृहस्पति लग्नेश शनि को एवं अष्टमेश सूर्य को 10वें भाव से देख रहा है। लग्नेश दूसरे भाव में बलवान है और उसी प्रकार 5वें भाव में चन्द्रमा उच्च का है। जब दशमेश उसकी नीच राशि के स्वामी के साथ इत्थसाल में हो तब दण्ड सूचित होता है, यहां ये ग्रह शुक्र और बुध है। वे इशराफ योग में पिछली समस्याएं दिखा रहे हैं और इसीलिए भविष्य में कोई दण्ड सूचित नहीं होता। नौकरी के कारण तनाव निरंतर बने रहेंगे, क्योंकि राहु/केतु अक्ष ने 10वें भाव को 29°00' पर अभी पीड़ित किया है और अगले लगभग एक वर्ष और 6 माह, नवम्बर 1995 तक यह स्थिति बनी रहेगी।

लग्नेश शनि का 10वें भाव में 7°27' की दूरी पर बृहस्पति के साथ निकटतम इत्थसाल है। यहां शनि महीने और बृहस्पति दिनों को बताता है। चर लग्न के साथ परिणामी समय सप्ताहों में दिया गया है। कुछ ज्योतिषियों द्वारा प्रयुक्त सिद्धान्तों में से एक के अनुसार, वक्री ग्रह के मामले में समय को तीन से गुणा करें। हम लगभग 7°27' x 3 = 22.5 सप्ताह पाते हैं 22.5 सप्ताह अथवा 5 माह 17 दिनों को प्रश्न के दिन 6 जुलाई 1994 में जोड़ने पर हम 23 दिसम्बर

1994 पर पहुंचते हैं। विशुद्ध समय प्राप्त करने के लिए लग्नेश या कार्येश के ऊपर चन्द्रमा के गोचर को देखें। 23 दिसम्बर 1994 के पश्चात् चन्द्रमा दशम भाव पर 28 और 29 दिसम्बर 1994 को और लग्न पर 4 और 5 जनवरी 1995 को गोचर करेगा और इसके आसपास पदोन्नति अवश्य होनी चाहिए। चर लग्न, जिसमें लग्नेश और कार्येश परस्पर इत्थसाल में नहीं हैं पर 10वें भाव में स्थित शुभ ग्रह बृहस्पति लग्नेश को देखता है अतः इस समय के आसपास कुछ अनुकूल प्रगति अवश्य होगी जैसा ऊपर परिगणित किया गया है। यहां गोचर की विधि को संयुक्त करने पर, जैसा विविध विधियों पर लिखे अध्याय में व्याख्यायित किया गया है लगभग 6 महीनों में दशमेश शुक्र 10वें भाव पर 31 दिसम्बर 1994 से 31 जनवरी 1995 तक संचरण करेगा। इस अवधि के दौरान पदोन्नति अवश्य होगी, इस तथ्य के बावजूद कि उसके विरुद्ध पूछताछ विचाराधीन है। यह निष्कर्ष इसलिए निकाला क्यों कि कुंडली में कोई दण्ड सूचित नहीं है। प्रश्नकर्ता ने अपने लगातार तनावों के बावजूद 6 जनवरी 1995 को अपनी पदोन्नति पा ली जो पहले फलित की गई पदोन्नति की तिथि के अत्यंत निकट है।

उदाहरण संख्या : 3

विदेश के लिए स्थानांतरण

शनि 1°31' केतु 24°04' शुक्र 29°37'		लग्न 12°31'	चन्द्रमा 18°57'
सूर्य 16°08' मंगल 17°04'	उदाहरण : 3 प्रातः 11:30 बजे 29 फरवरी 1994 नई दिल्ली		
बुध 25°15'			
बृहस्पति 17°48'			राहु 24°04'

प्रश्न के समय स्थिर लग्न नौकरी अथवा व्यवसाय की प्राप्ति के लिए उत्तम है, लेकिन इच्छित स्थानांतरण के लिए उत्तम नहीं हैं, क्योंकि ऐसे मामलों में स्थिर लग्न यथावत् स्थिति सूचित करता है। दूसरे, पृष्ठोदय लग्न इच्छाओं की अपूर्ति सूचित कर रहा है।

लग्नेश शुक्र 11वें भाव में दशमेश शनि के साथ है, लेकिन 29°37' पर लगभग राशि छोड़ने वाला है और शनि ने अभी 1°31' पर मीन राशि में प्रवेश किया

है। दोनों संधि पर हैं और अंशों में दूर हैं। यद्यपि समान राशि में संयुक्त रूप से स्थित है तथापि उनमें कोई संबंध नहीं हैं। लग्नेश शुक्र और दशमेश शनि के बीच 24°04' पर केतु चरम बाधा उत्पन्न कर रहा है।

चतुर्थेश सूर्य और द्वादशेश मंगल 10वें भाव में पूर्ण इत्थसाल में स्थित होकर स्पष्टतः विदेशी नौकरी के लिए अनुकूल स्थिति दर्शा रहे हैं लेकिन वे अष्टमेश बृहस्पति के साथ निकट अंशों में बाधाएं दिखा रहे हैं। लग्नेश और दशमेश कोई संबंध नहीं रखते और चन्द्रमा उनके साथ संबंधित नहीं है। अतः प्रस्ताव में कोई अनुकूल उन्नति नहीं है। उसे विदेश में नियुक्ति के लिए नहीं चुना गया।

उदाहरण संख्या : 4
नौकरी से निलंबन

चन्द्रमा 26°24'	केतु 23°56'		मंगल 11°44'
शनि (व) 15°47'	उदाहरण : 4 सायं 4:06 बजे 25 अगस्त 1994 नई दिल्ली		
			बुध 19°57' सूर्य 8°13'
लग्न 22°55'		बृहस्पति 15°04' राहु 23°56'	शुक्र 24°13'

लग्न पृष्ठोदय और द्विस्वभाव है। दोनों प्रतिकूल हैं और इच्छाओं की अपूर्ति और विलम्ब दिखा रहे हैं। लग्न नीच शुक्र के नक्षत्र में है जो 10वें भाव में स्थित है और इसीलिए प्रश्न व्यवसाय से संबंधित समस्याओं का है। समस्याएं क्योंकि 10वां भाव और लग्न द्वादशेश पाप ग्रह मंगल से दृष्ट है और 10वां भाव अष्टमेश चन्द्रमा से भी दृष्ट है। प्रश्नकर्ता को न केवल उसकी नौकरी से निलंबित किया गया बल्कि पुलिस अथवा केन्द्रीय जांच ब्यूरो (सी.बी.आई.) की कार्यवाही और संभावित कारावास भी झेलना पड़ेगा।

लग्नेश बृहस्पति वक्री शनि के साथ निकटतम पूर्ण इत्थसाल में है। दशमेश बुध भी वक्री शनि के साथ निकटतम इशराफ में है। नौकरी की हानि के योगों को देखें। यदि लग्नेश या दशमेश या तो मंदगति अथवा वक्री ग्रह के साथ संबद्ध है, तब निलंबन के कारण नौकरी छूट जाती है। यहां लग्नेश और दशमेश दोनों, ऐसी ही स्थिति में हैं। दूसरे, यदि दशमेश अपनी नीच राशि के स्वामी के साथ इत्थसाल में है तो व्यक्ति जो नौकरी से कुछ कार्यवाही के कारण

भयभीत है, नौकरी से निलम्बित हो जाता है। अष्टमेश चन्द्रमा न केवल दशम भाव को देख रहा है बल्कि दशमेश बुध के नक्षत्र में है। उधर दशमेश बुध षष्टेश शुक्र के नक्षत्र में है जो दशम भाव में नीच का होकर स्थित है। इस मामले में, दशमेश बुध अपनी नीच राशि के स्वामी बृहस्पति के साथ इशराफ में है जो 11वें भाव में स्थित है। इशराफ पिछली घटना दिखाता है। व्यक्ति आर्थिक अनियमितताओं के आरोपों के कारण पहले ही निलंबित किया जा चुका है।

लग्नेश बृहस्पति राहु/केतु अक्ष में पीड़ित है और दशमेश बुध एवं दशमस्थ शुक्र दोनों राहु/केतु के निकट अंशों में हैं। लग्नेश बृहस्पति का द्वितीयेश शनि के साथ पूर्ण इत्थसाल आर्थिक संकट बताता है जबकि द्वितीयेश के पश्चगमन ने उसे अपनी नौकरी को बचाने की आशा में अपने मालिक को दुरुपयोग की गई राशि को लौटाने पर विवश किया। मंगल जो न केवल द्वादशेश है बल्कि प्रभुत्व अथवा जांच-एजेंसियों का कारक भी है, वह लग्न एवं 10वें भाव को पूर्ण पाराशरी दृष्टि से देख रहा है। मंगल 11°44' पर और लग्न 22°55' पर केन्द्र में 11°11' के अन्तर पर है और द्विस्वभाव राशि महीने बताती है। द्विस्वभाव लग्न के साथ सूचित समय महीनों में है। लगभग साढ़े ग्यारह माह बाद, अगस्त 1995 में मामला केन्द्रीय जांच ब्यूरो को सौंप दिया गया।

आगे क्या होगा? क्या वह दंडित किया जाएगा अथवा बहाल? यदि केन्द्रों और त्रिकोणों में पाप ग्रह हों तो दंड सूचित होता है। यहां यह मिश्रित स्थिति है। लेकिन पृष्ठोदय और द्विस्वभाव लग्न अशुभता दर्शाता है। 10वें भाव में स्थित पाप ग्रह यदि द्वादशेश से इत्थसाल करे या लग्नेश/दशमेश 6, 8,12वें भाव में पीड़ित हों तो दंड संभावित है। इन स्थानों पर शुभ ग्रह स्थिति को सुधारते हैं, लेकिन यदि ये शुभ ग्रह नीच या अस्त हों, तब उनका कोई उपयोग नहीं है। इस मामले में शुभ ग्रह शुक्र 10वें भाव में है। यह न केवल षष्ठेश है बल्कि नीच भी है।

यदि दशमेश और उसकी नीच राशि का स्वामी परस्पर संबंध में अथवा ताजिक योग में कम्बूल योग में हों तब नौकरी बहाल होना सूचित होता है। इस मामले में बृहस्पति और बुध इशराफ में हैं जबकि चन्द्रमा उनमें से किसी के साथ दृष्टि में नहीं है। अतः बहाली सम्भव नहीं है। चन्द्रमा 10वें भाव को देखता है, लेकिन यह अष्टमेश भी है। द्वादशेश मंगल की लग्न और 10वें भाव पर दृष्टि अभियुक्त के विरुद्ध कठोर दण्ड दिखाती है।

13
झगड़ा, विवाद, मुकद्दमेबाजी और प्रतियोगिता

समाज में रहते हुए हम ऐसी अनेक परिस्थितियों का सामना करते हैं जब दो व्यक्तियों के विचारों और अभिलाषाओं में तुच्छ मतभेदों से लेकर पूर्ण शारीरिक एवं कानूनी झगड़ों तक कई तरह के विवाद देखने को मिलते हैं। इस भौतिक संसार के वर्तमान समय में ये परिस्थितियां अत्यधिक बढ़ गई हैं। यहां तक कि परिवार के लोग ही संपत्ति धन-दौलत, पैतृक संपत्ति के अधिग्रहण अथवा बंटवारे या केवल अपने छिन्न-भिन्न अहं को संतुष्ट करने के लिए कानूनी झगड़ों में उलझ जाते हैं। अभी-अभी बीते युग में, जब शक्ति ही प्रधान थी, तब लड़ाइयां न्यायालयों के कक्षों या सत्ता के गलियारों की दुरभिसंधियों में नहीं लड़ी जाती थीं, बल्कि युद्ध क्षेत्रों में लड़ी जाती थी।

शासक अपने आक्रमणों या अपने विस्तृत प्रदेश की सुरक्षा या अपनी प्रभुसत्ता को सशक्त बनाए रखने के लिए उपायों को जानने की इच्छा रखते थे जिसे पृथुयशस के 56 श्लोकों का सार-संग्रह षट्पंचासिका, जय-पराजय शीर्षक अध्याय शामिल करता है। यह अध्याय दर्शाता है कि क्या शत्रु राजा से, जो अपना प्रयाण प्रारम्भ कर चुका है, सशस्त्र युद्ध होगा? कौन जीतेगा आदि। वर्तमान में, ऐसी स्थितियां दुर्लभ हैं फिर भी आज तक इन योगों को अपनाया और प्रयुक्त किया जाता है। अंततः 1500 वर्षों पहले लिखित यह पुस्तक आज भी महत्त्व रखती है।

इस ज्योतिषीय ज्ञान को जब उदारता से प्रयुक्त किया जाए तो यह विवादों या मुकद्दमेबाजियों के मामलों में भी उत्तम जानकारी देता है। नीचे व्यवस्थित क्रम में योगों को विवेचित किया गया है जिन चिंताओं को लेकर एक व्यक्ति ज्योतिषी के पास पहुंचता है। झगड़ों में राज्यों के झगड़ों के भागों को इस तरह लिपिबद्ध किया गया हैं कि वर्तमान काल में जरूरत के समय इनका उदारतापूर्ण प्रयोग किया जा सके। सामान्यतया लग्न में पाप ग्रह और 7वें भाव में शुभ ग्रह प्रश्नकर्त्ता के लिए उत्तम कहे गए हैं। लग्न में पाप ग्रह उत्तम युद्ध-उत्साह और योग्यता देते हैं। 7वें भाव पर उनकी अशुभ दृष्टि प्रतिपक्षी

को प्रभावित करती हैं। इसी प्रकार प्रतिपक्षी अथवा शत्रु के भाव, 7वें भाव में शुभ ग्रह उसे झगड़ालू मनोवृत्ति से दूर ले जाता हैं और प्रश्नकर्त्ता को शुभ दृष्टि देते हैं। इसके विपरीत, लड़ाई में लग्न में शुभ ग्रह और 7वें भाव में पाप ग्रह शत्रु के लिए उत्तम है। यद्यपि यहां एक अपवाद है। यदि लग्न में कम से कम तीन शुभ ग्रह स्थित हों, तो यह प्रश्नकर्त्ता को शानदार विजय देते हैं और लग्न में कम से कम तीन अशुभ ग्रहों का होना प्रश्नकर्त्ता को बड़ी बुरी पराजय देता है। इसी प्रकार, प्रतिपक्षी के लिए भी, 7वें भाव में तीन शुभ ग्रहों का होना विजय प्रदान करता है और तीन अशुभ ग्रहों का होना पराजय देता है।

तृतीय भाव से प्रारम्भ होकर 8वें भाव तक, छह भाव नागरिकों और प्रश्नकर्त्ता के देश के शासक का प्रतिनिधित्व करते हैं जबकि 9वें भाव से प्रारम्भ होकर 2सरे भाव तक, छह भाव शत्रु का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रश्नकर्त्ता अथवा शत्रु की विजय अथवा पराजय क्रमशः शुभ या अशुभ ग्रहों द्वारा गृहीत भाग पर निर्भर करती है।

शत्रु का आगमन

1. स्थिर राशि में चन्द्रमा एवं चर लग्न और चर नवांश हो, तो शत्रु का आगमन शीघ्र होता है।
2. यदि प्रश्न कुंडली में लग्नेश और नवमेश संयुक्त नहीं हैं, तो शत्रु का आगमन होता है।
3. सूर्य, शनि, शुक्र या बुध चर लग्न में हों तो शत्रु का शीघ्र आगमन दर्शाते हैं।
4. यदि 4थे भाव में बृहस्पति, शुक्र और बुध हैं तब शत्रु का आगमन होता है।
5. चर लग्न में सूर्य या बृहस्पति की स्थिति शत्रु का आगमन बताती है।

शत्रु के आगमन का समय

प्रश्न कुंडली में लग्न से चन्द्रमा तक गिनिए। उतने दिनों में शत्रु आएगा, परन्तु लग्न और चन्द्रमा के बीच कोई और ग्रह मध्यवर्ती न हो। पुनः मैं इस विचार का समर्थन करता हूं कि शत्रु के आगमन का यह समय उदित लग्न के साथ संबंधित होना चाहिए। चर लग्न उदित हो रहा हो, तो उतने दिनों में, स्थिर लग्न उदित हो रहा हो, तो उतने सप्ताहों में और द्विस्वभाव लग्न उदित

हो रहा हो, तो उतने महीनों में शत्रु का आगमन होगा। जब शुभ ग्रह बृहस्पति, शुक्र और बुध 4थे भाव में स्थित हों तो शत्रु शीघ्र आता है।

शत्रु का नहीं आना

1. चर राशि में चन्द्रमा एवं स्थिर राशि में लग्न और उसका नवांश बताता है कि शत्रु नहीं आएगा।
2. शुभ ग्रहों बृहस्पति, शुक्र या बुध द्वारा गृहीत 6ठे भाव के साथ स्थिर राशि में लग्न और द्विस्वभाव राशि में चन्द्रमा शत्रु-सेनाओं को आकस्मिक संताप अथवा हानि देता है।
3. द्विस्वभाव राशि में लग्न और चर राशि में चन्द्रमा बताता है कि शत्रु आधे रास्ते पर बढ़ने के बावजूद वापिस लौट जाएगा।
4. 5वें भाव या 6ठे भाव में पाप ग्रह स्थित हों।
5. लग्नेश, अष्टमेश और नवमेश स्थिर राशियों में स्थित हों।
6. प्रश्न कुंडली में लग्नेश और नवमेश की युति शत्रु का अनागमन सूचित करती है।
7. लग्न में, स्थिर राशि में सूर्य, शनि, शुक्र या बुध हों। यहां तक कि यदि वह चर राशि में भी हैं और वक्री (सूर्य के अतिरिक्त) हैं, तब शत्रु नहीं आएगा।
8. 4थे भाव में सूर्य और चन्द्रमा शत्रु का न आना बताते हैं।
9. लग्न में, स्थिर राशि में बृहस्पति और शनि (मंद गति ग्रह) स्थित है, तो शत्रु यात्रा प्रारम्भ कर चुकने के बावजूद मार्ग पर आगे अग्रसर नहीं हो सकेगा।

शत्रु की वापसी

1. सामान्यतया लग्न में एक पाप ग्रह प्रश्नकर्त्ता के लिए उत्तम है और शत्रु या प्रतिपक्षी के लिए बुरा है। ऐसी स्थिति में शत्रु वापस लौटता है या पीछे हटता है और अपनी वापसी यात्रा के दौरान दूसरी समस्याओं को भी झेलता है।
2. यदि 4था भाव चतुष्पाद राशियों (1, 2, 5, 9वीं का उत्तरार्ध, 10वीं का पूर्वार्ध) में से कोई एक है, तब शत्रु पराजय झेलने पर या अपनी कमजोर स्थिति की आशंका से वापस लौटता है या पीछे हटता है।

शत्रु की पराजय/प्रश्नकर्त्ता की विजय

1. 4थे भाव में पाप ग्रह पराजय की पीड़ा के बाद शत्रु की वापसी सूचित करता है। क्योंकि 4था भाव शत्रु का युद्ध क्षेत्र है जबकि 10वां भाव प्रश्नकर्त्ता का युद्ध क्षेत्र है।
2. 4थे भाव में शुभ ग्रहों से प्रभावित कर्क, वृश्चिक, कुंभ अथवा मीन राशियां (4, 8, 11 या 12) शत्रु की पराजय की ओर संकेत करती हैं।
3. द्विस्वभाव राशि में चन्द्रमा के साथ उदित चर लग्न हो, और पाप ग्रहों से दृष्ट हो, तो वहां एक मुठभेड़ होगी जिसमें शत्रु पराजित होगा।
4. बृहस्पति और शनि (मंद गति ग्रहों) से दृष्ट स्थिर लग्न शत्रु की कोई गतिविधि न होना बताता है, लेकिन यदि इसके अतिरिक्त 3, 5, 6ठे भाव में पाप ग्रह हो, तो सेना में युद्ध होगा। 4थे भाव में पाप ग्रह शत्रु को दुम दबा कर भागने पर विवश करते हैं।
5. 7वें भाव/10वें भाव में शुभ ग्रह कस्बे या देश के शासक की विजय की ओर संकेत करते हैं। इसी प्रकार, 9वें भाव में बृहस्पति, शुक्र या बुध विजय प्रदान करते हैं। यह इस सिद्धांत का केवल एक विस्तार है कि केन्द्रों और त्रिकोणों में शुभ ग्रह प्रश्नकर्त्ता को अनुकूल परिणाम देते हैं। 4थे भाव में पाप ग्रह होने चाहिएं और अन्य केन्द्रों और त्रिकोणों में शुभ ग्रह होने चाहिए।
6. युद्ध में, सामान्यतया लग्न में पाप ग्रह को वरीयता दी जाती है। यद्यपि यहां एक अपवाद है। यदि सभी शुभ ग्रह-बृहस्पति, शुक्र, बुध और चन्द्रमा अथवा उनमें से कम से कम तीन लग्न में बलवान होकर स्थित हों, तो यह प्रश्नकर्त्ता या शासक की शानदार विजयोपलब्धि को संकेतित करते हैं और आक्रमणकारी शासक युद्ध क्षेत्र में प्रतिरक्षी शासक के हाथों मारा जाता है।

युद्ध में प्रश्नकर्ता की पराजय

1. पाप ग्रहों से संयुक्त मेष अथवा वृष राशियां शत्रु द्वारा प्रश्नकर्ता शासक की पराजय की ओर संकेत करती हैं।
2. 9वां भाव भाग्य भाव है और इसमें अत्यधिक अशुभ प्रभाव प्रश्नकर्ता की पराजय का संकेत करता है जैसे, 9वें भाव में शनि और मंगल का स्थित होना।

3. जन्म कुंडली की भांति प्रश्न कुंडली में भी 8वां भाव प्रायः रिक्त होना चाहिए। यहां तक कि 8वें भाव में शुभ ग्रह वांछनीय नहीं हैं। 8वें भाव में बृहस्पति, बुध, शुक्र और चन्द्रमा अथवा इनमें से कम से कम तीन स्थित हों तो प्रश्नकर्ता की पराजय निश्चित होती है और प्रतिरक्षी (प्रश्नकर्ता) शासक युद्धक्षेत्र में मारा जाता है।
4. 5वें भाव में शुभ ग्रह और 9वें भाव में पाप ग्रह प्रश्नकर्ता शासक को अपने जीवन की रक्षा के लिए देश से भागने पर विवश कर देते हैं।
5. इस तथ्य के बावजूद कि लग्न में पाप ग्रह उत्तम है तथापि यदि सभी पाप ग्रह सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, शनि और राहु अथवा उनमें से कम से कम तीन लग्न में स्थित हों तो प्रतिरक्षी शासक युद्ध क्षेत्र में शत्रु द्वारा मार दिया जाता है।

आक्रमणकारी अथवा प्रतिरक्षी शासक

1. लग्न में पाप ग्रह, 3सरे भाव में बुध और 4थे भाव में सूर्य हो तो प्रतिरक्षी पराजित होता है।
2. आक्रमणकारी शासक की विजय होती है जब दोनों प्रकाश-पुंज सूर्य और चन्द्रमा सूर्य राशियों 5, 6, 7, 8, 11, 12 में हों। यदि वे चन्द्र राशियों में हों तब प्रतिरक्षी शासक विजयी होता है। यदि सूर्य चन्द्र राशि में हो तो आक्रमणकारी शासक जीतता है और यदि चन्द्रमा सूर्य की राशि में हो, तो प्रतिरक्षी शासक विजयी होता है। जब सूर्य और चन्द्रमा अपनी स्वराशियों में स्थित हों, तब दोनों युद्ध के लिए इच्छुक नहीं हैं। जब दोनों एक-दूसरे की राशियों में हों, तब दोनों घायल होंगे। न्यायिक मामलों में, उपरोक्त के अनुसार, परस्पर परिवर्तन में सूर्य और चन्द्रमा, दोनों को नुकसान देता है और यह मामले को आगे बढ़ाने के लिए उपयुक्त नहीं है।

युद्ध क्षेत्र की ओर शासक का प्रयाण

शुभ ग्रहों से गृहीत चर लग्न शासक की सेना के प्रयाण के लिए उत्तम है जबकि पाप ग्रहों के साथ लग्न में स्थिर राशि प्रतिकूल है। यह इस सिद्धान्त का विपरीत है कि झगड़ों से संबंधित प्रश्नों में लग्न में पाप ग्रह उत्तम हैं। इसे और अच्छी तरह समझना चाहिए। यहां योग यह है कि जब शुभ ग्रहों के साथ लग्न चर हो, अतः ऐसी स्थिति में, यदि शासक आक्रामक रुख अपनाता है, तब वह विजयी होता है। न्यायिक मामलों के वर्तमान सन्दर्भ में एक

व्यक्ति वादी है जो मुकद्दमा दाखिल करता है और युद्ध क्षेत्र के लिए सेना के प्रयाण करने के समरुप है। अतः लग्न में शुभ ग्रहों के साथ चर राशि अनुकूल है। दूसरी ओर, यदि न्यायिक मामलों में व्यक्ति प्रतिवादी है, तब लग्न में पाप ग्रहों के साथ स्थिर राशि अनुकूल है। यह योग वादी के मुकद्दमा दाखिल करने के मुहूर्त के साथ-साथ, वादी या प्रतिवादी के लिए प्रश्न कुंडली में भी देखने चाहिएं।

शासक की विजय के लिए योजना बनाना

यदि शासक धनिष्ठा नक्षत्र के दौरान शस्त्र प्राप्त करता है और उत्तराभाद्रपद के दौरान युद्ध करता है, तो वह जीतता है। ये दो नक्षत्र क्रमशः मंगल और शनि द्वारा शासित है। युद्ध विधिवत अग्नि और जल को प्रणाम करने के बाद, मंगलवार अथवा शनिवार को, विषघटी में प्रारम्भ करना चाहिए। पुनः ये दिन मंगल और शनि द्वारा शासित हैं। शुभ परिणामों के लिए महत्त्वपूर्ण यात्रा अथवा कार्य पर जाने से पूर्व पानी में देखने की प्रथा है। इन शर्तों को न्यायिक मामलों, झगड़ों अथवा उग्र कर्मों में अनुकूल परिणामों को प्राप्त करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

शासक की वापसी का समय

शासक और उसकी सेना, जो युद्ध पर गई हुई है, कितने महीनों में वापस लौटेगी। यह कुंडली में बलवान ग्रह की स्थिति से पता लगता है। लग्न से बलवान ग्रह तक गिनिए और उतने महीनों में शासक अपने लोगों के साथ अपनी राजधानी लौटेगा। यदि यह ग्रह वक्री है, तब इसे तीन की संख्या से गुणा करें। मेरे विचार में, समय लग्न के प्रकार पर आधारित है, जैसा कि नीचे दिया गया है।

लग्न	*प्रश्न कुंडली में लग्न से गिनने पर बलवान ग्रह*
चर लग्न	उतने दिनों में
स्थिर लग्न	उतने सप्ताहों में
द्विस्वभाव लग्न	उतने महीनों में

यदि यह बलवान ग्रह वक्री है, तब समयावधि को तीन से गुणा करें। शासक या सेना की वापसी के अन्य योग यात्री की वापसी के समान ही है जैसे, जब सप्तमेश गोचर में वक्री होना प्रारम्भ करता है, तब सेना लौटती है इत्यादि।

शांति-संधि

1. 11, 12, व पहले भाव में द्विपाद राशियों में स्थित शुभ ग्रह दो युद्ध करने वाले समूहों के बीच शांति-संधि बताते हैं। द्विपाद राशियां हैं- 3, 6, 7, 9वें राशि का उत्तरार्ध और 11। दूसरी ओर, यदि उपरोक्त इन भावों में से किसी भाव में द्विस्वभाव राशि है और पाप ग्रह उसमें स्थित है, तब वहां शांति-संधि नहीं हो सकती और युद्ध निरंतर जारी रहेगा।
2. 4थे भाव या 10वें भाव में शुभ ग्रह बृहस्पति, शुक्र, बुध और चन्द्रमा अथवा इनमें से कम से कम तीन का होना तत्काल युद्ध के दौरान दो शासकों के बीच शांति-संधि की ओर संकेत करता है।
3. शांति-संधि लग्नेश और सप्तमेश के बीच स्थित ग्रह द्वारा संकेतित व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत की जाती है। शांति-संधि लग्नेश और सप्तमेश के बीच नक्त योग निर्मित करने वाले ग्रह द्वारा भी प्रस्तुत की जा सकती है।

दुर्ग

जब आक्रमणकारी सेना प्रतिरक्षी शासक के दुर्ग को तोड़ दे, तो यह दुर्गभंग कहा जाता है। यह पराजय की भविष्यवाणी करता है। जैसा प्रायः कहा गया है कि विवादों में लग्न में पाप ग्रह लाभदायक है। यह पाप ग्रह यदि बलहीन भी है तो भी प्रतिरक्षी का दुर्ग नहीं टूट पाता। यदि पाप ग्रह बलवान है, तब निश्चित रूप से यह उत्तम सैन्य योग्यता और सफलता देता है। यदि मंगल या राहु लग्न में हैं, तब "भुवन दीपक" के अनुसार, देवताओं के राजा इन्द्र भी दुर्ग को तोड़ने में समर्थ नहीं हो पाएंगे। दूसरी ओर, 7वें भाव में स्थित पाप ग्रह दुर्गभंग की ओर संकेत करता है, क्योंकि यह शत्रु को अत्यधिक बल प्रदान करता है। एक अन्य स्थिति में, यदि लग्न या 7वें भाव में कोई भी पाप ग्रह नहीं है और लग्नेश 2, 12, 6, 8वें भाव में स्थित है, तो दुर्ग नहीं तोड़ा जा सकता। इस सम्बन्ध में, लग्नेश लग्न को, एक ओर से स्थिति या दृष्टि द्वारा बल प्रदान करने में समर्थ है।

सशस्त्र युद्ध

केन्द्रों में वक्री लग्नेश के साथ स्थित पाप ग्रह एक सशस्त्र युद्ध की ओर इशारा करते हैं। इसी प्रकार, जब 7वें भाव में स्थित षष्ठेश लग्न को देखे तो यह सशस्त्र युद्ध की ओर संकेत करता है, विशेषतः जब यह षष्ठेश पाप ग्रह भी हो।

अत्यधिक रक्तपात वाला सशस्त्र युद्ध

केन्द्रों में पाप ग्रह दुर्ग के भीतर अनेक घायलों और मृतकों को दर्शाते हैं और बहुत खून खराबा भी होता है। जब अष्टमेश मंगल के साथ स्थित हो तो अत्यधिक रक्तपात होता है। पाप ग्रहों का लग्न पर प्रभाव जैसे लग्न में पाप ग्रहों की स्थिति जो स्वयं पाप ग्रहों से दृष्ट हो या पाप कर्तरी योग में लग्न एक लहूलुहान युद्ध की ओर इशारा करता है।

विवाद और मुकद्दमेबाजियाँ

जब हम विवाद, मुकद्दमेंबाजी, झगड़ा, चुनाव, शपथ ग्रहण समारोह, मैच, खेल या जब दो दलों के बीच होनी वाली प्रतियोगिता आदि पर इन सिद्धान्तों का विस्तार करते हैं, तो हमें आश्चर्यजनक रूप से विशुद्ध परिणाम प्राप्त होते हैं। लग्न प्रश्नकर्ता है, 4था भाव निर्णय है, 7वां भाव प्रतिपक्षी है और 10वां भाव अधिकारी या न्यायपालिका है। 6ठा भाव गुप्त शत्रुओं को सूचित करता है जबकि 7वां भाव प्रत्यक्ष शत्रुओं का प्रतीक है। जैसा पहले कहा गया है कि ऐसे मामलों में, प्रश्न लग्न में पाप ग्रह की उपस्थिति एक ऐसा प्रमुख संकेत है जो प्रश्नकर्ता को अत्यधिक बल और युद्ध-उत्साह प्रदान करता है, जो कि विजय प्राप्त करने के लिए अत्यंत आवश्यक है। उदाहरणार्थ, वाद-विवाद में व्यक्ति जीतता है, यदि लग्न में पाप ग्रह स्थित हो जबकि प्रतिपक्षी जीतेगा, यदि 7वें भाव में पाप ग्रह स्थित हो। सामान्यतया, प्राचीन काल में शासकों के युद्धों और लड़ाइयों के लिए कहे गए सभी योगों को मुकद्दमेंबाजियों, विवादों, प्रतियोगिताओं, खेलों आदि के सभी मामलों में प्रभावशाली रूप से प्रयुक्त किया जा सकता है। कतिपय विशिष्ट सिद्धान्त, जो प्रायः ऊपर विवेचित सिद्धान्तों के विस्तार हो सकते हैं, निम्नलिखित हैं :

यदि लग्न के साथ-साथ 7वें भाव में पाप ग्रह है, तब दोनों में से बलवान जीतता है। इस सिद्धान्त का दूसरा प्रकार यह है कि जब ऐसा पाप ग्रह या शुभ ग्रह लग्न या लग्नेश के साथ स्पष्टतः सम्बद्ध नहीं है, तब लग्नेश और सप्तमेश के बल की तुलना करें। दोनों में बलवान विजयी होता है। यदि वे समान रूप से बलवान हैं, तब या तो विवाद में एक उत्तेजक या प्रचण्ड संघर्ष या तो समझौता करवा देता है या खेलों के मामलों में अनिर्णित मैच दर्शाता है। उग्र हिंसात्मक झगड़ा या प्रचंड संघर्ष सूचित होता है जब लग्नेश और सप्तमेश परस्पर शत्रु ताजिक दृष्टि में हों।

चर लग्न में, सामान्यतया प्रश्नकर्ता वादी है या एक वह, जिसने मुकद्दमा दाखिल किया है जबकि स्थिर लग्न के मामले में प्रश्नकर्ता प्रतिपक्षी है।

कुछ ज्योतिषी लग्न से वादी और 7वें भाव से प्रतिपक्षी देखने को वरीयता देते हैं। यद्यपि, मैं इस तथ्य के बावजूद कि वह वादी या प्रतिपक्षी है, लग्न को प्रश्नकर्ता मानने का इच्छुक हूँ।

प्रश्नकर्ता का इरादा

यह न केवल प्रश्नकर्ता के इरादे को पहचानने का सशक्त क्षेत्र है बल्कि इस तथ्य पर भी प्रकाश पड़ता है कि जो अपराध हुआ हैं, उसमें दोषी कौन है या फिर व्यक्ति का अपराध है कि नहीं। यदि मंगल और शनि लग्न को देखें तब प्रश्नकर्ता के अभिप्राय अशुभ हैं। यह अपराध या अन्यायपूर्ण क्रिया में प्रश्नकर्ता का शामिल होना भी सूचित करता है। दूसरी ओर, लग्न पर शुभ दृष्टि उसके शुभ अभिप्रायों एवं निर्दोषता को साबित करती है।

कौन विजयी होगा?

1. लग्न या 7वें भाव में पाप या शुभ ग्रह के सिद्धान्त को ध्यान में रखें, जो विस्तार में विवेचित किए गए हैं।
2. लग्नेश या सप्तमेश में से बलवान जीतता है। इस विश्लेषण में लग्नेश और सप्तमेश के बीच जो भी ग्रह वक्री है, कमजोर है, अतः वह हारता है।
3. लग्नेश और सप्तमेश के बल का निर्धारण करने में, जो ग्रह केन्द्र में कम भोगांश में स्थित है, वह बलवान है।
4. लग्नेश और सप्तमेश के बीच, जो ग्रह सूर्य के साथ इत्थसाल में है, बल प्राप्त करता है।
5. लग्नेश और सप्तमेश के बल के विश्लेषण में बल और विजय प्रदान करने में ग्रह के उच्च, मूलत्रिकोण, स्वराशि अथवा शुभ भावों, जैसे त्रिकोणों आदि के स्वामियों के साथ सम्बन्ध के आधारभूत नियमों को ध्यान में रखें।

अगली सुनवाई पर क्या होगा?

चर राशि में लग्न और चन्द्रमा बताता है कि मामला जारी रहेगा और सुनवाई की दूसरी तिथि दी जाएगी, तथापि स्थिर लग्न बताता है कि मामला उसके तार्किक निष्कर्ष की ओर अग्रसर होगा। उदाहरणार्थ, वाद-विवाद के मामले में, वे निर्णायक होंगे। द्विस्वभाव लग्न में मामला थोड़ा आगे बढ़ेगा जिसके बाद दूसरी तिथि दी जाएगी। जैसा पहले कहा गया है कि 10वें भाव में पाप ग्रह बताता है कि सुनवाई की अगली तिथि पर कोई निर्णय नहीं होगा, जबकि 10वें भाव में शुभ ग्रह होने पर सुनवाई निर्णायक होगी।

समझौता

1. जब कभी लग्नेश और सप्तमेश इत्थसाल में हों, जहां चन्द्रमा भी कम्बूल योग में सम्मिलित हो तो वहां दो वादियों के बीच समझौता हो जाता है।
2. 5वें भाव में स्थित लग्नेश और केन्द्रों में स्थित शुभ ग्रह विवाद करने वालों के बीच समझौता बताते हैं।
3. सप्तमेश प्रतिपक्षी है और षष्ठेश विवाद बताता है। यदि ये दोनों परस्पर मित्र हैं, तब वहां समझौता है। यदि वे शत्रु हैं, तब वहां कोई समझौता नहीं है और विवाद जारी रहेगा।

बिना किसी शीघ्र समाधान के लम्बा विवाद

1. यदि लग्नेश और चन्द्रमा इशराफ योग में हैं, तब विवाद की समाप्ति की कोई शीघ्र संभावना नहीं है।
2. इसी प्रकार यदि पापग्रह, लग्न और 7वां भाव, दोनों में स्थित हैं, तो विवाद चलता रहेगा और अंततः ऊपर विवेचित सिद्धान्तों के अनुसार, दोनों में से बलवान विजयी होगा।
3. 10वें भाव में पाप ग्रह बताता है कि न्यायालय में सुनवाई की अगली तिथि को कुछ भी निर्णायक नहीं घटेगा या अंततः मामला अपील के लिए उच्च न्यायालय में जाएगा।
4. यदि सप्तमेश 6ठे भाव में षष्ठेश के साथ है, तब भी विवाद चलता रहेगा।

वकील

वकील का कारक बुध है। प्रश्नकर्ता या प्रतिपक्षी के वकील की योग्यता की पहचान करने के लिए, लग्न/लग्नेश या 7वां भाव/सप्तमेश से बुध के अनुकूल या प्रतिकूल स्थापन को देखें। लोक अभियोजक, जो कि न्यायालय की ओर से विधिवक्ता है, 6ठे भाव से देखा जाता है और 10वें भाव से 9वां भाव होने के कारण, षष्ठेश न्यायालय की ओर से एक अधिकारी को सूचित करता है।

निर्णय

कानूनी लड़ाई में, प्रश्नकर्ता न केवल मामले के परिणाम के बारे में बल्कि निर्णय के प्रारूप से भी चिंतित होता है। हम प्रश्न कुंडली से बता सकते

हैं कि प्रश्नकर्ता या प्रतिपक्षी में कौन अपने कर्मों में दोषमुक्त है। लग्नेश और सप्तमेश के बीच में से, जो भी दशमेश से दृष्ट है, वह दोषमुक्त या अपने अभिप्रायों में सच्चा नहीं है। इससे यह भी सूचित कर सकते हैं कि क्या अभियुक्त दोषी है या नहीं। निर्णय 4थे भाव से देखा जाता है।

1. मंगल अधिकार का कारक है और 10वें भाव में दिशापरक बल या दिग्बल भी प्राप्त करता है। 10वें भाव में मंगल या शुभ बृहस्पति या शुक्र निष्पक्ष निर्णय बताता है, जो कानून के अनुसार है। शुभ ग्रह बुध परिवर्तनीय या अस्थिर प्रकृति रखता है। 10वें भाव में बुध सदैव निष्पक्ष निर्णय नहीं देता और वह निष्पक्षता और पक्षपात का सम्मिश्रण हो सकता है।
2. 10वें भाव में सूर्य अत्यंत कठोर और दंडात्मक निर्णय प्रदान करता है।
3. प्रश्न में क्या निर्णय प्रश्नकर्ता के पक्ष में होगा? प्रश्न की कार्य-सिद्धि के सिद्धान्तों के अतिरिक्त यदि 10वें भाव में शुभ चन्द्रमा हो, तो निर्णय प्रश्नकर्ता के पक्ष में होता है जबकि 10वें भाव में पाप चन्द्रमा से निर्णय प्रतिपक्षी के पक्ष में होता है।
4. केन्द्र में मंगल से दृष्ट शनि उस निर्णय को दर्शाता है जो न तो निष्पक्ष है और न विधि के अनुसार। यदि ऐसी स्थिति में, मंगल या शनि 10वें भाव में स्थित हों, तो मामला उच्चतर न्यायालय में जाता है।

चुनाव, मैच, वाद-विवाद, प्रतियोगिता

ऐसा सम्भव है कि टैस्ट मैच, खेल सम्बन्धी प्रतियोगिता, एक चुनाव और एक सरकार जिसने अभी-अभी देश का शासन सम्भाला हो, इन सब के सन्दर्भ में कोई प्रश्न ही नहीं पूछा गया हो। सामायिक रुचि की ऐसी अनेक घटनाओं में जिनमें अधिकांश व्यक्तियों की दिलचस्पी हो, तो कतिपय व्यावहारिक पहलुओं को समझने की आवश्यकता है। इनको एक ज्योतिषी को समझना और अनुसरण करना चाहिए।

चुनाव के मामले में, जब एक प्रत्याशी अपना नामांकन पत्र दाखिल करता है, प्रश्न के सिद्धान्तों के अनुसार उस क्षण की कुंडली का विश्लेषण चुनाव के परिणाम को सूचित करता है। यह मात्र मुहूर्त या चुनावी ज्योतिष के लिए पंचांग का एक पहलू है जिसे अवश्य देखना चाहिए। सरकार की असफलता या सफलता को जानने के लिए शपथ ग्रहण समारोह की कुंडली खींची और विश्लेषित की जाती है।

दो देशों के बीच मैचों या खेलों में, मेजबान देश लग्न से सूचित होता है और 7वें भाव से प्रतिपक्षी सूचित होता है। इस तथ्य के बावजूद कि किस

दल को प्रश्नकर्ता विजयी देखना चाहता है। समस्या तब उत्पन्न होती है जब दो बाहरी देश मैच खेल रहे हों, जैसे पाकिस्तान और श्रीलंका। अब, यहां कोई मेजबान देश नहीं है। ऐसे मामलों में प्रश्नकर्ता से यह पूछना उपयुक्त है कि किस टीम को विजयी होता देखना चाहेगा और वह टीम लग्न से एवं दूसरी टीम 7वें भाव से सूचित होगी। समान घटना के लिए दोहराए गए प्रश्न पर प्रथम प्रश्न के लिए निर्मित कुंडली पर्याप्त होगी, जब तक घटना पूर्ण नहीं हो जाती। इन मामलों में भी, विशिष्ट प्रश्न की अनुपस्थिति में मैच का परिणाम मैच के प्रारम्भ के लिए खींची गई कुंडली से प्रतिबिंबित होगा। क्रिकेट के मामले में, यह वह क्षण होगा जब सिक्के से टॉस किया जाता है। दूसरे खेलों या घटनाओं में यह खेल के प्रारम्भ का सूचक क्षण हो सकता है, जैसे सीटी का बजना आदि।

इन सिद्धान्तों को व्यवहार में दिखाने के लिए नीचे चार उदाहरण दिए गए हैं। प्रथम पति को जलाने का एक संवेदनात्मक न्यायिक मामला है। दूसरा, वैवाहिक मनमुटाव के कारण अलगाव का न्यायिक मामला है। तीसरा और चौथा भारत के दो प्रधानमंत्रियों के शपथ-ग्रहण समारोहों की कुंडलियों का विश्लेषण है।

उदाहरण संख्या : 1

पत्नी और उसके संबंधियों द्वारा पति को जलाने का मामला

चन्द्रमा 10°56'	केतु 24°51'		मंगल 10°59'
शनि (व) 15°52'	उदाहरण : 1		
	प्रातः 9:35 24 अगस्त 1994 नई दिल्ली		सूर्य 6°59' बुध 17°41'
		बृ० 14°52' राहु 24°51'	लग्न 24°29' शुक्र 23°00'

बृ० 14°52'
राहु 24°51'
7
8
लग्न
24°29'
शुक्र
23°00'
6
सूर्य 6°59'
बुध 17°41'
5
4
9
3
12
मंगल
10°59'
10
11
शनि (व)
15°52'
चन्द्रमा
10°56'
2
1
केतु 24°51'

3 जुलाई 1992 को पत्नी, उसकी मां और भाई द्वारा वैवाहिक विवाद और अलगाव के कारण पति को जला दिया गया। पति को जलाने वाले इस अस्वाभाविक मामले में तीनों अभियुक्तों पर लगभग पिछले दो वर्षों से हत्या का मुकद्दमा चल रहा है।

लग्न में नीच ग्रह के साथ द्विस्वभाव लग्न है। चन्द्रमा एवं लग्न दोनों ओर से पाप ग्रहों की स्थिति और दृष्टि द्वारा पाप कर्तरी योग में है। इस

कुंडली में शास्त्रीय बंधन योग उपस्थित है जहां लग्न एवं चन्द्रमा दोनों ओर से समान संख्या में ग्रहों द्वारा घिरे हुए हैं। केवल मंगल ग्रह इस रेखागणित से बाहर है जो अष्टमेश होकर 10वें भाव से लग्न को देखते हुए निर्णय को दिखा रहा है जो न्याय संगत और विधि के अनुसार होने जा रहा है।

12वें भाव में द्वादशेश के साथ स्थित लग्नेश बुध जेल सूचित कर रहा है। लग्नेश बुध का 1°49' की दूरी पर षष्ठेश शनि के साथ निकटतम इशराफ लगभग दो वर्ष पूर्व की घटना दिखा रहा है जब वे गिरफ्तार हुए और उनके विरुद्ध मामला दर्ज हुआ। लग्नेश बुध और षष्ठेश शनि दोनों स्थिर राशियों और आपोक्लीम भावों में द्विस्वभाव लग्न के साथ संयुक्त होकर वर्ष दर्शाते हैं। अतः लगभग दो वर्ष पूर्व यह असाधारण मामला प्रारम्भ हुआ और न्यायिक मामले के लंबित होने के कारण अभियुक्त जेल में हैं। लग्नेश द्वादश भाव में स्थित है और षष्ठेश शनि से निकटतम अंशों में दृष्ट है।

लग्न अष्टमेश मंगल के नक्षत्र में है। 8वें भाव में लग्न की भांति ही समान अंशों में स्थित केतु अभियुक्तों के लिए जीवन और मृत्यु की स्थिति दिखा रहा है। चन्द्रमा 7वें भाव में षष्ठेश शनि के नक्षत्र में हैं जो न्यायिक मामले से संबंधित प्रश्न दिखाता है। 10वें भाव, न्यायालय के भाव में अष्टमेश मंगल सप्तमस्थ चन्द्रमा के निकटतम अंशों में स्थित है। 10वें भाव में मंगल निष्पक्ष निर्णय दर्शाता है। मंगल का 12वें भाव में स्थित द्वादशेश सूर्य के साथ इत्थसाल कठोर, दंडात्मक निर्णय बता रहा है।

4थे भाव और चतुर्थेश से अंतिम निर्णय सूचित होता है। 4था भाव अष्टमेश मंगल से दृष्ट है, चतुर्थेश राहु-केतु अक्ष में है, तथा 10वें भाव में मंगल के होने से अपरम्परागत कठोर और न्यायसंगत निर्णय दिखाता है जो विधि के अनुसार है।

पापकर्तरी योग में चन्द्रमा मंगल के साथ निकटतम ताजिक दृष्टि में स्थित हैं अतः अभियुक्तों को सज़ा अवश्य होगी। 8वें भाव में केतु लग्न के समान अंशों में स्थित है और कठोर सज़ा दिखाता है। 10वें भाव में मंगल भी सूचित करता है कि मामला अंततः उच्च न्यायालय में अपील के लिए जाएगा। 2सरे भाव में बृहस्पति की क्या भूमिका है जो दंड देने वाले तीन पाप ग्रहों षष्ठेश शनि, 8वें भाव में केतु और 10वें भाव में मंगल को देख रहा है। क्या दलीलों में असाधारण मोड़ आएगा और अन्य झूठे प्रमाण उच्च न्यायालय में प्रस्तुत होंगे। 2सरे भाव में राहु और बृहस्पति स्थित हैं। हम शनि, केतु और मंगल पर शुभ बृहस्पति की दृष्टि की उपेक्षा नहीं कर सकते। क्या यह अंततः निम्न न्यायालय द्वारा दिए गए कठोर निर्णय में कमी दिलाएगा। हमें अभी यह देखना है।

नवम्बर 1998 में दिल्ली उच्च न्यायालय ने तीनों अभियुक्तों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई। क्या उच्चतम न्यायालय में की गई अपील से यह सज़ा कम हो पायेगी यह समय ही बताएगा।

उदाहरण संख्या : 2
विवाह में विवाद और तलाक का मुकद्दमा

शनि (व) 13°21' केतु 15°54' चन्द्र 29°14'			शुक्र 3°51' मंगल 12°47'
लग्न 19°26'	उदाहरण : 2 8:40 सायं अगस्त 4, 1996 नई दिल्ली		सूर्य 18°40'
			बुध 10°50'
बृहस्पति (व) 15°23'			राहु 15°54'
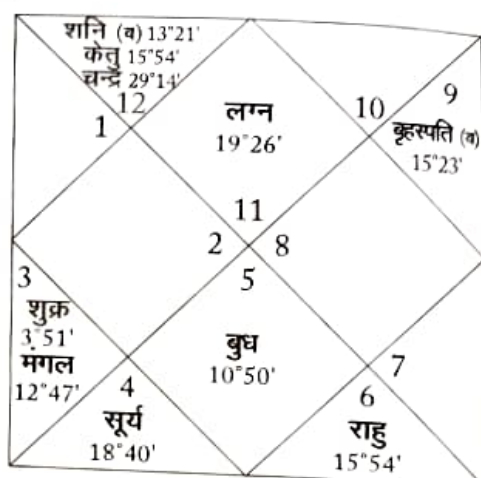
एक लड़की, जो वर्षों पहले विवाहित हुई थी, वैवाहिक मनमुटाव के बाद अपने पति के संयुक्त परिवार से अपने अभिभावकों के पास अपनी छोटी पुत्री को लेकर रहने के लिए वापस आ गई। विधिसम्मत अलगाव के लिए यह मामला न्यायालय में लंबित है। स्थिर लग्न स्थिति में कोई आकस्मिक परिवर्तन नहीं दिखा रहा। लग्न शीर्षोदय भी है जो शुभ फल देता है। इसका अर्थ है कि इस अलगाव ने उसे और अधिक अपमान और यंत्रणा से बचा लिया है। लग्न 19°26' पर 8वें भाव में स्थित राहु के नक्षत्र में होकर बाधाएं और अशांति दिखा रहा है। राहु का राशि-अधिपति अष्टमेश बुध 7वें भाव में, विवाह के भाव में, केतु के नक्षत्र में स्थित होकर विवाह में तलाक की ओर ले जाने की समस्याएं दिखा रहा है। 8वें भाव और अष्टमेश का सम्मिलित प्रभाव सदैव जीवन और मृत्यु की स्थिति की ओर संकेत करता है। यहां अष्टमेश बुध 7वें भाव में केतु के नक्षत्र में है और सप्तमेश सूर्य 6ठे भाव में है जो विवादों और न्यायिक मामलों का भाव है। अष्टमेश बुध केतु के नक्षत्र में है और 7वें भाव में स्थित है। क्या यह विवाह की मृत्यु को बताता है। यदि हां, तो कैसे? आइए इसे देखते हैं।

लग्न 7वें भाव से बुध की पूर्ण पाराशरी दृष्टि से दृष्ट है। यह बुध पंचमेश (प्रश्नकर्ता के साथ पुत्री) और अष्टमेश (बाधाएं और तलाक) है। 8वां भाव मांगल्य स्थान अथवा वैवाहिक परमानंद और सकुशलता का भाव है और राहु से गृहीत है तथा मंगल और शनि दोनों से दृष्ट है।

चन्द्रमा पंचमेश/अष्टमेश बुध के नक्षत्र में, 2सरे भाव में, केतु और शनि दोनों से अत्यधिक पीड़ित है। इसीलिए प्रश्नकर्ता की मुख्य चिंता धन के कारण उसकी बालिका का भविष्य है जो उसके पालन-पोषण और जीवन में व्यवस्थित होने के लिए आवश्यक है। चन्द्रमा द्वितीयेश और एकादशेश बृहस्पति की राशि में स्थित है जो तलाक के बाद उसके स्वयं के और उसकी पुत्री के स्थायित्व और भविष्य की इस व्यवस्था के लिए धन-प्राप्ति को सूचित करता है। चन्द्रमा संधि पर है और षष्ठेश होकर 2सरे भाव में स्थित है। यद्यपि संधि अनुकूल नहीं है तथापि राहु/केतु अक्ष के कारण तनावों और समस्याओं के बावजूद इस विवाद के चलते धन-प्राप्ति निश्चित है।

सप्तमेश सूर्य 6ठे भाव में गया है जो बताता है कि उसके पति ने अलगाव के लिए न्यायिक प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी है। प्रश्नकर्ता जानना चाहता है कि क्या न्यायालय निर्वाह के लिए उपयुक्त राशि निश्चित करेगा, क्योंकि वह बेरोजगार है और कौन उसकी पुत्री का स्वामित्व प्राप्त करेगा? पंचमेश बुध (पुत्री) 7वें भाव में उसके पति के भाव में स्थित है। लेकिन सप्तमेश सूर्य और पंचमेश बुध की 2/12 स्थिति सूचित करती है कि पिता अपनी पुत्री की ओर से बिल्कुल उदासीन है। 7वें भाव से विश्लेषण करने पर, चतुर्थेश और नवमेश मंगल 11वें भाव में स्थित है जो पति के माता और पिता को सूचित करता है। पति के अभिभावक केवल वित्तीय लाभों को देख रहे हैं। यदि पुत्री का स्वामित्व उनके हाथों में दिया जाता है, जो 7वें भाव से 5वें भाव में वक्री बृहस्पति द्वारा पुत्री की वापसी सूचित करता है, तब न्यायालय प्रश्नकर्ता और बालक के भरण-पोषण के लिए भारी पिण्डराशि भुगतान का आदेश नहीं दे सकता। षष्ठेश चन्द्रमा 2सरे भाव में राहु/केतु अक्ष में शनि के साथ पीड़ित है और द्वितीयेश बृहस्पति 11वें भाव में निकट अंशों में है और मंगल और शनि दोनों की उस पर पाराशरी दृष्टि है।

बृहस्पति न केवल वक्री है बल्कि राहु और केतु की भांति समान अंशों में भी है। अतः निर्वाह राशि भी अपर्याप्त होगी। अगस्त 1996 के अन्त में सुनवाई के दौरान न्यायालय ने अंतरिम मानदंड के रूप में प्रति माह 700/- रुपए की निर्वाह राशि देने का निर्देश दिया।

प्रश्नकर्ता बिना किसी उपयुक्त नौकरी और सम्पोषण के एक युवा लड़की है। वह पुनः विवाह करने के लिए भी उपयुक्त है यदि उसकी समस्याएं सुलझ जाएं, तथापि वह अभी इसके लिए तैयार नहीं है। लग्नेश शनि और चन्द्रमा 2सरे भाव में हैं। लग्नेश शनि दशमेश मंगल के साथ 0°34' की दूरी पर निकट इत्थसाल में लगभग सात महीने का समय दिखा रहा है। लग्नेश शनि और दशमेश मंगल क्रमशः 2सरे और 5वें भाव में स्थित होकर शिक्षण,

व्यवसाय में उपयुक्त स्थायी नियुक्ति के द्वारा धन-प्राप्ति दिखाता है (दशमेश 5वें भाव में है)। यद्यपि, समय में, वर्षों का योग शनि और मंगल द्वारा दिखाया गया है। दोनों संयुक्त रूप से स्थिर लग्न के साथ यथावत् स्थिति को दिखा रहे हैं। यह लड़की नौकरी नहीं ले सकती जो उसके चल रहे न्यायिक मामले से मिलने वाले संभावित लाभों को प्रभावित करेगा।

यद्यपि इस मामले के परिणाम में अभी देर है फिर भी यह मामला प्रश्नकर्ता के पक्ष में झुका हुआ है। लग्नेश शनि दशमेश मंगल के साथ निकटतम इत्थसाल में है। सप्तमेश का राशि-अधिपति 2सरे भाव में लग्नेश के साथ, शाब्दिक विनिमय के भाव में है और इसीलिए न्यायालय के हस्तक्षेप से समझौता होगा। अंतिम परिणाम प्रश्नकर्ता के पक्ष में होगा, जो शीर्षोदय लग्न, 11वें भाव में बलवान शुभ ग्रह और 2सरे भाव में धन स्थान में चन्द्रमा के साथ लग्नेश द्वारा सूचित होता है। अतः उसकी वर्तमान स्थिति प्रश्नकर्ता की सकुशलता के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

उदाहरण संख्या : 3
भारत के प्रधानमंत्री के रूप में अटल बिहारी वाजपेयी का शपथ ग्रहण समारोह

शनि 10°25' केतु 22°53'	मंगल 16°17' चन्द्र 17°36' बुध (व) 29°57'	सूर्य 1°52'	शुक्र 4°11'
	उदाहरण : 3 दोपहर 12:05:46 16 मई, 1996 नई दिल्ली		
			लग्न 1°37'
बृहस्पति (व) 23°38'			राहु 22°53'
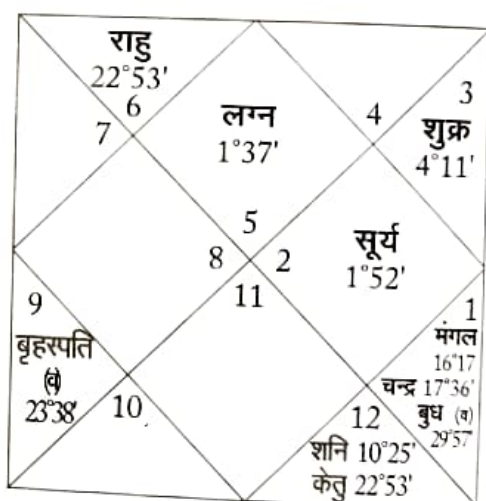
शपथ बृहस्पतिवार और कृष्ण चतुर्दशी को ली गई। उस क्षण के लिए प्रश्न कुंडली खींची गई जब शपथ लेने वाला व्यक्ति कह रहा था, मैं अटल बिहारी वाजपेयी ..... बृहस्पतिवार का स्वामी बृहस्पति शुभ है परन्तु कृष्ण पक्ष को शुभ नहीं माना जाता। चतुर्दशी रिक्ता तिथि है जिसके स्वामी, विनाश के अधिपति शिव हैं। लेकिन जब बृहस्पतिवार और रिक्ता तिथि संयुक्त होती है, तब मृत्यु योग बनता है जो अत्यधिक अशुभ है। चन्द्रमा क्रूर और उग्र नक्षत्र भरणी के नक्षत्र में था, जिसका स्वामी, मृत्यु का अधिपति यम है। पंचांग की एकमात्र शुभ स्थिति सौभाग्य योग होने की थी।

विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत में, मई 1996 में असंख्य घोटालों के राष्ट्रीय परिदृश्य के बीच चुनाव संपन्न हुए और अपने विरुद्ध अनेक आरोपों के कारण शासक कांग्रेस पार्टी की स्थिति दृढ़ नहीं थी। तकनीकी रूप से जनता की राय या चुनाव के पुर्वानुमान भी यह स्थिति सूचित करते थे कि कोई अकेला दल स्थायी सरकार गठित करने में सफल नहीं हो सकेगा। चुनाव परिणामों ने जैसा कि प्रत्याशित था, शासकीय कांग्रेस पार्टी को धक्का पहुंचाया। नवनिर्वाचित संसद में पहले 232 सदस्यों की अपेक्षा 136 सदस्य रह गए जो 1952 से लेकर अब तक के 11 आम चुनावों में सबसे कम थे। प्रमुख विपक्षी दल, भारतीय जनता पार्टी, संक्षेप में भाजपा की प्राप्ति उल्लेखनीय थी, जिसने अपने निष्ठावान और अनुभवी नेता अटल बिहारी वाजपेयी को भारत के अगले प्रधानमंत्री के रूप में प्रक्षेपित किया। भाजपा ने 160 सीटें प्राप्त कीं और संसद में अकेले बड़े दल के रूप में उभरी। 534 के सदन में अपने सहयोगी दलों शिव सेना, समता पार्टी, हरियाणा विकास पार्टी और अकाली दल को मिला के कुल उपस्थिति 194 थी। अभी भी सामान्य बहुमत के लिए 72 सदस्यों की कमी थी। लोकतंत्रात्मक परम्पराओं के अनुसार, भारत के राष्ट्रपति ने इसके नेता अटल बिहारी वाजपेयी को सरकार बनाने और एक पखवाड़े के भीतर अपना बहुमत सिद्ध करने के लिए आमंत्रित किया। आओ हम आने वाले दिनों में छिपे हुए रहस्यों को उद्घाटित करने के लिए अदृश्य की परतों में देखने का प्रयास करें। इस कुंडली में स्थिर और शीर्षोदय लग्न है। दोनों ही सरकार के गठन और पद की प्राप्ति के लिए अनुकूल हैं। सरकार का कारक लग्नेश सूर्य 10वें भाव में दिग्बली होकर पुनः अत्यधिक अनुकूल है। लग्न 1°37' पर लग्नेश सूर्य के समान अंशों में है, जो 10वें भाव में 1°52' पर अनुकूल होकर स्थित है, लेकिन दोनों केतु के नक्षत्रों में स्थित हैं जो 8वें भाव में अत्यधिक पीड़ित है।

चन्द्रमा योगकारक मंगल के साथ इशराफ योग में है और अभी पूर्ण इत्थसाल की स्थिति से एक अंश आगे हुआ है। 9वें भाव में नवमेश मंगल के साथ चन्द्रमा के इस प्रारम्भिक अनुकूल योग का शीघ्र निराकरण अन्त में आने वाली अनुकूल समयावधि को सूचित करता है और यहां से अनुकूल विगत को पीछे छोड़ता हुआ इशराफ प्रारम्भ होता है। चन्द्रमा तृतीयेश/दशमेश शुक्र के नक्षत्र में संघर्ष दिखा रहा है जिसे इस सरकार को अवश्य भुगतना है। यहां शुभता रुक जाती है। शेष परिदृश्य अशुभ है, जैसा कि गृहीय स्थिति से सूचित है।

लग्नेश सूर्य और 10वां भाव दोनों सरकार सूचित करते हैं और यह दोनों 8वें भाव से शनि से दृष्ट हैं। 8वें भाव से षष्ठेश/सप्तमेश शनि विरोधी की

ओर से छल, दुरभिसंधि, पीठ में छुरा घोंपना जैसी बाधाएं दिखाता है। शनि केतु के साथ स्थित होकर इसे और पीड़ित कर रहा है। संसद में वाद-विवाद में, हमने देखा कि संयुक्त विपक्ष ने भाजपा पर सांप्रदायिकता की ओर उसके झुकाव और राजनीतिक लाभों के लिए धार्मिक रूढ़िवाद पर अत्यधिक वाष्पशील, प्रत्यक्ष और यहां तक कि विद्वेषपूर्ण प्रहार किया। देखें, शनि और केतु प्रतिपक्षी के वाक् स्थान में, 7वें भाव से 2सरे भाव में पीड़ित हैं और द्वितीयेश बृहस्पति राहु और केतु के साथ निकटतम अंशों में स्थित होकर ऐसा ही उग्र और विद्वेषपूर्ण वाद-विवाद दिखा रहा हैं।

शनि यहां बहुत बड़ी भूमिका निभा रहा है, कैसे? अब हम देखते हैं कि लग्नेश सूर्य और कार्येश दशमेश शुक्र निकट अंशों में शनि के द्वारा यमया योग में संयुक्त है। मंद संयोजन, जिसमें दुहरा इत्थसाल योग निर्मित होकर दुर्भाग्यशाली घटनाओं को स्पष्ट दिखाता है। ऊपरिलिखित विवेचन के अनुसार यहां शनि निम्नलिखित तीन कारणों से अत्यधिक अशुभ है :

i) यह षष्ठेश और सप्तमेश है, जो इस लग्न के लिए अत्यंत अशुभ है।

ii) यह राहु/केतु अक्ष में है।

iii) यह 8वें भाव में स्थित है और लग्नेश और कार्येश के बीच प्रतिकूल यमया योग बना रहा है।

यह कहा जाता है कि प्रश्न की किसी अनुकूल पूर्ति के लिए लग्नेश ओर कार्येश के बीच अनुकूल संबंध होना चाहिए। यहां यह संबंध मुश्किल से अनुकूल है। दशमेश शुक्र का राशीश बुध 10वें भाव से वक्री गति से 9वें भाव में पदावनत होने पर हीन हो रहा है। एक हीन ग्रह, जहां कहीं बैठता है उस भाव के कारकत्वों को नष्ट करता है। यहां यह भाग्य स्थान या 9वें भाव में है। यह वक्री बुध पंचमेश/अष्टमेश वक्री बृहस्पति के साथ इशराफ योग में है और रद्द योग का कारण बनकर सरकार के गठन के समस्त प्रयासों को स्थगन की ओर ले जा रहा है।

कार्येश दशमेश शुक्र 8वें भाव से षष्ठेश/सप्तमेश शनि के साथ निकटतम ताजिक शत्रु दृष्टि रखता है। दशमेश शुक्र अष्टमेश वक्री बृहस्पति से भी दृष्ट है। वास्तव में, लग्न, लग्नेश, 10वां भाव, दशमेश और चन्द्रमा सभी वक्री अष्टमेश बृहस्पति (यदि हम वक्री ग्रह की दृष्टि पिछले भाव से भी लें) से दृष्ट होकर असफलता दर्शाते हुए चरम बाधा निर्मित कर रहा है। प्राकृतिक शुभ ग्रह होते हुए भी बृहस्पति शुभ परिणाम देने के योग्य नहीं है क्योंकि :

i) बृहस्पति 5वें भाव में, पद-प्राप्ति के भाव में वक्री होकर स्थगन दे रहा है, क्योंकि यह अष्टमेश भी है।

ii) बृहस्पति, राहु/केतु के समान अंशों में है जो 8वें भाव के अक्ष में स्थित है।

झगड़ों के सभी प्रश्नों में, जैसा कि इस मामले में है, लग्न में बिना किसी पाप प्रभाव के पाप ग्रह होना चाहिए। इसी प्रकार 7वां भाव/सप्तमेश प्रतिपक्षियों के लिए विश्लेषित करना पड़ता है। यहां दोनों ही समान स्थिति में है। लेकिन 7वें भाव से विश्लेषण करने पर, 7वें भाव से दशम वृश्चिक है जो 3सरे भाव से अपने स्वामी मंगल से दृष्ट होकर इसे बल प्रदान कर रहा है। 3सरा भाव संबद्ध गुटों का भी है जो विपक्ष संयुक्त मोर्चा को बलवान बना रहा है।

			केतु
शनि	दशमांश		बृहस्पति (व) शुक्र
सूर्य बुध (व)			लग्न
राहु			मंगल चन्द्रमा

मंगल चन्द्रमा 6
बृहस्पति (व) शुक्र 4
3 केतु
7
लग्न 5
8
2
11
9 राहु
शनि
1
10 सूर्य बुध (व)
12

शपथ ग्रहण समारोह की कुंडली के दशमांश में लग्नेश सूर्य और दशमेश शुक्र, अष्टमेश बृहस्पति और हीन बुध के साथ 6/12 अक्ष में हैं। लग्न पाप ग्रह शनि से प्रभावित है जो षष्ठेश/सप्तमेश है। ये योग सरकार के जारी रहने के लिए अत्यधिक बाधाएं दिखा रहे हैं और संकेत कर रहे हैं कि भाजपा अपना बहुमत सिद्ध नहीं कर पाएगी। इसका बोध होने पर भाजपा ने अपना बहुमत सिद्ध करने के लिए मतदान का प्रयास नहीं किया और विश्वासमत वापस लेने की घोषणा की जिससे संयुक्त मोर्चा को सरकार बनाने का अवसर मिल गया।

उदाहरण संख्या : 4

भारत के प्रधानमंत्री के रूप में एच.डी. देवगौड़ा का शपथ ग्रहण समारोह

शपथ अनुराधा नक्षत्र के दौरान पूर्णिमा और शिव तथा सिद्ध योग के संयोग पर ली गई थी। पूर्णिमा अनुकूल तिथि है और अनुराधा स्थिर कार्यों के लिए मृदु या कोमल नक्षत्र है। इस नक्षत्र ने इस कुंडली में षष्ठेश/सप्तमेश शनि

शनि 11°45' केतु 21°56'	बुध 26°36' मंगल 28°02'	सूर्य 17°15'	शुक्र (व) 1°37'
	उदाहरण : 4 दोपहर 12:32 1 जून 1996 नई दिल्ली		
			लग्न 21°57'
बृहस्पति (व) 22°41'	चन्द्रमा 9°26'		राहु 21°56'
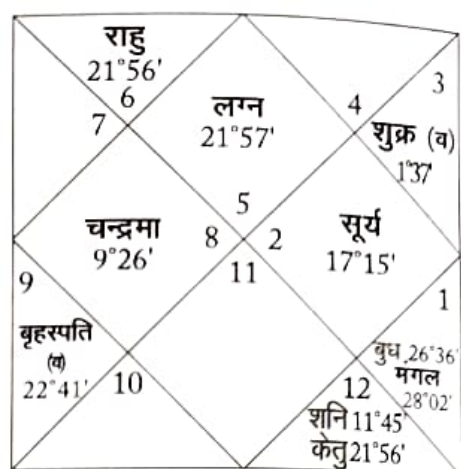
का स्वामित्व ले रखा है। यह शनि 8वें भाव में अत्यधिक पीड़ित है और यहां से यह दशम भाव में स्थित लग्नेश और दशम भाव को देख रहा है। तथापि सिद्ध योग का प्रारम्भ बहुत शुभ है।

लग्न स्थिर और शीर्षोदय है जो पद की प्राप्ति और सरकार के गठन के लिए उत्तम है। लग्न दशमेश शुक्र के नक्षत्र में है और लग्नेश सूर्य 10वें भाव में स्थित होकर दिग्बल प्राप्त कर रहा है और इसे बहुत अनुकूल बना रहा है।

चन्द्रमा 4थे भाव में नीच है और शनि के नक्षत्र में है जो 8वें भाव में स्थित है और इसीलिए अनुकूल नहीं है। एक आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि लग्न राहु और केतु के समान अंशों पर है जो 2/8 अक्ष में स्थित है और पंचमेश/अष्टमेश बृहस्पति से एक अंश के भीतर है जो 5वें भाव में वक्री है। यहां से, यह वक्री होकर लग्न, लग्नेश, 10वां भाव, दशमेश और चन्द्रमा को देखता है। बृहस्पति दशमेश शुक्र के नक्षत्र में चल रहा है।

अब हम देखते हैं कि इस कुंडली में अटल बिहारी वाजपेयी के शपथ ग्रहण समारोह की कुंडली की तुलना में कितना सुधार आया है। पंचांग की दृष्टि से यह अत्यंत अनुकूल है। शपथ, पूर्णिमा, अनुराधा नक्षत्र और सिद्ध योग के दौरान ली गई, जो सभी अनुकूल हैं। लग्न, जो पहले केतु (8 भाव में) के नक्षत्र में था, अब दशमेश शुक्र के नक्षत्र में है। अभी तक लग्नेश सूर्य और कार्येश दशमेश शुक्र के बीच संबंध अनुपस्थित है, लेकिन पिछले मामले की भांति प्रतिकूल नहीं है। चन्द्रमा की लग्नेश या दशमेश के साथ युति संभावित उच्च पद देती है। इस मामले में चन्द्रमा, 10वें भाव में स्थित लग्नेश सूर्य के साथ दृष्टि के साथ-साथ इत्थसाल योग से संयुक्त है। पूर्वोल्लिखित अटल बिहारी वाजपेयी के मामले में यह संबंध उपस्थित नहीं था।

दशमांश में, लग्नेश और दशमेश बृहस्पति 5वें भाव में उच्च है और 11वें भाव से नवमेश/द्वितीयेश उच्च के मंगल से दृष्ट हैं जिससे यहां एक बहुत बलवान राजयोग घटित हो रहा है। इसमें नवमेश और दशमेश दोनों बिना किसी पाप दृष्टि या युति के 5/11 अक्ष में उच्च हैं जो किसी राजयोग के फलन के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। द्वितीयेश/नवमेश मंगल एकादश भाव में उच्च का होकर लग्नेश/दशमेश बृहस्पति से परस्पर दृष्टि संबंध बना रहा है।

लग्न			केतु सूर्य शुक्र (व)
शनि	दशमांश		बृहस्पति (व)
मंगल			
राहु बुध		चन्द्रमा	

अशुभ योग भी इस कुंडली में उपस्थित हैं जिन्हें परिणाम देना है। 10वां भाव राहु/केतु अक्ष में षष्ठेश सूर्य और अष्टमेश शुक्र से दृष्ट है। शुक्र न केवल अष्टमेश है बल्कि तृतीयेश होकर सरकार के सहयोगियों को सूचित कर रहा है। तृतीयेश वक्री शुक्र समर्थन का विरोध सूचित करता है। यह योग देवगौड़ा सरकार के लम्बे समय तक निरंतर चलते रहने के लिए बहुत अनुकूल नहीं है। 10वें भाव पर राहु/केतु अक्ष में षष्ठेश और अष्टमेश की युति/दृष्टि विपक्षियों, और समर्थन देने वाले दलों के बीच होने वाले विवाद से सरकार के अस्तित्व के लिए समस्याएं उत्पन्न कर रही है।

14
कर्म और दुरात्माएँ

अतीत में किए कार्य जो वर्तमान एवं भविष्य को प्रभावित करें, उन्हें कर्मों के रूप में परिभाषित किया जाता है। पहले किए गए कर्मों का परिणाम कर्मफल कहलाता है और वे भाग्य और किस्मत के रूप में जाने जाते हैं। स्थूलतः कर्मों को निम्नलिखित तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है।

1. संचित कर्म : ये पिछले जन्म या जन्मों में किए गए संचित कर्म हैं।
2. प्रारब्ध कर्म : ये वे संचित कर्म हैं जो एक व्यक्ति की कुंडली के रूप में उत्तराधिकार स्वरूप प्राप्त होते हैं, जिसे भाग्य कहा जाता है और जो उसके संचित कर्मों पर आधारित होकर उसके वर्तमान जीवन के सुख या दुःखों को दर्शाते हैं।
3. क्रियामान कर्म : ये वे कर्म हैं जिन्हें एक व्यक्ति अपने वर्तमान जीवन में संचित और प्रारब्ध के बल पर और अपने विवेक के स्वज्ञान, आत्मोपलब्धि और उद्‌बोधन, जिसे स्वतंत्र इच्छा शक्ति कहा जाता है, से प्रभावित होकर निष्पादित करता है। अतः कर्म कभी भी गतिहीन नहीं हैं। वे सदैव गतिमान हैं तथा कर्मफल निरंतर परिवर्तन की स्थिति में हैं- सदैव परिवर्तनीय और फिर भी व्यक्ति के कार्यों से नियंत्रित।

कर्म और कर्मफल की सम्पूर्ण योजना आत्मा का एक जन्म से दूसरे जन्म में पुनर्जन्म की अवधारणा पर आधारित है। इस समस्त विषय का विस्तृत वर्णन इस संक्षिप्त विवेचन के क्षेत्र से बाहर है। कर्म सिद्धान्त से संबंधित विविध अवधारणाएं विद्यमान हैं लेकिन फिर भी मैं अपने अनुभव और अनुबंधन से इस जटिल सिद्धान्त का ज्योतिषीय आधार और विशेष रूप से प्रश्न कुंडली का विश्लेषणात्मक संबंध प्रस्तुत कर रहा हूं।

दार्शनिक रूप से, संचित कर्मों के कारण स्वर्ग या नरक में सुख या दुःख की प्राप्ति होती है तथा संचित कर्मों का केवल वह भाग जो इस जन्म में भोगने या अनुभव करने के पश्चात समाप्त होना है, वह प्रारब्ध के रूप में

उपलब्ध होता है। यद्यपि ज्योतिषीय रूप में, भिन्न और अधिक तार्किक व्याख्या उपलब्ध है। सुख या दुःख के लिए कोई अलग स्वर्ग या नरक नहीं है। इस जीवन के प्रवास में ही स्वतः वास्तविक स्वर्ग या नरक की अनुभूति हो जाती है और केवल वही संचित कर्म जिनकी इस जीवन में कर्मफल की प्राप्ति नहीं हुई वे प्रारब्ध के रूप में आगे बढ़ जाते हैं। इसीलिए यह कहा जाता है कि आत्मा, व्यक्ति के पिछले कर्मफल को न्यायसंगत रूप प्रदान करने के लिए उचित ग्रह स्थिति की प्रतीक्षा करती है। अतः प्रारब्ध जन्म के समय पिछले कर्मों का आकाश का चित्रण है जो अनुसरण करने के लिए सुख और दुःख में स्थानांतरित होता है।

कर्मों को पुनः निम्नलिखित तीन रूप में प्रस्तुत किया गया हैं।

1. कायिक कर्म (शारीरिक क्रियाएँ)
2. वाचिक कर्म (उच्चारित या शाब्दिक क्रियाएँ)
3. मानसिक कर्म (मानसिक क्रियाएँ)

कायिक कर्म काया या शरीर से किए जाते हैं, जिन्हें शारीरिक क्रियाएँ कहा जाता है। उदाहरणार्थ, एक व्यक्ति कार चला रहा है और अकस्मात् एक बच्चा सामने आ जाता है। उस बालक को बचाने के लिए कार को मोड़ा या रोक दिया जाए जिसके परिणामस्वरूप दूसरी दुर्घटना हो जाए, जिसमें तीसरा व्यक्ति घायल हो जाए या मारा जाए। अतः कार चालक के कायिक कर्मों से किसी व्यक्ति की मृत्यु हो गई, जिसमें न उसकी वाणी और न उसकी मानसिक क्रियाएँ सम्मिलित थीं। कार चालक ने पूर्वचिंतन या पूर्वविचार से हत्या नहीं की। इस प्रकार की क्रिया अदृढ़ कायिक कर्म फल उत्पन्न करती है जो अस्थायी हैं। यह व्यक्ति के लिए अप्रिय दुःख नहीं लाता और धार्मिक क्रिया और विचार से इसका उपचार किया जा सकता है।

वाचिक कर्म या शाब्दिक क्रियाएं वे कर्म हैं जिनमें एक व्यक्ति क्रोध या भावावेश के अचानक अत्यधिक उभार के कारण कठोर ओर अपमानजनक भाषा का प्रयोग करता है, जो दूसरे व्यक्ति को शाब्दिक चोट या दुःख पहुंचाए। इस प्रकार की क्रिया भी जब दूसरी प्रकार की क्रियाओं के साथ संबंधित न हो, तब धार्मिक क्रिया से बदलने की क्षमता के कारण अदृढ़ वाचिक कर्म उत्पन्न करती है। कायिक कर्मों की भांति यह व्यक्ति भी परिणामस्वरूप अत्यधिक दुःख का भागीदार नहीं हो सकता।

मानसिक कर्म या मानसिक क्रियाएं परिकल्पना या पूर्वचिंतन द्वारा निष्पादित की जाती हैं। एक व्यक्ति का उदाहरण लेते हैं जो दूसरे व्यक्ति को योजना और पूर्वविचार से चोट या नुकसान पहुंचाए। ऐसा कर्म, जब या

तो अकेले या कायिक अथवा वाचिक के योग से निष्पादित किया जाए तो दृढ़ या स्थायी कर्मों की उत्पत्ति करता है और इसीलिए उनका कोई उपाय या उपचार नहीं है। हमारे हिन्दू दर्शन में विचार है कि यदि एक व्यक्ति उसके द्वारा किए गए किसी कार्य के लिए प्रायश्चित करे, भले ही वह कर्म अनजाने में हो, तब भी वह इन क्रियाओं के अदृढ़ मानसिक कर्मों के परिणामस्वरूप स्वयं दुःख भोगता है। यह दृष्टिकोण ज्योतिषीय रूप से और तार्किक रूप से विवादास्पद है।

मोटे तौर पर अज्ञानतावश किया गया कोई कार्य अदृढ़ और जो सोच-समझकर किया जाए, वह दृढ़ कर्मों की उत्पत्ति करता है। एक प्रश्न है कि क्या व्यक्ति के वंशजों को भी उनके पूर्वजों के शुभ या अशुभ कर्मों से पीड़ित होना पड़ता है? शायद हां, अप्रत्यक्षतः यह उनके स्वयं के कर्मों का परिणाम है जो उनको वर्तमान वंश में लाता है।

उपरोक्त तीन प्रकार के कर्मों को उनके संयुक्त प्रभावों पर आधारित दृढ़ या अदृढ़ परिणाम को सूचित करने के लिए सारणीबद्ध किया जा सकता है:

	कायिक	*वाचिक*	*मानसिक*
कायिक	—	अदृढ़	दृढ़
वाचिक	अदृढ़	—	दृढ़
मानसिक	दृढ़	दृढ़	—

अतः कर्मों के तीन प्रकारों और दृढ़ और अदृढ़ के छह योगों में से चार योग दृढ़ कर्म और केवल दो अदृढ़ कर्म देते हैं। सभी तीनों कायिक, वाचिक और मानसिक का योग केवल दृढ़ कर्म ही देता है।

यह व्यावहारिक ज्योतिषियों का सामान्य अनुभव है कि प्रत्येक प्रश्नकर्ता कुंडली के प्रतिकूल योगों को निष्फल करने के लिए उपाय या उपचारी युक्तियों को जानने की इच्छा करता है। अधिकांश ज्योतिषी इस तथ्य की गहराई में जाए बिना उपाय देते रहते हैं कि क्या उपाय पिछले कर्मों के दृढ़ या अदृढ़ होने के कारण संभावित है या नहीं। महर्षि पाराशर का "बृहत पाराशर होरा-शास्त्र" दान (भिक्षा देना), मंत्रों (वैदिक श्लोक) आदि के रूप में उपायों का सुझाव देता है। रत्न-पत्थरों का प्रयोग बाद में विकसित हुआ है और चाहे इसमें शास्त्रीय अनुमोदन का अभाव है फिर भी रत्नों के अभिलक्षण ग्रहों के कारकतत्वों के अनुरूप होने के कारण तथा रंग चिकित्सा विज्ञान से रत्नों का प्रयोग उपायों में सक्षम हो सकता है।

कुंडली से पिछले बुरे कर्मों की पहचान कैसे करें?

6, 8 या 12वें भाव में स्थित शुभ ग्रह, केन्द्रों और त्रिकोणों में पाप ग्रह पूर्व जन्मों के अशुभ कर्मों को बताते हैं। द्वितीयेश, पंचमेश या दशमेश होने से वे क्रमशः वाचिक, मानसिक और कायिक कर्मों को सूचित करते हैं। 2सरे भाव में पाप ग्रह अशुभ वाचिक कर्मों को, 5वें भाव में अशुभ ग्रह मानसिक कर्मों को और 10वें भाव में अशुभ ग्रह कायिक कर्मों को सूचित करते हैं। ऐसे अशुभ कर्म अभिशापों या शापों को उत्पन्न करते हैं जो भावी जीवन अथवा जीवनों में प्रकट होते हैं। 6, 8 या 12वें भावों में शुभ ग्रह और केन्द्रों-त्रिकोणों में पाप ग्रहों की स्थिति लग्न, आरूढ़, चन्द्रमा या छत्र राशि से घटित हो सकती है। छत्र राशि को अध्याय 3 में व्याख्यायित किया गया है।

प्रत्येक स्थिति के कारकत्व निम्नलिखित हैं :

कहां से	*कारण*	*उपाय*
लग्न	लोगों से विद्वेष के कारण शापों या अभिशापों से दुर्भाग्य	दान करना
आरूढ़	ब्राह्मणों के शापों के कारण दुर्भाग्य	ब्राह्मणों का सत्कार करना
चन्द्रमा	काला जादू या शत्रुओं की दुष्टता के कारण दुर्भाग्य	दरिद्र व्यक्ति को दान देना
छत्र राशि	ईश्वरीय कोप के कारण दुर्भाग्य जो अभिभावकों, अग्रजों, गुरुओं को सम्मिलित करता है	देवों या उपयुक्त इष्ट की पूजा करना

शुद्ध सात्विक चिन्तन, क्रियाएं एवं भोजन, सभी के प्रति करुणा की अनुभूति तथा गुरुओं और अग्रजों से आशीर्वाद प्राप्त करना उत्तम उपाय है।

क्या अशुभ कर्म दृढ़ हैं अथवा अदृढ़

पूर्व जन्मों के अशुभ कर्मों को दिखाने वाले ग्रहों को इस प्रकार सूचित किया गया है :

1. 2सरे भाव, 5वें भाव, 10वें भाव में पापग्रह।
2. 6ठे भाव, 8वें भाव, 12वें भाव में शुभ ग्रह।
3. द्वितीयेश, पंचमेश या दशमेश शुभ ग्रह होकर 6ठे, 8वें या 12वें भाव में स्थित हों।

यदि उपरोक्त अशुभ कर्मों को दर्शाने वाले ग्रह चन्द्रमा की राशि या होरा में स्थित हैं, तब ये दृढ़ कर्मों की ओर संकेत करते हैं। इसके विपरीत, यदि ये ग्रह सूर्य की राशि या होरा में हैं, तो यह अदृढ़ कर्मों की ओर संकेत करते हैं। सामान्यतः चन्द्रमा की होरा में ग्रहों की बहुलता दृढ़ कर्मों को और सूर्य की होरा में अदृढ़ कर्मों को दिखाती है।

कुंडली से पूर्व जन्मों के शुभ कर्म

केन्द्रों और त्रिकोणों में स्थित शुभ ग्रह और 6, 8, या 12वें भाव में पाप ग्रह पूर्व जन्मों के शुभ कर्मों को सूचित करते हैं। ये शुभ ग्रह, यदि 2, 5 या 10वें भावों के स्वामी हों तो ये क्रमशः उत्तम, वाचिक, मानसिक और कायिक कर्मों को सूचित करते हैं।

जन्म कुंडली और प्रश्न में संबंध

जन्म कुंडली पूर्व जन्म के कर्मों को और प्रश्न कुंडली वर्तमान जीवन के कर्मों को दिखाती है। यह संबंध पिछले कर्मों के साथ वर्तमान कर्मों को संयोजित करता है। मान लीजिए एक जन्म कुंडली में ग्रहों का अनुकूल विन्यास तथा अनुकूल दशा का अनुक्रम पिछले उत्तम कर्मों को दिखा रहा है तथा प्रश्न कुंडली प्रतिकूल योगों के द्वारा वर्तमान अशुभ कर्मों को दर्शा रही है। ऐसे मामलों में, जन्म कुंडली से एक शुभ दशा उत्तम परिणाम नहीं दे सकती। इसी प्रकार, एक स्थिति हो सकती है जहां एक जन्म कुंडली पिछले अशुभ कर्मों को दिखाती है और प्रश्न कुंडली इस जीवन के वर्तमान शुभ कर्मों को दिखाती है। ऐसे मामलों में जन्म कुंडली की बुरी दशा उतनी बुरी नहीं होगी। इसे निम्नलिखित सारणी में व्याख्यायित किया जा सकता है।

जन्म कुंडली और प्रश्न कुंडली पर आधारित अनुकूल अथवा प्रतिकूल समय के विश्लेषण की विधि :

जन्म कुंडली / प्रश्न कुंडली	उत्तम	औसत	प्रतिकूल
उत्तम	अत्युत्तम	उत्तम	औसत
औसत	उत्तम	औसत	प्रतिकूल
प्रतिकूल	औसत	प्रतिकूल	अत्यंत प्रतिकूल

जन्म कुंडली और प्रश्न कुंडली के इस अंतः संबंध को समझना विशुद्ध भविष्यसूचक योग्यता के मंच पर पहुंचने के लिए आवश्यक होता है। मैंने इस संयुक्त विश्लेषण के प्रयोग को वहां सहायता देते पाया है जहां प्रश्न

कुंडली से उद्घाटित होने वाले वर्तमान कर्मों के कारण व्यक्ति की विशेष दशा को संतुलित करना है। अतः जन्म तथा प्रश्न कुंडली के परिणामों का हिसाब रखना विवेकपूर्ण है। तभी विश्वास के साथ परिणामों को व्यक्त करना चाहिए।

एक दूसरा वर्गीकरण भी है। यदि एक व्यक्ति के पास जन्म कुंडली नहीं है, तब यह अंतःसंबंध सम्भव नहीं होगा, लेकिन तब प्रश्न कुंडली उसके पूर्व जन्म के कर्मों के साथ-साथ वर्तमान जीवन की प्रकृति को भी खोल पाएगी। 5वां भाव पिछले कर्मों और 9वां भाव वर्तमान कर्मों को बताता है यद्यपि कुछ 9वें भाव को पिछले कर्मों और 5वें भाव को वर्तमान कर्मों को बताने वाला मानते हैं।

बाधा की पहचान कैसे करें

विभिन्न लग्नों के लिए बाधक स्थान या बाधा उत्पन्न करने वाले भाव और उनके स्वामी निम्नलिखित हैं।

उदित लग्न	*बाधक भाव*	*बाधक राशि*	*बाधकाधिपति*
मेष	11वां भाव	कुम्भ	शनि
वृष	9वां भाव	मकर	शनि
मिथुन	7वां भाव	धनु	बृहस्पति
कर्क	11वां भाव	वृष	शुक्र
सिंह	9वां भाव	मेष	मंगल
कन्या	7वां भाव	मीन	बृहस्पति
तुला	11वां भाव	सिंह	सूर्य
वृश्चिक	9वां भाव	कर्क	चन्द्रमा
धनु	7वां भाव	मिथुन	बुध
मकर	11वां भाव	वृश्चिक	मंगल
कुम्भ	9वां भाव	तुला	शुक्र
मीन	7वां भाव	कन्या	बुध

बाधक स्थानों के स्वामी, बाधक स्थान में स्थित ग्रह और ग्रह जो बाधक स्थानों को देखते हैं, अपने घटते हुए क्रम में बाधा की प्रबलता को दर्शाते हैं।

बाधा को निम्नलिखित प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है :

1. *धर्म बाधा या ईश्वरीय कोप :* जब इन लग्नों के बाधकाधिपति 6, 8 या 12वें भावों में स्थित हैं, तब इन ग्रहों द्वारा सूचित देवी देवता का ईश्वरीय कोप होता है। यदि बाधक ग्रह या सूर्य से 12वें भाव में पाप ग्रह स्थित हों, तो यह कथित देवता के मूर्तिभंजन के कारण अप्रसन्नता बताता है। उपर्युक्त योग में बाधक ग्रह के साथ मांदि, राहु, शनि या मंगल की युति संदूषण द्वारा मंदिर का विघटन एवं कर्मचारियों का आपसी झगड़ा आदि बताता है।

   4थे भाव में बाधकाधिपति, बाधा भाव में चतुर्थेश या किसी दूसरे रूप में उनका संबंध भी चतुर्थेश द्वारा सूचित किए गए देवी-देवता का ईश्वरीय कोप दर्शाता है। विभिन्न ग्रहों द्वारा नियंत्रित देवी-देवताओं को प्रथम अध्याय में विवेचित किया गया है।

2. *दृष्टि बाधा :* जब बाधकाधिपति, लग्न, लग्नेश, आरूढ़ या आरूढ़ लग्न के स्वामी को देखता है तो इसे दृष्टि बाधा कहते हैं। इसी प्रकार, यदि सप्तमेश बाधा स्थान में हो या सप्तमेश और बाधकाधिपति का युति अथवा दृष्टि से संबंध हो, तब भी यह दृष्टिबाधा है।

3. *सर्प बाधा :* मिथुन या कन्या लग्नों में, जहां बृहस्पति बाधक होकर 6, 8 या 12वें भावों में स्थित हो तब सर्पों के क्रोध के कारण सर्पबाधा होती है। अधिकांशतः तब, जब राहु बृहस्पति के साथ संयुक्त हो या बृहस्पति को देखता हो।

4. *प्रेत बाधा :* इस विस्तृत शीर्षक के अंतर्गत प्रेत, मृतकों की आत्माएं, पिशाच जैसे राक्षस या दानव, काला जादू आदि की व्याख्या शामिल है। प्रेत बाधा की पहचान करने के लिए लग्न, लग्नेश, आरूढ़ या आरूढ़ाधिपति का 6ठे भाव या षष्ठेश, मंगल, शनि या केतु से संबंध अवश्य होना चाहिए। सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण संकेत उपर्युक्त योग में मांदि का शामिल होना है।

मांदि

बाधक स्थान में, 6, 8, 12वें भावों में या पूर्व पुण्यों को दर्शाने वाले त्रिकोणों में पीड़ित मांदि प्रेत बाधा दर्शाता है। विभिन्न ग्रहों के साथ मांदि की युति दुरात्माओं के प्रकार और आत्मा का प्रेत या दुरात्मा बन जाने का कारण बताती है जैसे अस्वाभाविक दुर्घटना से मृत्यु या मृत्यु के पश्चात् दाह-संस्कार के उचित विधानों में त्रुटियों का रह जाना है।

यदि मांदि मंगल के राशि या नवांश में स्थित हो, तो व्यक्ति पिछले जन्म में अस्वाभाविक मृत्यु से मरा होगा। शनि के साथ मांदि की युति से दरिद्रता और पीड़ा के कारण मृत्यु हुई होगी। मांदि और राहु की युति हो तो सर्प के काटने या विषपान के कारण तथा जलीय राशि में पीड़ित मांदि से डूबने के कारण मृत्यु हुई होगी। शुभ ग्रहों के साथ संयुक्त मांदि पिछले जन्म में स्वाभाविक मृत्यु प्रदान करता हैं जबकि अशुभ ग्रहों के साथ अस्वाभाविक मृत्यु बताता है।

पिछले जन्म में लिंग का निर्धारण विषम या सम राशि या नवांश में मांदि के स्थापन से किया जा सकता है, जहां विषम राशि पिछले जन्म में पुरुष और सम राशि स्त्री दिखाती है।

चर राशि में मांदि का अर्थ है कि व्यक्ति बहुत पहले मरा है और स्थिर राशि में, हाल ही में मरा है। 4थे भाव में या चतुर्थेश के साथ मांदि परिवार या कुटुम्ब से संबंधित प्रेत की ओर संकेत करता है।

पूर्व जन्म में व्यक्ति की किस आयु में मृत्यु हुई, यह मांदि के अंशों से निश्चित किया जा सकता है। प्रारम्भिक अंशों से बचपन और आरोही अंशों से वृद्ध आयु सूचित होती है। इसी प्रकार मांदि द्वारा गृहीत राशि के स्वामी से भी आयु देखी जाती है। ज्योतिष के सामान्य सिद्धान्तों के अनुसार चन्द्रमा भी आयु बताता है, जैसे शुक्ल पक्ष की प्रारम्भिक तिथियों में चन्द्रमा बाल अवस्था और तदनुसार सूचित करता है।

उसके पिछले जन्म में प्रेत की जाति मांदि द्वारा गृहीत राशि के स्वामी और राशि से देखी जाती है। अनेक समुदायों में शत्रुओं को असहनीय हानि, चोट या मृत्यु तक पहुंचाने के लिए काला जादू, जादू-टोना, दुरात्माओं का प्रयोग किया जाता हैं। ये विधियां सथान-स्थान पर विभिन्न रूप से अपनाई जाती हैं। परन्तु साधारणतया अमावस्या को भरणी या कृतिका नक्षत्रों के समय शमशान में जादू, जादू-टोना, यज्ञीय अभ्यासों, आहूति या घी का यज्ञीय चढ़ावा और आठों प्रकार के विष, शत्रु का नमोच्चारण इत्यादि क्रियाएं शामिल की जाती हैं।

इस प्रकार शत्रु को हानि पहुंचाने के लिए प्रेतात्मा का आह्वान किया जाता है। इसे अभिचार कहते हैं जिसमें दूसरों को नुक्सान पहुंचाने के लिए मंत्रों के प्रयोग द्वारा मारण, मोहन और उच्चाटन किया जाता है। जब बाधकाधिपति शुभ ग्रह है तो यह महाअभिचार कहा जाता है, लेकिन काले जादू की वस्तुएं छिपाई, दबाई या शत्रु के घर के निकट रखी जाएं तो यह कार्य क्षुद्राभिचार कहा जाता है। जैसा पहले कहा गया है कि मांदि का सम्मिलन स्पष्ट रूप से प्रेत बाधा की पुष्टि करता है।

मांदि की स्थिति	*स्थान, जहां काले जादू की वस्तुएं जिसे क्षुद्राभिचार कहा जाता है, छिपाई गई हैं*
लग्न, आरूढ़ या चन्द्रमा से और शनि से प्रभावित केन्द्र में मांदि	भूमि के अन्दर दबाई गई है
4थे भाव में मांदि	घर के भीतर
4थे भाव में जलीय राशि में मांदि	कुआं या तालाब में
शनि और राहु के साथ मांदि	सर्प के बिल या बाँबी के निकट
शनि या सूर्य के साथ मांदि	पेड़ पर
मंगल के साथ मांदि	खुले क्षेत्र में
बृहस्पति के साथ मांदि	घर में
शुक्र के साथ मांदि	शयन कक्ष या बैठक में

जहां मांदि स्थित है उस राशि की प्रकृति से स्थान और जिस ग्रह के साथ मांदि का युति या दृष्टि से संबंध है उसके नवांशाधिपति से दिशा निर्धारित की जा सकती है। क्षुद्राभिचार के तत्त्वों का निवारण उचित धार्मिक कार्यों और तदनंतर स्थान के शुद्धिकरण से किया जा सकता है। बाधकाधिपति चर, द्विस्वभाव या स्थिर राशि में हों, तो निवारण क्रमशः सरल, मुश्किल या असंभव है।

पूर्व पुण्यों के परिणामों को 5वें और 9वें भाव से अच्छी प्रकार सूचित किया जा सकता है। ऊपर विवेचित योगों के साथ इन भावों में मांदि का स्थापन देवताओं के अभिशापों या दुरात्माओं की भूमिका बताता है।

उपाय

उपायों के लिए, देवताओं का प्रायश्चित किया जाता है जो विभिन्न स्थानों में प्रचलित विभिन्न धार्मिक या सामाजिक रीतियों पर आधारित हैं। उपाय की विधि कोई भी हो, धार्मिक रीति रिवाज सहित श्रद्धापूर्वक देवी-देवताओं की पूजा अनिवार्य है। उपायों में देवता द्वारा सूचित ग्रह की उपयुक्त चीजों के दान को भी शामिल किया जाता है जो प्रथम अध्याय में दिया गया है। इसके अतिरिक्त हमारे शास्त्रीय ग्रंथों में निम्नलिखित उपायों को विस्तार से विवेचित किया गया है।

बाधक ग्रह की स्थिति	*उपाय*
लग्न	अपनी प्रतिमा का दान
2सरा भाव	देवता के उपयुक्त मंत्रों का उच्चारण
3सरा भाव	देवता की पूजा

बाधक ग्रह की स्थिति	*उपाय*
4था भाव	मंदिर, धर्मशाला आदि का निर्माण
5वां भाव	पालन-पोषण के रूप में दान
6ठा भाव	यज्ञीय चढ़ावा या बलि
7वां भाव	देवता के आगे नृत्य करना
8वां भाव	यज्ञीय चढ़ावा या बलि
9वां भाव	देवता की पूजा और प्रार्थना
10वां भाव	हाथी-दांत को समर्पित करना
11वां भाव	धार्मिक संयम
12वां भाव	किसी उपाय की आवश्यकता नहीं है

बाधक ग्रहों के लिए या जब बाधक ग्रह निम्नलिखित ग्रहों की राशियों को गृहीत करे, तब उपाय इस प्रकार हैं :

ग्रह	*उपाय*
सूर्य	देवता की पूजा
चन्द्रमा	जल, चावल, दूध, खीर का वितरण
मंगल	यज्ञीय चढ़ावा
बुध	नृत्य
बृहस्पति	दरिद्र या ब्राह्मण को भोजन देना
शुक्र	लोगों को भोजन देना
शनि	निम्न जाति के लोगों को दान देना

अभिभावकों का शाप

सामान्य परिस्थितियों में कोई भी अभिभावक बच्चे को शाप नहीं देगा। लेकिन पिछले अशुभ कर्मों से पितृ या मातृ शाप का भी पता लगाया जा सकता है। यदि सूर्य बाधक स्थान में, मंगल की राशि या नवांश में है या सिंह में पाप ग्रह है, तो यह पितृ शाप है। इसी प्रकार, यदि चन्द्रमा बाधक स्थान में मंगल की राशि या नवांश में है या कर्क में पाप ग्रह है तो यह मातृ शाप है। इनके उपायों में, जैसा कि पहले कहा गया है, अभिभावकों की उचित देखभाल से आशीर्वाद लेना शामिल है, यदि वे जीवित हैं। अगर वह मृतक हैं तो उनका श्राद्ध कर्म विधिपूर्वक करें। इसी प्रकार, बाधक स्थान में बृहस्पति ब्राह्मणों का शाप बताता है। यदि बाधक स्थान में मंगल है तो शाप बहुत कठोर है।

मृत्यु के बाद स्वर्ग या नरक

कर्म और कर्मफल से संबंधित आत्मा के पुनर्जन्म को 5वें भाव और 9वें भाव से तथा पंचमेश और नवमेश से देखा जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त इनका संबंध 12वें भाव एवं द्वादशेश से भी होता है। उदाहरणार्थ, पीड़ित 12वां भाव और पाप कर्तरी में द्वादशेश आत्मा को उसके अशुभ कर्मों को भोगने के लिए नरक प्रदान करता है। इसी प्रकार, 12वें भाव और द्वादशेश के साथ शुभ युति और शुभ कर्तरी योग बताता है कि आत्मा स्वर्ग को जा रही है।

उदाहरण संख्या : 1

क्षुद्राभिचार और अशुभ कर्म

संख्या से आरूढ़ लग्न 56÷9 = 6 राशियां बीत गई, शेष 2

केतु 21°54' शनि 11°46' मांदि	बुध 26°43' मंगल 28°15'	सूर्य 17°32'	शुक्र (व) 1°28'
	उदाहरण : 1 सायं 7 : 50 बजे 1 जून 1996, नई दिल्ली सूर्यास्त सायं 7:08		
बृहस्पति (व) 22°29'			
	लग्न 26°57' चन्द्रमा 13°53'	आरूढ़ 3°20' से 6°40'	राहु 21°54'

10 बृहस्पति (व) 22°29'
9
लग्न 26°57' चन्द्रमा 13°53'
8
आरूढ़ 3°20' से 6°40' 6
7 राहु 21°54'
11
5
2
केतु 21°54' शनि 11°46' मांदि 12
1 बुध 26°43' मंगल 28°15'
सूर्य 17°32'
4
3 शुक्र (व) 1°28'

सायं 7:50 बजे, 1 जून 1996 को एक फोन आया तथा भेंट के लिए समय मांगा गया। उसे उसी समय पर आने को कहा गया तथा उसके आने से पूर्व प्रश्न कुंडली बनाई गई।

प्रश्न पूर्णिमा के दिन पूछा गया था। लग्न स्थिर है तथा शीर्षोदय राशि है। लग्नेश 6ठे भाव में अष्टमेश बुध के साथ स्थित है जिसकी दूसरी राशि राहु द्वारा गृहीत है। लग्नेश/षष्ठेश मंगल और अष्टमेश/एकादशेश बुध के बीच 1°32' की दूरी पर निकट इत्थसाल है। उसने बताया कि एक विवाद घटित हुआ था। आइए हम देखें कि विवाद किसके साथ और किसके लिए है। दशमेश सूर्य 7वें भाव से लग्न को देख रहा है और वक्री सप्तमेश शुक्र 8वें भाव में स्थित है। व्यवसाय में एक साझेदार है जिसके साथ विवाद उत्पन्न हुआ। अष्टमेश बुध एकादशेश भी है अतः विवाद धन के कारण हुआ। लग्नेश/षष्ठेश मंगल विवाद के भाव में है जो अष्टमेश (बाधाएं) और एकादशेश (प्राप्तियां) बुध से युत है। एकादशेश बड़ा भाई भी है। विवाद

उसके बड़े भाई के साथ उनकी दुग्धशाला के घटते लाभ के कारण उत्पन्न हुआ। बड़ा भाई व्यावसायिक साझेदार भी है। बुध के कारकत्वों में से एक हिसाब रखना भी है और विवाद व्यावसायिक हिसाब-किताब पर था।

चन्द्रमा नवमेश होकर लग्न में नीच है और इसीलिए अनुकूल नहीं है। यह शनि के नक्षत्र में स्थित है जो 5वें भाव में अत्यधिक पीड़ित है। 5वें भाव और नवमेश का यह संबंध पिछले अशुभ कर्मों को दर्शाता है। दोनों शुभ ग्रह बुध और शुक्र क्रमशः 6 और 8वें भावों में गए हैं और पाप ग्रहों ने केन्द्रों और त्रिकोणों को गृहीत किया है जो पिछले अशुभ कर्मों को सूचित कर रहे हैं।

5वें भाव में तीन पाप ग्रह केतु, शनि और मांदि दृढ़ मानसिक अशुभ कर्मों को दिखा रहे हैं। केतु द्वितीयेश बृहस्पति के समान अंशों में है जो तीसरे भाव में वक्री है। बृहस्पति पीड़ित भी है। आइए इस प्रश्न कुंडली को अशुभ कर्मों और बाधाओं से दूर हटकर समझें।

व्यक्ति अपने भाई के साथ साझेदारी में एक दुग्धशाला चलाता था। लग्न दुग्धशाला चलाने वाला, 4था भाव पशु, 7वां भाव डेरी उद्योग और 10वां भाव उत्पादन बताता है। अब हम एक-एक करके देखते हैं कि कहां समस्या स्थित है।

लग्नेश, 6ठे भाव में अष्टमेश के साथ विवाद, समस्याएं, बाधाएं आदि दिखा रहा है। चतुर्थेश शनि (पशु), 5वें भाव (पिछले कर्म जो दृढ़ मानसिक है) में बिना किसी शुभ प्रभाव के राहु/केतु अक्ष और मांदि से अत्यधिक पीड़ित होकर स्थित है। सप्तमेश शुक्र (दुग्धशाला कार्यों, जैसे भोजन खिलाना, अनुरक्षण आदि) भी अनुकूल नहीं है। वक्री होकर शुक्र अष्टम भाव में स्थित है। दशमेश सूर्य (उत्पादन) 7वें भाव में स्थित है (और सप्तमेश 8वें भाव में स्थित है) और पीड़ित शनि के साथ इशराफ में है जो इसी क्रम में पशुओं को संकेतित करता है और बाधाग्रस्त प्रतीत होता है। पशुओं का उत्पादन पशुओं के पीड़ित होने के कारण तथा सम्भावित क्षुद्राभिचार के कारण घटा है। शनि के साथ मांदि की युति और राहु की दृष्टि कार्य-स्थान के निकट बाँबी या सर्पों के बिल के पास क्षुद्राभिचार बताती है।

दुग्धशाला दो भाइयों द्वारा छह वर्षों से भी अधिक समय से लाभदायक रूप से चल रही है। लेकिन अव्याख्येय कारणों से पशुओं के उत्पादन में कमी आई है। उनके द्वारा विक्रय की गई नई भैंसों ने भी उत्पादन के गिरने का वही प्रवाह दिखाया, जब वे उन्हें अपनी दुग्धशाला पर लाए। पर जब यह भैंसें विक्रेता को वापिस की गईं तो इन भैसों ने दुग्ध उत्पादन का क्रम चालू कर दिया। उन्होंने इस तथ्य को ध्यान से देखा जो उन्हें बहुत बेचैन कर रहा है।

चन्द्रमा वृश्चिक लग्न के लिए बाधक ग्रह है। यह लग्न में शनि के नक्षत्र में नीच होकर स्थित है और अत्यधिक पीड़ित शनि के साथ निकटतम ताजिक दृष्टि में है जो 5वें भाव में स्थित हैं। अष्टमेश लग्न के समान अंशों में है और लग्न अष्टमेश बुध के नक्षत्र में है। ये सभी संकेत दुरात्माओं की भूमिका प्रकट करते हैं।

यह सूचित किया गया कि छह सप्ताह पूर्व एक अन्य वयोवृद्ध दुग्धशाला मालिक के साथ विवाद हुआ जो अपनी व्यंग्यात्मक टिप्पणियों से उन्हें दुःखी करता रहता है। संयोग से, वह एक मंदिर का भी स्वामी है जिसके लिए बृहस्पति की भूमिका देखें। चतुर्थेश शनि, जो पशुओं को पीड़ा दिखाता है बृहस्पति की राशि में और राहु/केतु अक्ष में स्थित है जो पुनः बृहस्पति के समान अंशों में हैं। बृहस्पति और शनि का यहां परिवर्तन योग भी है।

अब हम लग्न और चन्द्रमा से देखते हैं। 6ठे भाव और 8वें भाव में शुभ ग्रह शत्रुओं का तंत्र-मंत्र दिखा रहे हैं और दृढ़ मानसिक कर्मों के साथ विद्वेषपूर्ण जुड़े लोगों की क्षुद्राभिचार की संभावित भूमिका उनके पड़ोसी दुग्धशाला मालिक की भी है।

चन्द्रमा, बुध, शनि और मंगल ग्रहों का बहुमत चन्द्रमा की होरा में स्थित है और इस प्रकार दृढ़ कर्मों को दिखाता है।

छत्र राशि से विश्लेषित करने के लिए, आइए हम प्रथमतः छत्र राशि की गणना करें :

प्रथम चरण : सूर्य वृष में है, अतः वीथी राशि मेष है।

द्वितीय चरण : आरूढ़ से उदित लग्न, गिनने पर हम 2 पाते है।

तृतीय चरण : वीथी राशि से 2 गिनने पर हम वृष प्राप्त करते हैं।

वृष छत्र राशि से, पुनः शुभ ग्रह प्रतिकूल स्थिति में हैं। बृहस्पति अष्टमेश है और 9वें भाव में नीच का स्थित है। बुध पंचमेश होकर 12वें भाव में स्थित है तथा ईश्वरीय, अभिभावकों, अग्रजों और गुरुओं का कोप दिखा रहा है।

यहां बाधक ग्रह चन्द्रमा दुरात्माओं के अभिचार के कारण प्रेत बाधा दिखा रहा है जिसे क्षुद्राभिचार कहा जाता है। साथ ही, लग्न, चन्द्रमा एवं छत्र राशि भी पिछले अशुभ कर्मों को प्रदर्शित कर रही है। देवताओं के प्रायश्चित के लिए और ईश्वरीय कोप को शांत करने के लिए उसे काली, शिव और विष्णु की पूजा निष्पादित करने की राय दी गई। बाधक ग्रह बलहीन चन्द्रमा होने के कारण काली का प्रतिनिधित्व करता है और चतुर्थेश शनि, शिव और विष्णु को सूचित करता है। दुरात्माओं के अभिशापों के निवारण हेतु जब सम्भव हो विशेषतः बाधक ग्रह चन्द्रमा के प्रायश्चित के

लिए सोमवार को उसे जल, चावल, दूध और खीर के वितरण की भी सलाह दी गई। इस तथ्य के बावजूद कि दृढ़ मानसिक कर्मों में कभी-कभार ही प्रायश्चित सफल हो पाता है।

घटनाओं के समय पर आने के लिए लग्नेश मंगल एकादशेश बुध (भाई और प्राप्तियां) के साथ 1°32' की दूरी पर निकटतम इत्थसाल में लगभग एक माह और 16 दिनों का समय दिखा रहा है। वित्तीय लाभों को लेकर भाई के साथ विवाद इसी समय पर बिगड़ा। दूसरा समय 7वें भाव (साझेदारी) में स्थित कार्येश सूर्य से सूचित होता है। यह लग्न में स्थित नवमेश नीच चन्द्रमा के साथ 3°39' की दूरी पर निकटतम इत्थसाल में है। दोनों सप्ताह दिखा रहे हैं। स्थिर लग्न के साथ संयुक्त होकर यह महीनों की अवधि दिखाता है। 3°39' को महीनों में बदलने पर 3 महीने और 20 दिनों का समय घोषित होता है। जब प्रश्न की तिथि में इसे जोड़ते हैं, तो हम 21 सितम्बर 1996 प्राप्त करते हैं।

जब कभी चन्द्रमा लग्न में स्थित है तो प्रश्नकर्ता ज्योतिषी के पास परामर्श के लिए आने से पूर्व अपने मन में कार्य-योजना को निर्मित कर लेता है। वह अपने भाई के साथ साझेदारी तोड़ना चाहता है और वित्तीय क्षतिपूर्ति की आशा में उसे व्यवसाय देना चाहता है। दशमेश सूर्य 7वें भाव में गया है, अतः व्यापार पर नियंत्रण साझेदार द्वारा प्राप्त किया जाएगा। अतः सम्पूर्ण दृश्य अनुकूल नहीं है। प्रश्नकर्ता को बारंबार अपनी योजनाओं को कार्यान्वित न करने और साझेदारी न तोड़ने के लिए कहा गया। लेकिन ईश्वर की जो इच्छा है, उसे असंपादित नहीं किया जा सकता। सितम्बर 1996 के तीसरे सप्ताह में उसने साझेदारी तोड़ दी और उसके भाई ने अन्ततः जनवरी 1996 तक तीन महीनों के भीतर सम्मत राशि देने का आश्वासन दिया। द्वितीयेश बृहस्पति 3सरे भाव में नीच एवं वक्री है। साझेदार सप्तमेश 8वें भाव में वक्री है। क्या प्रश्नकर्त्ता नियत तिथि पर सम्मत राशि प्राप्त कर पाएगा। जनवरी में उसके भाई ने अपने वचन का सम्मान नहीं किया और राशि चुकाने से इन्कार कर दिया।

15
प्रश्न में चक्रों का प्रयोग

प्रश्न का विकास सम्भवतः राज-दरबार में हुआ। शासकों को सदैव जन्म कुंडली के शुभाशुभ परिणामों, मुहूर्त्त, प्रश्न और शकुनों को जानने की इच्छा रहती थी। इसके साथ, विभिन्न चक्रों का प्रयोग विकसित हुआ। एक चक्र खींची गई रेखाओं से निर्मित आरेख है जो कुछ बिन्दुओं को पूर्वनिश्चित क्रम में संयुक्त करता है।

चक्रों का विकास लगभग 2000 वर्ष पूर्व हुआ प्रतीत होता है। यह सिद्ध करने के लिए अनेक सन्दर्भ उपलब्ध हैं कि 9वीं और 10वीं शताब्दी से पहले अनेक चक्रों का प्रयोग प्रचलित था। उनका प्रयोग देश के अन्य भागों की अपेक्षा उत्तर-भारत में दूर-दूर तक फैला हुआ था। अनेक शास्त्रीय ग्रंथों में चक्रों के अनेक सन्दर्भों के बावजूद, उनका प्रयोग और परवर्ती शोध पूर्णतः विद्यमान नहीं प्रतीत होता। इस सम्बन्ध में प्रश्न कुंडली पर निर्मित टिप्पणियां प्रश्न से सम्बन्धित चक्रों के प्रयोग के सिद्धान्तों को संकेंद्रित करने के लिए ज्ञान के भण्डार खोलती हैं।

अनेक चक्रों में से कुछ जन्म कुंडलियों पर प्रयोग किए जाते हैं, अन्य प्रश्न कुंडली पर जबकि उनमें से कुछ दोनों पर प्रयोग किए जाते हैं। कुछ महत्त्वपूर्ण चक्र, जो प्रश्न में विस्मयकारी विशुद्ध परिणाम देते हैं, यहां व्याख्यायित किए गए हैं।

सर्वतोभद्र चक्र

यह एक ऐसा चक्र है जो ज्योतिष में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं और व्यापक रूप से प्रयोग किया जाता है। यह त्रैलोक्य दीपक नाम से परिभाषित किया गया है अथवा एक वह जो तीनों संसारों जिन्हें स्वर्ग, धरती और पाताल लोक कहा जाता है, को दीपक की भांति ज्योतित करता है। यह चक्र "ब्रह्मयानल" ग्रंथ में भगवान शिव द्वारा वर्णित किया गया था।

मेरे गुरू श्री के. एन. राव एक जनश्रुति बताते हैं। प्रयाग (इलाहाबाद) में एक प्रसिद्ध ज्योतिषी थे जो विशेष रूप से प्रश्न कुंडलियों के अपने विस्मयकारी स्टीक अध्ययन से परामर्श लेने वालों को संतुष्ट कर दिया करते थे। अन्य ज्योतिषी उनकी सटीकता और सफलता के कारणों के बारे में आश्चर्यचकित हो जाया करते थे। एक दिन वह ज्योतिषी स्वर्गवास हो गए और उनके कंधे पर टंगे रहने वाले कपड़े के थैले के लिए हो-हल्ला हुआ जिसे वह अपने साथ ले जाया करते थे। उस थैले में सर्वतोभद्र चक्र मिला। एक ऐसी विधि जो उन सभी विस्मयकारी सटीक भविष्यवाणियों का आधार थी।

हमारे मनीषी, जो भूत, वर्तमान एवं भविष्य को जानने में समर्थ थे, उन्हें त्रिकालदर्शी महर्षि उचित ही कहा जाता था। उन्होंने इस चक्र को जन्म, प्रश्न या गोचर कुंडलियों के शुभाशुभ परिणामों को बतलाने के लिए विकसित किया। सर्वतोभद्र चक्र का निर्माण निम्नलिखित चरणों को सम्मिलित करता है। 10 क्षैतिज और 10 ऊर्ध्वाधर रेखाएं खींचें जो हमें 81 खंड अथवा वर्णों (33 व्यंजन और 16 स्वर), 15 तिथियों, साप्ताहिक दिवसों, 28 नक्षत्रों (अभिजीत सहित) और 12 राशियों से समाविष्ट वर्ग प्रदान करती हैं। अभिजीत नक्षत्र उत्तराषाढ़ा के बाद और श्रवण से पूर्व 9रा6°40' से 9रा10°53'20" तक होता है। इन सब पर शुभ या अशुभ वेध का विश्लेषण भविष्य सूचक निष्कर्षों पर पहुंचने के लिए किया जाता है।

दूसरा महत्त्वपूर्ण चक्र अंशस्वर चक्र है जो प्रत्येक नक्षत्र को चार नक्षत्र पदों में विभाजित करता है और प्रत्येक नक्षत्र पद को वर्ण (व्यंजन या स्वर) आवंटित करता है। यह चक्र सर्वतोभद्र चक्र पर अध्यारोपित हो सकता है।

चक्र का निर्माण करने के उपरांत प्रश्न के विश्लेषण के लिए ग्रहों को उनके भोगांशों के अनुसार स्थापित करें। वेध पांच महत्त्वपूर्ण चीजों पर देखा जाता है, जो हैं- राशि, अक्षर, नक्षत्र, तिथि और स्वर और स्मरण के लिए Rants के रूप में याद किया जा सकता है। यद्यपि इन पांच मानकों की सापेक्षिक महत्ता विवेचित नहीं की गई है तथापि अनुभव से यह प्रतीत होता है कि नक्षत्र की सापेक्षिक महत्ता दूसरों की अपेक्षा अधिक है। इन पांच बिन्दुओं पर शुभ ग्रहों के वेध का शुद्ध परिणाम शुभता तथा अशुभ ग्रहों का वेध अशुभ परिणाम सूचित करता है।

बुध, शुक्र, मंगल, बृहस्पति और शनि, ये पांच ग्रह अपनी गति के दौरान वक्री होते हैं और वक्री अवस्था में वे अपने दाहिनी ओर (अथवा पश्चगामी)

अ	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	अश्लेषा	आ
भरणी	उ	अ	व	क	ह	ड	ऊ	मघा
अश्विनी	ल	ऌ	वृषभ	मिथुन	कर्क	ऌ	म	पू.फाल्गुनी
रेवती	च	मेष	ओ	1,6,11 नन्दा सूर्य मंगल	औ	सिंह	ट	उ.फाल्गुनी
उ. भाद्र.	द	मीन	4,9,14 रिक्ता शुक्र	5,10,15 पूर्ण शनि	2,7,12 भर्दा चन्द्रमा बुध	कन्या	प	हस्त
पू. भाद्र.	स	कुम्भ	अ :	3,8,13 जय बृहस्पति	अं	तुला	र	चित्रा
शतभिषा	ग	ऐ	मकर	धनु	वृश्चिक	ए	त	स्वाति
धनिष्ठा	ऋ	ख	ज	भ	य	न	ॠ	विशाखा
ई	श्रवण	अभिजीत	उ. आषाढ़	पू. आषाढ़	मूल	ज्येष्ठ	अनुराधा	इ

सर्वतोभद्र चक्र

वेध करते हैं। एक ग्रह जो गति में तीव्र हो, वह अपनी बायीं ओर (अथवा अग्रवर्ती) वेध करता है। अपनी सामान्य गति के दौरान ग्रह अग्रभाग में वेध करता है। इन पांच ग्रहों की तुलना में राहु और केतु सदैव वक्री हैं और सूर्य तथा चन्द्रमा अपनी गति में सदैव मार्गी होकर सभी तीनों ओर वेध करते हैं। दाहिनी अथवा बायीं ओर वेध के दौरान जब कभी राशि, अक्षर, नक्षत्र, तिथि या स्वर सीधी रेखा में आते है तो वेध द्वारा पीड़ित होते हैं। तथापि जब अग्रभाग की ओर वेध निर्मित होता है तो केवल नक्षत्र प्रभावित होता है और अन्य चार मानक नहीं। पांच ग्रहों की गति वक्री, कुटिल, सम, शीघ्री और अतिशीघ्री वर्णित की गई है। इन पांच प्रकारों की गतियों के अतिरिक्त, वेध की दिशा निर्धारित करने के लिए वक्री और कुटिल गति ग्रह, वक्री की भांति जबकि शीघ्री और अतिशीघ्री ग्रह, अतिशीघ्री की भांति माने जाते हैं।

प्रश्न के विश्लेषण में, निम्नलिखित पांच मानकों को समझना होगा :

1. राशि - प्रश्न के समय पर चन्द्र राशि शुभ या अशुभ वेध के लिए देखी जाती है।
2. अक्षर - जो भी शब्द प्रश्नकर्ता द्वारा सर्वप्रथम बोला जाए, उसका पहला अक्षर शुभ या अशुभ वेध के लिए देखा जाता है।
3. नक्षत्र - प्रश्न लग्न नक्षत्र और प्रश्न चन्द्र नक्षत्र देखने के दो बिन्दु हैं। वेध के लिए माने गए शुभ ग्रह चन्द्रमा, बुध, शुक्र और बृहस्पति हैं और पाप ग्रह सूर्य, मंगल, शनि, राहु और केतु हैं।
4. तिथि - प्रश्न के समय पर चल रही तिथि पर वेध देखा जाता है।
5. स्वर - प्रश्न में स्वर की गणना तिथि से भी की जाती है। लेकिन मेरे विचार में प्रश्नकर्ता द्वारा उच्चरित प्रथम अक्षर का संयुक्त स्वर अधिक महत्त्वपूर्ण है।

सर्वतोभद्र चक्र ज्योतिष के लगभग सभी पक्षों, जैसे दशा, अन्तर्दशा, गोचर, अष्टकवर्ग मुहूर्त्त आदि के सम्बन्ध में सर्वोत्तम परिणाम देता है और प्रश्न में इसके प्रयोग का सर्वोपरि महत्त्व है। यद्यपि यहां यह चक्र संक्षेप में विवेचित है तथापि मेरे शोध के प्रमुख क्षेत्रों में से एक है।

सूर्य कालानल चक्र

यह प्रश्न में बीमारी, विवाद और यात्रा जैसी घटनाओं को जानने के लिए दूसरा महत्त्वपूर्ण चक्र है। इसमें शीर्ष पर तीन ऊर्ध्वाधर रेखाएं खींची जाती हैं, जिस पर तीन त्रिशूल निर्मित किए जाते हैं। इसके नीचे चार क्षैतिज रेखाएं खींची जाती है जिसमें तीन ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज रेखाओं को आच्छादित करती हुई चार विकर्णतः आड़ी रेखाएं खींची जाती हैं, जैसा कि आरेख में दिखाया गया है।

सूर्य जीवन प्रदाता है और इस चक्र में यह प्रारम्भिक बिन्दु प्राप्त करने की महत्ता रखता है। केन्द्रीय ऊर्ध्वाधर रेखा के तल पर सूर्य का नक्षत्र स्थापित किया जाता है उदाहरणार्थ, सूर्य मघा नक्षत्र में है जो 10वां है। तब चक्र को अभिजीत नक्षत्र सहित नक्षत्र संख्या लिखते हुए पूर्ण करें। लेकिन यहां दिये गये आरेख में, समझाने के लिए सूर्य का नक्षत्र अश्विनी या (1) दिखाया गया है।
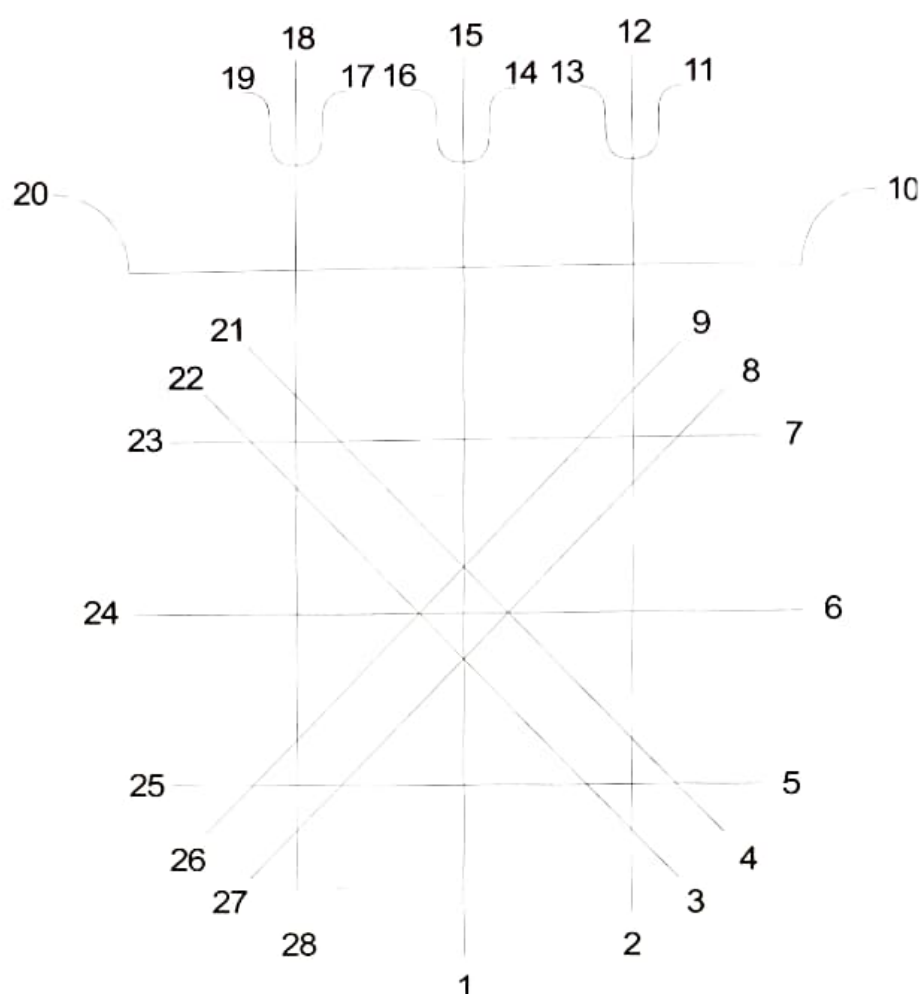
सूर्य कालानल चक्र

इस चक्र के विश्लेषण में नामाक्षर की स्थिति देखी जाती है, तथापि प्रश्न में यह माना जाता है कि प्रश्न लग्न नक्षत्र का स्थापन प्रश्न कुंडली के परिणामों के पूरक के रूप में देखना चाहिए। विभिन्न नक्षत्र पदों से सम्बन्धित नक्षत्र यहां सारणीबद्ध रूप में दिए गए हैं।

यदि नामाक्षर और प्रश्न लग्न नक्षत्र, आरेख में चिन्हित 28, 1, 2 रेखाओं पर सूर्य कालानल चक्र के तल पर पड़े तो यह समस्याएं, बाधाएं, व्यक्ति पर आक्रमण, कारावास, जेल आदि बताता है जो प्रश्न कुंडली में प्रदर्शित कारकत्वों पर निर्भर करेगा। यदि लग्नेश और नामाक्षर विकर्णी रेखाओं और चिन्हित 6 नक्षत्रों जैसे, 3 से 9 और 21 से 27 पर पड़ता है, तब प्रश्नकर्ता को उपलब्धियों और इच्छाओं की पूर्ति की अवश्य आशा करनी चाहिए। यदि लग्नेश, नामाक्षर श्रृंग 10 और 20 पर पड़ता है तो यह बीमारियां, हानियां और भय सूचित करता है। अंततः लग्न और नामाक्षर चिन्हित त्रिशूलों

	नक्षत्र	अक्षर पद I	II	III	IV		नक्षत्र	अक्षर पद I	II	III	IV
1.	अश्विनी	चु	चे	चो	ल	15.	स्वाति	रु	रे	रो	त
2.	भरणी	लि	लु	ले	लो	16.	विशाखा	ति	तु	ते	तो
3.	कृत्तिका	अ	इ	उ	ए	17.	अनुराधा	न	नि	नु	ने
4.	रोहिणी	ओ	व	वि	वु	18.	ज्येष्ठ	नो	य	यि	यु
5.	मृगशिरा	वे	वो	क	कि	19.	मूल	ये	यो	भ	भि
6.	आर्द्रा	कु	घ	ङ	छ	20.	पू. आषाढ़	भु	घ	फ	ढ
7.	पुनर्वसु	के	को	ह	हि	21.	उ. आषाढ़	भे	भो	ज	जि
8.	पुष्य	हु	हे	हो	हि	22.	अभिजीत	जु	जे	जो	ख
9.	अश्लेषा	डि	डु	डे	डो	23.	श्रवण	खि	खु	खे	खो
10.	मघा	म	मि	मु	मे	24.	धनिष्ठा	ग	गि	गु	गे
11.	पू. फाल्गुनी	मो	ट	टि	टु	25.	शतभिषा	गो	स	सि	सु
12.	उ. फाल्गुनी	टे	टो	प	पि	26.	पू. भाद्र.	से	सो	द	दि
13.	हस्त	पु	ष	ण	ठ	27.	उ. भाद्र.	दु	थ	झ	ञ
14.	चित्रा	पे	पो	र	रि	28.	रेवती	दे	दो	च	चि

11 से 19 पर पड़ता है तो वह मृत्यु या ऐसी समस्याएं सूचित करता है जो मृत्यु की भांति कष्टदायक हो सकती हैं, और जिन्हें हमारे मनीषियों द्वारा मृत्यु तुल्य कष्ट कहा गया है। संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि सूर्य के नक्षत्र से 10 से 20वें नक्षत्र पर प्रश्न लग्न का पड़ना प्रश्न के लिए अनुकूल नहीं है। दूसरे शब्दों में, यदि प्रश्न कुंडली में प्रश्न लग्न और नामाक्षर सूर्य से 5, 6, 7, 8 और 9वें भाव में है, तब यह प्रश्न के लिए अनुकूल नहीं है।

इसी प्रकार का एक दूसरा चक्र है, जिसे राहु कालानल चक्र कहा जाता है। यह यात्रा के लिए देखा जाता है।

चन्द्र कालानल चक्र

इस चक्र में केन्द्र में वृत्त के आर-पार जा रही रेखाओं के चार कोनों में चार त्रिशूल बनाये जाते हैं, जैसा कि आरेख में दिखाया गया है।

प्रश्न कुंडली के चन्द्रमा का नक्षत्र सर्वाधिक ऊंचे त्रिशूल की नोक (आरेख में चिन्हित) के मध्य पर स्थापित करें और दक्षिणावर्त्त की तरह अभिजीत सहित 28 नक्षत्रों से चक्र को पूर्ण करें जैसा कि दिखाया गया है। त्रिशूलों पर प्रश्न लग्न नक्षत्र और नाम नक्षत्र अत्यधिक समस्याएं और दुर्भाग्य दर्शाता है लगभग उतनी गम्भीर जितनी मृत्यु। वृत्त के बाहर स्थित 8 नक्षत्रों पर यह सामान्य या मध्यम परिणाम देता है जबकि वृत्त के मध्य के 8 नक्षत्रों पर क्रमशः उपलब्धियां, प्राप्तियां, उन्नति और विकास, (4, 5), समृद्धि,
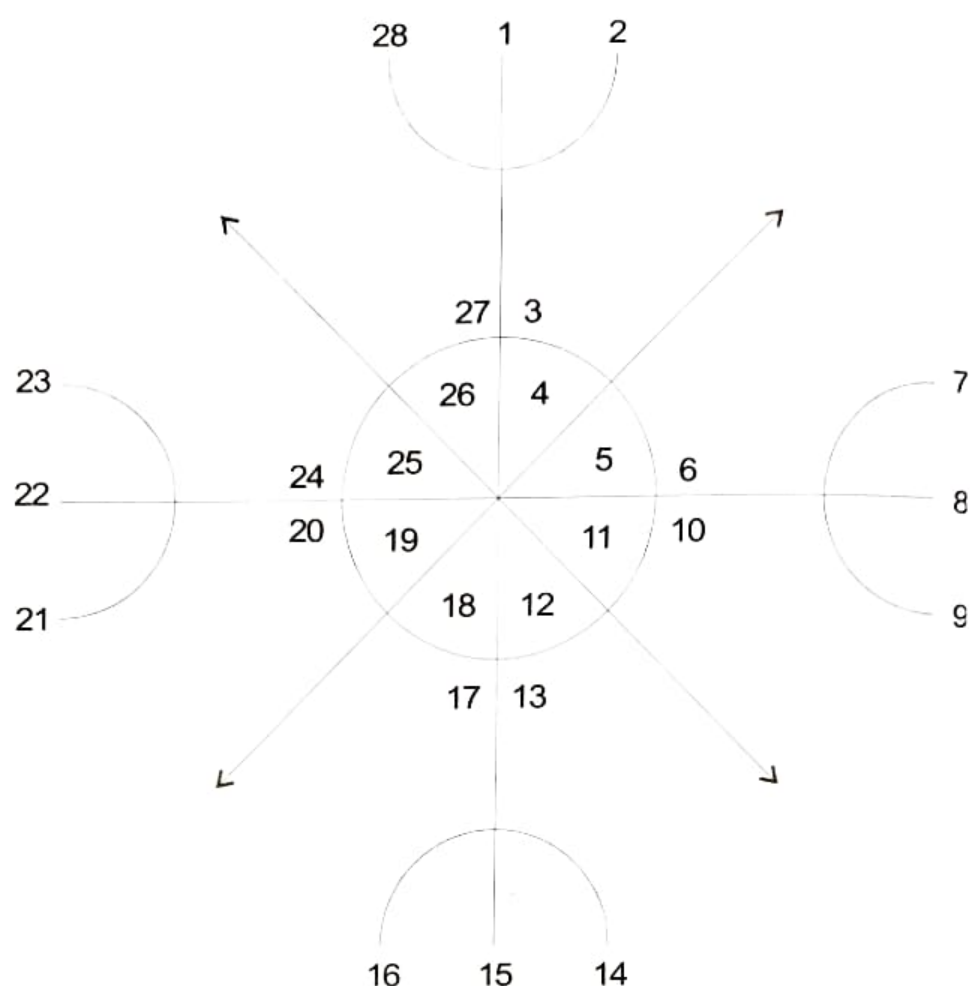
चन्द्र कालानल चक्र

सफलता, प्रसन्नता और सौभाग्य, (11, 12), विजय, प्रवीणता और कार्य सिद्धियां (18, 19), और शुभता, भाग्य, अनुकूल और आशाजनक परिणामों (25, 26) का भविष्य कथन किया जा सकता है।

प्रश्न में चन्द्रमा के नक्षत्र से गिनिए, वहां से 8वां, 15वां और 22वां नक्षत्र अत्यधिक अशुभ है क्योंकि वे त्रिशूलों के मध्य नोक पर पड़ता है। प्रश्न में, चन्द्रमा ज्येष्ठा नक्षत्र में लीजिए। 18वां नक्षत्र मध्य त्रिशूल के शीर्ष पर स्थापित होगा और चक्र शेष नक्षत्रों की संख्या लिखते हुए दक्षिणावर्त्त पूर्ण होगा। यदि प्रश्न लग्न उत्तराषाढ़ा हो जो मध्य वृत्त में पड़ेगा, तब यह उपलब्धियां, प्राप्तियां, तरक्की और विकास सूचित करेगा।

मानसागरी के अनुसार, सूर्य कालानल और चन्द्र कालानल चक्र यह निर्धारित करने के लिए सर्वोत्तम रूप से प्रयोग किए जाते है कि क्या निवेश करना चाहिए? और कब निवेश करना चाहिए?
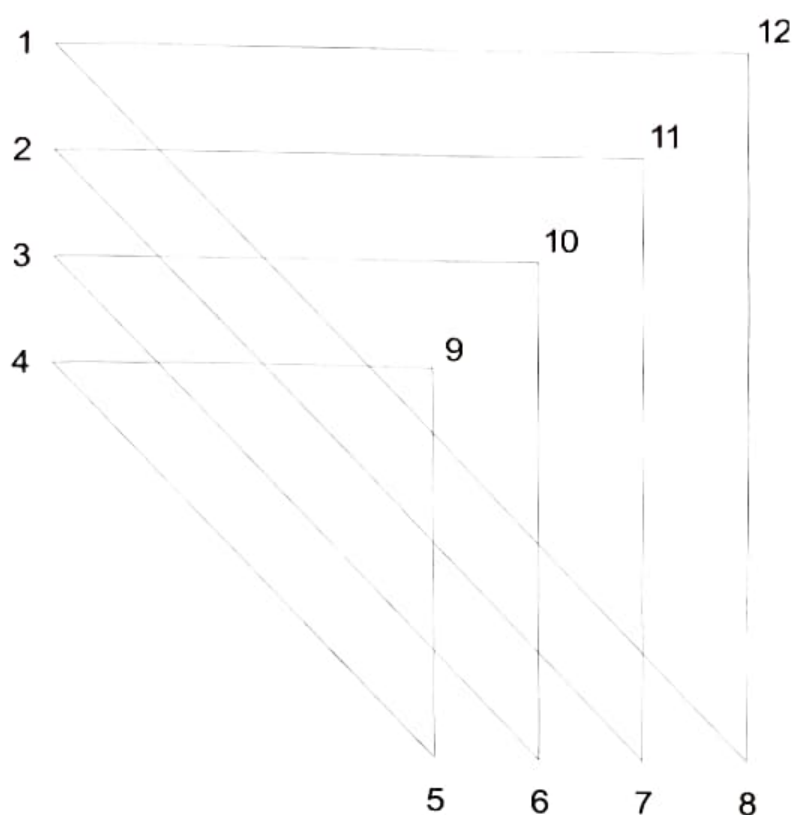
संघट्ट राशि चक्र

संघट्ट राशि चक्र

यह चक्र भचक्र की 12 राशियों से निर्मित होता है, जैसा आरेख में व्याख्यायित किया गया है।

ग्रह वहां रखे जाते हैं, जिस राशि में वे प्रश्न कुंडली में स्थित हों। प्रश्न लग्न अैर प्रश्न चन्द्र पर शुभ और अशुभ वेध देखा जाता है। राजाओं और राज्यशाही के समय के दौरान, इस चक्र का प्रयोग सन्निकट युद्धों, शांति संधियों आदि को देखने के लिए प्रयोग किया जाता था। आधुनिक सन्दर्भ में, यदि प्रश्न लग्न क्रूर ग्रहों के साथ है, तब प्रश्नकर्ता स्वयं मुकद्दमेबाजी या विवादों में पड़ता है। यदि लग्न क्रूर ग्रहों से वेध रखता है, तब मुकद्दमेबाजी या विवाद घटित होना निश्चित है। दूसरे, यदि लग्न शुभ ग्रहों के साथ वेध रखता है, तब विवाद आपस में सुलझा लिया जाएगा।

संघट्ट नक्षत्र चक्र

अपने विश्लेषण और परिणाम में यह संघट राशि चक्र के समान है, लेकिन यहां 12 राशियों के स्थान पर अभिजीत रहित 27 नक्षत्र चक्र के निर्माण में प्रयुक्त किए जाते हैं। इस नक्षत्र चक्र का उचित स्वरूप यहां दिया गया
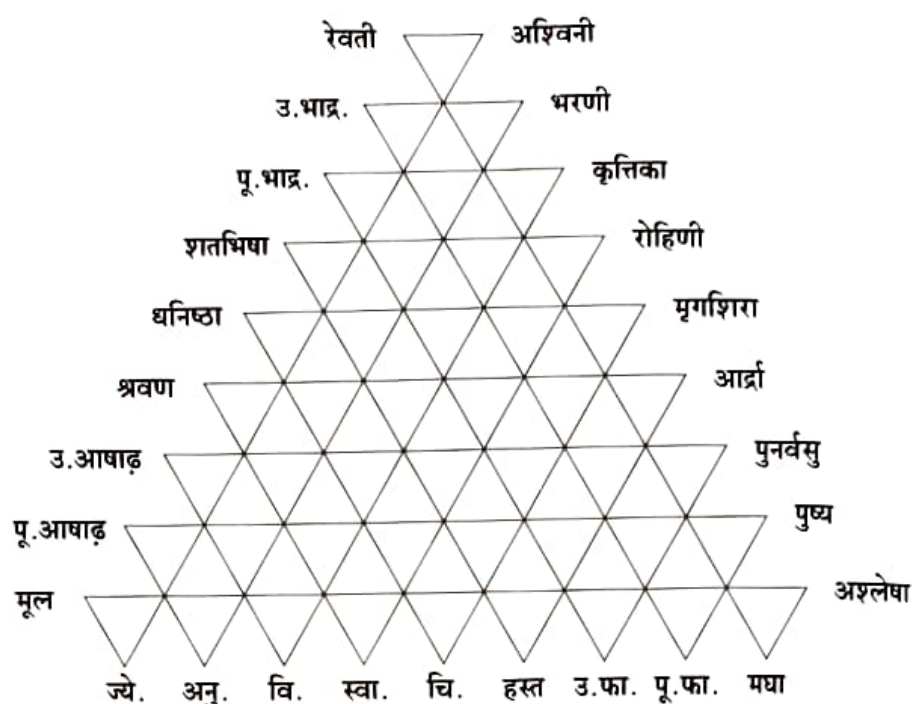
संघट्ट नक्षत्र चक्र

है तथापि कुछ ग्रंथ अभिजीत नक्षत्र सहित इस चक्र के निर्माण का गलत रूप भी दिखाते हैं।

त्रिभुज में नौ बिन्दुओं को स्थापित करते हैं और अश्विनी से प्रारम्भ करके नक्षत्रों को स्थापित कर देते हैं जैसा आरेख में दिखाया गया है। प्रश्न कुंडली में उनकी स्थिति के अनुसार ग्रह इन नक्षत्रों पर स्थापित कर दिए जाते हैं। प्रश्न लग्न नक्षत्र और प्रश्न चन्द्र नक्षत्र पर वेध शुभ और अशुभ ग्रहों से देखा जाता है। यह चक्र भी, संघट्ट राशि चक्र की भांति विवादों, मुकद्दमेबाजी आदि के लिए देखा जाता है। यहां कुछ शास्त्रीय ग्रंथ नामाक्षरों के नक्षत्र पर भी वेध मानते हैं।

जब कभी चन्द्र, शनि, मंगल और राहु का परस्पर वेध हो तो विवाद, हिंसात्मक रूप ले लेता है। खगोल मौसम विज्ञान में, जब कभी चन्द्रमा बुध और शुक्र समान नक्षत्र अथवा परस्पर वेध स्थितियों पर हों, तब वर्षा होती है और बिजली चमकती है।

कोट चक्र

प्रश्न में, यह एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण चक्र है। यह जीवन और मृत्यु की स्थितियों से सम्बन्धित प्रश्नों के लिए देखा जाता है। प्रायः जब व्यक्ति बहुत बीमार होता है, तब ज्योतिषी व्यक्ति के जीवन और मृत्यु की संभावना जानने के
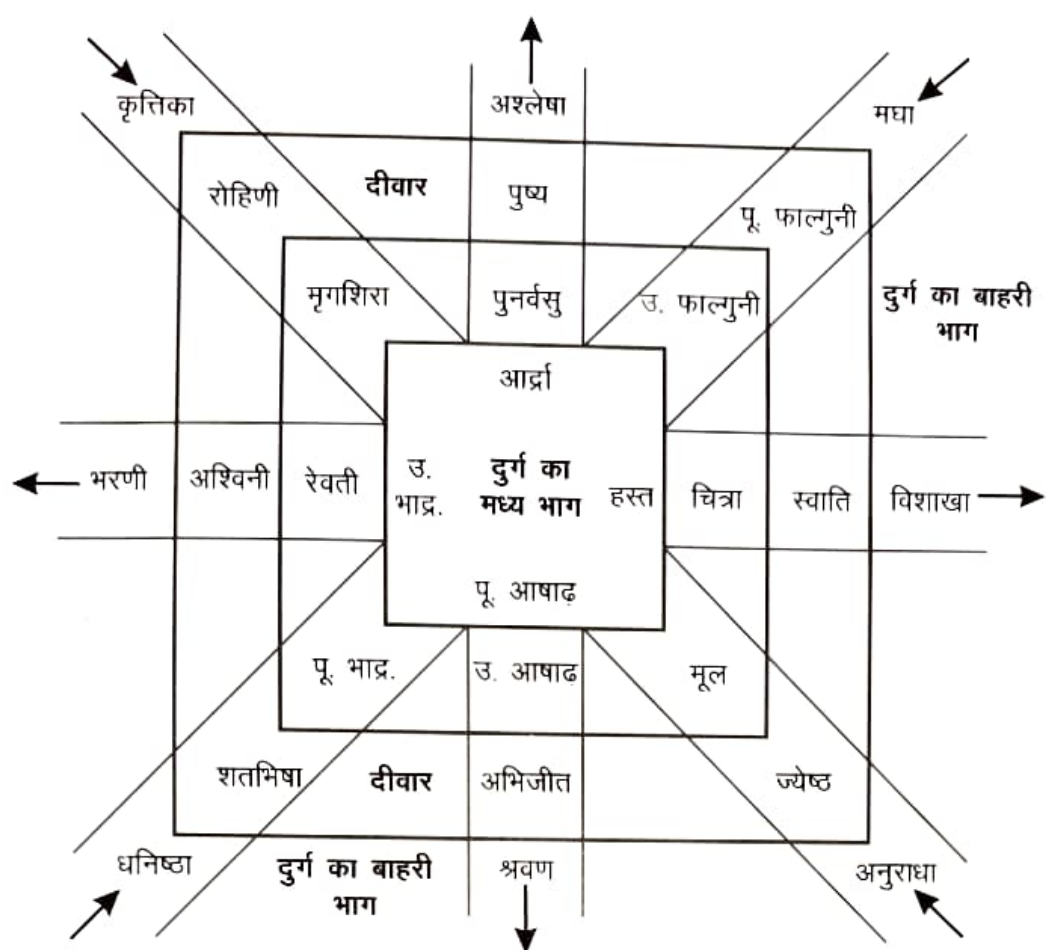
कोट चक्र

लिए कोट चक्र को देखते हैं। मनुष्य की देह एक दुर्ग के समान है। जब पाप ग्रह दुर्ग की बाहरी दीवार को तोड़ दे या दुर्ग के मध्य भाग को चोट पहुंचाये तो व्यक्ति के लिए खतरा निश्चित है। इसका यह तात्पर्य हो सकता है कि मृत्यु की स्थिति है या अत्यंत अशुभ स्थिति है। कोट चक्र का निर्माण आरेख में दिखाया गया है।

ईशान कोण या उत्तर-पूर्व दिशा से प्रारम्भ करके प्रश्न चन्द्रमा के नक्षत्र से शेष नक्षत्रों को लिख दें जैसा कि आरेख में तीरों द्वारा दिखाया गया है। यहां एक विवाद है कि क्या कोट चक्र केवल कृत्तिका नक्षत्र से प्रारम्भ करना चाहिए, जैसा कि आरेख में दिखाया गया है। ऐसा करने से दुर्ग या दुर्ग का मध्य भाग सभी व्यक्तियों या प्रश्नों के लिए समान होगा और वहां सभी के लिए एक समान परिणाम होंगे। अतः केवल प्रश्न चन्द्र नक्षत्र से ही प्रारम्भिक नक्षत्र प्रारम्भ करना चाहिए। यदि पाप ग्रह दुर्ग की दीवार के आन्तरिक भाग में स्थित हों, तब बीमार व्यक्ति के लिए मृत्यु सूचित होती है।

प्रश्न कुंडली के विश्लेषण में, कोट चक्र में ग्रहों को स्थापित करते हुए, प्रश्न लग्न को भी उस नक्षत्र में स्थापित करें जिसमें वह स्थित है।

उदाहरण संख्या : 1
पवित्र नदी के किनारे से पुत्री का गायब होना – कोट चक्र का प्रयोग

	चन्द्र 21°48' केतु 23°53'		मंगल 13°11'
लग्न 23°06' शनि (व) 15°37'	उदाहरण संख्या:1 7:20 सायं अगस्त 27, 1994 नई दिल्ली		
			सूर्य 13°17' बुध 23°41'
		बृहस्पति 15°21' राहु 23°53'	शुक्र 26°15'

प्रश्नकर्ता की 22 वर्षीय पुत्री पवित्र नदी के किनारे से गायब है जहां वह अपने परिवार के साथ स्नान करने के लिए 26 अगस्त 1994 को गई थी। स्थिर लग्न स्थिति में परिवर्तन नहीं दिखा रहा। लग्न बृहस्पति के नक्षत्र में है जो न केवल बच्चों का कारक है बल्कि कुंडली में अत्यधिक पीड़ित भी है। बृहस्पति राहु/केतु अक्ष में, राहु के नक्षत्र में स्थित है और षष्ठेश चन्द्रमा से एवं द्वादशेश शनि की वक्री दृष्टि से दृष्ट है, यदि हम वक्री ग्रह की दृष्टि पिछले भाव से लें। लग्नेश शनि लग्न में स्थित है, लेकिन यह द्वादशेश और वक्री भी है तथा पंचमेश बुध (संतान) से दृष्ट है जो अष्टमेश भी है। मैंने सदैव देखा है कि जब किसी भाव की दूसरी राशि अष्टम भाव में पड़े, तब ऐसा भाव अत्यधिक पीड़ित हो जाता है। दूसरे, लग्न संतान के कारक पीड़ित बृहस्पति से और सप्तमेश सूर्य से दृष्ट है। जब अष्टमेश लग्न और लग्नेश के साथ सम्बन्ध स्थापित करे जैसा कि इस मामले में है, जहां अष्टमेश लग्न को अत्यंत निकट अंशों में दृष्ट कर रहा है तो जीवन और मृत्यु की जटिल स्थिति उभरती है। यह अष्टमेश पंचमेश होकर भी संतान के लिए जीवन और मृत्यु की स्थिति दिखा रहा है।

लग्न राहु और केतु एवं पंचमेश/अष्टमेश बुध के साथ समान अंशों में है। लग्नेश शनि राहु के नक्षत्र में स्थित है और पीड़ित बृहस्पति के साथ पूर्ण इत्थसाल में है जिसका राशीश 8वें भाव में नीच है और मंगल से दृष्ट होकर, मंगल के नक्षत्र में किसी प्रकार की दुर्घटना दिखा रहा है।

चन्द्रमा राहु/केतु अक्ष में, शुक्र के नक्षत्र में स्थित है जो पहले ही देखा जा चुका है कि वह 8वें भाव में पीड़ित है। चन्द्रमा द्वादशेश शनि से भी दृष्ट है।

कार्य भाव 5वें भाव में राहु के नक्षत्र में मंगल है जबकि कार्येश पंचमेश बुध 7वें भाव में सप्तमेश के साथ शुक्र के नक्षत्र में है जिसे विश्लेषण में हम पहले ही देख चुके हैं।

चतुर्थेश/4था भाव लापता व्यक्ति की सकुशलता या प्रसन्नता बताता है। यहां चतुर्थेश शुक्र 8वें भाव में नीच है, मंगल के नक्षत्र में मंगल से दृष्ट होकर दुर्घटना दिखा रहा है जिसमें लापता व्यक्ति की सकुशलता संकट में है। 7वां भाव लापता व्यक्ति का मार्ग है। यहां अष्टमेश 7वें भाव में सप्तमेश के साथ स्थित है और द्वादशेश शनि से दृष्ट है। सूर्य लापता व्यक्ति का शरीर भी है। मार्ग खतरों से भरपूर है और शरीर भी संकट में है। वास्तव में, दोनों जीवन प्रदाता ग्रह पीड़ित होकर लापता व्यक्ति के लिए खतरा दिखा रहे हैं। लग्न और लग्नेश जलीय राशि कुंभ में है। लग्न बृहस्पति के नक्षत्र में तथा लग्नेश राहु के नक्षत्र में स्थित है। लग्न को प्रभावित करते ये दोनों ग्रह बृहस्पति एवं राहु षष्ठेश जलीय ग्रह चन्द्रमा से दृष्ट हैं। मृत्यु के अनेक योगों में से एक योग इस कुंडली में विद्यमान है कि चन्द्रमा तीसरे भाव में पाप ग्रहों के प्रभाव में स्थित है। यह राहु/केतु अक्ष में और शनि से दृष्ट है। यद्यपि स्वाभाविक शुभ ग्रह बृहस्पति भी इसे देखता है, लेकिन जैसा राहु और केतु के अंतर्गत विविध विधियां पर लिखे अध्याय में व्याख्यायित किया गया है, यदि बृहस्पति राहु या केतु के साथ युति में है, तब उसकी शुभ भूमिका समाप्त हो जाती है। यहां बृहस्पति स्वयं राहु के नक्षत्र में भी हैं। मृत्यु के योगों पर वापस आते हैं, चन्द्रमा न केवल पीड़त है बल्कि शनि के साथ इशराफ में भी है और अष्टमेश बुध एवं राहु और केतु के साथ अत्यंत निकट इत्थसाल में लापता व्यक्ति की मृत्यु दिखा रहा है।

जातक-तत्व के अनुसार 8वें भाव में कन्या का तीसरा द्रेष्काण डूबने से मृत्यु होना बताता है। उस दुर्भाग्यपूर्ण दिवस को अपने परिवार के साथ पवित्र डुबकी लगाने के लिए लड़की का नदी पर जाना अनर्थकारी सिद्ध हुआ। उसका शरीर पुनः प्राप्त नहीं किया जा सका। आइए अब हम कोट चक्र से प्रश्न कुंडली के संकेतों को पुष्ट करें।

क्योंकि लड़की का पता-ठिकाना ज्ञात नहीं था और प्रश्न कुंडली से यह प्रश्न जीवन मृत्यु दर्शाता है अतः कोट चक्र के द्वारा विश्लेषण अनिवार्य हो जाता है। जैसा पहले कहा गया है कि पहला नक्षत्र प्रश्न चन्द्र नक्षत्र पर रखा जाता है, जो भरणी है। यह देखा जा सकता है कि मंगल, केतु और शनि सभी पाप ग्रह मध्य भाग में या दुर्ग में हैं। लग्नेश शनि, यद्यपि आंतरिक
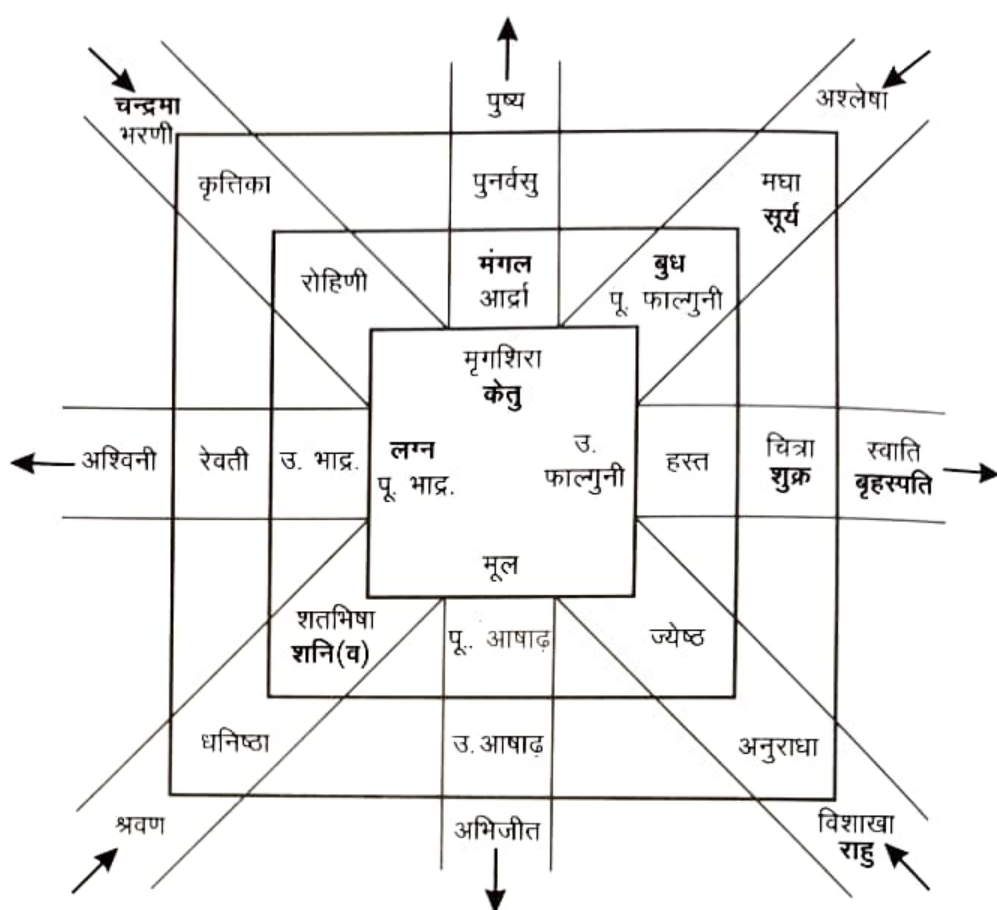
कोट चक्र

पथ पर वक्री है फिर भी दुर्ग के मध्य भाग में स्थित है और अन्य पाप ग्रहों से पीड़ित है। लग्न भी दुर्ग में पूर्वभाद्रपद नक्षत्र पर पाप ग्रहों के साथ स्थित है। केवल एक शुभ ग्रह बुध दुर्ग में है, लेकिन यह अष्टमेश है। एक अन्य क्रूर ग्रह सूर्य दुर्ग की दीवार पर है और मध्य भाग में प्रवेश कर रहा है। मार्ग दिखा रहे तीरों और ग्रहों की गति की दिशा को नोट करें। शुभ ग्रह बृहस्पति और शुक्र दुर्ग से बाहर स्थित हैं और बाहरी मार्ग पर उनका स्थित होना उन्हें मध्य भाग से दूर ले जा रहा है। अतः प्रश्न कुंडली से व्यक्त इस जातक के डूबने का खतरा, कोट चक्र से पुष्ट होता है।

प्रश्न में चक्रों के विश्लेषण में, यह मन में रखना चाहिए कि प्रश्न कुंडली सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है और कोई भी चक्र घटना को प्रमाणित करने में संपूरक की भांति कार्य करता हैं। यह सम्बन्ध वर्गों की तुलना में जन्म कुंडली की महत्त्वपूर्ण भूमिका जैसा है। जैसे वर्गों को जन्म कुंडली के पूरक की भांति प्रयोग में लाया जाता है, इसी प्रकार चक्रों का भी प्रश्न कुंडली के परिणामों की पुष्टि करने के लिए विश्लेषण करना चाहिए। प्रश्न कुंडली के संयुक्त

विश्लेषण के बिना चक्रों का एकाकी प्रयोग भ्रांतियों को बुलावा देना है। उपरोक्त वर्णित उदाहरण को ही लें। यदि प्रश्न कुंडली से जीवन मृत्यु की स्थिति वर्णित न हो तो कोट चक्र को बनाना व्यर्थ है। यदि किसी स्वस्थ व्यक्ति के लिए कोट चक्र का विश्लेषण किया जाए तो वह केवल अड़चनें या परेशानियां दिखा सकता है, मृत्यु नहीं। इस चेतावनी के बावजूद, यह कहना उपयुक्त होगा कि केवल एक चक्र स्वतंत्र रूप से प्रयोग किया जा सकता है और वह है सर्वतोभद्र चक्र। सर्व का अर्थ है सम्पूर्ण क्योंकि यह ज्योतिष के हर पहलू को सम्मिलित करता है। भद्र का अर्थ है पृथ्वी या सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड। इस चक्र को इसीलिए त्रिलोक्य दीपक भी कहा गया है जो तीनों लोकों को प्रदीप्त करता है और अन्य ज्योतिषीय प्रणालियों के साथ या उनके बिना प्रयुक्त किया जा सकता है।

16
घटनाओं का समय

प्रश्न में यह सर्वाधिक कठिन, विवादास्पद और दुरूह क्षेत्र है। घटना का समय जानने के लिए अनेक विधियां प्रयुक्त की जाती हैं। स्थूलतः इन्हें निम्नलिखित वर्गों में श्रेणीबद्ध किया जा सकता है।

1. ग्रहों से निर्मित
2. घटना का संकेत करने वाले ग्रह
3. न्यूनीकृत विंशोत्तरी दशा
4. त्रिस्फुट दशा
5. ग्रहों का गोचर
6. ताजिक सिद्धान्त

ग्रहों से निर्मित योग

शास्त्रीय ग्रंथों में, ग्रहों से निर्मित योगों के प्रचुर सूत्र बिखरे पड़े हैं जहां घटनाओं का समय सूचित किया गया है। कुछ ऐसे ही ग्रंथों से निकाले गए योगों की एक सूची नीचे दी गई है। यह सूची केवल निर्देशात्मक मात्र है, सम्पूर्ण नहीं।

घटना	*योग*	*समय*
शत्रु का आगमन	लग्न में, चर राशि में सूर्य, शनि बुध, शुक्र में से कोई ग्रह	शत्रु का तुरन्त आगमन
वही	यदि ग्रह (जैसा ऊपर है) सूर्य के अतिरिक्त वक्री अवस्था में है	कोई आगमन नहीं
वही	4थे भाव में बुध, बृहस्पति, शुक्र	शीघ्र आगमन
वही	लग्न से चन्द्रमा तक गिनिए वशर्ते कोई मध्यवर्ती ग्रह नहीं है	उतने दिनों में आगमन

घटना	योग	समय
शत्रु का कष्ट में होना	स्थिर राशि में लग्न, द्विस्वभाव राशि में चन्द्रमा और छठे भाव में शुभ ग्रह स्थित हों	तत्काल वापसी
धन की प्राप्ति	केन्द्र में या त्रिकोण में लग्नेश, चन्द्रमा और द्वितीयेश युति या दृष्टि द्वारा संयुक्त हों	तत्काल प्राप्ति
वही	लग्नेश शुभ षड्वर्गों में हो और लग्न शुभ ग्रहों के प्रभाव में हो	तत्काल प्राप्ति
वही	चौथे या 7वें भाव में चन्द्रमा, 10वें भाव में सूर्य, लग्न में शुभ ग्रह	तत्काल प्राप्ति
वही	लग्न में बृहस्पति	तत्काल प्राप्ति
रोगी की मृत्यु	तीसरे भाव में सूर्य, 10वें भाव में पाप ग्रह	10 दिनों के भीतर
वही	तीसरे भाव में बृहस्पति और शुक्र	एक सप्ताह के भीतर
वही	लग्न, चौथे भाव, 8वें भाव में पाप ग्रह	8 दिनों के भीतर
वही	लग्न, दूसरे भाव में पाप ग्रह	15 दिनों के भीतर
वही	दूसरे भाव, 8वें भाव, 10वें भाव में पाप ग्रह	तीन दिनों के भीतर
वही	10वें भाव में और 10वें से 10वें अर्थात सातवें भाव में पाप ग्रह	10 दिनों के भीतर
वर्षा	1, 2, 3, 4, 7, एवं 10वें भाव में शुभ ग्रह जो जलीय राशियों और शुक्ल पक्ष में हों	वर्षा
वही	लग्न में जलीय राशि में चंद्रमा	वर्षा
वर्षा का आगमन	शुक्र और शनि क्रमशः i) सूर्य और चन्द्रमा से सातवें भाव में ii) लग्न से चौथे भाव और 8वें भाव में iii) लग्न से दूसरे भाव और तीसरे भाव में	वर्षा ऋतु में वर्षा का आगमन
लापता वस्तु या खोई हुई वस्तु की पुनः प्राप्ति	शीर्षोदय लग्न में पूर्णिमा का चांद, शुभ ग्रहों से युत अथवा दृष्ट	शीघ्र

घटना	योग	समय
वही	11वें भाव में बलवान शुभ ग्रह	शीघ्र
वही	2, 3, 5वें भाव में शुभ ग्रह	शीघ्र
वही	उदित द्विस्वभाव राशि	लम्बे समय के उपरांत
व्यक्ति की वापसी	चौथे भाव में ग्रह जितने अंश आगे बढ़ा हो	उतने दिनों में
वही	चौथे भाव में ग्रह को आने के लिए जितने अंशों की आवश्यकता हो	उतने दिनों में
वही	लग्न से गिनने पर जिस भाव में सबसे बलवान ग्रह हो	
	यदि चर नवांश में	उतने महीनों में
	यदि स्थिर नवांश में	वही दुगुना
	द्विस्वभाव नवांश में	वही तिगुना
वही	जब सप्तमेश गोचर में वक्री होगा	वक्री होने पर
वही	दूसरे या तीसरे भाव में बृहस्पति और/या शुक्र	शीघ्र
वही	दूसरे, तीसरे, पांचवें भाव में सभी ग्रह	शीघ्र वापसी
वही	2, 3, 5वें भाव में बृहस्पति या शुक्र में कोई एक	अत्यंत शीघ्र वापसी
वही	छठे भाव या 7वें भाव में कोई ग्रह और केन्द्र में बृहस्पति	तत्काल
वही	त्रिकोण भावों में बुध और शुक्र	तत्काल वापसी
वही	लग्न से पहली राशि को गृहीत करने वाले ग्रह तक गिनिए, यदि	
	i) वक्री अवस्था में	उतने दिनों में
	ii) मार्गी अवस्था में	दिन गुणा 12
वही	चौथे भाव में बृहस्पति और शुक्र	तत्काल वापसी
वही	लग्न या चन्द्रमा से दूसरे और 12वें भाव में बुध और शुक्र	निकट भविष्य में वापसी नहीं
शांति की संधि	द्विपाद राशियों (3, 6, 7, 9 का उत्तरार्ध और 11) में 11, 12, 1 भाव में शुभ ग्रह	तत्काल
वही	चौथे भाव या 10वें भाव में शुभ ग्रह	तत्काल

घटना को संकेतित करने वाले ग्रह

इस विधि में घटना को संकेतित करने वाला ग्रह अर्थात कार्येश समय को सूचित करता है। कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि समय की इस योजना के लिए कार्येश के स्थान पर लग्न के नवांश के स्वामी का विश्लेषण करना चाहिए।

ग्रह	*सूचित अवधि*
सूर्य	एक अयन (6 माह)
चन्द्रमा	एक मुहूर्त्त (2 घटी या 48 मिनट)
मंगल	एक दिन और रात (अहोरात्रि)
बुध	एक मौसम या ऋतु (2 माह)
बृहस्पति	एक माह
शुक्र	एक पक्ष (शुक्ल या कृष्ण पक्ष)
शनि	एक वर्ष
राहु	8 महीने
केतु	3 महीने

मान लीजिए कार्येश बृहस्पति चौथे नवांश में है। बृहस्पति माह बताता है। तब कार्येश द्वारा 4x1=4 माह सूचित होंगे। इसके विपरीत, मान लीजिए लग्न के नवांश का स्वामी बुध छठे नवांश में है, तब समय 6x2=12 माह या 1 वर्ष सूचित होगा। इन दोनों विधियों की तुलना और परीक्षण की आवश्यकता है।

न्यूनीकृत विंशोत्तरी दशा

प्रश्न कुंडली अधिकांश तात्कालिक घटनाओं को दर्शाती है। अतः समय की कसौटी पर परीक्षित विंशोत्तरी दशा के 120 वर्षों को एक वर्ष में न्यूनीकृत कर दिया जाता है क्योंकि प्रायः प्रश्न की समयावधि एक वर्ष तक मानी जाती है। प्रश्न चन्द्रमा का नक्षत्र, पहले की तरह, दशा शेष बताता है। मान लीजिए चन्द्रमा शुक्र द्वारा शासित पूर्व फाल्गुनी में 4रा 20°00' में स्थित है। नक्षत्र की भुक्त अवधि 6°40' है और भोग्य अवधि भी 6°40' है। विंशोत्तरी दशा में प्रत्येक ग्रह को आवंटित वर्षों की संख्या को उसकी न्यूनीकृत विंशोत्तरी दशा को दिनों में प्राप्त करने के लिए तीन से गुणा करें।

शुक्र की शेष दशा = 20 का आधा या 10x3=30 दिन। दशाओं का क्रम विंशोत्तरी दशा का अनुसरण करता है और आरम्भिक ग्रह की दशा की शेष अवधि वर्षांत में प्राप्त होती है। सभी ग्रहों की न्यूनीकृत दशाओं के योग का एक वर्ष या 360 दिनों का होता है।

न्यूनीकृत विंशोत्तरी दशा
प्रश्न के समय पर चन्द्रमा के भोगांश पर आधारित
एक वर्ष या 360 दिनों की न्यूनीकृत दशा-अवधियां

केतु 7 × 3 = 21 दिन

	दिन	घंटा
केतु-केतु	1	05
केतु-शुक्र	3	12
केतु-सूर्य	1	01
केतु-चन्द्रमा	1	18
केतु-मंगल	1	05
केतु-राहु	3	04
केतु-बृहस्पति	2	19
केतु-शनि	3	08
केतु-बुध	2	23

शुक्र 20 x 3 = 60 दिन

	दिन	घंटा
शुक्र-शुक्र	10	00
शुक्र-सूर्य	3	00
शुक्र-चन्द्रमा	5	00
शुक्र-मंगल	3	12
शुक्र-राहु	9	00
शुक्र-बृहस्पति	8	00
शुक्र-शनि	9	12
शुक्र-बुध	8	12
शुक्र-केतु	3	12

सूर्य 6 x 3 = 18 दिन

	दिन	घंटा
सूर्य-सूर्य	1	00
सूर्य-चन्द्रमा	1	12
सूर्य-मंगल	1	01
सूर्य-राहु	2	17
सूर्य-बृहस्पति	2	09
सूर्य-शनि	2	20
सूर्य-बुध	2	13
सूर्य-केतु	1	00
सूर्य-शुक्र	3	00

चन्द्रमा 10 x 3 = 30 दिन

	दिन	घंटा
चन्द्रमा-चन्द्रमा	2	12
चन्द्रमा-मंगल	1	18
चन्द्रमा-राहु	4	12
चन्द्रमा-बृहस्पति	4	00
चन्द्रमा-शनि	4	18
चन्द्रमा-बुध	4	06
चन्द्रमा-केतु	1	18
चन्द्रमा-शुक्र	5	00
चन्द्रमा-सूर्य	1	12

मंगल 7 x 3 = 21 दिन

	दिन	घंटा
मंगल-मंगल	1	05
मंगल-राहु	3	04
मंगल-बृहस्पति	2	19
मंगल-शनि	3	08
मंगल-बुध	2	23
मंगल-केतु	1	05
मंगल-शुक्र	3	12
मंगल-सूर्य	1	01
मंगल-चन्द्रमा	1	18

राहु 18 x 3 = 54 दिन

	दिन	घंटा
राहु-राहु	8	02
राहु-बृहस्पति	7	05
राहु-शनि	8	13
राहु-बुध	7	15
राहु-केतु	3	04
राहु-शुक्र	9	00
राहु-सूर्य	2	17
राहु-चन्द्रमा	4	12
राहु-मंगल	3	04

बृहस्पति 16 x 3 = 48 दिन		
	दिन	घंटा
बृहस्पति-बृहस्पति	6	10
बृहस्पति-शनि	7	14
बृहस्पति-बुध	6	19
बृहस्पति-केतु	2	19
बृहस्पति-शुक्र	8	00
बृहस्पति-सूर्य	2	10
बृहस्पति-चन्द्रमा	4	00
बृहस्पति-मंगल	2	19
बृहस्पति-राहु	7	05

शनि 19 x 3 = 57 दिन		
	दिन	घंटा
शनि-शनि	9	01
शनि-बुध	8	02
शनि-केतु	3	08
शनि-शुक्र	9	12
शनि-सूर्य	2	20
शनि-चन्द्रमा	4	18
शनि-मंगल	3	08
शनि-राहु	8	13
शनि-बृहस्पति	7	14

बुध 17 x 3 = 51 दिन		
	दिन	घंटा
बुध-बुध	7	05
बुध-केतु	2	23
बुध-शुक्र	8	12
बुध-सूर्य	2	13
बुध-चन्द्रमा	4	06
बुध-मंगल	2	23
बुध-राहु	7	15
बुध-बृहस्पति	6	19
बुध-शनि	8	02

त्रिस्फुट दशा

त्रिस्फुट की संरचना के लिए लग्न, चन्द्रमा और मांदि के अंशों को जोड़ें। यह न्यूनीकृत विशोंत्तरी दशा के समकक्ष दशा-तंत्र है क्योंकि प्रत्येक ग्रह की दशा की अवधि और क्रम न्यूनीकृत विंशोत्तरी दशा के समान है। एकमात्र विभेद यह है कि दशा का शेष चन्द्रमा के भोगांश के स्थान पर प्रश्न के त्रिस्फुट भोगांश से परिकलित किया जाता है।

ग्रहों का गोचर

जन्मकालीन भविष्य सूचक ज्योतिष की भांति प्रश्न में भी, घटनाओं का विशुद्ध समय प्राप्त करने के लिए गोचर का अत्यधिक प्रयोग होता है। यह अपने आप में एक विस्तृत विषय है तथापि मैं केवल उन सिद्धान्तों को सीमित कर रहा हूं जो विशेषतः प्रश्न में प्रयुक्त होते हैं। इन सिद्धान्तों पर प्रत्येक अध्याय में किसी विशेष प्रकार के प्रश्न में समय दिखाने के लिए पर्याप्त रूप से विश्लेषण

किया गया है। इसके अतिरिक्त, ये सिद्धान्त ज्योतिष में गोचर की स्वीकृत विधियों में भी प्रयुक्त किए जाते हैं। नीचे दिए गए योगों की सूची केवल संकेतात्मक है और इन सिद्धान्तों का तर्क किसी भी प्रकार के प्रश्न के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है

1. जब-जब लग्नेश या कार्येश लग्न या कार्य भाव के ऊपर से संचरण करते हैं, जैसा कि मामले में संभव हो, तो उस घटना के फलीभूत होने का समय आ गया है।
2. लापता व्यक्तियों की वापसी से संबंधित प्रश्नों में, जब सप्तमेश गोचर में वक्री होता है, तो यह उसकी वापसी का समय है।
3. जब चन्द्रमा गोचर में 4थे भाव में पहुंचता है तो व्यक्ति वापस आता है।
4. बीमारी से संबंधित प्रश्नों में, जब चन्द्रमा षष्ठेश के ऊपर संचरित हुआ होगा तो बीमारी प्रारम्भ हुई होगी। जब यह 4थे भाव या चतुर्थेश के ऊपर संचरण करेगा तो बीमारी समाप्त होगी, बशर्ते रोगी के शीघ्र उपचार के संकेत उपलब्ध हों।
5. अपने आरंभिक अंशों में किसी भाव/राशि में ग्रह का प्रवेश, जैसा कि पहले व्याख्यायित किया गया है, घटनाओं के समय के उत्तम संकेत देता है। उदाहरणार्थ, यदि एक ग्रह ने अभी एक राशि में प्रवेश किया है और अपने गोचर में यह विपत्ति या रोग या और किसी मामले का कारण बनता है, तब जितने समय तक उस राशि में वह ग्रह संचरण करेगा, उतने समय तक उसके द्वारा निर्मित विपत्ति का उपशमन नहीं होगा।
6. उत्तम परिणाम प्राप्त करने के लिए सदैव दशा या समयावधि सूचित करने की अन्य विधियों के साथ गोचर को संबद्ध किया जाना चाहिए।
7. जब भी हम गोचर के सिद्धान्तों का प्रयोग करते हैं, तो सर्वप्रथम घटना के सम्भावित व्यापक समय की गणना करें जिसके दौरान घटना घटित हो सकती है। उसके बाद विशुद्ध समय को प्राप्त करने के लिए संबंधित भाव के ऊपर चन्द्रमा के गोचर को प्रयुक्त करें।

   चन्द्रमा के गोचर का यह सिद्धान्त अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। घटना के समय को ज्ञात करने के लिए किसी भी सिद्धान्त को अपनाया जाए फिर भी उस घटना के विशुद्ध समय को ठीक-ठीक ज्ञात करने के लिए लग्न, लग्नेश, कार्येश या कार्य भाव पर चन्द्रमा के गोचर का उपयोग अनिवार्य है।

8. किसी भी भाव पर शनि का संचरण उस भाव के कारकत्वों को उत्प्रेरित करता है।
9. समय के सम्पूर्ण विश्लेषण के लिए प्रश्न से पहले, प्रश्न के दौरान और प्रश्न के बाद के गोचर को ध्यान में रखें।

ताजिक सिद्धान्त

घटनाओं के समय-निर्धारण में यह एक सर्वाधिक आश्चर्यजनक विधि है और ताजिक योगों में भाग लेने वाले ग्रहों के परस्पर अंशों पर आधारित है। बिल्कुल प्रारम्भ में, मैं दुहरा देना चाहता हूं कि इस विधि का आधार पाराशरी है, न कि ताजिक। वास्तव में, यह इन दो सिद्धान्तों का सम्मिश्रण है।

यह परंपरागत ज्योतिषीय ज्ञान है कि चर, स्थिर और द्विस्वभाव राशियां बढ़ते हुए क्रम में समयावधि बताती हैं। षटपंचासिका के अनुसार, स्थिर और द्विस्वभाव नवांशों में, लग्न से गिनने पर बलवान ग्रह की स्थिति द्वारा दर्शाए गए समय को क्रमशः दुगुना और तिगुना करें। इसी दृष्टिकोण को किसी न किसी रूप में शास्त्रीय ग्रंथों में व्यक्त किया गया है, लेकिन इसमें एक अपवाद है। सामान्यतया, स्थिर राशियां स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं बताती। कतिपय लोग स्थिर राशि को समयावधि को दिखाने वाली राशि कहते हैं जो द्विस्वभाव राशि द्वारा दिखाए समय की अपेक्षा दीर्घकालीन है। उदाहरणार्थ, यदि चर, स्थिर ओर द्विस्वभाव राशियां दिनों, सप्ताहों और महीनों की समयावधि दिखाती हैं, तब ऊपर विवेचित दूसरे विचार में, यह क्रमशः दिनों, महीनों और सप्ताहों को दिखाएंगी। दूसरे शब्दों में, समयावधि के बढ़ते हुए क्रम में, ये दोनों दृष्टिकोण चर, स्थिर और द्विस्वभाव और इसके विपरीत चर, द्विस्वभाव और स्थिर द्वारा सूचित समयावधि को दिखाते हैं।

जब हम इस शास्त्रीय आधार को ताजिक योगों तक विस्तृत करते हैं और दोनों को सम्मिलित करते हैं तो हम समय का मानक प्राप्त करते हैं जिसकी रूपरेखा मुझे प्रारम्भ में प्रश्न के मेरे श्रद्धेय गुरुवर श्री जे. एन. शर्मा द्वारा सुझाई गई थी। वे संभवतः प्रश्न के उत्कृष्ट विद्वान हैं और एक वे ही हैं जिन्होंने मुझे प्रश्न में शोध के इस पथ पर अग्रसर होने के लिए प्रेरित किया। वे मूलतः प्रश्न के विश्लेषण में नक्षत्रों और राहु/केतु के प्रयोग पर मेरे बल देने के विरुद्ध थे। जिसने स्वयं ही मुझे गंभीरतापूर्वक इस दिशा में अग्रसर होने के लिए पर्याप्त प्रेरणा दी। इन तकनीकों के प्रयोग और उपयुक्तता को इस पुस्तक में प्रचुर मात्रा में चित्रित किया गया है।

निकटतम ताजिक संबंध की पहचान करें, जो कुंडली में लग्नेश किसी ग्रह के साथ बना रहा है। इसी प्रकार निकटतम ताजिक संबंध की पहचान करें,

जो कार्येश किसी ग्रह के साथ बना रहा है। समान रूप में, न केवल लग्नेश और कार्येश, बल्कि कुंडली में कोई दो ग्रह उनके कारकत्वों और स्वामित्व पर आधारित कुछ समय सूचित करेंगे। जैसा कि पहले व्याख्यायित किया गया है कि सामान्यतः इशराफ का अर्थ एक पिछली घटना, एक पूर्ण इत्थसाल का अर्थ वर्तमान घटना और एक इत्थसाल का अर्थ एक भावी घटना है। ये उन अंशों पर निर्भर करते हैं जिसके द्वारा ये दो ग्रह एक-दूसरे से पृथक हैं और केन्द्र, पणफर और आपोक्लीम भावों में इन ग्रहों का स्थापन घटना के समय को दर्शाता है। यद्यपि, यह देखा गया है कि कभी-कभी इशराफ भी भावी दुर्भाग्यपूर्ण घटना की ओर इशारा करता है। यह विरोधाभास शोध का विषय है, जिसका मुझे अभी समाधान करना है। इस विधि के लिए नीचे सारणी - 1 को देखिए।

सारणी - 1

	चर	*स्थिर*	*द्विस्वभाव*
केन्द्र	दिन	सप्ताह	माह
पणफर	सप्ताह	माह	वर्ष
आपोक्लीम	माह	वर्ष	अत्यधिक विलंब

इस विवरण का सार समझने के लिए दो ग्रहों वाला एक उदाहरण
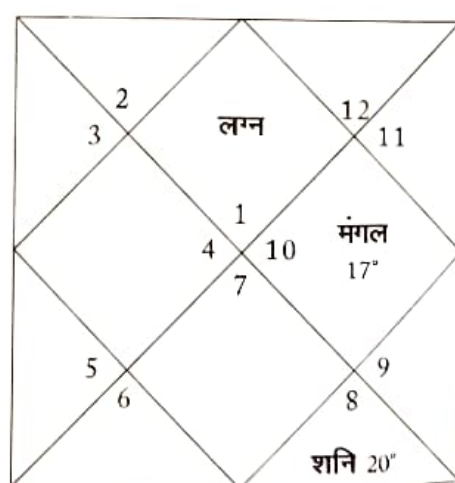
यहां लग्नेश मंगल 10वें भाव में 17° पर उच्च का है जबकि दशमेश शनि 8वें भाव में 20° पर स्थित है। दोनों के बीच 3° की दूरी है। यह एक इत्थसाल है जो भावी घटना को दिखा रहा है। केन्द्र और चर राशि में स्थित मंगल दिनों को दिखाता है जबकि पणफर और स्थिर राशि में शनि महीनों को दिखा रहा है। व्यवसाय से संबंधित इस प्रश्न में, लग्नेश और कार्येश के

बीच संबंध है जहां लग्नेश मंगल, जो अष्टमेश भी है, 10वें भाव में स्थित है और दशमेश/ एकादशेश शनि 8वें भाव में स्थित है। यह योग यहां व्यवसाय के संबंध में बाधाएं, हानियां और समस्याएं सूचित कर रहा है, बशर्ते कुंडली में अन्य योग भी इसी प्रकार के संकेत दर्शाए।

चूंकि, इस जैसे प्रश्न में घटना का समय उचित सलाह और परामर्श देने में निर्णायक है। यह कहा जा सकता है कि अब से 3 दिनों या 3 महीनों के बाद हानियां या बाधाएं हैं क्योंकि एक ग्रह दिनों को और दूसरा महीनों को बताता है। मैंने अक्सर ऐसी स्थिति का सामना किया है। जब भी लग्नेश और कार्येश भिन्न-भिन्न समय बताते हैं, तब तीन दिनों की भविष्यवाणी तीन महीनों में या तद्नुरूप पूर्ण हो सकती है। वास्तव में मेरे देखने में आया है कि गलत समय के ऐसे मामलों में अंशों की भिन्नता जिसके द्वारा दो ग्रह पृथक होते हैं वे संभावित घटना की उपस्थिति से निश्चित संबंध रखते हैं।

मेरे प्रारम्भिक कुछ वर्षों का शोध इस मानक पर आधारित था, तब तक जब तक कि मैंने इन कठिनाइयों का सामना नहीं किया था। इन समस्याओं ने मुझे इन अवधारणाओं को एक विस्तृत मानक में विकसित करने के लिए प्रेरित किया। जिसमें एक विश्लेषणात्मक दृष्टि से मैं उन सभी कुंडलियों का अवलोकन कर सका जिनमें समय की कथित भविष्यवाणी गलत हुई थी। निरन्तर प्रेक्षण से मुझे ऐसा ज्ञात हुआ इन सभी मामलों में लग्न का एक अत्यंत आश्चर्यजनक एवं उद्घाटित करने वाला संबंध है। आइए देखते हैं कैसे!

सारणी - 1 से दोनों समयों को लिख लेने के बाद, उदित लग्न को देखें कि क्या लग्न चर, स्थिर या द्विस्वभाव है। ग्रहों से प्राप्त किए गए दोनों समयों को इस तीसरे महत्त्वपूर्ण आयाम से जोड़ने पर घटनाओं का अत्यंत विशुद्ध समय प्राप्त होता है। सारणी - 2 में यह परिणामी संबंध और समय दिया गया है। एक ऐसा अपवाद है जिसकी यहां विशेष चर्चा की आवश्यकता है। यदि लग्न स्थिर है, तब उससे उद्घाटित समयावधि द्विस्वभाव लग्न से अधिक दी गई है।

अतः सारणी - 1 में लिए गए सिद्धान्त को सारणी - 2 में पलट दिया गया है। यह विपर्यय समयों में स्थिर और द्विस्वभाव राशियों की स्थिति के विरोधाभास का समाधान और इस संबंध में भावी शोधों के लिए मार्ग दर्शन कर सकता है। प्रथम कॉलम लग्नेश या कार्येश, दिन, सप्ताह, माह या वर्ष में किन्हीं दो ग्रहों से प्राप्त समय दिखाता है।

प्रायः ऐसा भी होता है कि निकटवर्ती अंशों में स्थित दो ग्रह दूरस्थ स्थित अंशों के ग्रहों की अपेक्षा दूर की समयावधि दर्शाएं। यह सब ग्रहों की केन्द्रादि

सारणी - 2

दो ग्रहों से प्राप्त समय दिन, सप्ताह, माह, वर्ष	लग्न		
	चर	*द्विस्वभाव*	*स्थिर*
दिन + दिन	तुरन्त	दिन	सप्ताह
दिन + सप्ताह	दिन	सप्ताह	माह
दिन + माह	सप्ताह	माह	वर्ष
दिन + वर्ष	माह	वर्ष	विलंब
सप्ताह + सप्ताह	दिन	सप्ताह	माह
सप्ताह + माह	सप्ताह	माह	वर्ष
सप्ताह + वर्ष	माह	वर्ष	अत्यधिक विलंब
माह + माह	सप्ताह	माह	वर्ष
माह + वर्ष	माह	वर्ष	अनिश्चित विलंब
वर्ष + वर्ष	माह	वर्ष	यथावत स्थिति

एवं चरादि भावों और राशियों में स्थिति पर निर्भर करता है। मैंने देखा है कि कुंडली में प्रत्येक ऐसे ग्रह द्वारा सूचित समय उनके कारकत्वों या स्वामित्व के संबंध में परिणामों को देता है।

ऊपर दिखाये गये समय का सिद्धान्त लग्नेश और कार्येश को सीमित नहीं करता बल्कि कुंडली में किन्हीं दो ग्रहों पर विस्तृत किया जा सकता है। प्रायः समय की यह विधि इस पुस्तक के सभी उदाहरणों में प्रयुक्त की गई है। फिर भी यहां इन सिद्धान्तों को स्पष्ट करने वाले कुछ और उदाहरण भी दिए गए हैं।

शोध के भावी क्षेत्र

समय के इस प्रारूप में दो विशिष्ट क्षेत्र है जिसमें मेरा शोध चल रहा है। ये हैं:

1. अनेक मामलों में, दोनों ग्रह सारणी - 1 से एक जैसी आवृत्तिका बताते हैं, जैसे सप्ताह, तब क्या सारणी - 2 से लग्न का तीसरा आयाम प्रयुक्त करना चाहिए या नहीं।
2. सारणी - 2 में बढ़ते हुए क्रम में समयावधि चर, द्विस्वभाव और स्थिर या चर, स्थिर और द्विस्वभाव हो।

3. यदि किसी योग में भाग लेने वाला ग्रह वक्री है, तब क्या समय को 3 से गुणा करना चाहिए या नहीं, जैसा कि कुछ शास्त्रीय ग्रंथों में सुझाया गया है।

4. विलंब, अत्यधिक विलंब, अनिश्चित विलंब और यथावत स्थिति की सीमा क्या है जैसा कि मेरे द्वारा सारणियों में वर्णित किया गया है।

उदाहरण संख्या : 1

धमनी के अवरोधन के लिए टांग की शल्यक्रिया

लग्न 23°20' से 26°40' शनि(व) 8°44' केतु 14°10'			
	उदाहरण : 1 आरूढ़ से लग्न संख्या 107 रात्रि 7:30 बजे 15 अक्टूबर 1996 नई दिल्ली		मंगल 27°49'
			शुक्र 19°34'
बृहस्पति 16°41'	चन्द्रमा 5°01'		राहु 14°10' बुध 16°41' सूर्य 28°40'

द्विस्वभाव और उभयोदय लग्न कोई प्रगति या स्वास्थ्य लाभ नहीं दिखा रहा। 7वें भाव में वक्री राहु के साथ द्विस्वभाव लग्न और राहु/केतु अक्ष में अत्यधिक पीड़ित लग्न न केवल संदिग्ध बीमारी की अपेक्षा दूसरी बीमारी बल्कि अनेक समस्याएं भी दिखाता है।

13 अक्टूबर 1996 को अपने कार्यालय से घर जाते हुए इस व्यक्ति को बेचैनी का अनुभव हुआ और मात्र आश्वासन के लिए वह निकटवर्ती उपचार गृह में चला गया। जैसा कि मामला संदिग्ध हृदय रोग का था, अतः उसे तत्काल अवलोकन के लिए दाखिल कर लिया गया।

लग्नेश बृहस्पति लग्न में वक्री द्वादशेश शनि से दृष्ट होकर दिखाता है कि रोगी अस्पताल में है। लग्न, बुध के नक्षत्र में है जो चतुर्थेश/सप्तमेश होकर सप्तम (रोग) भाव में स्वयं नीच चन्द्रमा के नक्षत्र में स्थित है। लग्नेश अष्टमेश शुक्र के नक्षत्र में है, जो इसी क्रम में छठे भाव में स्थित है। नक्षत्र-विश्लेषण में किसी ग्रह के बलाबल और परिणाम को देखने के लिए एक स्वीकृत नाड़ी सिद्धान्त है कि उसे तीन चरणों तक देखें। लग्न

बुध के नक्षत्र में है, बुध चन्द्रमा के नक्षत्र में है जो नीच है और चन्द्रमा शनि के नक्षत्र में है जो वक्री द्वादशेश होकर लग्न को पीड़ित कर रहा है। चन्द्रमा मंगल की राशि में है जो पुनः नीच है। चन्द्रमा और मंगल दोनों बिना किसी शुभ दृष्टि के हैं। अतः एक ऐसी स्थिति दिखा रहे है जो संकटपूर्ण हो सकती है।

लग्न राहु/केतु अक्ष में वक्री एकादशेश/द्वादशेश शनि से पीड़ित है और सातवें भाव से लग्न के निकट अंशों में षष्ठेश सूर्य से दृष्ट है। पीड़ित एकादशेश विविध समस्याएं दिखाता है। लग्न में द्वादशेश अस्पताल जाना दिखाता है और लग्न में वक्री ग्रह शनि, लग्नेश बृहस्पति के साथ इशराफ में दिखाता है कि चिकित्सक बदल लिया गया है। सातवें भाव में स्थित बली बुध स्पष्टतः बीमारी सूचित करता है, क्योंकि यह सप्तमेश है, षष्ठेश सूर्य के साथ स्थित है, द्वादशेश शनि से दृष्ट है और राहु/केतु अक्ष में है। मैंने प्रश्न के विश्लेषण में प्रायः ऐसा पाया है कि यदि बुध किसी पाप ग्रह के साथ एक ही नक्षत्र पद में स्थित हो तो अशुभ फल देता है।

14 अक्टूबर 1996 को रोगी दूसरे अस्पताल में स्थानांतरित कर दिया गया और उसकी शल्यक्रिया की गई। षष्ठेश सूर्य और शल्य-क्रिया का कारक मंगल का पूर्ण इत्थसाल देखें, जो एक वर्तमान स्थिति दिखा रहा है जिसमें आगे बढ़ा हुआ तीव्र गति ग्रह सूचित कर रहा है कि शल्य-क्रिया लगभग हो चुकी है। कुंडली में दूसरा संकटपूर्ण घटक अपने नक्षत्र में, छठे भाव में स्थित बली अष्टमेश शुक्र है जो जटिलताएं दिखा रहा है। वास्तव में, लग्नेश बृहस्पति स्पष्टतया बलवान है, लेकिन वह अष्टमेश शुक्र के नक्षत्र में है जबकि अष्टमेश बीमारी के भाव में अपने नक्षत्र में है। यद्यपि प्रारम्भ में रोगी को 13 अक्टूबर 1996 को हृदय रोग के लिए अस्पताल भर्ती किया गया था तथापि उसकी दूसरे अस्पताल में 14 अक्टूबर 1996 को टांग में रक्त के प्रवाह में रुकावट के लिए शल्य क्रिया की गई। अतः दूसरी बीमारी के उभरने के साथ-साथ चिकित्सक का परिवर्तन सूचित हो रहा है। जब-जब लग्न/7वाँ भाव अत्यधिक पीड़ित होता है, तो न केवल बीमारी विविध और जटिल होती है बल्कि चिकित्सक भी उसे ठीक ढंग से समझने और उपचार करने में अयोग्य होता है। रोगी सघन चिकित्सा कक्ष में शैया संख्या 8 पर था। एक निमित्त या शकुन, जो किसी संकटपूर्ण कुंडली में अशुभ हो सकता है।

मृत्यु सूचित करने वाले योग

1. यद्यपि तकनीकी रूप से, राहु और केतु ताजिक योगों में भाग नहीं लेते तथापि मैंने उन्हें समान रूप में कार्य करते और परिणाम देते पाया है।

केन्द्र में पाप ग्रहों-राहु और केतु के साथ पूर्ण इत्थसाल में स्थित लग्नेश मृत्यु को दर्शाने वाला योग है।

2. यद्यपि चन्द्रमा केन्द्र में स्थित नहीं है तथापि केन्द्र में स्थित वक्री द्वादशेश के साथ इत्थसाल में है।
3. सप्तमेश से चौथे भाव में लग्नेश स्थित है।
4. ऊपर विवेचित कारणों के लिए लग्नेश अष्टमेश की अपेक्षा बलहीन है
5. लग्न, चन्द्रमा और सूर्य वक्री शनि के प्रभाव में हैं, जो कि इस मामले में द्वादशेश भी है।
6. केन्द्र में स्थित वक्री ग्रह शनि, चन्द्रमा के साथ इत्थसाल में है।

घटना का समय

ग्रहों का गोचरः प्रश्न से दो दिन पूर्व, जब 13 अक्टूबर 1996 को षष्ठेश सूर्य के ऊपर चन्द्रमा ने संचरण किया, तब रोग का प्रारम्भ हुआ। स्वास्थ्य लाभ तब होगा (यदि कुंडली में स्वास्थ्य लाभ के योग उपलब्ध हों) जब चन्द्रमा चतुर्थेश बुध के ऊपर से संचरण करेगा। यह अभी दूर है और इससे पूर्व इसे अनेक संकटपूर्ण योगों से गुजरना होगा।

न्यूनीकृत विंशोत्तरी दशाः प्रश्न के समय पर पीड़ित द्वादशेश शनि की न्यूनीकृत विंशोत्तरी दशा चल रही थी, जो स्वतः अनुकूल नहीं है।

ताजिक सिद्धान्तः पाराशरी और ताजिक सिद्धान्तों को सम्मिश्रित करने पर दशमेश/लग्नेश बृहस्पति सप्तेश बुध के साथ 16°41' के समान अंशों पर पूर्ण इत्थसाल में है। दशमेश रोगी है और सप्तमेश रोग है। एक पीड़ित कुंडली में रोग और रोगी के बीच पूर्ण इत्थसाल रोग की वृद्धि दिखाता है। दोनों द्विस्वभाव राशियों और केन्द्रों में महीने सूचित कर रहे हैं। दूसरे, इसे उदित लग्न के साथ संबंधित करने पर, जो भी द्विस्वभाव है, महीने दिखाता है, लेकिन इन दोनों ग्रहों के बीच अंशों का अन्तर शून्य है। अतः यह एक आकस्मिक और वर्तमान घटना घटित होना बता रहा है। प्रश्न के एक घंटे के भीतर रोगी मूर्च्छा में चला गया। उसके बाद जब उसे जीवित रखने की सभी विधियां असफल हो गई, तो उसे थोड़ी देर बाद मृत घोषित कर दिया गया।

उदाहरण संख्या : 2

हृदय रोग

लग्न पृष्ठोदय और द्विस्वभाव राशि है जो लम्बी बीमारी दिखा रहा है। लग्न केतु के नक्षत्र में है जो चौथे भाव, सुख भाव को प्रभावित कर रहा है। यह

शनि 11°40' केतु 22°04'	बुध 26°23' मंगल 27°32'	सूर्य 16°36'	शुक्र 1°55'
	उदाहरण : 2 रात्रि 7:55 बजे 31 मई 1996 अश्वामऊ		
लग्न 0°53' बृहस्पति 22°43'		चन्द्रमा 29°24'	राहु 22°04'
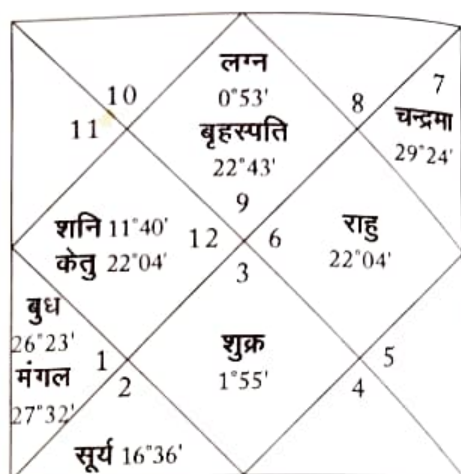
एक ऐसा प्रश्न दिखा रहा है, जो अशुभ है और जिसमें घर की खुशहाली नष्ट हो चुकी है। किसी भी प्रकार के प्रश्न में, सकुशलता को जानने के लिए इस भाव की स्थिति को देखना और विश्लेषित करना विवेकपूर्ण है।

लग्नेश बृहस्पति षष्ठेश शुक्र के नक्षत्र में है जिसने अभी अपनी राशि बदली है और लग्न के साथ-साथ लग्नेश को प्रभावित करने के लिए सातवें भाव में आया है। षष्ठेश शुक्र लग्न के साथ निकट अंशों में भी है। चन्द्रमा अष्टमेश है और लग्नेश बृहस्पति के नक्षत्र में संधि पर है और 12वें भाव में अपनी नीच राशि में प्रवेश करने के कारण नीचाभिलाषी है। चन्द्रमा द्वादशेश मंगल (अस्पताल) के साथ-साथ सप्तमेश बुध (रोग) से इशराफ योग में है जो रोगी की बीमारी और आकस्मिक अस्पताल में भर्ती होना दिखा रहा है।

लग्नेश राहु और केतु के साथ निकटतम अंशों में है जो जटिलताएं दिखा रहा है। हृदय का कारक सूर्य शनि से दृष्ट होकर, शनि के साथ निकटतम इशराफ में छठे भाव में स्थित है। सूर्य अष्टमेश चन्द्रमा के नक्षत्र में है। 5वां भाव हृदय क्षेत्र सूचित करता हैं जो इसी क्रम में द्वादशेश मंगल और सप्तमेश बुध से प्रभावित और अष्टमेश चन्द्रमा से दृष्ट है और हृदय रोग के कारण बीमारी और अस्पताल में दाखिल होना दिखा रहा है। चौथा भाव भी हृदय को सूचित करने के लिए देखा जाता है जहां प्राकृतिक रोगकारक शनि, केतु के साथ स्थित है। हृदय का कारक सूर्य छठे भाव में बिना किसी शुभ दृष्टि के स्थित है तथा शनि से दृष्ट है। केतु इस मामले में बीमारी सूचित करता है, क्योंकि यह सप्तमेश बुध के नक्षत्र में है।

लग्नेश बृहस्पति अष्टमेश की अपेक्षा अधिक बलवान होकर इस कुंडली को अत्यधिक बल प्रदान कर रहा है। लग्नेश बृहस्पति सप्तमेश बुध (रोग) और द्वादशेश मंगल (अस्पताल) के साथ निकटतम इशराफ में एक पिछली

घटना दिखा रहा है। रोगी विगत समय में अवश्य जटिल रूप से बीमार हुआ जिसके लिए हमें घटना का समय निकालना चाहिए। ताजिक योगों के स्वीकृत सिद्धान्तों से हटकर बृहस्पति और शनि के बीच स्थित राहु और केतु को भी औसत गति रखने वाले ग्रहों के रूप में शामिल करने पर हम घटना का समय निम्न प्रकार प्राप्त कर सकते हैं।

लग्नेश बृहस्पति केन्द्र और द्विस्वभाव राशि पर 22° 43' पर स्थित होकर माह दिखाता है। यह केन्द्र और द्विस्वभाव राशि में 22°04' पर स्थित केतु के साथ निकटतम इशराफ में है जो पुनः महीने दिखाता है। बृहस्पति राहु और केतु की अपेक्षा तीव्र गति ग्रह है और इसीलिए यह एक इशराफ की स्थिति है और पिछली घटना है।

केन्द्र और द्विस्वभाव राशि में बृहस्पति महीने दिखाता है	22°43'
केन्द्र और द्विस्वभाव राशि में केतु महीने दिखाता है	22°04'
अंतर	0°39'

द्विस्वभाव लग्न में महीने+महीने संयुक्त होकर महीने दिखाता है। 0°39' को महीनों में बदलने पर प्रश्न की तिथि के पूर्व के लगभग 20 दिन प्राप्त होते हैं। यह सूचित किया गया कि मई 1996 के दूसरे सप्ताह (20 दिन पूर्व) उसे हृदय रोग के इलाज के लिए ले जाया गया और 8 से 9 दिनों तक वह गंभीर स्थिति में था, लेकिन जीवित बच गया।

लग्नेश होकर नैसर्गिक शुभ ग्रह बृहस्पति, लग्न में स्थित होकर अत्यधिक ईश्वरीय सुरक्षा प्रदान कर रहा है।

उदाहरण संख्या : 3

क्या लापता लड़का जीवित है या मृत?

यह प्रश्नकर्ता जानना चाहता है कि क्या उसका लापता पुत्र मृत है अथवा जीवित। वह स्कूल परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने के बाद लगभग 11 वर्ष पूर्व भाग गया था। लग्न पृष्ठोदय लेकिन द्विस्वभाव राशि में शुक्र के नक्षत्र में है जो 9वें भाव में अष्टमेश के साथ स्थित है। सभी ग्रह, केवल पंचमेश मंगल (पुत्र) को छोड़कर केन्द्रों और त्रिकोणों में है। पंचमेश मंगल द्वादशेश भी है और 8वें भाव में नीच है।

लग्नेश लग्न में स्थित है जबकि इसका नक्षत्रेश शुक्र 9वें भाव में बलवान होकर स्थित है, और लग्न से बृहस्पति की दृष्टि प्राप्त कर रहा है अतः लड़का सुरक्षित है।

केतु 14°19' शनि (व) 9°05'			
	उदाहरण : 3 दोपहर 12:37 बजे 10 अक्टूबर 1996 नई दिल्ली		मंगल 24°44'
			शुक्र 13°21' चन्द्र 26°59'
लग्न 15°18' बृहस्पति 16°04'			बुध 7°59' राहु 14°19' सूर्य 23°27'
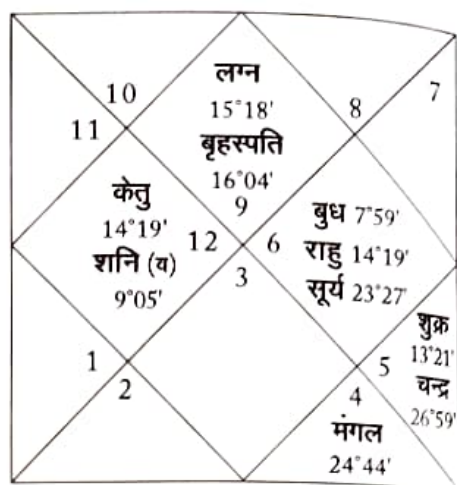
प्रश्न की प्रकृति पर आधारित, घटनाओं के समय में कई बार हमें कार्येश से भी विश्लेषण करना पड़ता है। प्रश्न है कि क्या लड़का मृत या जीवित है? यहां अष्टमेश चन्द्रमा कार्येश है। यह लग्नेश बृहस्पति के साथ निकटतम इशराफ योग में है जो पिछली घटना दिखा रहा है।

आपोक्लीम और स्थिर राशि में चन्द्रमा वर्ष दिखाता है	26°59'
केन्द्र और द्विस्वभाव राशि में बृहस्पति माह दिखाता है	16°04'
अन्तर	10°55'

द्विस्वभाव लग्न में माह + वर्ष संयुक्त होकर वर्ष दिखाता है। 10°55' को वर्षों में बदलने पर, हम अतीत में लगभग 10 वर्ष और 11 माह प्राप्त करते हैं। यह बताया गया कि यह लड़का बिल्कुल उसी समय, लगभग 11 वर्ष पूर्व, कभी भी वापस न आने के लिए, भाग गया था।

17
प्रश्न में विविध विधियाँ

प्रश्न में असंख्य विधियाँ प्रयुक्त की जाती हैं जो या तो निरंतर की जाने वाली टीका-टिप्पणियों और शोध का अथवा पीढ़ियों द्वारा हस्तांतरित पारिवारिक रहस्यों का परिणाम है। इन सभी विधियों को संचित और संक्षिप्त करना कठिन है, क्योंकि इनमें से अनेक शास्त्रीय ग्रंथों में उपलब्ध नहीं हैं। फिर भी विभिन्न विधियों की व्याख्या करने का एक प्रयास यहां किया गया है जो प्रश्न के विश्लेषण में व्यापक रूप से प्रयुक्त की जाती हैं। विविध विधियों में निम्नलिखित प्रमुख हैं।

1. लग्न, सूर्य और चन्द्रमा पर आधारित स्नैपशॉट (आशुचित्र) विधि।
2. होरा।
3. शकुन।
4. अज्ञात कुंडलियां, जिन्हें नष्ट जातक कहा जाता है।
5. पंचाग और मुहूर्त्त पर आधारित अशुभ क्षण।
6. चन्द्रमा को शामिल करने वाली विधियां।
7. राहु और केतु।

इनमें से कुछ विधियां ज्योतिषियों द्वारा उपेक्षित कर दी जाती रही हैं, चाहे ऐसा सर्वथा माना जाता है कि यह विधियां अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं। इस का प्रमुख कारण यह तथ्य है कि प्रश्न एक त्वरित विधि मानी जाती है। यद्यपि एक कुंडली के विशुद्ध विश्लेषण के लिए अधिकाधिक परिश्रम और समय की आवश्यकता है। इसीलिए ये विधियां गंभीर अनुप्रयोग और उपयोग की अपेक्षा रखती हैं।

लग्न, सूर्य और चन्द्रमा पर आधारित स्नैपशॉट (आशुचित्र) विधि

प्रश्न कुंडली में शुभ अथवा अशुभ परिणामों का फलित करने की एक शीघ्र विधि केवल चर, स्थिर या द्विस्वभाव राशियों में लग्न, सूर्य और चन्द्रमा के स्थापन से देखी जाती है।

क्र०	लग्न	सूर्य	चन्द्रमा	परिणाम
1.	चर	चर	चर	इच्छाओं की पूर्ति
2.	चर	चर	स्थिर	कार्यों में असफलता और हानि
3.	चर	चर	द्विस्वभाव	आर्थिक क्षति, मानसिक असंतोष
4.	चर	स्थिर	चर	आर्थिक उपलब्धियां और लापता संपत्ति की पुनः प्राप्ति
5.	चर	स्थिर	स्थिर	मतभेद, नौकरी, व्यवसाय, प्रसन्नता की हानि
6.	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	इच्छाओं की पूर्ति, समृद्धि, प्रसन्नता, बच्चों का जन्म
7.	चर	द्विस्वभाव	चर	बीमारी का भय, पीड़ा और कारावास
8.	चर	द्विस्वभाव	स्थिर	चिंता और विवाद, कार्यों की असफलता
9.	चर	द्विस्वभाव	द्विस्वभाव	मानसिक चिंताएं, कार्यों की असफलता, विपत्तियां और उद्वेग
10.	स्थिर	स्थिर	चर	इच्छाओं की पूर्ति, विजय, लेकिन प्रसन्नता की हानि
11.	स्थिर	स्थिर	स्थिर	भौतिक एवं आध्यात्मिक उपलब्धियां
12.	स्थिर	स्थिर	द्विस्वभाव	सत्ताधारी व्यक्तियों से लाभ, धार्मिक और शुभ समारोह
13.	स्थिर	चर	चर	प्रसन्नता, इच्छाओं की पूर्ति एवं लाभ लेकिन मानसिक कष्ट
14.	स्थिर	चर	स्थिर	पत्नी से असंतोष, अप्रसन्नता, मित्र अथवा प्रिय की क्षति
15.	स्थिर	चर	द्विस्वभाव	बीमारियां और हानि, द्विपादों और चतुष्पादों से हानि
16.	स्थिर	द्विस्वभाव	चर	आर्थिक हानियां, प्रत्येक दिशा से अप्रसन्नता
17.	स्थिर	द्विस्वभाव	स्थिर	प्रसन्नता, उपलब्धियां, साहसिक कार्यों में सफलता और विजय
18.	स्थिर	द्विस्वभाव	द्विस्वभाव	सामान्य उपलब्धियां और प्रसन्नता
19.	द्विस्वभाव	द्विस्वभाव	चर	सभी प्रकार की उपलब्धियां और प्रसन्नता
20.	द्विस्वभाव	द्विस्वभाव	स्थिर	प्रसन्नता और सकुशलता की हानि
21.	द्विस्वभाव	द्विस्वभाव	द्विस्वभाव	संपत्ति की प्राप्ति, मित्रों/परिचितों का आगमन
22.	द्विस्वभाव	चर	चर	अप्रसन्नता, असंतोष, अशुभ घटनाएं
23.	द्विस्वभाव	चर	स्थिर	अधिकाधिक प्रसन्नता और महान् उपलब्धियां

क्र०	लग्न	सूर्य	चन्द्रमा	परिणाम
24.	द्विस्वभाव	चर	द्विस्वभाव	ज्ञानार्जन, धन, मन की शांति, बच्चों की प्राप्ति
25.	द्विस्वभाव	स्थिर	चर	प्रसन्नता, यात्रा में सफलता
26.	द्विस्वभाव	स्थिर	स्थिर	सभी प्रकार की उपलब्धियां और प्रसन्नता
27.	द्विस्वभाव	स्थिर	द्विस्वभाव	बच्चों और मित्रों की ओर से विपत्तियां

होरा

हिन्दू ज्योतिष के अनुसार सूर्योदय से दिन प्रारम्भ होता है और अगले सूर्योदय पर समाप्त होता है। एक दिन की यह अवधि 'अहोरात्रि' कही जाती है। होरा शब्द दो शब्दों होरा+रात्रि के योग से निष्पन्न हुआ है। अ(होरा)त्रि में कोष्ठकों के बाहर के शब्दों को हटा देने के उपरांत, हमें होरा शब्द प्राप्त होता है जिसे काल होरा भी कहते हैं, जो स्थूलतः एक घंटा संकेतित करता है। होरा की सही अवधि दिन की अवधि, जिसे दिनमान कहा जाता है अथवा रात्रि की अवधि, जिसे रात्रिमान कहा जाता है, पर निर्भर करती है। यदि इन दोनों की अवधि, प्रत्येक 12 घंटे अथवा 30 घटी के समान है, जो केवल वसंत विषुव और शरद विषुव के दिनों में संभव है, तो प्रत्येक होरा की अवधि एक घंटा के बराबर होगी। अन्य दिनों में, दिन के दौरान होरा की अवधि दिनमान की अवधि को 12 से विभाजित करके परिकलित की जाती है। यह हमें 12 होराएं देती हैं जिसकी अवधि एक विशेष दिन के दिनमान की अवधि पर आधारित प्रत्येक एक घंटा से कम या अधिक अथवा समान हो सकती है, जैसा कि ऊपर व्याख्यायित किया गया है। इसी प्रकार, रात्रि की होराओं की गणना के लिए, रात्रिमान को 12 से विभक्त किया जाता है जो हमें 12 होराएं देती हैं। ठीक-ठीक 12 घंटों का दिनमान स्थानीय सूर्योदय के समय से प्रारम्भ एक घंटा की प्रत्येक होरा देता है। एक होरा को पुनः तीन भागों में विभक्त किया जाता है और विशुद्ध भविष्यवाणियों के परिणामों को देने के लिए प्रत्येक भाव का विश्लेषण किया जाता है। इसी प्रकार, 13 घंटों का दिनमान $13 \div 12 = 1$ घंटा 5 मिनट 00 सैकेण्ड के समान प्रत्येक होरा की अवधि देता है। वास्तव में प्रश्न के विशिष्टीकृत क्षेत्र को अंग्रेजी में 'होरेरी' कहा जाता है। जो होरा से अपना नाम प्राप्त करता है।

ग्रहों पर आधारित सप्ताह के दिनों के नामकरण की सुनिश्चित योजना इस प्रकार से है कि प्रथम होरा सदैव सप्ताह के दिन की होती है। इस योजना को समझने के लिए एक वृत खींचिए और ग्रहों के नाम उनकी नक्षत्रीय अवधि के घटते हुए क्रम में वामावर्त लिखिए। दूसरे शब्दों में,

अपने-अपने परिक्रमा-पथों में उनकी गति का क्रम सबसे मंदतन ग्रह शनि से प्रारम्भ होगा और चन्द्रमा पर समाप्त होगा।
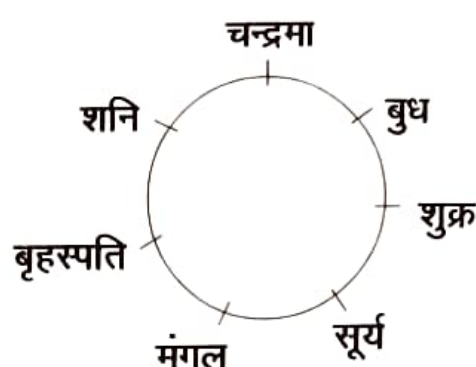
रविवार को प्रथम होरा सूर्य की है और वामावर्त गिनने पर दूसरी शुक्र की, तीसरी बुध की और आगे उसी क्रम में होगी। रविवार को 24 होराओं के क्रम निम्नलिखित है।

रविवार को होराएं

होरा →	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
स्वामी →	सूर्य	शुक्र	बुध	चं०	शनि	बृ०	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चं०	शनि
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25
बृ०	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चं०	शनि	बृ०	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चं०

अत: 25वीं होरा या अगले दिन की प्रथम होरा, सोमवार को चन्द्र की होगी। यदि हम इस चक्रीय क्रम से सभी होराओं को गिनते हैं, तो हम रविवार से शनिवार तक सप्ताह के प्रत्येक दिन की प्रथम होरा स्वयं दिन के स्वामी की पाते हैं। प्रसंगवश होराओं का यह क्रम एक दिन पीछे छोड़ने से भी आ सकता है। रविवार को प्रथम होरा सूर्य की है। तब एक दिन छोड़ते हुए पीछे की ओर गणना करें। सूर्य की अगली होरा शुक्र (शनिवार को छोड़ने पर) की है, तीसरी होरा बुध (बृहस्पतिवार को छोड़ने पर) की है तथा आगे तदनुसार होगी। 24 होराओं के क्रम में, प्रथम 12 होराओं की अवधि दिनमान की अवधि पर निर्भर करेगी जबकि 13 से 24 होराओं की अवधि रात्रिमान की अवधि पर निर्भर करेगी, जैसा कि ऊपर दिखाया गया है।

जो होरा प्रश्न के समय पर गतिशील है वह अपना शुभ या अशुभ प्रभाव दर्शाती है। यह व्यक्ति की चिंता भी बताती है जिसमें एक प्रश्नकर्त्ता गुजर रहा है। उक्त होराधिपति की स्थिति, दृष्टि और युति का विश्लेषण भी

किया जाना चाहिए। इस विवरण के अंत में दिन के समय और रात्रि के समय की होराओं की सारणियां दी गई हैं। सामान्यतया, विभिन्न होराएं निम्नलिखित प्रकार के परिणाम देती हैं जिसे प्रश्न कुंडली के समस्त-संकेतों के अनुसार संतुलित करना पड़ता है। यद्यपि नीचे विवेचित परिणाम सामान्य हैं तथापि अपनी होरा के कारकत्वों पर आधारित अनुकूल या प्रतिकूल परिणाम दे सकते हैं।

विभिन्न होराओं के परिणाम

होराधिपति		परिणाम
सूर्य	:	सामान्यतः यह होरा बाधाओं, रुकावटों और असफलताओं को सूचित करती है, लेकिन संचयन के सभी कार्यों अथवा उपलब्धियों से संबंधित प्रश्नों में उत्तम परिणाम देती है। यह शुभ परिणाम देगा यदि प्रश्न सूर्य के कारकत्वों से संबंधित है। अतः उन मामलों में, जहां प्रश्न होराधिपति के कारकत्वों से संबंधित है, तब विशिष्ट प्रश्न कुंडली में होराधिपति के प्रभाव को प्रमुखता देनी चाहिए। यह विधि नीचे विवेचित सभी मामलों में प्रयुक्त होती है।
चन्द्रमा	:	शुभ होरा होने के कारण वैभव की प्राप्ति और शुभ परिणाम देती है।
मंगल	:	बीमारी, शोक और दुर्घटनाएं सूचित करता है। यह प्रश्न के लिए अनुकूल नहीं है, लेकिन युद्धों, विवादों और झगड़ों से संबंधित प्रश्नों में, यह अनुकूल परिणाम देता है।
बुध	:	ज्ञानार्जन के साथ-साथ समृद्धि सूचित करता है।
बृहस्पति	:	समृद्धि और सत्ता से जुड़ी उपलब्धियां दर्शाता है। यह होरा विवाह के प्रश्नों के लिए शुभ मानी जाती है।
शुक्र	:	पुनः यह विवाह, विवादों के परस्पर समाधान और अनुकूल प्राप्तियों के लिए शुभ होरा है। यह होरा यात्रा से संबंधित प्रश्नों के लिए शुभ मानी जाती है।
शनि	:	प्रयासों में असफलता और समृद्धि की हानि।

होरा को पुनः तीन समान भागों में विभाजित करने की विधि प्रश्न के परिणाम में गहन अंतःदृष्टि प्रदान करती है। त्रुटियों से बचने और होरा के तीन भागों पर आने के लिए विशुद्ध समय की आवश्यकता है। दिनमान और रात्रिमान को विभक्त करने की एक सटीक गणना और तब सूर्योदय या सूर्यास्त समय से होरा की अवधि को जोड़ने की आवश्यकता है, जैसा कि मामले में सम्भव हो। ये कारकत्व मूक प्रश्न के मामले में, प्रश्न की प्रकृति भी सूचित करते हैं।

विभिन्न होराओं के एक तिहाई भाग का परिणाम

होराधिपति		परिणाम
सूर्य	I	उपलब्धियों के साथ-साथ नौकरी में पदोन्नति के लिए अनुकूल है। यदि कर्मचारियों, वरिष्ठ व्यक्तियों या सरकार से अनुकूलता की आशा की जा रही है तो यह सकारात्मक परिणाम देता है।
	II	रोगग्रस्त व्यक्ति स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करता है। प्रश्नकर्ता ऋणों और बाधाओं से मुक्ति प्राप्त करता है जो उसे परेशान कर रही हैं।
	III	साझेदारी अथवा किसी निर्णय की समस्या अंततः सुव्यवस्थित होगी।
चन्द्रमा	I	व्यापार के प्रारम्भ अथवा विस्तार से संबंधित है। प्रश्न दूर स्थित व्यक्ति की सकुशलता से संबंधित होगा।
	II	यात्रा प्रारम्भ करना या दूर स्थित व्यक्ति के विषय में चिंता।
	III	जो व्यक्ति दूर है अथवा प्रश्नकर्त्ता द्वारा सामना की जा रही विपत्तियों के बारे में समाचार की आशा।
मंगल	I	खोई हुई संपत्ति के विषय में प्रश्न। प्रश्नकर्त्ता अत्यंत आक्रमणशील है।
	II	यह होरा मुकद्दमेबाजी, विवादों और बाधाओं की ओर संकेत करती है।
	III	हानियों से संबंधित चिंताएं, किंकर्त्तव्यविमूढ़ता, शत्रुओं से भय।
बुध	I	किसी व्यवसाय, व्यापार, शिक्षा को प्रारम्भ करना अथवा कोई वस्तु खो गई है।
	II	कुछ क्रय अथवा विक्रय से संबंधित है।
	III	व्यक्ति के अथवा कुछ समाचारों के आगमन की आशा करना।
बृहस्पति	I	धार्मिक समारोहों, जैसे विवाह, बच्चे, मन की शांति से संयुक्त शुभ कर्म।
	II	खोई हुई वस्तु की पुनः प्राप्ति या कुछ वित्तीय मामलों से संबंधित।
	III	अनेक चिंताएं हैं। किसी व्यक्ति या सूचना की प्रतीक्षा है।
शुक्र	I	व्यवसाय अथवा नौकरी में अनेक बाधाएं। उस व्यक्ति की मुक्ति, जो कारावास में है।
	II	स्त्री, प्रणय संबंध, शैया सुखों और ऐसे सभी संबंधित मामलों से जुड़ा हुआ प्रश्न।
	III	क्या प्रणय संबंध जारी रहेंगे अथवा नहीं।
शनि	I	विवाद, मुकद्दमेंबाजी, विनाशात्मक अभिप्राय, चोरी और इसी प्रकार के सभी क्रूर कर्म।
	II	बीमारी से अथवा पारिवारिक सदस्यों के स्वास्थ्य संबंधी मामलों की चिंताओं से जुड़ा प्रश्न। साथ ही, वित्तीय कठिनाइयों से भी संबंधित है।
	III	चिंताओं और तनावों का समाधान, विवादों में विजय और शत्रु परास्त।

दिन के समय के होराओं की सारणी

क्रमांक	सूर्योदय से होरा	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	बृहस्पतिवार	शुक्रवार	शनिवार
1.	पहली	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
2.	दूसरी	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति
3.	तीसरी	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल
4.	चौथी	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य
5.	पांचवीं	शनि	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र
6.	छठी	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध
7.	सातवीं	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्रमा
8.	आठवीं	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
9.	नवीं	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति
10.	दसवीं	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल
11.	ग्यारहवीं	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य
12.	बारहवीं	शनि	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र

रात्रि के समय के होराओं की सारणी

क्रमांक	सूर्यास्त से होरा	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	बृहस्पतिवार	शुक्रवार	शनिवार
1.	पहली	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध
2.	दूसरी	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्रमा
3.	तीसरी	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
4.	चौथी	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति
5.	पांचवीं	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल
6.	छठी	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य
7.	सातवीं	शनि	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र
8.	आठवीं	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध
9.	नवीं	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्रमा
10.	दसवीं	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
11.	ग्यारहवीं	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति
12.	बारहवीं	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल

होराओं से संबंधित विशिष्ट कार्य (कर्म)

सामान्यतया, किसी कार्य को करने एवं उसकी अनुकूल पूर्ति के लिए एक शुभ मुहूर्त की आवश्यकता होती है। लेकिन कई बार ऐसा उपयुक्त दिन प्राप्त कर पाना संभव नहीं होता। ऐसे मामलों में, कम से कम उपयुक्त होरा की शरण लेनी चाहिए। प्रत्येक ग्रह की होराओं से संबंधित कुछ विशिष्ट कार्य (कर्म) निम्नलिखित हैं।

होराधिपति	*कार्यों (कर्मों) के लिए उपयुक्त*
सूर्य	संचयन के कार्य और उपलब्धियां
चन्द्रमा या बुध	किसी भी प्रकार का कार्य
मंगल	युद्ध, विवाद, झगड़ा
बृहस्पति	विवाह
शुक्र	यात्रा
शनि	किसी भी कार्य के लिए उपयुक्त नहीं, अतः त्याज्य

उदाहरण संख्या : 1

बैंक सावधि जमा रसीद – होरा से विश्लेषण

शनि(व) 0°35'	केतु 7°00'		
	उदाहरण : 1 दोपहर 2:10 बजे बृहस्पतिवार 27 जुलाई, 1995, नई दिल्ली		शुक्र 3°17' चन्द्र 7°01' बुध 9°14' सूर्य 10°04'
	लग्न 0°13' बृहस्पति 11°48'	राहु 7°00'	मंगल 9°45'

चन्द्रमा 9वें भाव में अपनी राशि में और शनि के नक्षत्र में स्थित है, जो यहां बहुमुखी भूमिका रखता है। शनि लग्न की भांति प्रारम्भिक अंशों में है, लग्न में बलवान होकर स्थित बृहस्पति की राशि को अधिगृहीत किए हुए है, क्योंकि लग्न स्वयं बृहस्पति के नक्षत्र में है और शनि भी बृहस्पति के नक्षत्र में है। बृहस्पति और शनि नक्षत्र परिवर्तन योग में हैं, अतः एक-दूसरे के हितों की रक्षा कर रहे हैं। शनि चतुर्थेश, चोरी हुई अथवा गलत स्थान पर रखी हुई संपत्ति है, और उपलब्धियों के भाव से लग्नेश मंगल से दृष्ट है।

लग्नेश मंगल सूर्य के साथ निकटतम अंशों में है जो नवें भाव में दशमेश होकर नवमेश चन्द्रमा के साथ स्थित है और लग्न से द्वितीयेश बृहस्पति से दृष्ट होकर प्राप्ति और खोई हुई संपत्ति की पुनः प्राप्ति को सूचित कर रहा है। लग्नेश मंगल एकादशेश बुध के साथ पूर्ण इत्थसाल और द्वितीयेश बृहस्पति के साथ निकट इत्थसाल में भी है। इसी प्रकार चन्द्रमा लग्नेश, द्वितीयेश ओर एकादशेश के साथ इत्थसाल योग में है। लग्नेश एवं चन्द्रमा के साथ द्वितीयेश और एकादशेश की युति सूचित करती है कि खोई हुई संपत्ति मिल जाएगी।

द्वितीयेश बृहस्पति और चोर ग्रह सप्तमेश शुक्र संबंधित हैं। बृहस्पति पाराशरी दृष्टि से शुक्र को देखता है और दोनों मित्रीय ताजिक दृष्टि में हैं और अभी मित्रीय इत्थसाल योग में प्रवेश करने जा रहे हैं। यह दर्शाता है कि वस्तु केवल गलत स्थान पर रखी है और चोरी नहीं हुई।

लग्नेश मंगल और सप्तमेश शुक्र इत्थसाल में दिखा रहे हैं कि वस्तु गलत स्थान पर रखी है और प्रत्याशित स्थान पर मिल जाएगी। यद्यपि राहु/केतु के साथ चन्द्रमा के निकट अंश इस संभावित हानि के कारण प्रश्नकर्त्ता की मानसिक चिंताएं दिखाता है। निस्संदेह, लग्नेश मंगल अष्टमेश बुध के साथ पूर्ण इत्थसाल में है, लेकिन बुध एकादशेश भी है और लग्नेश मंगल 11वें भाव में स्थित है। अतः हानि के स्थान पर यह पुनः प्राप्ति और उपलब्धियां दिखाता है, तब जब गलत स्थान पर रखी गई वस्तु की पुनः प्राप्ति के अन्य सभी संकेत उपस्थित हैं। लापता सावधि जमा रसीद अलमारी में पाई गई।

इस प्रश्न के पंचांग पहलू को देखने की भी आवश्यकता है। एक पूर्ण तिथि और बृहस्पतिवार, सिद्ध योग बनाते हैं। जबकि पुनर्वसु नक्षत्र और बृहस्पतिवार सर्वार्थ सिद्धि योग बनाते हैं। दोनों कार्य सिद्धि अथवा इच्छाओं की पूर्ति के लिए अनुकूल हैं। सर्वाधिक आश्चर्यजनक पक्ष होरा की भूमिका का है जैसा ऊपर व्याख्यायित किया गया है। 27 जुलाई को दिल्ली में सूर्योदय 5:43 घंटे पर और सूर्यास्त 19:12 घंटे पर है। 13 घंटे 29 मिनट का दिनमान है और प्रत्येक होरा 1 घंटा 7 मिनट 25 सैकेण्ड की है। सूर्योदय से प्रत्येक होरा की अवधि जोड़ने पर हम 13 घंटे 42 मिनट 40 सैकेण्ड से बृहस्पति की होरा पाते हैं। प्रत्येक होरा की अवधि को तीन से विभाजित करने पर हमें प्रत्येक भाग लगभग 22 मिनट 29 सैकेण्ड का प्राप्त होता है अब इस एक तिहाई भाग को 13 घंटे 42 मिनट 40 सैकेण्ड से जोड़ें और हम पाते हैं कि प्रश्न बृहस्पति II की होरा में पूछा गया है। ऊपर विवेचित परिणामों को देखें। जहां यह कहा गया है कि प्रश्न "खोई हुई संपत्ति की पुनः प्राप्ति और वित्तीय मामलों से संबंधित है।"

ये इन विशुद्ध विलक्षण भविष्यवाणियों को दर्शाने वाली विविध विधियों की बहुमुखी विशेषताएं हैं।

शकुन

शकुन हमारे चारों ओर घटित होने वाले वे तथ्य हैं जो निश्चित भावी घटनाओं की भविष्यवाणी करते हैं। शकुनों का सारांश आदिकाल से भावी पीढ़ियों तक लोकवार्ता के रूप में पहुंचा। यह उचित ही कहा जाता है कि जो धारणाएं लोगों के जीवन और आत्मा को प्रभावित करती हैं, वे ऐसी ही जनश्रुतियों में उद्‌घाटित होती हैं। इस तथ्य के बावजूद कि कुछ लोग इन विश्वासों को अंधविश्वास मानकर अस्वीकृत कर देते हैं तथापि अधिकांश लोग पूर्णतः शकुनों की उपेक्षा नहीं करते।

शकुन और उनके परिणामी विश्वास उतने ही प्राचीन है जितनी कि स्वयं मानव जाति। यह बिल्कुल संभव है कि उनकी विकासात्मक प्रक्रिया में अनेक शकुन समय के साथ विलुप्त हो चुके हों और अनेक नये शकुनों ने उनका स्थान ग्रहण कर लिया हो। फिर भी, प्रश्न में उनका अनुप्रयोग समय के परीक्षण से हुआ है और प्रकृति द्वारा उद्‌घाटित आश्चर्यजनक विशुद्ध संकेत ज्योतिषी के प्रयास में सहायक होते है।

हिन्दी में शकुन निमित के रूप में जाने जाते हैं। न केवल भारत में बल्कि विश्व के सभी राष्ट्रों में इन विश्वासों को महत्ता दी गई हैं। शेक्सपीयर ने इन्हें अपने निम्नलिखित शब्दों में कहा है "जब भिखारी मरते हैं तो कोई धूमकेतु दिखाई नहीं देते परन्तु राजकुमारों की मृत्यु पर ब्रह्माण्ड स्वयं प्रज्वलित हो जाता है।" हमारे महाकाव्यों के साथ-साथ प्राचीन शास्त्रीय ग्रंथों में ऐसे अनेक संदर्भ मिलते हैं। शकुनों को निम्नलिखित पांच वर्गों में विभक्त किया गया है।

1. पृथ्वी से संबंधित शकुन

ये भौम लक्षण के रूप में जाने जाते हैं। ये पृथ्वी से संबंधित अनेक प्राकृतिक भावी घटनाओं को सूचित करते हैं जैसे भूकम्प, ज्वालामुखी, तूफान, झंझावात, अकाल, बाढ़ आदि।

2. आकाश से संबंधित शकुन

ये अंतरिक्ष लक्षण के रूप में जाने जाते हैं। ये ग्रहणों, ग्रहों के उदय और अस्त होने, धूमकेतुओं की दृश्यता, उल्काओं, ग्रहीय युति और युद्ध आदि से संबंधित हैं जो पृथ्वी पर होने वाली घटनाओं को व्यक्त करते हैं। ये वर्षा,

उसकी अधिकता और कमी आदि को भी बताते हैं। तीन प्रकार के अंतरिक्ष लक्षण हैं - स्थलीय, वायुमण्डलीय और आकाशीय।

3. स्वप्नों से संबंधित शकुन

पृथ्वी पर कोई ऐसा जीवित प्राणी नहीं है जो स्वप्न नहीं देखता। कुछ स्वप्न भावी घटनाओं को उद्घाटित करते हैं जबकि अनेक स्वप्न अवचेतन मन की चिंताएं बताते हैं।

4. शरीर से संबंधित शकुन

ये अंग लक्षण के रूप में जाने जाते हैं। ये हाथों और पैरों पर निर्मित चिह्नों जैसे कमल, तिलों और विभिन्न शरीरांगों के स्पर्श से निर्मित संकेतों को सूचित करते हैं। यह ज्ञान प्राचीन समय में सामुद्रिक शास्त्र के रूप में विकसित हुआ।

5. विविध शकुन

वे शकुन जो उपरोक्त चार श्रेणियों में नहीं आते, उन्हें स्थूलतः विविध शकुनों के रूप में श्रेणीबद्ध किया गया है।

जटिल रूप से शकुनों की विषयवस्तु प्रश्न से संबंधित है। प्रश्न के संचालन के दौरान घटित होने वाले सभी प्राकृतिक और अप्राकृतिक तथ्य कुछ अच्छे अथवा बुरे संकेतों की भविष्यवाणी करते हैं। संदर्भ की सरलता के लिए, प्रस्तुत वर्णन घटनाओं से संबंधित हैं, न कि ऊपर विवेचित वर्गीकरण से।

प्रश्न से जुड़े हुए ऐसे शकुन जो सामान्यतया शुभ एवं अशुभ परिणामों को सूचित करते हैं, उन्हें यहां व्याख्यायित किया गया है।

सभी प्रश्नों के लिए सामान्य शकुन

जब अनुकूल स्थानों, जैसे वृक्ष के नीचे, जहां पुष्पों अथवा फलों की प्रचुरता है, जहां वातावरण हृदय को प्रसन्न करता है, पर प्रश्न पूछा जाए है, तब यह उत्तम परिणाम देता है। दूसरी ओर, अशुभ स्थानों, जैसे शमशानों, उजाड़ स्थानों, कोई स्थान जो मनोहर नहीं है, जहां चार मार्ग मिलते हैं, गंदे स्थानों, जो संन्यासियों, नाइयों, शत्रुओं, जुआरियों द्वारा गृहीत हैं, जेल, मधुवाटिका आदि पर प्रश्न पूछा जाए तो वह कार्य सिद्धि नहीं दर्शाता।

प्रश्न पूछने के लिए उत्तम दिशाएं पूर्व, उत्तर और उत्तर-पूर्व हैं। दूसरी दिशाएं, विशेषतः दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम प्रतिकूल हैं। प्रश्न के परिणाम के लिए पूर्वाह्न शुभ है। जबकि अपराह्न अशुभ है। इसी प्रकार रात्रि और दोनों समयों का धुंधला प्रकाश अनुकूल नहीं है।

	शुभ	अशुभ
1.	बन्दर, घोड़ा, भालू एवं हाथी का नज़र आना और उनकी आवाजें।	सर्प, उल्लू, छिपकली, गधा, बिल्ली का नज़र आना, उनके या अन्य किसी पशु की कर्णभेदी आवाजें अथवा चीखना-चिल्लाना।
2.	पके हुए चावल, दूध या दलिया मादक पेय, जैसे शराब, विषम संख्या के पशु, प्रसिद्ध व्यक्ति, ब्राह्मण, बहुमूल्य रत्न, मधु, घी, इत्र, मंद वायु। सामान्यतया, वे सभी वस्तुएं और घटनाएं जो आंखों और इंद्रियों को प्रीतिकर प्रतीत होती हैं।	वे सभी वस्तुएं और घटनाएं जो आंखों और इंद्रियों को अच्छी नहीं प्रतीत होतीं, जैसे गोबर, मल, नमक, भस्म, काठ कोयला, काला चना, हिंजड़े, सरसों, ईंधन, झंझावात, प्रकाश, तेल अथवा ईंधन के होते हुए भी अचानक दीपक अथवा बत्ती का बुझ जाना, पात्र का गिरना या टूटना।
3.	भोजन से पूर्व, वस्त्र पहनने से पूर्व, सोने से पूर्व, शिक्षा प्रारम्भ करने से पूर्व और फसलों की बुवाई से पूर्व छींक आना शुभ है।	सामान्यतः सम्पूर्ण संसार में छींक आना अशुभ माना जाता है यदि वह किसी कार्य के प्रारम्भ से पूर्व घटित हो।
4.	बांसुरी, शंख और गायों की ध्वनियां।	कौओं, गधों, भैंसों की ध्वनियां।
5.	प्रश्नकर्त्ता बिना किसी गतिविधि के शांत हो।	प्रश्नकर्त्ता बेचैन है, अपनी टांग या पैर हिला रहा हो।
6.	मधुर और सुखद आवाजें सुनाई दें शांति और स्वच्छता हो, कोई व्यक्ति वस्तुएं ले जाता दिखाई दे जो आंखों को सुखद लगे।	कोई वस्तु गिरे, कोई तीव्रता से बात करे, कटु भाषा प्रयुक्त करे। कोई व्यक्ति पादुका या लाल पुष्पों को ले जाता दिखाई दे।
7.	यदि प्रश्नकर्त्ता द्वारा पहना हुआ वस्त्र सफेद, सादे रंगों या सादे रंगों की छपाई वाला है, तो यह समृद्धि दर्शाता है।	गंदा अथवा फटा, लाल, काला या रंगीन छपाईदार वस्त्र शोक दर्शाता है।
8.	बायीं ओर बिल्ली का दिखाई देना, अपने मुंह में कुछ भोज्य सामग्री लिए गाय जुगाली करे। विशेषतया सूअर यदि गंदगी और कीचड़ से पूरी तरह सना हुआ हो।	सोते हुए व्यक्ति के ऊपर से बिल्ली उछलकर जाए। बिल्ली किसी व्यक्ति के पैरों को सूंघे। कुत्ता मुंह में हड्डी पकड़े हुए दिखाई दे। प्रश्न के समय पर छिपकली दिखाई दे तो प्रश्न की कार्यसिद्धि संदिग्ध है।
9.	प्रश्नकर्त्ता यदि शुभ वस्तुओं, जैसे दर्पण, भृगपत्रों, पुष्पों, स्वर्ण आदि को स्पर्श करे या एक ज्योतिषी के पास इन वस्तुओं को लेकर जाए।	प्रश्नकर्त्ता यदि अशुभ वस्तुओं, जैसे राख, चाक, तलवार, रस्सी आदि को स्पर्श करे या ज्योतिषी के पास इन वस्तुओं को लेकर अथवा खाली हाथ आए।

बीमारी

उपचार	उपचार नहीं
1. एक जीवित प्राणी, मानव या पशु निकट दिखाई दे।	दाह संस्कार में प्रयुक्त होने वाली वस्तुएं जैसे लाल पुष्प, दही, आग, नए वस्त्र आदि मृत्यु सूचित करते हैं।
2. सामान्यतया छींक आना अशुभ माना जाता है तथापि यह शुभ है यदि यह दवा लेने से बिल्कुल पूर्व घटित हो, उस व्यक्ति के मामले को छोड़कर, जो कफ और शीत से पीड़ित है।	पात्र का गिरना या टूटना, बीमार व्यक्ति की मृत्यु दर्शाता है। सूर्यास्त के समय प्रश्न पूछने पर अचानक आकाश का लाल या बिल्कुल अंधेरा युक्त होना रोगी की मृत्यु दर्शाता है।

विवाह

अनुकूल	प्रतिकूल
1. प्रश्न के दौरान कोई व्यक्ति वस्तुओं का एक जोड़ा लाता दिखाई दे या अचानक दो व्यक्ति आएं।	दो व्यक्ति संयुक्त रूप से आएं, लेकिन विभिन्न दिशाओं में जाएं।
2. प्रश्नकर्ता सिर या छाती को स्पर्श करे या अपने दोनों हाथों को संयुक्त करे, तो विवाह में सफलता मिलती है।	प्रश्नकर्ता अपनी कोहनियों अथवा पैर को स्पर्श करे, तो विवाह में समस्याएं सूचित होती हैं।
3. हत्था सहित दर्पण, श्वेत पुष्प, चांदी की वस्तुएं, दो पक्षी, दो वस्तुएं शीघ्र विवाह बताती है।	लाल पुष्प-मासिक धर्म के कारण देरी। रक्त का दर्शन, मृत शरीर, झगड़े में लगे हुए व्यक्ति, ये सभी समस्याएं व बिलंब सूचित करते हैं।
4. एक पुरुष दो स्त्रियों के साथ आए या एक स्त्री दो पुरुषों के साथ आए, तब पुनर्विवाह होता है।	यदि कोई दरार में उंगली डाले या पशु संभोग करते दिखाई दें या कोई पृथ्वी को खोदे, लकड़ी को चीरता हुआ दिखाई दे, तब चरित्र संदिग्ध है।

बच्चे

शुभ	अशुभ
1. प्रश्न के दौरान यदि आप एक बालक, गर्भवती स्त्री, गोद में	गर्भपात सूचित होता है जब कोई प्रश्न पूछने के तुरन्त बाद थूके, गला, नाक

शुभ	अशुभ
बच्चा, खिलौने, पुस्तकें, कपड़े, आभूषण, नाक, बांह या पैर को स्पर्श करते हुए किसी को देखें।	साफ करे, कानों से मैल निकाले या दूर जाए। प्रश्नकर्ता द्वारा लाई गई वस्तुओं में से पांचवी कटी हुई या नष्ट हो, जैसे पांचवी भृगंपत्र कटी-फटी हो।
2. मेघगर्जन होना या जल के साथ बादलों का संसेचन गर्भाधान सूचित करता है।	प्रश्न के दिन सूर्य के चारों ओर प्रभामण्डल दिखाई दे।
3. लड़का होता है यदि प्रश्नकर्ता अपने दाहिने हाथ से सिर को या	लड़की होती है यदि वह अपने बायें हाथ से अपना चेहरा या कंधा स्पर्श गर्दन को स्पर्श करे। करे।
4. यदि पुरुष सामने दिखाई दे तब लड़का होता है।	यदि स्त्री सामने दिखाई दे तब लड़की होती है।

यात्रा

शुभ	अशुभ
1. यात्रा प्रारम्भ करने से पूर्व सुखद स्वर-ध्वनियां सुनाई दें, जैसे बांसुरी, मृदंग, वैदिक मंत्रों का उच्चारण।	झगड़ों या चीखने की तेज आवाजें, जैसे पशुओं का रोना या चिल्लाना।
2. यदि बच्चे को गोद में लिए एक युवा स्त्री, गाय और बछड़ा, फल, खाद्य-पदार्थ, चावल दिखाई दें।	बिल्ली या तो म्यांऊ करती हुई (अपने मुंह में बिना किसी भोजन के) या यात्रा पर जाने वाले व्यक्ति के रास्ते को काटती बिल्ली, यात्रा के प्रारम्भ करने से बिल्कुल पूर्व छींक आना।
3. विदेश यात्रा के लिए, हवाई जहाज की आवाज, नई उड़ानों के समाचार सुनना, संयोग, जलयान आदि।	दुर्घटनाओं अथवा हवाई दुर्घटना का समाचार सुनना। प्रश्न के बाद व्यक्ति बैठ जाए, तब कोई यात्रा नहीं।

धन

जब कौआ अचानक शोरगुल करे या किसी के सिर पर बैठे, तो यह आर्थिक हानि दर्शाता है जबकि यदि कौआ स्त्री के सिर पर बैठे, जैसा ऊपर है, तो यह उसके पति की वित्तीय कठिनाइयों की भविष्यवाणी करता है।

धन और समृद्धि की प्राप्ति से संबंधित प्रश्न में कुत्तों और गोबर का दिखाई देना, वैभव का विनाश करता है।

मुकद्दमेंबाजी, झगड़ा, विवाद

एक स्थान पर कौओं का एकत्रित होना और अधिकाधिक शोरगुल करना आसन्न विवादों और झगड़ों को सूचित करता है।

विजय	*पराजय*
1. दाहिना पैर आगे निकालना या दाहिना पैर भूमि पर दृढ़ता से रखना।	बायां पैर आगे निकालना या बायां पैर भूमि पर दृढ़ता से रखना।
2. प्रश्न के दौरान, जब अग्नि या चाकू दिखाई दे।	गंदी वस्तुएं या उदास मनोवृत्ति।

राजा और राजतंत्र

शुभ	*अशुभ*
1. चन्द्रमा के दाहिनी ओर उल्का का गतिशील होना आक्रमणकारियों के लिए उत्तम है।	चन्द्रमा के बायीं ओर उल्का का गतिशील होना आक्रमणकारियों के लिए अशुभ है।
2. सूर्य के दाहिनी ओर उल्का का गतिशील होना प्रतिरक्षकों के लिए उत्तम है।	सूर्य के बायीं ओर उल्का का गतिशील होना प्रतिरक्षकों के लिए अशुभ है।

निम्नलिखित घटनाएं राजा के लिए अशुभ हैं:

1. जब कभी बेमौसम फूल खिलें, वृक्षों से रस या दूध प्रवाहित हो। इसी प्रकार, जब पूजित वृक्षों से पुष्पों या फलों का उत्पादन प्रारम्भ हो या पशुओं द्वारा कोई अस्वाभाविक व्यवहार किया जाए, तो यह देश का विनाश और विघटन दर्शाता है।
2. सूर्याभास, जो प्रातःकाल अथवा सायंकाल में सूर्य के बिंब का प्रतिबिंब है, सूर्य के ऊपर दिखाई दे तो राजा व लोगों का परित्याग दर्शाता है।
3. मन्दिरों या देवी-देवताओं की प्रतिमाओं पर उल्काओं का गिरना देश का विनाश सूचित करता है। इसी प्रकार, देवों की प्रतिमाओं का टूटना, नष्ट होना, समाप्त होना विपत्तियां सूचित करता है।

4. वृक्षों की शाखाओं का टूटना युद्ध बताता है। यदि वृक्षों से रोने की आवाजें आएं, तब देश में बीमारी फैलेगी और यदि वृक्षों से हंसने की आवाजें आएं, तब देश का विनाश हो जाएगा।
5. यदि मन्दिर या महल में आग लग जाए, तब शत्रु का आक्रमण होने वाला है।
6. बिना अग्नि के धुंआ या लौ दिखाई दे तो देश को विपत्तियां सूचित करते हैं जबकि झीलों या तालाबों में जल की सतह पर अग्नि का दिखाई देना राजा की मृत्यु है।
7. दिन के दौरान तारों का दिखाई देना और स्वच्छ रात्रि आकाश में न दिखाई देना खतरा और कष्टों को सूचित करता है।
8. सूखा, असमय वर्षा, कुंओं से अस्वाभाविक ध्वनियां आना जैसी अप्राकृतिक घटनाएं देश या प्रश्नकर्त्ता के लिए उत्तम नहीं।
9. संध्याओं में मुर्गों की ध्वनियां महामारियां दर्शाता है।
10. अकाल सूचित होते हैं, जब बृहस्पति और शनि संयुक्त होकर मेष और वृश्चिक राशियों के अंत में या वृष और सिंह के मध्य में संचरण करें। जब किसी अन्य राशि में बृहस्पति और शनि संयुक्त होकर संचरण करें, तब बीमारियों से मृत्यु होती है।
11. जब देश में अप्राकृतिक जन्म हों, तो यह विनाश सूचित करता है।
12. जब तूफान में या शक्तिशाली हवाओं के दौरान वृक्ष उखड़ जाएं, तब राजा अपना राज्य हार जाता है और पराजय सामने देख भाग खड़ा होता है।

वर्षा

यह एक अत्यधिक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है, क्योंकि वैज्ञानिकों द्वारा विकसित मौसम-विज्ञान संबंधी भविष्यवाणी के नमूने भी असफल सिद्ध हुए हैं जबकि वर्षा से संबंधित परम्परागत विश्वास अभी तक काम करते हैं।

1. ग्रीष्म ऋतु के अंत में, आषाढ़ की पूर्णिमा के दिन, यदि हवा उत्तर दिशा की ओर प्रवाहित हो, तब प्रचुर वर्षा होगी।
2. प्रश्नकर्त्ता किसी गीली सतह या तरल को स्पर्श करे, तब तत्काल वर्षा होती है।
3. यदि वर्षा ऋतु में सूर्योदय के समय, सूर्य अपनी दीप्ति और चमक के कारण देखा न जा सके, तब उसी दिन वर्षा होती है।

4. वर्षा का तात्कालिक संकेत है जब वायुमण्डलीय आर्द्रता के कारण नमक गीला हो जाए, मछलियां जल की सतह पर छलांग मारें, मेढ़क टर्र-टर्र करें, बिल्ली भूमि खुरेचे, बच्चे सड़को पर पुलों को बनाएं, चींटियां अपने अंडों को स्थानांतरित करें, सांपों का जोड़ा, पशु आकाश की ओर देखें और पालतू पशु बाहर जाने से घबराएं, तब तुरन्त ही वर्षा होती है।

5. जब चन्द्रमा के चारों ओर प्रभामंडल दिखाई दे, जब यह लाल प्रतीत हो या जब आकाश में दूसरा चन्द्रमा चमकता दिखाई दे, तो वर्षा होती है।

6. यदि रात्रि में दीपकीट दिखाई दें, कीड़े या सरीसृप घास के ऊपर बैठें, आकाश की ओर उन्मुख विसर्पी लताएं और कोंपलें दिखाई दें और पूर्वी दिशा से ठंडी वायु बहे, तो यह तत्काल वर्षा दर्शाता है।

7. सूर्योदय या सूर्यास्त के समय इन्द्रधनुष दिखाई दे, बिजली चमके, सूर्य या चन्द्रमा के चारों ओर प्रभामंडल हो, वर्षा ऋतु में ग्रह अस्त या उदित हों, अप्रकाशीय ग्रहों की चन्द्रमा के साथ युति, जब ईशान-कोण या उत्तर-पूर्व दिशा में दिन के समय बिजली चमके तो ये सभी आकस्मिक प्रचुर वर्षा बताते हैं।

8. सूर्य के उत्तर की ओर दिखाई देने वाला सूर्याभास वर्षा लाता है। यदि यह सूर्य के दक्षिण में हो, तब शक्तिशाली हवाएं और यदि यह सूर्य के दोनों ओर प्रतीत हो, तो यह बाढ़ सूचित करता है।

9. जब जल निःस्वाद लगे, तब वर्षा होती है।

10. वर्षा के एक दिन उपरांत, जब सूर्यास्त से पहले अकस्मात धूप दिखाई दे तब अगले दिन भी लगातार वर्षा होती है।

11. जब मंदगति ग्रह (मंगल, बृहस्पति और शनि) सूर्य से आगे हों और शीघ्र गति ग्रह (बुध, शुक्र) सूर्य के पीछे हों और ऐसे कई ग्रह (मान लो 3 या अधिक) अस्त होने वाले हों, तब प्रचुर वर्षा की आशा की जा सकती है।

12. जब वर्षा ऋतु के दौरान, सायंकाल में गीदड़ों की चिल्लाहट सुनाई दे, तब बिल्कुल वर्षा नहीं होती।

अंग लक्षण

अंग लक्षण के परिणाम को समझने के लिए, विभिन्न अंगों के वर्गीकरण को जानना अत्यावश्यक है।

पुरुष अंग	जांघें, नितंब, वक्षस्थल, अण्डग्रंथियां, पैर, दांत, बांहें, हाथ, गाल, बाल, गला, नाखून, अंगूठा, बगल, कंधा, कान, जोड़।
स्त्री अंग	भौंहे, नाक, नितम्ब, पेट की परतें, कूल्हा, हथेली की रेखाएं, उंगलियां, जिह्वा, गर्दन, एड़ियां, टांगें।
तटस्थ अंग	चेहरा, पीठ, हंसुली, कोहनियां, दोनो ओर का शरीर, हृदय, आंखें, पुरुष जननांग, मेरुदंड का अंत, सिर, मस्तक।

प्रश्न के दौरान प्रश्नकर्त्ता का पुरुष अंग को छूना तुरन्त सफलता प्रदान करता है जबकि स्त्री अंग को छूना प्रयासों और बाधाओं के साथ सफलता देता है। यदि वह तटस्थ समूह के शरीरांग को स्पर्श करता है, तब वहां कार्य की सफलता नहीं है। विभिन्न अंगों का स्पर्श निम्नलिखित विशिष्ट संकेतों को भी सूचित करता है।

शरीरांग का स्पर्श	*संकेत*
पैर का अंगूठा	नेत्र की बीमारी
उंगली	पुत्री दु:खी होगी
सिर	शासक या राजा की ओर से विपत्तियां
छाती	प्रिय व्यक्तियों से अलगाव
वस्त्रों को उतारना	विपत्ति
वस्त्रों से पैर बांधना	हृदयस्थ इच्छा की पूर्ति
पैर के अंगूठे से भूमि कुरेदना	मित्रों का चिंतन
हाथ से भूमि कुरेदना	नौकरानी के बारे में सोचना
ताड़पत्तों या वृक्षों की छाल को देखना	वस्त्रों के बारे में सोचना
भूसी या भस्म पर खड़ा होना	बीमारी
रस्सी और जाल पकड़े हुए	कारावास
हाथ में फल लिए हुए	वैभव की प्राप्ति
जलपूर्ण पात्र को देखना	समृद्धि
गोबर देखना	अशुभ
थूक, कफ, मूत्र प्रवाह, हाथ से कोई वस्तु छूटना, गांठ वाले अंग	चोरी हुई वस्तु की पुनः प्राप्ति नहीं होगी

शरीरांग का स्पर्श	*संकेत*
यदि स्पर्श करे	*चोर की पहचान*
आंतरिक अंग	चोर परिवार से संबंधित है
बाह्य अंग	चोर बाहरी व्यक्ति है
पैर की बड़ी उंगली	नौकर
पैर की कोई दूसरी उंगली	नौकरानी
टांग	श्रमिक या संदेशवाहक
नाभि	बहन
हृदय	पत्नी
अंगूठा	पुत्र
हाथ की उंगलियां	पुत्री
उदर	माता
सिर	पिता
दाहिनी बांह	भाई
बायीं बांह	भाई की पत्नी

अंग लक्षण में, यदि प्रश्नकर्त्ता नीचे दी गई दिशाओं से शरीर के किसी भाग को स्पर्श करे, तब निम्नलिखित परिणाम प्रत्याशित होते हैं।

प्रश्न की दिशा	*स्पर्शित अंग*	*परिणाम*
पूर्व	सिर	धन की प्राप्ति
	मुंह	गायों (समृद्धि की प्राप्ति)
	गर्दन	वाहनों की प्राप्ति
	छाती	आभूषणों की प्राप्ति
दक्षिण	सिर	परिचितों का आगमन
	मुंह	शत्रुओं का विनाश
	गर्दन	धन की प्राप्ति
	छाती	उत्तम संतान की प्राप्ति
पश्चिम	सिर	ज्ञान की प्राप्ति
	मुंह	मित्रों की प्राप्ति
	गर्दन	गायों की प्राप्ति
	छाती	वाहनों की प्राप्ति
उत्तर	सिर	आभूषणों की प्राप्ति
	मुंह	मित्रों की प्राप्ति
	गर्दन	उत्तम संतान की प्राप्ति
	छाती	हाथियों की प्राप्ति

प्रश्न की दिशा	*स्पर्शित अंग*	*परिणाम*
दक्षिण-पूर्व	नाक	जीवन के लिए खतरा
	आंखें/कान	विपत्तियों का भय
	बांहें	अपना वचन न निभाना
	पैर/टांगें	परिवार का विनाश
दक्षिण-पश्चिम	नाक	धन की हानि
	आंखें/कान	बीमारी
	बांहें	बच्चों की हानि
	पैर/टांगें	खतरा
उत्तर-पश्चिम	नाक	शस्त्रों से भय
	आंखें/कान	पत्नी की बीमारी
	बांहें	विवाद
	पैर/टांगें	गाय को मारना
उत्तर-पूर्व	नाक	दांतों की पीड़ा/हानि
	आंखें/कान	मृत्यु
	बांहें	बच्चों को खतरा
	पैर/टांगें	रिश्तेदारों की बीमारी
दक्षिण-पूर्व	गर्दन	तटस्थ प्रभाव या कोई प्रभाव नहीं
दक्षिण-पश्चिम	छाती	तटस्थ प्रभाव या कोई प्रभाव नहीं
उत्तर-पश्चिम	सिर	तटस्थ प्रभाव या कोई प्रभाव नहीं
उत्तर-पूर्व	मुंह	तटस्थ प्रभाव या कोई प्रभाव नहीं

प्रश्न से अज्ञात कुंडलियों का निर्माण

महर्षि पाराशर के महान कार्य "बृहत पाराशर होराशास्त्र" में प्रश्न पर अत्यंत सीमित विवेचन है। मनीषी पाराशर अपने शिष्य मैत्रेय को उत्तर देते हुए उन्हें उन व्यक्तियों की समस्या के समाधान की विधि बताते हैं जिनके पास अपने जन्म संबंधी विवरण नहीं हैं। यह प्रविधि नष्ट जातक कहलाती है। प्रश्न कुंडली से वर्ष, आयन, ऋतु, माह, पक्ष, तिथि, नक्षत्र, लग्न, चन्द्र राशि आदि प्राप्त किए जा सकते हैं। संक्षेप में प्रश्न से जन्म कुंडली बनाने की विधि का सार प्रस्तुत है।

उस व्यक्ति की प्रश्न कुंडली बनाओ जो अपने जन्म का विवरण एवं जन्म कुंडली जानना चाहता है।

1. *जन्म वर्ष :* प्रश्न कुंडली का द्वादशांश बनाओ। द्वादशांश कुंडली में चन्द्रमा द्वारा गृहीत राशि जन्म कुंडली में बृहस्पति की स्थिति को बताएगी और इससे जिस वर्ष बृहस्पति उस राशि में संचारित था, उसे प्राप्त किया जा सकता है। यद्यपि बृहस्पति स्थूलतः एक राशि में एक वर्ष तक संचरण करता है। अतः व्यक्ति की स्थूल आयु को निकटतम करने के लिए हम 12 वर्षों की बड़ी अवधि में जन्म वर्ष पाते है।

2. *अयन :* यदि प्रश्न लग्न प्रथम होरा में है, तब जन्म उत्तरायण में और यदि लग्न द्वितीय होरा में है, तब जन्म दक्षिणायन में समझिए।

3. *ऋतु :* विभिन्न ग्रह निम्नलिखित ऋतुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं :

ग्रह	*ग्रहों द्वारा संकेतित ऋतु*	*मौसम*
सूर्य	ग्रीष्म ऋतु	गर्मी
चन्द्रमा	वर्षा ऋतु	वर्षा
मंगल	ग्रीष्म ऋतु	गर्मी
बुध	शरद ऋतु	पतझड़
बृहस्पति	हेमंत ऋतु	सर्दी
शुक्र	वसन्त ऋतु	वसन्त
शनि	शिशिर ऋतु	सर्दी

प्रश्न लग्न का द्रेष्काणाधिपति हमें ऋतु प्रदान करता है जिसमें व्यक्ति पैदा हुआ था। यह संभव हो सकता है कि अयन और ऋतु के बीच अंतर्विरोध हो। उस मामले में, मंगल के स्थान पर बुध, चन्द्रमा के स्थान पर शुक्र और बृहस्पति के स्थान पर शनि को लेते हैं। उदारहणार्थ, प्रश्न लग्न 16°20' पर मिथुन है। अतः द्रेष्काणाधिपति शुक्र वसन्त ऋतु सूचित करेगा, तथापि द्वितीय होरा में लग्न दक्षिणायन सूचित करता है। अतः एक अंतर्विरोध है क्योंकि सूर्य की दक्षिणायन दिशा के दौरान वसन्त ऋतु संभव नहीं है और विधि के अनुसार शुक्र किसी अन्य ग्रह से परिवर्तित नहीं किया जा सकता।

शास्त्रीय ग्रंथों में समाधान दिया गया है, जैसा कि ऊपर है। ऐसे मामलों में भी समस्या का समाधान नहीं होता, क्योंकि इस संबंध में श्लोक पूर्ण प्रकाश नहीं डालता। मैं अनुभव करता हूं कि ऐसे मामलों में श्लोकों की व्याख्या इस प्रकार करनी चाहिए कि मौसम और आयन के बीच अंतर्विरोधों में मंगल के स्थान पर बुध, चन्द्रमा के स्थान पर शुक्र और

बृहस्पति के स्थान पर शनि और तदनुरूप ले सकें। सात ग्रहों में से, द्रेष्काणाधिपति के रूप में, सूर्य अन्य किसी ग्रह के लिए बदला नहीं जाता। ऊपर दिए गए उदाहरण में चूंकि अंतर्विरोध है अतः शुक्र के स्थान पर चन्द्रमा के लें तो वर्षा ऋतु, और दक्षिणायन में जन्म हुआ। कर्क या सिंह में सूर्य का संचरण हमें वर्षा ऋतु प्रदान करता है।

4. *माह :* ऋतु को निश्चित करने के बाद, जैसा कि ऊपर है, हम माह के निर्धारण पर आते है। हमें ज्ञात है कि छह ऋतुएं या मौसम हैं जो विभिन्न राशियों में सूर्य के संचरण से संबंधित हैं। ये निम्नलिखित प्रकार से हिन्दू महीनों से संबंधित हो सकते हैं।

सूर्य का संचरण	*ऋतु*	*हिन्दू माह*
मेष	वसन्त	चैत्र या चैत
वृष	ग्रीष्म	वैशाख या बैशाख
मिथुन	ग्रीष्म	ज्येष्ठ या जेठ
कर्क	वर्षा	आषाढ़
सिंह	वर्षा	श्रवण या सावन
कन्या	शरद	भाद्रपद या भादों
तुला	शरद	आश्विन या क्वार
वृश्चिक	हेमंत	कार्तिक या कत्तक
धनु	हेमंत	मार्गशीर्ष या अगहन
मकर	शिशिर	पौष या पूस
कुम्भ	शिशिर	माघ या माघ
मीन	वसन्त	फाल्गुन या फागुन

सूर्य का ऊपरलिखित संचरण निरायण राशियों में है। अब पुनः प्रश्न कुंडली के लग्न को देखें। हम देख चुके हैं किस द्रेष्काण में यह पड़ता है। द्रेष्काण का पहला भाग (न कि प्रथम द्रेष्काण) ऋतु के प्रथम माह का प्रतिनिधित्व करता है और द्रेष्काण का दूसरा भाग ऋतु के दूसरे माह का प्रतिनिधित्व करता है। हमारे उदाहरण में, सिंह में सूर्य का संचरण श्रवण मास में पड़ता है जो 15 अगस्त से प्रारम्भ होना कहा जा सकता है।

5. जन्म तिथि : प्रश्न लग्न का द्रेष्काण देखें। सम्पूर्ण द्रेष्काण 30 दिनों का प्रतिनिधित्व करता है और हमें द्रेष्काण के प्रत्येक अंश के लिए 3

दिन या 20 मिनट के लिए एक दिन प्रदान करता है। द्रेष्काण के व्यतीत अंश व्यतीत तिथियों को सूचित करता है। इस प्रकार, तिथि एवं सूर्य के अंश इस विधि से ज्ञात किए जा सकते हैं। उदाहरणार्थ, प्रश्न लग्न का भोगांश द्वितीय द्रेष्काण में 16°20' पर है, जिसमें 6°20' बीत चुके हैं। अब तीन दिनों के लिए एक अंश और एक दिन के लिए 20' लेते है, तो हम सिंह राशि में सूर्य के प्रवेश करने से बीते हुए दिनों की संख्या 3x6+1=19 दिन प्राप्त करते हैं। यदि 16 अगस्त को सिंह राशि में सूर्य का संचरण लें और 19 दिन बीत चुके हैं। तब जन्म तिथि 3 सितम्बर होगी और सूर्य अनुमानतः 19 अंशों में निरायण सिंह में होगा।

6. *जन्म समय :* सूर्य पूर्व में उदित होता है और सूर्योदय समय पर आधारित हिन्दु दिन प्रारम्भ होता है। इष्टकाल या सूर्योदय इष्टम से जन्म समय तक व्यतीत अवधि है। सूर्य प्रतिदिन 1° की दर से गतिशील है और एक माह में सूर्य 30° चलेगा। इष्टकाल की गणना के लिए हमें 24 घंटों की समयावधि से सूर्य की गतिविधि के 30° को संबंधित करना पड़ता है।

अतः यदि	30°	=	24 घंटे
	1°	=	48 मिनट

इष्टकाल पर आने के लिए, सूर्य की समीपवर्ती अंशों को उपरोक्त गणना के लिए 48 मिनट के समय से गुणा करें। हमारे उदाहरण में, हमें सूर्य के अंश 19° प्राप्त हुए, इसे 48 मिनट से गुणा करने पर हम 15 घंटे 12 मिनट प्राप्त करते हैं। अब इष्टकाल के लिए जन्म तिथि के सूर्योदय में समय जोड़े। तो हमें जन्म समय प्राप्त होगा। 3 सितम्बर को दिल्ली में सूर्योदय प्रातः 6:05 मिनट पर है। 15 घंटे 12 मिनट के इष्टकाल को जोड़ने पर हम जन्म-समय के रूप में 21:17 या रात्रि 9:17 मिनट प्राप्त करते हैं। इस जन्म समय, 3 सितम्बर, रात्रि 9:17 के लिए उपरोक्त अनुमानित जन्म वर्ष की जन्म कुंडली बनाइए जो भविष्यवाणियों के लिए प्रयोग की जा सकेगी।

पंचाग और मुहूर्त्त पर आधारित अशुभ समय

जिस समय प्रश्न पूछा जाए उस समय प्रश्न का प्रभाव शुभ या अशुभ क्षणों से अत्यधिक प्रभावित होता है, मुहूर्त्त का महत्त्व हमारे पूर्वजों को ज्ञात था और ईस्वी सन् 14वीं और 15वीं शताब्दी तक इसे विशिष्ट महत्ता प्राप्त हो

गई। हाथ में लिए गए किसी कार्य की चरम सफलता के लिए एक उपयुक्त शुभ मुहूर्त्त की गणना की जाती है। इसी प्रकार, जब किसी भी अशुभ समय पर प्रश्न पूछा जाए तो परिणाम अनुकूल नहीं होते। इस पहलू से, प्रश्न के लिए अशुभ समय को निम्नलिखित उपशीर्षकों में स्थूलतः श्रेणीबद्ध किया जा सकता है।

तिथि

पंच समूह में तिथियों की प्रकृति और नाम हैं नंदा, भद्रा, जया, रिक्ता और पूर्ण। शुक्ल और कृष्ण, दोनों पक्षों की अशुभ तिथियां 4, 9 और 14 हैं, क्योंकि ये रिक्त तिथियां कही जाती हैं। दोनों पक्षों की अष्टमी (8) और त्रयोदशी (13) प्रश्न के लिए अशुभ मानी जाती है। इसी प्रकार, क्षय और वृद्धि तिथियां भी प्रश्न के लिए उत्तम नहीं मानी जातीं।

i) *दग्ध तिथि :* दग्ध का अर्थ जलना है। यद्यपि यह शाब्दिक प्रभाव नहीं रखता तथापि ये प्रश्न के लिए अशुभ मानी जाती है। ये विभिन्न राशियों में विभिन्न तिथियों के साथ सूर्य की स्थिति की युति के संबंध पर आधारित हैं।

राशियों में सूर्य	*दग्ध तिथि*
9, 12 (धनु और मीन)	2 (द्वितीया)
11, 2 (कुम्भ और वृष)	4 (चतुर्थी)
1, 4 (मेष और कर्क)	6 (षष्ठी)
3, 6 (मिथुन और कन्या)	8 (अष्टमी)
5, 8 (सिंह और वृश्चिक)	10 (दशमी)
7, 10 (तुला और मकर)	12 (द्वादशी)

सारणी पर सूक्ष्म दृष्टि एक व्यक्ति को इसे सरलता से याद करने के योग्य बना देती है। चतुर्दशी के अतिरिक्त सम तिथियां, दग्ध होती हैं। सम तिथि में से 2 घटाएं। उस राशि में और उससे तीन राशि पूर्व में सूर्य उन तिथियों को दग्ध बनाता है। दूसरी ओर, प्रश्न के समय पर सूर्य द्वारा संचरित राशि को देखें। यदि यह एक विषम राशि है तब 5 जोड़ें और यदि यह एक सम राशि है, तब 2 जोड़ें। यदि परिणामी संख्या 12 से अधिक है, तब 12 राशियां निकाल दें। परिणामी तिथि एक दग्ध तिथि होगी।

ii) *तिथियों की विष घटियां* : एक तिथि के प्रारम्भ से बीती हुई निम्नलिखित घटियों के बाद, अगली 4 घटियां तिथि की विष घटियां कही जाती हैं।

दोनों पक्षों में तिथि	के बाद अगली 4 घटियां	के बाद अगला 1 घंटा 36 मिनट	दोनों पक्षों में तिथि	के बाद अगली 4 घटियां	के बाद अगला 1 घंटा 36 मिनट
1	15	6:00	9	7	2:48
2	5	2:00	10	10	4:00
3	8	3:12	11	3	1:12
4	7	2:48	12	10	4:00
5	7	2:48	13	12	4:48
6	11	4:24	14	7	2:48
7	4	1:36	15	8	3:12
8	8	3:12			

नक्षत्र

प्रश्न के लिए भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, पूर्व-फाल्गुनी, विशाखा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा और पूर्वभाद्रपद अशुभ नक्षत्र हैं। ये तीक्ष्ण, उग्र और मिश्र नक्षत्र हैं।

i) नक्षत्र गंडांत : 27 नक्षत्रों को तीन त्रिकों अश्विनी से आश्लेषा, मघा से ज्येष्ठा, और मूल से रेवती में बांटा गया है और प्रत्येक भाग 4 पदों को रखता है। अश्विनी, मघा और मूल के प्रथम पद और आश्लेषा, ज्येष्ठा तथा रेवती के अंतिम पद में पड़ने वाला नक्षत्र गंडांत अशुभ माना जाता है।

ii) नक्षत्रों की विष-घटियां : सभी 27 नक्षत्रों में प्रत्येक 4 घटियों की कुछ अवधियां होती हैं, जो अशुभ होती हैं। एक नक्षत्र के प्रारम्भ होने से बीत चुकी निम्नलिखित घटियों के बाद, अगली 4 विष घटियां होती हैं। इसी प्रकार, एक नक्षत्र के प्रारम्भ से बीत चुकी निम्नलिखित घंटे और मिनट के बाद अगला 1 घंटा 36 मिनट विष घटियां होती हैं। यह अंशों में भोगांश के संबंध में भी अभिव्यक्त की गई हैं।

नक्षत्र	के बाद अगली 4 घटियां	के बाद अगला 1 घंटा 36 मिनट	चन्द्रमा के भोगांश में अभिव्यक्त	° ' "		° ' "
अश्विनी	50	20 : 00	मेष	11 06 40	से	12 00 00
भरणी	24	9 : 36	मेष	18 40 00	से	19 33 20
कृत्तिका	30	12 : 00	वृष	3 20 00	से	4 13 20

नक्षत्र	4 घटियों से	1 घंटा 36 मिनट से	चन्द्रमा के भोगांश में अभिव्यक्त							
				°	'	"		°	'	"
रोहिणी	4	1 : 36	वृष	18	53	20	से	19	46	40
मृगशिरा	14	5 : 36	वृष	26	26	40	से	27	20	00
आर्द्रा	11	4 : 24	मिथुन	11	20	00	से	12	13	20
पुनर्वसु	30	12 : 00	मिथुन	26	40	00	से	27	33	20
पुष्य	20	8 : 00	कर्क	7	46	40	से	8	40	00
अश्लेषा	32	12 : 48	कर्क	23	46	40	से	24	40	00
मघा	30	12 : 00	सिंह	6	40	00	से	7	33	20
पूर्व-फाल्गुनी	20	8 : 00	सिंह	17	46	40	से	18	40	00
उत्तर-फाल्गुनी	18	7 : 12	कन्या	0	40	00	से	1	33	20
हस्त	22	8 : 48	कन्या	14	40	00	से	15	33	20
चित्रा	20	8 : 00	कन्या	27	46	40	से	28	40	00
स्वाती	14	5 : 36	तुला	9	46	40	से	10	40	00
विशाखा	14	5 : 36	तुला	23	06	40	से	24	00	00
अनुराधा	10	4 : 00	वृश्चिक	5	33	20	से	6	26	40
ज्येष्ठा	14	5 : 36	वृश्चिक	19	46	40	से	20	40	00
मूल	20	8 : 00	धनु	12	26	40	से	13	20	00
पूर्वाषाढ़ा	24	9 : 36	धनु	18	40	00	से	19	33	20
उत्तराषाढ़ा	20	8 : 00	मकर	1	06	40	से	2	00	00
श्रवण	10	4 : 00	मकर	12	13	20	से	13	06	40
धनिष्ठा	10	4 : 00	मकर	25	33	20	से	26	26	40
शतभिषा	18	7 : 12	कुम्भ	10	40	00	से	11	33	20
पूर्वभाद्रपद	16	6 : 24	कुम्भ	23	33	40	से	24	26	40
उत्तरभाद्रपद	24	9 : 36	मीन	8	40	00	से	9	33	20
रेवती	30	12 : 00	मीन	23	20	00	से	24	13	20

iii) ***नक्षत्रों की उष्ण घटियां :*** उष्ण का अर्थ गर्म, हिंसक या उग्र होता है। यह तथ्य कि ये प्रश्न में भी अशुभ हैं, प्रश्न कुंडली में दूसरे संकेतों के संबंधों से विचारणीय हैं। यदि लग्न, लग्नेश और कार्येश पर पाप ग्रहों और नक्षत्रों, जो तीक्ष्ण, उग्र या मिश्र हैं, का प्रभाव है, तब उष्ण घटियों में पूछा गया कोई भी प्रश्न परिणाम की हिंसक प्रकृति सूचित करता है। नक्षत्रों की उष्ण घटियां निम्नलिखित हैं।

नक्षत्र	घटियों में नक्षत्र के प्रारम्भ से	घंटा, मिनट में नक्षत्र के प्रारम्भ से
अश्विनी, रोहिणी, पुनर्वसु, मघा, हस्त	7.5 से 15	3 : 00 से 6 : 00
मृगशिरा, पुष्य, पूर्व-फाल्गुनी, चित्रा	55 से 60	22 : 00 से 24 : 00
कृत्तिका, आर्द्रा, अश्लेषा, उत्तर-फाल्गुनी, स्वाती	21 से 30	8 : 24 से 12 : 00
विशाखा, मूल, श्रवण, पूर्वभाद्रपद	1 से 8	0 : 24 से 3 : 12
अनुराधा, पूर्वाषाढ़ा धनिष्ठा, उत्तर-भाद्रपद	52 से 60	20 : 48 से 24 : 00
ज्येष्ठा, उत्तराषाढ़ा, शतभिषा, रेवती	20 से 30	8 : 00 से 12 : 00

वार

यद्यपि विशेष रूप से प्रश्न में नहीं विचारा जाता है तथापि पाप अधिपति से संयुक्त वारों को शुभ कार्यों के लिए प्रतिकूल और उग्र या हिंसक कार्यों के लिए अनुकूल माना जाता है। विभिन्न प्रकार के प्रश्नों की तरह विविध कार्यों के लिए अनुकूल वार निम्नलिखित हैं।

दिन	अनुकूल कार्य
रविवार	स्थिर कार्य
सोमवार	चर कार्य
मंगलवार	उग्र कार्य
बुधवार	सम कार्य
वृहस्पतिवार	क्षिप्र कार्य
शुक्रवार	मृदु कार्य
शनिवार	तीक्ष्ण कार्य

कुछ शुभ और अशुभ योग, वार या दिन और नक्षत्र तथा वार और तिथि से निर्मित होते हैं। दग्ध का अर्थ जलना है तथा मृत्यु का अर्थ मौत है, लेकिन उनका कोई शाब्दिक अर्थ नहीं लेते तथापि वे प्रश्न के लिए अशुभ हैं।

वार और तिथि से दग्ध और मृत्यु योग

वार	*दग्ध योग* *दोनों पक्षों में तिथि*	*मृत्यु योग* *दोनों पक्षों में तिथि*	
रविवार	द्वादशी	नंदा	(1, 6, 11)
सोमवार	एकादशी	भद्रा	(2, 7, 12)
मंगलवार	पंचमी	नंदा	(1, 6, 11)
बुधवार	द्वितीया	जया	(3, 8, 13)
बृहस्पतिवार	षष्ठी	रिक्ता	(4, 9, 14)
शुक्रवार	अष्टमी	भद्रा	(2, 7, 12)
शनिवार	नवमी	पूर्णा	(5, 10, 15)

वार और नक्षत्र से दग्ध और मृत्यु योग

वार	*दग्ध योग* *नक्षत्र*	*मृत्यु योग* *नक्षत्र*
रविवार	भरणी	मघा
सोमवार	चित्रा	विशाखा
मंगलवार	उत्तराषाढ़ा	आर्द्रा
बुधवार	धनिष्ठा	मूल
बृहस्पतिवार	उत्तर-फाल्गुनी	शतभिषा
शुक्रवार	ज्येष्ठा	रोहिणी
शनिवार	रेवती	पूर्वाषाढ़ा

सिद्धि योग, अमृत योग या सर्वार्थ सिद्धि योग आदि शुभ योगों में पूछे गए प्रश्न, प्रश्न की इच्छित पूर्ति के लिए अनुकूल हैं। कुछ शुभ योगों के संयोजन नीचे दिए गए हैं।

वार	*सिद्धि योग* *तिथि*	*अमृत योग* *नक्षत्र*	*सर्वार्थ सिद्धि योग* *नक्षत्र*
रविवार	—	हस्त	पुष्य, अश्लेषा, तीनों उत्तरा, हस्त, मूल
सोमवार	—	मृगशिरा	रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा, श्रवण
मंगलवार	3,8,13	अश्विनी	कृत्तिका, अश्लेषा, उत्तर भाद्रपद

वार	सिद्धि योग तिथि	अमृत योग नक्षत्र	सर्वार्थ सिद्धि योग नक्षत्र
बुधवार	2, 7, 12	अनुराधा	कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, हस्त, अनुराधा
बृहस्पतिवार	5, 10, 15,	पुष्य	अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य अनुराधा, रेवती
शुक्रवार	1, 6, 11	रेवती	अश्विनी, पुनर्वसु, अनुराधा, श्रवण, रेवती
शनिवार	4, 9, 14	रोहिणी	रोहिणी, स्वाती, श्रवण

वार की विष घटियां : सप्ताह के विभिन्न दिनों में निम्नलिखित घटियों के गमन के बाद अगली 4 घटियां वार की विष घटियां हैं तथा इसलिए प्रश्न में अशुभ हैं। इसी प्रकार निम्नलिखित घंटों/मिनटों के गमन के बाद प्रत्येक वार में अगले 1 घंटा 36 मिनट अशुभ हैं।

वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
घटियां	20	2	12	10	7	5	24
घंटा/मिनट	8 : 00	0 : 48	4 : 48	4 : 00	2 : 48	2 : 00	9 : 36

योग

27 योगों में से निम्नलिखित, अपने नामानुरूप अशुभ हैं। ये हैं- विष्कुंभ, अतिगंड, शूल, गंड, व्याघात, वज्र, व्यतिपात, परिघ तथा वैधृति। इनमें से व्यतिपात और वैधृति सभी उत्तम कार्यों के लिए विशेषतः अशुभ हैं। इन योगों के दौरान उभरे प्रश्न प्रतिकूल परिणाम देते हैं।

करण

11 करणों में से 4 स्थिर हैं। ये शकुनि, चतुष्पाद, नाग और किंतुघ्न हैं और प्रश्न में अशुभ माने जाते हैं। शेष 7 करण चर है और इनमें से विष्टि करण अत्यंत अशुभ है। करण तिथि का आधा भाग है। हम विष्टि करण को प्रत्यक्षतः तिथियों से संबद्ध कर सकते हैं। अतः 8, 15, 22, 29वीं तिथि का प्रथम भाग और 4, 11, 18, 25वीं तिथि का दूसरा भाग विष्टिकरण है, जिसे भद्रा चल रही है, कहा जाता है। भद्रा के दौरान पूछा गया प्रश्न असफलता की ओर ले जाता है तथापि झगड़ों, विवादों, चोरियों से

संबंधित प्रश्नों में, जिनमें प्रश्नकर्त्ता प्रवेश करना चाहता है, उनमें भद्रा अनुकूल परिणाम देती है।

संधि

संधि काल संगम बिन्दु हैं और प्रश्नों में निम्नलिखित संधि की अवधियां अशुभ मानी जाती हैं।

i) तिथि संधि : प्रत्येक तिथि की 24 मिनट के समकक्ष प्रारम्भिक और अंतिम घटी।

ii) नक्षत्र संधि : प्रत्येक नक्षत्र की 24 मिनट के समकक्ष प्रारम्भिक और अंतिम घटी।

iii) राशि संधि : प्रत्येक उदित राशि या लग्न की 2 मिनट के समकक्ष प्रारम्भिक और अंतिम 5 विघटियां।

iv) नवांश संधि : प्रत्येक नवांश के 24 सैकेण्डों के समकक्ष प्रारम्भिक और अंतिम 1 विघटी।

v) सूर्योदय और सूर्यास्त संधि : स्थानीय सूर्योदय और सूर्यास्त का संधिकाल।

vi) दिन संधि : दिन का संधिकाल, जैसे मध्य रात्रि।

ग्रहण

चन्द्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण के दोनों ओर तीन दिनों को प्रश्न के परिणाम के लिए एवं कार्यों के लिए अशुभ माना जाता है। पूर्ण ग्रहण का नक्षत्र छह माह की अवधि के लिए और आंशिक ग्रहण का नक्षत्र तीन माह की अवधि के लिए अशुभ हो जाता है। यह उस नक्षत्र के समय उभरे प्रश्नों में तदनुसार देखना चाहिए।

एकार्गला

यह एक अशुभ योग है और प्रश्न समय पर सूर्य के भोगांश से परिकलित किया जाता है। 360° में से सूर्य के भोगांश को घटाएं और शेष को 13°20' से भाग दें। नक्षत्र को संकेतित करने के लिए भागफल में एक जोड़ें। यह नक्षत्र और इससे दूसरा, सातवां, दसवां, ग्यारहवां, चौदहवां, सोलहवां, अठारहवां और बीसवां नक्षत्र एकार्गला कहलाता है और प्रश्न के लिए अशुभ है। उपरोक्त विवेचित गणना को स्पष्ट करने के लिए एक उदाहरण लेते हैं।

माना, सूर्य का भोगांश है = 213°12'

360°-213°12' = 146°48' ÷13°20' = 11.01

अतः यह नक्षत्र 12वां या उत्तराफाल्गुनी है। उत्तराफाल्गुनी से गिनने पर 2, 7, 10, 11, 14, 16, 18 और 20वां नक्षत्र क्रमशः हस्त, ज्येष्ठ, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, पूर्वभाद्रपद, रेवती, भरणी और रोहिणी हैं। ये सभी एकार्गला नक्षत्र हैं और इसीलिए प्रश्न के लिए अशुभ हैं।

कुछ व्यक्ति एकार्गला को तब उपस्थित मानते हैं, जब 27 में से कोई 9 अशुभ योग उपलब्ध हों और सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक अन्तर गिनने पर एक विषम संख्या प्राप्त होती है।

संक्रांति

एक राशि में सूर्य का प्रवेश संक्रांति कहलाता है। सामान्यतः मकर संक्रांति अत्यंत शुभ मानी जाती है जब सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता हैं, क्योंकि यहां से यह उत्तरायण होता है। ये बारह संक्रांतियां प्रायश्चित और पूजाओं का समय है। तथापि सूर्य के प्रवेश के समय से दोनों ओर 16 घटियां या 6 घंटे 20 मिनट का समय प्रश्न के लिए अशुभ माना जाता है।

तारा विचार

जन्म नक्षत्र के प्रारम्भ करने पर नौ नक्षत्र-जन्म, संपत, विपत, क्षेम, प्रत्यरि, साधक, वध, मैत्र और अतिमैत्र तारा कहे जाते हैं। इसे तारा-विचार के रूप में जाना जाता है। जन्म नक्षत्र से तीसरा, 5वां और 7वां नक्षत्र विपत, प्रत्यरि और वध हैं और प्रश्न के लिए अशुभ माने जाते हैं। ये प्रत्येक नौ नक्षत्रों के दूसरे और तीसरे चक्र में भी देखे जाते हैं तथापि उनका अशुभ प्रभाव क्रमानुसार कम होता जाता है। अब हम एक उदाहरण लेते हैं। ज्येष्ठ नक्षत्र में पैदा हुए एक व्यक्ति के लिए ज्येष्ठ नक्षत्र से तीसरा, 5वां और 7वां नक्षत्र पूर्वाषाढ़ा, श्रवण और शतभिषा होगा। ये विपत, प्रत्यरि और वध ताराएं हैं। दूसरे चक्र में ये भरणी, रोहिणी और आर्द्रा और तीसरे चक्र में ये पूर्व-फाल्गुनी हस्त और स्वाती होंगे।

चन्द्रमा को सम्मिलित करने वाली विधियां

प्रश्न के समय के साथ जन्म समय अथवा मुहूर्त्त पर भी चन्द्रमा का स्थापन सूचना का भंडार प्रकट करता है। चन्द्रमा की तीन अवस्थाएं वर्णित की गई हैं। ये निम्नलिखित हैं।

1. चन्द्र क्रिया - संख्या में 60
2. चन्द्र वेला - संख्या में 36
3. चन्द्र अवस्था - संख्या में 12

गणना की विधि

प्रत्येक नक्षत्र का विस्तार 13°20' का है। 13°20' को क्रमशः 13'20", 22' 13·3" और 1°6'40" के समान 60, 36 और 12 भागों में विभाजित करें। प्रश्न कुंडली में चन्द्रमा के भोगांश पर आधारित उस भाग को ढूंढे, जिसमें से 60, 36 या 12वें भाग में चन्द्रमा स्थित है। यह क्रमशः हमें चन्द्र क्रिया, चन्द्र वेला और चन्द्र अवस्था की संख्या प्रदान करता है। प्रश्न कुंडली में जिस नक्षत्र में चन्द्रमा स्थित है, उससे नक्षत्र के बीत चुके भाग की गणना करें। उदाहरणस्वरूप, चन्द्रमा को ज्येष्ठ नक्षत्र में 7ˢ20°13'34" पर लेते है। इस नक्षत्र का विस्तार 7ˢ16°40' से 7ˢ30°00' तक है। नक्षत्र का बीत चुका भाग 3°33'34" है। नक्षत्र के प्रारम्भ से चन्द्र क्रिया, चन्द्र वेला और चन्द्र अवस्था से संबद्ध बीते हुए भाग के संचित विस्तार की गणना करो। सुविधा की दृष्टि

चन्द्र क्रिया

No.	°	'	"	No.	°	'	"	No	°	'	"	No	°	'	"
1.	0	13	20	16.	3	33	20	31.	6	53	20	46.	10	13	20
2.	0	26	40	17.	3	46	40	32.	7	06	40	47.	10	26	40
3.	0	40	00	18.	4	00	00	33.	7	20	00	48.	10	40	00
4.	0	53	20	19.	4	13	20	34.	7	33	20	49.	10	53	20
5.	1	06	40	20.	4	26	40	35.	7	46	40	50.	11	06	40
6.	1	20	00	21.	4	40	00	36.	8	00	00	51.	11	20	00
7.	1	33	20	22.	4	53	20	37.	8	13	20	52.	11	33	20
8.	1	46	40	23.	5	06	40	38.	8	26	40	53.	11	46	40
9.	2	00	00	24.	5	20	00	39.	8	40	00	54.	12	00	00
10.	2	13	20	25.	5	33	20	40.	8	53	20	55.	12	13	20
11.	2	26	40	26.	5	46	40	41.	9	06	40	56.	12	26	40
12.	2	40	00	27.	6	00	00	42.	9	20	00	57.	12	40	00
13.	2	53	20	28.	6	13	20	43.	9	33	20	58.	12	53	20
14.	3	06	40	29.	6	26	40	44.	9	46	40	59.	13	06	40
15.	3	20	00	30.	6	40	00	45.	10	00	00	60.	13	20	00

चन्द्रवेला

No.	°	'	"	No.	°	'	"	No.	°	'	"
1.	0	22	13.3	13.	4	48	53.3	25.	9	15	33.3
2.	0	44	26.6	14.	5	11	06.6	26.	9	37	46.6
3.	1	06	40.0	15.	5	33	20.0	27.	10	00	00.0
4.	1	28	53.3	16.	5	55	33.3	28.	10	22	13.3
5.	1	57	06.6	17.	6	17	46.6	29.	10	44	26.6
6.	2	13	20.0	18.	6	40	00.0	30.	11	06	40.0
7.	2	35	33.3	19.	7	02	13.3	31.	11	28	53.3
8.	2	57	46.6	20.	7	24	26.6	32.	11	51	06.6
9.	3	20	00.0	21.	7	46	40.0	33.	12	13	20.0
10.	3	42	13.3	22.	8	08	53.3	34.	12	35	33.3
11.	4	04	26.6	23.	8	31	06.6	35.	12	57	46.6
12.	4	26	40.0	24.	8	53	20.0	36.	13	20	00.0

चन्द्र अवस्था

No.	°	'	"	No.	°	'	"	No.	°	'	"
1.	1	06	40	5.	5	33	20	9.	10	00	00
2.	2	13	20	6.	6	40	00	10.	11	06	40
3.	3	20	00	7.	7	46	40	11.	12	13	20
4.	4	26	40	8.	8	53	20	12.	13	20	00

से, नक्षत्र में चन्द्रमा के व्यतीत अंश पर आधारित चन्द्र क्रिया, चन्द्र वेला और चन्द्र अवस्था की सारणियां यहां दी गई हैं। हम सारणियों से देखते हैं कि 3°33'34" 17वीं चन्द्र क्रिया, 10वीं चन्द्र वेला और चौथी चन्द्र अवस्था में पड़ता है। इनके परिणामों को विश्लेषित करते समय, इसके वर्तमान सन्दर्भ के विशेष संकेत से इसे संबद्ध करना विवेकपूर्ण है। उदाहरणार्थ, एक व्यक्ति जो राज्य सिंहासन पर आसीन हो तो इसका वर्तमान अर्थ है एक व्यक्ति, जो उच्च और शक्तिशाली पद वाला है। इसी प्रकार, वर्तमान सन्दर्भ में राजा का अर्थ प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति होगा। एक सिर कटा हुआ व्यक्ति, उस व्यक्ति को सूचित करेगा जिसे मृत्युदण्ड दिया गया है। भव्य हाथी पर सवारी करता हुआ व्यक्ति बहुमूल्य वाहनों के स्वामित्व वाला व्यक्ति होगा। ये उदाहरण केवल निदर्शी हैं और सम्पूर्ण नहीं हैं। एक विशेष परिणाम

जो हमारे महान ऋषियों द्वारा संकेतित किया गया है, उसे बदलते समय के साथ, परिवर्तित करने की आवश्यकता है।

चन्द्र क्रियाओं के परिणाम

60 चन्द्र क्रियाएं हैं जो निम्नलिखित परिणामों को सूचित करती हैं :

1. पद या स्थिति की हानि।
2. संन्यासी या अतिसंयमी जीवन का अनुसरण करना।
3. दूसरों की पत्नियों में अनुरक्त होना।
4. सट्टेबाज़ या जुआरी।
5. भव्य हाथी पर सवारी करना।
6. राज्य सिंहासन पर आसीन होना।
7. राजा या शासक की भांति प्रमुख व्यक्ति।
8. अपने शत्रुओं को जीतना या विवादों में जीतना।
9. एक सेनापति।
10. धार्मिक विशेषताओं वाला एक व्यक्ति।
11. बलहीन व्यक्ति, थका-मांदा, निस्तेज।
12. कटे हुए सिर वाला।
13. सिर और पैर पर जख्मों से घायल व्यक्ति।
14. हवालात में एक व्यक्ति।
15. नष्ट या कलंकित।
16. राजा या शासक की भांति प्रमुख व्यक्ति।
17. वेदों का छात्र या विशेषज्ञ।
18. जो निश्चेष्ट, शांत सोता है।
19. धार्मिक, अकलंकित चरित्र वाला व्यक्ति।
20. धार्मिक विचार और क्रिया वाला व्यक्ति।
21. उत्तम वंश, उत्तम परिवार से संबंधित।

22. भाग्य से खज़ाने के सम्पर्क में आना या अनुपार्जित भाग्य।
23. विख्यात या बौद्धिक परिवार से संबंधित।
24. योग्य आलोचक या वक्ता।
25. एक व्यक्ति, जो अपने शत्रुओं को परास्त करता है।
26. रोगग्रस्त अथवा कमज़ोर संघटन।
27. शत्रुओं से पराजित या विवादों में हारने वाला।
28. जो अपनी जन्मभूमि से दूर, दूर देश में रहता है।
29. नौकर या श्रमिक।
30. जो अपनी समृद्धि और सम्पत्ति को खो चुका है।
31. राजकीय परिषद या शासकीय मंच का सदस्य, जैसे मंत्री।
32. एक योग्य मंत्री, सलाहकार या परामर्शदाता।
33. जो दूसरों की भूमियों का स्वामी हो चुका है।
34. अपनी पत्नी के प्रति सच्चा और ईमानदार।
35. हाथियों से भयभीत।
36. कायर, वह जो विवादों से बचता है।
37. अत्यधिक कायर, संकोची और भयभीत।
38. विवश होकर एकांतवास में जीवित रहना या निर्वासन।
39. एक लोकोपकारी, जो दूसरों का पोषण करता है।
40. आग में गिरना।
41. भूख और दरिद्रता से पीड़ित होना।
42. एक व्यक्ति जो भोजन प्राप्त कर रहा है या खा रहा है।
43. एक व्यक्ति जो घुमक्कड़ है या जो अत्यधिक यात्रा करता है।
44. जो मांस खाता है, नकारात्मक अर्थ में मांसाहारी।
45. एक व्यक्ति, जो शस्त्र द्वारा जख्मी है।
46. एक विवाहित व्यक्ति।

47. हाथ में गेंद पकड़े हुए।
48. भाग्य के खेलों में आनन्द लेने वाला जुआरी।
49. राजा या राजा के समान विख्यात व्यक्ति।
50. एक व्यक्ति, जो अप्रसन्न और व्यथित है।
51. बीमारी के कारण शैया से लगा व्यक्ति।
52. एक व्यक्ति, जो अपने शत्रुओं से अपनी सेवा करवाता है।
53. मित्रों की संगत में सुखी।
54. एक योगी।
55. अपनी पत्नी के साथ।
56. एक व्यक्ति, जो मिठाइयों का शौकीन है।
57. एक व्यक्ति, जो दूध पी रहा है या जो दूध का शौकीन है।
58. धार्मिक कार्यों अथवा कर्त्तव्यों में रत।
59. एक व्यक्ति, जो सुस्वस्थ, सच्चा और निरोगी है।
60. एक व्यक्ति, जो प्रसन्न और संतुष्ट है।

चन्द्र वेलाओं के परिणाम

36 चन्द्र वेलाएं हैं जो निम्नलिखित परिणामों को सूचित करती हैं :

1. सिरदर्द या सिर में भारीपन।
2. खुशहाल भाग्यशाली व्यक्ति।
3. यज्ञीय चढ़ावों के कर्म करते हुए, जैसे यज्ञ।
4. एक व्यक्ति, जो प्रसन्न और आरामदायक जीवन जीता है।
5. नेत्र की बीमारियों से पीड़ित व्यक्ति।
6. एक व्यक्ति, जो प्रसन्न और संतुष्ट है।
7. युवा स्त्रियों के साथ आनन्दमय।
8. तेज़ ज्वर से पीड़ित।

9. स्वर्ण तथा अन्य आभूषण पहने हुए।
10. आंखों में आंसू लिए हुए।
11. विष खाना या आत्महत्या करना।
12. सहवास या इकट्ठे रहना।
13. पाचन संबंधी बीमारियां या अव्यवस्था।
14. जल और चित्रकला से मन बहलाना।
15. अत्यधिक क्रोधित होना।
16. नृत्य में व्यस्त।
17. घी की खपत अथवा उपलब्धता।
18. गहरी निद्रा में लीन।
19. दरिद्रों को दान देना।
20. दांतों की बीमारियां।
21. झगड़े या विवाद।
22. यात्रा पर गया हुआ व्यक्ति।
23. मदोन्मत्त, उन्माद की भांति।
24. तैरना।
25. प्रतिपक्षी या बाधाएं।
26. स्वेच्छा से स्नान करना।
27. अत्यधिक दरिद्रता एवं भूख।
28. किसी दुर्भाग्य या हानि से आशंकित, भयभीत।
29. पवित्र धर्मग्रन्थों को पढ़ना।
30. स्वेच्छा या विवेक के अनुसार कर्म करना।
31. विचारों के शाब्दिक परिवर्तन में संलग्न।
32. झगड़ों, असहमतियों या भ्रमों में सम्मिलित।
33. पवित्र और धार्मिक कार्य।

34. बुरे कार्य करने वाला, भ्रष्ट, दुष्ट या बहुत बुरा व्यक्ति।
35. क्रूर या प्रतिशोधात्मक कार्य करने वाला।
36. शक्ति, चरित्र या समृद्धि की स्थिति।

चन्द्र अवस्थाओं के परिणाम

12 चन्द्र अवस्थाएं हैं जो निम्नलिखित परिणामों को सूचित करती हैं :

1. अपने निवास स्थान से दूर।
2. शासक या सत्ता से सहायता और प्राप्तियां।
3. दासता जो मृत्यु की ओर ले जाए।
4. शासक की भांति समर्थ या शासक की भांति प्रतिष्ठित।
5. पारिवारिक परम्पराओं और मूल्यों की प्रचुरता।
6. रोग से पीड़ित।
7. शासकीय श्रेणी तक पदोन्नति।
8. भयभीत आघात की स्थिति।
9. अत्यधिक दरिद्रता और भुखमरी की स्थिति।
10. विवाहित।
11. शैया सुखों में मग्न।
12. स्वादिष्ट और शानदार भोजन की प्राप्ति।

राहु और केतु

हिन्दू ज्योतिष में राहु और केतु ग्रह माने गए है। ग्रह का अर्थ है जो प्रभावित करे। राहु और केतु का कोई भौतिक अस्तित्व नहीं है। गणितीय रूप से, ये सूर्य और चन्द्रमा के संयुक्त प्रभाव रखने वाले संवेदनशील बिन्दुओं के रूप में परिकलित किए जाते हैं, क्योंकि वे सूर्य और चन्द्रमा के परिक्रमा-पथ के कटान-बिन्दु हैं। राहु और केतु क्रमशः सर्प का सिर और सर्प की पूंछ के रूप में जाने जाते हैं और भचक्र की परिक्रमा को लगभग 19°30' प्रतिवर्ष की औसत गति से लगभग 18 वर्ष और 6 माह में वक्री अवस्था में पूर्ण करते हैं। सामान्यतः, ये अशुभ परिणाम देते है, लेकिन अत्यधिक

शुभदायक भी हो सकते हैं यदि केन्द्रों में त्रिकोण के स्वामियों के साथ और त्रिकोणों में केन्द्र के स्वामियों के साथ स्थित हों। लाभदायक परिणाम देने के लिए इससे जुड़ी हुई एक महत्त्वपूर्ण स्थिति है जिसे मैंने प्राय: अनुभव से ज्ञात किया है कि ऐसे राहु और केतु पाप प्रभाव से मुक्त होने चाहिएं। राहु व केतु की वास्तविक और औसत स्थितियों के प्रयोग के संबंध में भी विवाद है। राहु और केतु की वास्तविक स्थितियां निश्चित ही युक्तियुक्त भविष्यफल देती हैं तथापि भिन्न दृष्टिकोणों के कारण, सामान्यत: दोनों ही स्थितियां पंचांग में दी जाती हैं। जबकि यह शोध का एक विस्तृत क्षेत्र हो सकता है।

सामान्यत:, प्रश्न कुंडली में भी राहु और केतु अशुभ परिणाम देते हैं, क्योंकि शुभ परिणामों को देने के लिए उनकी स्थितियां प्राय: ही उपस्थित होती हैं। यह पूर्वोल्लिखित अध्यायों में प्रश्न कुंडली के विश्लेषण में सोदाहरण विवेचित किया जा चुका है। प्रश्न में इनके प्रयोग करने के और प्रभाव के संबंध में कोई अन्य संदर्भ नहीं मिलता, जैसा मैंने इस पुस्तक में उभारने का प्रयास किया है। राहु और केतु से समन्वित अनेक सिद्धान्तों को सोदाहरण विवेचित किया गया है, जिन्हें निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है।

1. लग्न, लग्नेश, चन्द्रमा या कार्येश राहु और केतु की युति, नक्षत्रों के स्वामी या अंशों में निकटता द्वारा उन पर पाप प्रभाव के संघटन को दर्शाता है।

2. यदि ऐसा प्रभाव शुभ ग्रहों पर है तो उनकी शुभता पीड़ित होती है और पाप ग्रहों पर है तो उनकी अशुभता बढ़ जाती है।

3. उपरोक्तानुसार, यदि राहु या केतु पाप ग्रहों की युति या दृष्टि द्वारा पीड़ित होकर दूसरे ग्रहों को प्रभावित कर रहा है, तब भी विनाशात्मक परिणाम देने की अशुभता बढ़ जाती है।

4. इसके विपरीत राहु और केतु पर शुभ प्रभाव उनकी अशुभता कम करता है अथवा शुभ ग्रहों के प्रभाव से उन्हें शुभ ग्रहों में परिवर्तित कर सकता है।

5. राहु और केतु स्वयं पाप अथवा शुभ ग्रहों के नक्षत्रों अथवा स्वामित्वों में अपने शुभ या अशुभ प्रभावों को संतुलित कर देते हैं।

6. स्वयं राहु और केतु अवरोही क्रम में अशुभ हैं जब वे, 6, 8, 12 भावों में, 3, 11 भाव में और अंतत: केन्द्रों और त्रिकोणों में स्थित हों।

7. लग्न, लग्नेश, चन्द्रमा अथवा कार्येश के साथ पीड़ित राहु या केतु के अंशों की निकटता अत्यधिक अशुभता का कारण बनती है और प्रतिकूल परिणाम देती है।
8. गोचर में, जब अंशों की ऐसी निकटता एक-दूसरे से 1° के भीतर पूर्ण इत्थसाल की स्थिति बनाए अथवा जब वे लग्नेश या कार्येश के साथ युति में हों तब यह निश्चित ही किसी घटना की ओर संकेत करता है। क्रमशः राहु या केतु की किसी दूसरे ग्रह से संबंधित गति इत्थसाल या इशराफ की स्थिति पर आधारित होकर, पिछली या भावी घटना निर्धारित कर सकती है।
9. गोचर में, जब कभी राहु या केतु किसी राशि में प्रवेश करते हैं और किसी विशिष्ट प्रश्न का कारण बनते हैं, तो स्थिति में तब तक सुधार नहीं होगा, जब तक उनका संचरण उस राशि में रहेगा।
10. राहु और केतु की दृष्टियों के संबंध में विचारों में भिन्नता है जिसमें कुछ ज्योतिषी बृहस्पति की भांति उनकी भी 5वें और 9वें भाव पर दृष्टि को वरीयता देते है। इस विवाद में अत्यधिक जाने की आवश्यकता नहीं है। मैंने पाया है कि राहु और केतु द्वारा बिल्कुल पीछे छोड़ा गया भाव अत्यधिक पीड़ित होता है। पीछे से गिनने पर यह 12वीं दृष्टि है अथवा दूसरे भाव पर दृष्टि है, यदि इसे मार्गी क्रम में मानें।
11. राहु और केतु द्विस्वभाव राशियों में स्थित हों, जो सौम्य ग्रहों बृहस्पति और बुध द्वारा शासित राशियां हैं तो यह अत्यधिक हानिकर नहीं सिद्ध होते। इसी प्रकार, लग्न कुछ भी होने पर, बृहस्पति राहु या केतु को देखे तो उनकी अशुभता कम हो जाती है। लेकिन ऐसा बृहस्पति राहु या केतु के साथ संयुक्त नहीं होना चाहिए, जिस मामले में बृहस्पति स्वयं अपने शुभ प्रभाव को कुछ हद तक खो देता है।

उदाहरण संख्या : 2

अस्पताल में रोगी – राहु और केतु की भूमिका

यह अवकाश प्राप्त एक नौसेना अधिकारी से संबंधित प्रश्न है जो सेना अस्पताल, दिल्ली छावनी में दाखिल हुआ। वह अपने दांत और जबड़े के कैंसर से पीड़ित था। परिणामस्वरूप धीरे-धीरे जबड़ा जकड़ गया और लगभग पिछले एक वर्ष से उसके पेट में आंतों तक प्रविष्ट नली के द्वारा उसे भोजन दिया जा रहा था।

	केतु 3°47'		
शनि (व) 28°33'	उदाहरण : 2 दोपहर 12:33 बजे 1 सितम्बर 1995 नई दिल्ली		
			सूर्य14°36' शुक्र17°41'
	लग्न 9°42' चंद्र 0°27' बृ० 13°02'	राहु3°47' मंगल2°15'	बुध 10°20'

स्थिर लग्न स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं दिखाता। लग्न शनि के नक्षत्र में है और शनि से दृष्ट है। शनि वक्री है और तीसरे व चौथे भाव का स्वामी है जो शुभ नहीं है। लग्न अष्टमेश बुध के अत्यंत निकट अंशों में है जो रोगी के स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने से संबंधित प्रश्नों में प्रतिकूल है। यह प्रत्यक्षतः जीवन और मृत्यु की स्थिति की ओर संकेत करता है।

लग्नेश मंगल राहु/केतु अक्ष में 12वें भाव (अस्पताल) में स्थित है। यह राहु के साथ स्थित है जो षष्ठेश मंगल के नक्षत्र में है जबकि केतु अपने नक्षत्र में है। दूसरे जीवन प्रदाता चन्द्रमा ने बृहस्पति के साथ अभी अपनी नीच राशि में प्रवेश किया है और शनि से दृष्ट है। बृहस्पति स्वयं शनि के नक्षत्र में है, जो मुश्किल से स्थिति को सुधारने की अवस्था में है। लग्नेश मंगल षष्ठेश भी है तथा उस घर का स्वामी है, जहां शनि और मंगल दोनों से दृष्ट केतु अत्यधिक पीड़ित है।

चौथे भाव में वक्री ग्रह दिखाता है कि इलाज बदलना होगा या उसकी पुनरावृत्ति होगी। सप्तमेश शुक्र (बीमारी) और दशमेश सूर्य (रोगी) 17°41'-14°36' = 3°05' की दूरी पर स्थित हैं। दोनों संयुक्त होकर सप्ताह संकेतित करते हैं और स्थिर लग्न माह दर्शाता है। प्रश्न से तीन माह पूर्व रोगी की स्थिति बिगड़ चुकी थी। समय के निर्धारण में यदि हम स्थिर लग्न के प्रभाव की उपेक्षा भी करें, तो दोनों ग्रह सप्ताहों को बताते हैं और इस अंशीय अंतर को दिनों में परिवर्तित करने पर हम 22 दिन प्राप्त करते हैं। एक इशराफ योग पिछली घटना दिखा रहा है जो 22 दिन पूर्व घटित हो चुकी होगी। यह पुष्ट किया गया कि 8 अगस्त 1995 को नली, जिसके द्वारा पेट में तरल भोजन पहुंचाया जा रहा था, अकस्मात, हट गई, जो रोगी को वर्तमान संकट में ले आई। जिस छिद्र के द्वारा नली प्रवेश कराई गई थी, उसमें संक्रमण विकसित हो गया और तरल पदार्थ के सतत रिसाव के कारण सड़न उत्पन्न

हो गई। अतः रोगी की स्थिति के कारण नली को पुनः प्रविष्ट करना संभव नहीं था। यह घटना, जो 22 दिन पूर्व घटित हुई थी, वही रोगी की वर्तमान स्थिति का कारण बनी। गोचर समय-निर्धारण की महत्त्वपूर्ण विधियों में से एक है, जैसा कि 'घटनाओं का समय' पर लिखित अध्याय में विवेचित किया गया है और उसके साथ ऊपर लिखित विवेचन के अनुसार राहु और केतु की भूमिका को संयुक्त करें।

लग्नेश और षष्ठेश मंगल अपनी मार्गी अवस्था में 3 सितम्बर 1995 की रात्रि को 12वें भाव में वक्री राहु के साथ युति करेंगे जब एक प्रमुख बाधा आ सकती है। लेकिन आसन्न मृत्यु के कठोर निर्णय पर पहुंचने से पहले, हमें घटना का ठीक-ठीक समय ज्ञात करने के लिए चन्द्रमा का संचरण देखना पड़ेगा। 3 सितम्बर को चन्द्रमा अष्टमेश बुध के नक्षत्र में संचरण करेगा जबकि अन्य ग्रहों की स्थिति नहीं बदलेगी। रोगी के परिवार को यह सुझाव दिया गया कि 3 सितम्बर की रात्रि अत्यंत संकटपूर्ण है। रोगी की पुत्री, जिसे अपनी ड्यूटी में पुनः शामिल होना था, को अपने पिता के पास रहने के लिए अपनी छुट्टियां बढ़ाने की सलाह दी गई। 3 सितम्बर 1995 की रात्रि को रोगी अचेतनावस्था में चला गया और अगले दिन प्रातःकाल स्वर्ग सिधार गया।

18
द्रेष्काण स्वरूप

व्यक्ति के रूप-रंग और कारकत्वों का विश्लेषण करने के लिए द्रेष्काण की उदित राशि देखी जाती है जिसकी विशिष्टता सुस्थापित है। वराहमिहिर ने अपने महान कार्य बृहतजातक में 12 राशियों से संबंधित 36 द्रेष्काणों का विस्तृत विवरण दिया है। वराहमिहिर ईसवी सन् 505 में पैदा हुए थे। माना जाता है कि यह ज्ञान हजारों वर्षो से संचित था। इन द्रेष्काणों के रूप-रंग, सुविज्ञता, व्यवसाय और कारकत्व न केवल पुराने हैं बल्कि आधुनिक समय के लिए अप्रासंगिक भी हैं, ऐसा प्रतीत होता है। उदाहरणार्थ, कुछ द्रेष्काणों में कहा जाता है कि एक व्यक्ति एक धनुष और एक बाण ले जा रहा है। चोरी के प्रश्न में जहां चोर के रंग रूप आदि को जानना हो तो यदि आप आज संसार भर का भ्रमण करें तो सिवाय मंच पर अभिनीत कुछ नाटकों के, आप कहीं भी एक व्यक्ति को धनुष और बाण ले जाते हुए नहीं पाएंगे।

इसका अर्थ यह नहीं है कि जो ज्ञान युगों से हम तक आया है, अनावश्यक हो चुका है। हमें इस ज्ञान की केवल शाब्दिक नहीं, बल्कि उदारता से पर्यवेक्षण करने की आवश्यकता है। आधुनिक सन्दर्भ में ऐसा व्यक्ति कोई छोटा शस्त्र अथवा हाथ में छुरा पकड़े हुए होगा और संभवत: उस अर्थ समान होगा जो कि एक व्यक्ति, धनुष और बाण ले जा रहा है। इस दृष्टिकोण को मन में रखकर, द्रेष्काणों को सन्दर्भ और तुलना की सरलता के लिए आठ शीर्षकों में वर्गीकृत किया गया है। 1 से 7 तक शीर्षक परम्परागत द्रेष्काण कारकत्वों को बताते हैं जबकि 8वां शीर्षक वर्तमान सन्दर्भ में उनको अर्थ प्रदान करता है। वराहमिहिर के उपरांत अनेक प्रख्यात लेखकों ने इस ज्ञान को जोड़ा है और यह विषय बदलते समय के साथ, विकासवादी प्रक्रिया में आया। सारावली ने भी द्रेष्काण कारकत्वों को दिया है उन्हें यहां समाविष्ट कर लिया गया है।

नीचे वर्णित प्रत्येक द्रेष्काण की विशेषताओं का सावधानीपूर्वक परीक्षण और विश्लेषण आवश्यक है। वस्तु की विभिन्नताओं पर आधारित उनकी

प्रकृति, अर्थ, विस्तार और योग्यताएं अपने-अपने द्रेष्काण के स्वामियों की स्थिति, दृष्टि और युति और उन पर पड़ने वाले प्रभाव के संयुक्त बल के ऊपर निर्भर करती है। यह विचार गलत है कि द्रेष्काण स्वरूप से केवल चोर की पहचान की जाए। वास्तव में, ये संकेत न केवल किसी व्यक्ति, वस्तु या तत्त्व की विशिष्टता पर प्रकाश डालते हैं, बल्कि विस्तृत प्रयोगों में भी अपनाए जा सकते हैं।

36 द्रेष्काणों के कारकत्वों को निम्नलिखित आठ शीर्षकों में वर्णित किया गया है।

1. पुरुष या स्त्री
2. कपड़े और आभूषण
3. विशेषज्ञता और व्यवसाय
4. द्रेष्काण का प्रकार
5. जो कार्य किया जा रहा है अथवा किया जाने वाला है
6. रूप-रंग
7. अन्य
8. वर्तमान सन्दर्भ

मेष I

1. पुरुष
2. कमर पर कसा हुआ सफेद कपड़ा
3. -
4. आयुध, क्रूर
5. एक कुल्हाड़ी ऊपर किए हुए अथवा पकड़े हुए
6. काला रंग, उग्र रूप, रक्तिम आंखे
7. उदार, प्रभावशाली, संरक्षक
8. उग्र, दूसरों को दंड देना, प्रतिभावान, जन्मजात योद्धा, बल द्वारा वस्तुओं को पाना

मेष II

1. स्त्री
2. लाल कपड़े, आभूषणों का शौक

3. -
4. मृग, सौम्य, स्थिर
5. -
6. बर्तन की भांति वृत्ताकार अथवा गोल-मटोल रूप-रंग, घोड़े की भांति चेहरा
7. भोजन की इच्छा, प्यासी, एक पैर पर खड़ी हुई
8. गोलाकार रूप-रंग, मोटा, असमान शरीर, जीवन का आनन्द-प्रेम, संगीत, समृद्धि, अति महत्त्वाकांक्षी

मेष III

1. पुरुष
2. लाल वस्त्र
3. अनेक चीज़ों को जानने वाला, निपुण
4. आयुध, मिश्र
5. सदैव कार्य करने का इच्छुक, क्रियाशील, हाथ में एक छड़ी अथवा मस्तूल पकड़े हुए
6. भूरे बाल अथवा भूरा रंग
7. नियमों को तोड़ने वाला, क्रोधी-क्रूर व्यक्ति, निराशावादी
8. ईमानदार, अधिक पढ़ा-लिखा नहीं, सराहनीय कार्य, जीवन-साथी की चाह, अपनी प्रतिभा के बावजूद सफल नहीं

वृषभ I

1. स्त्री
2. भोजन एवं आभूषणों की शौकीन, अग्नि सदृश रंग के अंशतः जले हुए वस्त्र
3. -
4. अग्नि, मिश्र, सौम्य
5. -
6. रुक्ष, सिर पर छोटे घुंघराले बाल, हंडिया जैसा उदर, मोटा शरीर
7. सदैव भूखी, प्यासी
8. आभूषणों से सुसज्जित, अपने प्रेमी के लिए लालायित, युवा

वृषभ II

1. पुरुष
2. गंदे वस्त्र पहने हुए
3. कृषक, कृषि अर्थव्यवस्था, अनाज, दुग्ध-उद्योग, हल चलाना, रथ, संगीत-शास्त्रीय और वाद्य, पंडित
4. मृग, सौम्य
5. -
6. सांड की भांति गर्दन, मेढ़ा अथवा बकरी का मुख, निचला होंठ मोटा
7. भूखा, अड़ियल स्वभाव परन्तु कार्यों में दृढ़
8. स्त्रियों से आकर्षण, भद्र, सौम्य और समृद्ध

वृषभ III

1. पुरुष
2. -
3. -
4. जलचर, चतुष्पाद
5. स्वार्थ से बकरियां और हिरण प्राप्त करने की इच्छा (पशुधन)
6. एक हाथी की भांति विशाल शरीर, सफेद (लाल) दांत, ऊंट की भांति लम्बे पैर, भूरा रंग
7. हलके (पीले) रंग वाला शरीर, दूसरों से धन निकालना
8. स्वार्थी, चतुर, अति महत्वाकांक्षी, वीर लेकिन भाग्यहीन, भ्रमित मन, पश्चाताप से भरा हुआ

मिथुन I

1. स्त्री
2. आभूषण पहने हुए
3. सिलाई तथा अन्य घरेलू कार्य जैसे- सुईकारी, सजावटी वस्तुएं आदि
4. सौम्य
5. दोनों बाहें और हाथ उठाए हुए

6. सुन्दर, आनन्द और यौन की शौकीन
7. जवान लेकिन बच्चों से रहित, अपने मासिक धर्म में स्त्री
8. सजावटी, जुआरी, विलासितापूर्ण जीवन वाक्पटुता में निपुण

मिथुन II

1. पुरुष
2. आभूषणों और वैभव का शौक
3. शस्त्र और युद्धोपकरण, शिक्षित, ज्ञानवान
4. पक्षी, मिश्र
5. एक कवच पहने हुए, धनुष और बाण लिए हुए, बाग में खड़े हुए
6. एक गरुड़ का मुख, छोटे बाल, देखने में भद्र पुरुष
7. पराक्रमी योद्धा, बच्चों और खेलों का शौक
8. प्रसिद्ध, प्रसन्न, बुद्धिमान, कुछ शस्त्र और युद्धोपकरण लिए हुए

मिथुन III

1. पुरुष
2. अनेक आभूषणों और जवाहरातों से सुसज्जित
3. शास्त्रीय और वाद्य-संगीत और नृत्य में निष्पात, एक कवि
4. आयुध, जलचर
5. धनुष और बाण लिए हुए
6. रत्नों और कवच से सुसज्जित, सूखे नाखून, पैर और करतल, असंतुलित शरीर
7. -
8. लम्बा, सुन्दर, औरतों से घृणा, हठी, अनेक शत्रुओं वाला, कुछ शस्त्र और युद्धोपकरण ले जाने वाला

कर्क I

1. पुरुष
2. पत्तियां पहने हुए अथवा जड़ें, फल पकड़े हुए
3. -

4. चतुष्पाद, जलचर
5. चंदन के वनों में भ्रमण करने का शौक
6. एक हाथी की भांति शरीर, ऊंट की भांति पैर, घोड़े की भांति गर्दन, सुअर का मुख
7. अस्थिर, ईश्वर और ब्राह्मणों में श्रद्धा, सहयोगी प्रकृति
8. गौर वर्ण, भ्रमित तथापि श्रद्धालु और धार्मिक, सुन्दर और परोपकारी, अच्छी पत्नी

कर्क II

1. स्त्री
2. आभूषणों और कमल-पुष्पों से सुसज्जित सिर
3. सर्प उठाए हुए
4. सर्प, क्रूर
5. वन में खड़ी हुई, ढ़ाक या पलाश की टहनी पकड़े हुए
6. बहुत युवा
7. रुक्ष व्यवहार, वन में चिल्लाना, लालची, मीठा बोलना, अनेक बीमारियां
8. आराम पसन्द, आनन्द का शौक, कामुक

कर्क III

1. पुरुष
2. स्वर्णाभूषणों अथवा मालाओं को पहने हुए
3. -
4. सर्प, जलचर, मिश्र
5. आनन्द और पत्नी के लिए आभूषणों की प्राप्ति हेतु यात्रा पर जाना
6. चपटी नाक, अल्प नेत्र दृष्टि
7. शरीर के चारों ओर सर्प, वैभव और स्त्री से सम्बद्ध
8. अंतर्राष्ट्रीय यात्री, जल, समृद्धि और स्त्री का शौकीन

सिंह I

1. पुरुष
2. गंदे कपड़े पहने हुए

3. एक नेता, जो अपने शत्रु को परास्त करे
4. पक्षी, चतुष्पाद, क्रूर
5. एक सेमल के वृक्ष पर बैठा हुआ एक गिद्ध, एक सियार और उसके साथ बैठा हुआ कुत्ता
6. -
7. अभिभावकों से अलग होने पर व्यक्ति का चिल्लाना
8. परोपकारी, धनी स्त्री के निकट, एक नेता, जो अपने शत्रुओं के लिए खतरा है

सिंह II

1. पुरुष
2. गुलाबी और सफेद फूलों से सुसज्जित सिर, काले रंग के हिरण की खाल और एक कंबल पहने हुए
3. धनुष और बाण के प्रयोग में प्रवीण
4. आयुध, मिश्र
5. -
6. घोड़े की भांति बलवान शरीर, नाक उभरा हुआ
7. जो नियंत्रित नहीं किया जा सकता जैसे शेर
8. शस्त्र विद्या में निपुण, अत्यंत बुद्धिमान, उदार, शुभ कार्य, धर्मग्रंथों में रुचि

सिंह III

1. पुरुष
2. -
3. -
4. चतुष्पाद, क्रूर, आयुध
5. अपने हाथ में एक छड़ी, फल अथवा मांस पकड़े हुए
6. भालू की भांति कुरुप मुख, बन्दर की क्रियाएं, लम्बी दाढ़ी, छोटे बाल अथवा उस्तरा लगा गंजा सिर
7. सदैव फल अथवा मांस रखने वाला अथवा उनके खाने का शौकीन युवा, हठी

8. लालची, हठी, युवा, छोटा कद, अनेक बच्चों वाला, जुआरी

कन्या I

1. स्त्री
2. गंदे कपड़े पहने हुए और कपड़ों और समृद्धि के संचय की शौकीन
3. -
4. अग्नि, सौम्य
5. फूलों की टोकरी पकड़े हुए लड़की
6. युवा, शहद की तरह आंखें, सुकुमार अंग, लम्बा सिर
7. पढ़ने-पढ़ाने अथवा शिक्षा संस्थान की ओर जाते हुए
8. एक छात्र, भद्र, वाक्पटु, सुकुमार अंग, दूसरों से धन-प्राप्ति की आशा

कन्या II

1. पुरुष
2. सिर पर टोपी इत्यादि पहने हुए अथवा कपड़े से बंधा सिर
3. काल्पनिक विज्ञान-कथा के वर्णन में प्रवीण, बातूनी
4. जलचर
5. कलम, पेंसिल अथवा बड़े आकार का धनुष पकड़े हुए
6. काला रंग, बालों से आवृत्त सम्पूर्ण शरीर
7. सदैव धन का विचार करने वाला, साहसी, यात्री, वनवासियों का मित्र
8. धन कमाना और खर्च करना, विद्वान, बहुत बातूनी, युद्ध में प्रवीण, आधुनिक शस्त्र रखने वाला

कन्या III

1. स्त्री
2. सुन्दर शाल (दुपट्टा), उत्तम स्वच्छ वस्त्र पहने हुए
3. गायन में रुचि
4. सौम्य
5. बर्तन और कलछी पकड़े हुए, पूजा-स्थल पर जाने को उत्सुक
6. उत्तम सुनहरा रंग, लम्बा कद, बड़ी आंखें, बड़ा शरीर

7. धार्मिक प्रवृति
8. धर्मपरायण, उत्तम वस्त्र, गायन में रुचि, बड़ी आंखें

तुला ।

1. पुरुष
2. -
3. क्रय अथवा विक्रय, नापना और तोलना
4. सौम्य
5. दुकान में तराजू पकड़े हुए, अपनी वस्तुओं और उनके मूल्यों के बारे में सोचते हुए
6. सुन्दर
7. एक आज्ञाकारी कर्मचारी
8. यात्री, चतुर, आज्ञाकारी

तुला ॥

1. पुरुष
2. पूर्णतः आभूषणों से सुसज्जित
3. -
4. पक्षी, मिश्र
5. हाथ में बर्तन पकड़े हुए बाहर जाते हुए, शीघ्र गिरने ही वाला है
6. गिद्ध का चेहरा, मर्दाना शरीर, कमल की भांति लम्बी आंखें
7. भूखा और प्यासा, प्रेमपूर्वक पत्नी और बच्चों को याद करते हुए
8. सुखदर्शी, मीठी वाणी, साहसी, प्रसिद्ध, बड़ों की बातों को मानने वाला

तुला ।॥

1. पुरुष
2. रत्नों से सुसज्जित
3. -
4. चतुष्पाद
5. वन में हिरणों को डराने वाला, फल और मांस खाने वाला

6. बन्दर का रूप-रंग
7. धनुष और तरकश उठाए हुए, स्वर्ण जड़ित कवच पहने हुए, फल और मांस खाते हुए
8. कुरुप, चंचल चित्त, कृतघ्न, अपनी इज़्ज़त और वैभव को खो चुका व्यक्ति, बुद्धिहीन

वृश्चिक I

1. स्त्री
2. आभूषणों और वस्त्रों से रहित
3. युद्ध में निपुण
4. सर्प, क्रूर
5. अपने पैरों के चारों ओर सर्पों को लिपटाए महासागर से बाहर निकलते हुए
6. सुन्दर, चरित्रहीन
7. नैतिक विनाश के पथ पर (भ्रष्ट)
8. भ्रष्ट, निकृष्ट चरित्र, उत्तम रूप-रंग, उग्र, झगड़ालू, स्थूल और लम्बा शरीर

वृश्चिक II

1. स्त्री
2. -
3. कला प्रेमी, सद्‌गुणों से अधिकृत
4. सर्प, क्रूर
5. उसके शरीर पर कुंडलित सर्प
6. फाख्ता अथवा एक स्थूल बर्तन की भांति मोटा शारीरिक रूप, सर्प के चिह्न वाला शरीर
7. आनन्ददायक स्थानों का शौक, अपने पति की सकुशलता के बारे में सोचते हुए, जीवन के सुखों को भोगने की शौकीन जैसे- भोजन, कला, सुन्दरता रंग-रूप, दूसरों की समृद्धि को भोगने में आतुर
8. जीवन के भोग-विलास का शौक-भोजन, कला, समदर्शी, सुनहरा रंग, दूसरों की समृद्धि को भोगने वाली

वृश्चिक III

1. पुरुष
2. -
3. -
4. चतुष्पाद, क्रूर
5. चंदन क्षेत्रों का रक्षक
6. बड़ा और लम्बा चेहरा अथवा कछुए जैसे चेहरा
7. कुत्तों, हिरण, सुअर, गधों आदि को डराने वाला, अपने भाइयों को खो चुका
8. हृष्ट-पुष्ट और साहसी, क्रूर, हिंसक, बिना बाल और दाढ़ी वाला

धनु I

1. पुरुष
2. -
3. नेतृत्व की विशेषताएं
4. आयुध, चतुष्पाद, मिश्र
5. लम्बा धनुष और एक बाण पकड़े हुए, ऋषियों और धार्मिक यज्ञ सामग्री की रक्षा करने वाला
6. मनुष्य का चेहरा, घोड़े का शरीर
7. आश्रम में रहने वाला
8. लम्बा शस्त्र रखने वाला, गोल आंखें और चेहरा, नेता, भद्र, धार्मिक कार्यों में श्रद्धा

धनु II

1. स्त्री
2. समुद्री सीपियों से निर्मित आभूषण
3. शिक्षक और धर्मग्रंथों में पूर्णतः प्रवीण
4. सौम्य
5. आनन्ददायक परिस्थिति

6. सुन्दर नहीं लेकिन बहुत वांछनीय, पुष्पों अथवा स्वर्ण की भांति चमक-दमक, मध्यम कद
7. तीर्थ स्थानों की यात्रा करने वाली
8. अत्यंत वांछनीय स्त्री, दूसरों का ध्यान खीचने में समर्थ, धर्मग्रंथों में प्रवीण, एक विद्वान

धनु III

1. पुरुष
2. हिरण की त्वचा अथवा रेशम के वस्त्र
3. चतुर और अपनी जाति का नेता
4. आयुध, सौम्य
5. सिंहासन पर बैठा हुआ, राजदण्ड अथवा राजसी छड़ी पकड़े हुए
6. लम्बे बाल और दाढ़ी वाला, स्वर्ण और पुष्पों की भांति दीप्तिमान, सुनहरा रूप-रंग
7. नेता, पुण्यवान, धार्मिक
8. शक्ति और प्रभुत्व के उच्च पद पर आसीन, उत्तम वस्त्र, कामुक, अन्य स्त्रियों में आसक्त और प्रसिद्ध

मकर I

1. पुरुष
2. -
3. रस्सी और जाल लिए हुए
4. निगल, चतुष्पाद, क्रूर
5. रस्सी, लोहे की जंजीरें आदि पकड़े हुए
6. सूअर की भांति शरीर, देखने में भद्दा, बालों से भरपूर, काला रंग
7. दिखने में लड़ाका
8. बेईमान, प्रसिद्ध, मनोहर, मुस्कराहट के साथ बोलने वाला और उछाल के साथ चलने वाला

मकर II

1. स्त्री

2. आभूषणों से सुसज्जित और उसके कानों में लोहे के छल्ले
3. कलाओं में निपुण, परोपकारी
4. सौम्य
5. विचित्र वस्तुओं को पाने की इच्छा
6. सुन्दर कमल के आकार की आंखें, काला रंग
7. अनेक वस्तुओं का चाव, चतुर
8. दूसरों के धन-सम्पत्ति को हड़पने की इच्छा, चतुर, छोटा चेहरा, विकृत

मकर III

1. पुरुष
2. कंबल पहने हुए
3. -
4. आयुध मिश्र
5. धनुष, तरकश और कवच धारण किए हुए
6. घोड़े की भांति चेहरा, आदमी के शरीर वाला और घोड़े के चेहरे वाला, पौराणिक कथाओं में जिसे किन्नर कहा गया है
7. धन जेवरात से भरा हुआ कलश अपने कंधों पर उठाए हुए
8. बातूनी, छरहरा, लम्बे अंग, अभिभावकों से अलग, विदेश की यात्राएं

कुंभ I

1. पुरुष
2. रेशमी, हिरण की खाल या कंबल से बने वस्त्र
3. राजा का कर्मचारी
4. पक्षी, क्रूर
5. -
6. गिद्ध जैसा चेहरा, कद में लम्बा
7. तेल, अनाजों और मादक पदार्थों को प्राप्त करने के लिए चिंतित, निष्ठावान
8. लम्बा, कर्त्तव्य के प्रति निष्ठावान, समृद्ध, उत्तम वस्त्रों से सुसज्जित, उच्च वंश, आत्म सम्मान

कुंभ II

1. स्त्री
2. गंदे वस्त्र
3. -
4. सौम्य
5. वनों में भ्रमण करने वाली, अधजली गाड़ी में बैठी हुई
6. सुनहरा रंग, अच्छी उभरी आंखें
7. आग से जली हुई, लोहा अथवा धातुओं को एकत्रित करते हुए, अपने सिर पर बर्तनों को ले जाते हुए
8. लालची, आसानी से हंसना, कठोर वाणी, अनेक मित्र

कुंभ III

1. पुरुष
2. सिर पर टोपी इत्यादि अथवा मुकुट पहने हुए
3. -
4. सौम्य
5. पत्तियों, फलों, गोंद को विभिन्न स्थानों पर ले जाते हुए
6. काला रंग, कानों पर बाल, लम्बा कद
7. पुत्रवान और धनवान
8. लम्बा कद, शक्तिशाली, झूठा, चरित्रहीन, बड़ी-बड़ी आंखें, एक चिकित्सक अथवा वैद्य, कामुक

मीन I

1. पुरुष
2. रत्नों और आभूषणों को पहने हुए
3. -
4. जल
5. पूजा के लिए आभूषणों, शंख-सीपियों, पात्रों को पकड़े हुए
6. अच्छा सुनहरा रंग, मधु के रंग की आंखें
7. पत्नी के लिए आभूषणों को प्राप्त करने के लिए दूर की यात्रा करते हुए

8. आनन्द का शौकीन, शिष्ट, बुद्धिमान

मीन II

1. स्त्री
2. -
3. स्त्री-रुचियों में विशेषज्ञ
4. जल
5. बड़े जहाज अथवा नौका में यात्रा करते हुए, प्रिय लोगों से मिलन
6. पुष्प की भांति चमकीला चेहरा
7. -
8. साहसी, सभी के लिए मित्रवत, भोजन का चाव, भाषण में निपुण

मीन III

1. पुरुष
2. अपने शरीर के चारों ओर सर्प लपेटे हुआ नंगा व्यक्ति
3. ललित कलाएं
4. सर्प, अग्नि, क्रूर
5. रोते हुए, चोरों और अग्नि के भय से घबराया हुआ
6. काला रंग, लम्बे पैर
7. -
8. काला रंग, मित्रों भोजन और पेय पदार्थों पर खर्च करने वाला

उदाहरण संख्या : 1
जवाहरात और धन की चोरी – द्रेष्काण का प्रयोग

लग्न में द्विस्वभाव राशि है जिसमें राहु स्थित है। लग्न अष्टमेश मंगल के नक्षत्र में है। यह दोनों योग हानि और चिंताएं दर्शा रहे हैं। लग्न पंचमेश/षष्ठेश शनि, तृतीयेश/अष्टमेश मंगल और द्वितीयेश/नवमेश शुक्र से पूर्ण पाराशरी दृष्टि से दृष्ट है। लग्न को प्रभावित करने वाले 6, 8 और 12वें भाव के स्वामियों का योग चोरी और धन की हानि बताता है। द्वितीयेश और षष्ठेश राहु/केतु अक्ष में स्थित हैं और अष्टमेश 6ठे भाव से द्वादशेश सूर्य के साथ स्थित होकर लग्न को देख रहा है और हानि दर्शा रहा है। तीसरा भाव और शनि दोनों

शनि1°26' केतु24°06' शुक्र28°55'			चन्द्रमा 11°43'
सूर्य 15°30' मंगल 16°35'	उदाहरण : 1 सायं 8:50 बजे 28 फरवरी 1996 नई दिल्ली		
बुध 24°04'			
बृहस्पति 17°42'			लग्न 20°22' राहु 24°06'
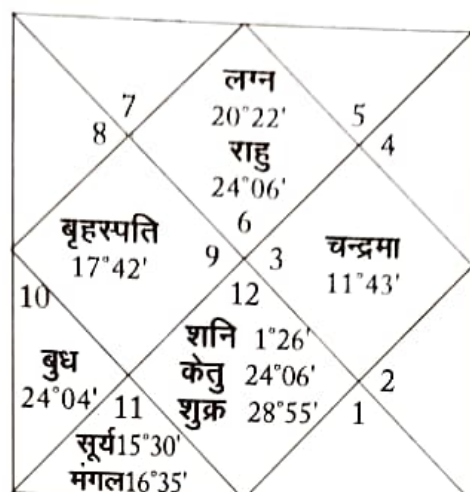
एक नौकर की ओर संकेत करते है, लेकिन निष्कर्ष पर पहुंचने से पूर्व, कुंडली के और अध्ययन करने की आवश्यकता है।

यह एक महिला का मामला है जिसने अपने पति को दुकान पर देने के लिए नौकर को 50,000/- रुपए की धनराशि दी थी। नौकर बैठक में कुछ समय बैठकर दूरदर्शन पर क्रिकेट मैच देखता रहा। परिवार के अन्य सदस्य और कुछ अतिथि भी वहां बैठे थे। कुछ समय पश्चात् नौकर ने धन राशि उठाई और दुकान पर छोड़ने के लिए गया। जल्दी वापस आकर उसने बताया कि 5,000/- रुपए कम थे।

आइये देखें कि क्या महिला ने स्वयं 45,000/- रुपए दिए और वहां कोई चोरी नहीं हुई। हमें उन सिद्धान्तों को ध्यान में रखना है जो दिखाते है कि वस्तु केवल गलत स्थान पर रखी है और चोरी नहीं हुई। ऐसे मामलों में, एक सिद्धान्त है कि स्वराशि अथवा स्वनवांश में स्थित ग्रह लग्न को देखे, तब वस्तु केवल गलत स्थान पर रखी है। यहां ऐसा नहीं है। इस मामले में, 7वें भाव में शनि एवं 6ठे भाव में द्वादशेश सूर्य बताता है कि चोरी हुई है।

केन्द्रों में बलवान ग्रह शुक्र और बृहस्पति हैं। सप्तमेश बृहस्पति धनु राशि में स्थित होकर बताता है कि केवल एक व्यक्ति चोर है। लग्न में उदित दिवाबली राशि दिखाती है कि चोरी दिन के समय की गई है जो मामले के तथ्यों से सिद्ध था। यदि बृहस्पति चोर ग्रह हो तो चोर घर के मुख्य द्वार से प्रवेश करता है।

आइए अब हम चोर का लिंग निर्धारित करें :

1. सप्तमेश बृहस्पति है — पुरुष
2. 7वें भाव में ग्रह, शनि — स्त्री

	7वें भाव में ग्रह (से आगे)	शुक्र	स्त्री
		केतु	पुरुष
3.	7वें भाव में राशि, मीन		स्त्री
4.	सप्तमेश जिस राशि में है		पुरुष
5.	सप्तमेश को देखने वाले ग्रह,	चन्द्रमा	स्त्री
		शनि	स्त्री

इन आठ मापदंडों में से पांच बिन्दु स्त्री की ओर और तीन पुरुष की ओर संकेत करते है। अतः पुरुष नौकर की संभावना को निकाल देना होगा क्योंकि यहां स्त्री चोर है।

लग्न में उदित द्विस्वभाव राशि एक ऐसा व्यक्ति बताती है जिसका घर में आना जाना है अथवा घर में जिसका आगमन प्रायः होता है। चोर की पहचान के लिए एवं सूक्ष्म निरीक्षण के लिए हमें 7वें भाव में स्थित ग्रहों को देखना है। शुक्र और शनि के बीच शुक्र बलवान है, जो एक युवा स्त्री को सूचित करता है। बृहस्पति और शुक्र चोर ग्रहों के बीच शुक्र बलवान है। क्योंकि यह नवांश में भी उच्च का है। सप्तमेश बृहस्पति स्वराशि में प्रमुख व्यक्ति को बताता है, जो पहले देखा जा चुका है कि एक महिला है। 7वें भाव में स्थित उच्च का शुक्र एक अत्यंत आकर्षक शरीर, सुन्दर आंखें और बाल, मजाक पसन्द करने वाली और जीवन के समस्त सुखों का आनन्द उठाने वाली स्त्री सूचित करता है। आयु-निर्धारण में, प्रश्न में सूर्य की स्थिति की विधि सर्वोत्तम परिणाम देती है। यहां 6ठे भाव में स्थित सूर्य बता रहा है कि चोर लगभग 45 वर्ष की आयु की एक वयस्क महिला है। सप्तमेश बृहस्पति केन्द्र में स्थित है जो बताता है कि व्यक्ति कहीं भागा नहीं है।

लग्नेश बुध 5वें भाव में अष्टमेश मंगल के नक्षत्र में स्थायी हानि दिखा रहा है। बुध किसी शुभ ग्रह से दृष्ट भी नहीं है तथा यह राहु और केतु के साथ अत्यंत निकट अंशों में पुनः सम्पत्ति की हानि दिखा रहा है। सर्वाधिक तार्किक प्रश्न है कि क्या सम्पत्ति पुनः प्राप्त होगी अथवा नहीं। यद्यपि लग्नेश बुध द्वितीयेश शुक्र के साथ इत्थसाल योग में है तथापि चन्द्रमा उनमें से किसी के साथ सम्मिलित नहीं है। जब कभी द्वितीयेश 7वें भाव में जाता है तो प्रश्नकर्ता की सम्पत्ति चोर के पास चली जाती है और पुनः प्राप्त नहीं होती।

आश्चर्यजनक रूप से, कुंडली में कुछ अनुकूल योग भी हैं। केन्द्रों और त्रिकोणों में सभी शुभ ग्रह हैं और लग्न शीर्षोदय है, तथापि कुंडली

दिखाती है कि सम्पत्ति पुनः प्राप्त नहीं होगी। क्या इसका अर्थ यह है कि धनराशि किसी ऐसे व्यक्ति के पास है, जो यदि पुनः प्राप्त न भी हो तो कोई फर्क नहीं पड़ता। यह विश्लेषण बताता है कि चोर एक स्त्री है जो घर आती है और वह परिवार की सदस्या नहीं है।

अब हम द्रेष्काण स्वरूप का विश्लेषण करते हैं। लग्न में उदित कन्या का तृतीय द्रेष्काण, सुन्दर शॉल पहने हुए, उत्तम स्वच्छ वस्त्र, अच्छा सुनहरा रूप-रंग, बड़ी आंखें, धर्मपरायण, पूजा के स्थान पर जाने के लिए उत्सुक एक स्त्री बताता है। इस पृष्ठभूमि के साथ, मैंने प्रश्नकर्ता से पूछा कि क्या बैठक में बैठे हुए लोगों में कोई इस वर्णन की स्त्री थी। मुझे बताया गया कि उसके पति की बहन, जो सदैव बन-ठन कर रहती है और एक सुन्दर शॉल पहने हुए थी, घर पर माता वैष्णों देवी का प्रसाद देने के लिए आई थी (पूजा के स्थान का संकेत ध्यान करें)। यह सम्बन्ध कहां से प्राप्त किया जा सकता है? 7वां भाव पति है और 7वें भाव से 3सरा अर्थात 9वां भाव और नवमेश पति की बहन है, जो शुक्र है। 7वें भाव में उच्च का शुक्र केन्द्र में बलवान ग्रह है और हमारे विश्लेषण में चोर ग्रह है।

हम लगभग देख चुके हैं कि चोरी हुआ धन पुनः प्राप्त नहीं होगा। पारिवारिक संबंधों को खुशहाल बनाए रखने में क्या यह उपयुक्त नहीं था कि मामला छोड़ दिया जाए और आगे पूछताछ न की जाए।

19
विविध प्रश्न

अपने विचारों को संयोजित करने में जब किसी लेखक को कठिनाई आती है तब उसे प्रश्न को विभिन्न वर्गों में ढालने की आवश्यकता पड़ती है जैसे चोरी, बीमारी आदि। निःसन्देह यह वर्गीकरण ज्योतिषीय विश्लेषण में अत्यन्त सहायक होता है चाहे वह ज्योतिषी नव शिष्य हो या विशेषज्ञ। इस वर्गीकरण से किसी भी प्रश्न को तार्किक ढंग से समझने में एवं नाना प्रकार की स्थितियों में इस तर्क को प्रयोग में लाने में सुविधा होती है। किसी भी प्रकार के प्रश्न के विश्लेषण में ज्योतिषी के मन में भ्रम न उभरे, "प्रश्न कुंडली" उस परिशुद्धता की खोज में एक कठिन प्रयास है।

तर्क की उस सीमा तक पहुंचने के लिए कार्येश एवं उपकार्येश का निर्धारण करना आवश्यक है। तार्किक रूप से ऐसे विविध प्रश्नों से जुड़ी हुई राशियों, ग्रहों, नक्षत्रों एवं भावों के कारकत्वों के अतिरिक्त केन्द्रों को अत्यधिक महत्त्व प्राप्त है।

इस अध्याय में निम्नलिखित विविध प्रकार के प्रश्नों पर व्याख्या सम्मिलित है।

1. किस भाव से क्या देखें - आशुचित्र (स्नैपशॉट) विधि
2. कतिपय विविध प्रश्नों के लिए महत्त्वपूर्ण योग
3. देव प्रश्न
4. यात्रा
5. सम्मेलन की सफलता
6. क्या संदेह या अफवाह सही है
7. कारावास
8. वर्षा
9. मेरा जन्म नक्षत्र और मेरी जन्म राशि क्या है
10. उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अपनाई जाने वाली विधियां

किस भाव से क्या देखें (भाव और उनके स्वामी)
स्नैपशॉट विधि

प्रश्न संबंधित है	*लग्न*	*4था भाव*	*7वाँ भाव*	*10वाँ भाव*
कृषि	कृषक	भूमि	खेती	उपज/फसल
क्रय	क्रेता	माल	विक्रेता	मूल्य
क्रय संपत्ति	क्रेता	संपत्ति	विक्रेता	संपत्ति का मूल्य
क्रय वाहन मूल्य	प्रश्नकर्त्ता	वाहन	विक्रेता	वाहन का
दुग्धशाला	दुग्ध कृषक	पशु	दुग्धशाला अनुरक्षण/ पोषण करना	उत्पादन
मृत्यु (मारण प्रश्न)	प्रश्नकर्त्ता	मृत्यु का प्रकार	दाह संस्कार	कार्य, जो अभी किए जाने हैं
दिशाएं	पूर्व	उत्तर	पश्चिम	दक्षिण
विवाद	प्रश्नकर्त्ता	प्रतिपक्षी का रणक्षेत्र	प्रतिपक्षी	प्रश्नकर्त्ता का रणक्षेत्र
भोजन	मेजबान	परोसा गया भोजन	भूख/क्षुधा	अतिथि
संपत्ति से प्राप्तियाँ (किराया)	मालिक	संपत्ति	किराएदार	किराया या राजस्व
राज्य-प्राप्ति (पद या नौकरी)	शारीरिक प्रयास	सहायता मित्र, परिचित	घर पर प्रयास	लाभ या प्राप्तियाँ
बीमारी	चिकित्सक	चिकित्सा	बीमारी	रोगी
यात्रा	सुख आदि	परिणाम	दर्शनीय	उद्देश्य
पट्टे पर भूमि देना	पट्टादाता	लाभ	पट्टेदार	उत्पादन
मुकद्दमेबाज़ी	प्रश्नकर्त्ता	निर्णय	प्रतिपक्षी	अधिकारी
खोई हुई संपत्ति	व्यक्ति, जिसने संपत्ति खोई है	संपत्ति	चोर	अधिकारी (पुलिस)
विवाह	प्रश्नकर्त्ता		पति/पत्नी	
लापता व्यक्ति	लापता व्यक्ति	उसकी सकुशलता की स्थिति	मार्ग	
(व्यापार) स्थल से गतिविधि	प्रश्नकर्त्ता	(व्यवसाय) का वर्तमान स्थान	भावी स्थान	व्यापार
साझेदारी	प्रश्नकर्त्ता		साझेदार	
यात्री की वापसी	यात्री	सकुशलता की स्थिति	मार्ग	
संपत्ति की बिक्री	विक्रेता	संपत्ति	क्रेता	संपत्ति का मूल्य

विविध प्रश्नों के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण योग

1.	गर्भाशय में बालक	: 12वाँ भाव और द्वादशेश देखें।
2.	पुस्तक का लेखन	: 3, 5, 10वां भाव और उनके स्वामी।
3.	लेखन से प्राप्तियाँ	: 3, 5, 10 भाव/भावाधिपति और 11वाँ भाव/एकादशेश।
4.	मंदिर का निर्माण	: सूर्य और बृहस्पति का योग।
5.	नौकरी में निलंबन	: चर लग्न - हाँ, स्थिर लग्न - नहीं
6.	समृद्धि	: 4था भाव और चतुर्थेश।
7.	अभिभावकों का मृत्यु समारोह	: स्व/चर राशि/नवांश में नवमेश/सूर्य या सुव्यवस्थित और शुभ ग्रहों से दृष्ट, अन्यथा नहीं।
8.	भेंट में दिए पान के पत्ते	: शीर्ष से गिनते हुए पत्तों की स्थिति देखें। कटा और नष्ट हुआ पत्ता उस भाव को पीड़ित करता है।
9.	प्रश्नकर्त्ता से मिलने वाला व्यक्ति	: 7वें भाव (मार्ग) और केन्द्रों में बलवान ग्रह मार्ग में प्रश्नकर्त्ता से मिलने वाले व्यक्तियों की संख्या, लिंग, जाति इत्यादि दर्शाते हैं।
10.	राजनीतिक शक्ति	: सूर्य, चन्द्रमा और मंगल के नक्षत्र में लग्नेश/दशमेश।

देव प्रश्न

भारत देवों और मंदिरों की भूमि है। न केवल भारत में, बल्कि सम्पूर्ण संसार में किसी न किसी रूप में ईश्वर की पूजा की जाती है। पूजा-स्थल धार्मिक समारोहों के निष्पादन के लिए स्थान ही नहीं प्रदान करता बल्कि धार्मिक विचार और संचालन के लिए लगातार एक अनुस्मारक के रूप में भी कार्य करता है। यह विश्वास किया जाता है कि धर्म, मोक्ष रूपी अंतिम उद्देश्य को प्राप्त करने का मार्ग है। सभी मानव इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए मंदिरों में मूर्तियों की उपस्थिति आवश्यक नहीं मानते। वे व्यक्ति, जो ईश्वर की उपलब्धि के स्तर को प्राप्त कर लेते हैं, उन्हें पूजा के लिए मूर्तियों की आवश्यकता नहीं है। हिन्दू धार्मिक दर्शन में, मूर्ति-पूजा के विरोध में अनेक दृष्टिकोण हैं, यह प्रकट करने के लिए कि ईश्वर सर्वव्यापी है, तथापि विश्वास

की प्रधानता और रीति-रिवाजों के अनुसार, एक मूर्ति केवल ईश्वर का प्रतीकात्मक पत्थर या धातु की प्रतिमा नहीं है बल्कि अपने भक्तों की पूजा के प्रत्युत्तर में शक्तियाँ भी रखती है। देवता की ईश्वरीय शक्तियाँ केवल तभी व्यक्त होती हैं जब देवता मूर्ति में निवास करते हैं। इसे प्राण प्रतिष्ठा नामक विधि से प्राप्त किया जाता है जिसमें शुद्धिकरण और धार्मिक समारोहों का विस्तृत विधान है। प्राण प्रतिष्ठा, मूर्ति स्थापन के समय एवं बाद में भी नियमित अन्तराल पर की जाती है।

देव प्रश्न ईश्वरीय अप्रसन्नता के कारणों को ज्ञात करने के लिए किया जाता है और तब इन कारणों का समाधान या निवारण किया जाता है। इसका आश्रय मंदिर के प्रबन्धन से संबंधित ऐसे सभी पहलुओं जैसे चोरियों, दुरुपयोगों, पूजाओं के संचालन में होने वाली कमियों, मंदिर की समृद्धि, ईश्वरीय शक्तियों, अपव्ययों, भक्तों के अनुसरण और सामान्यतः मंदिर और मूर्ति से संबंधित प्रत्येक पहलू की पहचान के लिए भी किया जाता है।

भक्तों की पूजा के प्रत्युत्तर में ईश्वरीय अप्रसन्नता और परिणामस्वरूप ईश्वरीय शक्ति की कमी अनेक तथ्यों के कारण होती है। जैसे, मल-मूत्र से मंदिर को गंदा करना, मानव अथवा पशु का मल-मूत्र, मंदिर के परिसर में अन्य अशुद्धियां, मंदिर के भीतर जन्म और मृत्यु, पशुओं, जंगली और विषैली वनस्पति और जीव जन्तुओं की वृद्धि या ऐसे फूलों से पूजा करना, जो पूजा में निषिद्ध हैं, जैसे देवता गणेश के लिए तुलसी और देवता शिव के लिए केतकी। नित्य पूजा के संचालन में कमियां या रुकावट, काला जादू, दुष्ट व्यक्तियों द्वारा मंदिर का नियंत्रण अपने हाथों में लेना आदि कारणों से भी अप्रसन्नता होती है। यह सब मंदिर के अचानक टूटने या कंपन के रूप में प्रकट होता है। यदि मन्दिर या देवता के विषय में कोई भी अस्वाभाविकता घटित हो तो वह कमियों को सूचित करती है।

सितम्बर 1995 के दौरान एक अस्वाभाविक घटना हुई, जिसके करोड़ों साक्षी न केवल भारत में बल्कि विदेश में भी थे। देवता गणेश ने दूध पीना प्रारम्भ किया। क्या यह धार्मिक कार्यों या पूजाओं के नियमित संचालन की आवश्यकताओं के संबंध में देवता की अप्रसन्नता की चेतावनी है?

विभिन्न भाव क्या दर्शाते हैं

लग्न

देवता की मूर्ति से संबंधित प्रत्येक वस्तु, मुख्य मंदिर, भक्तों की पूजा की प्रतिक्रिया में देवता की ईश्वरीय शक्तियाँ, इमारत की स्थिति, ईश्वरीय सान्निध्य आदि।

द्वितीय भाव

समृद्धि, मंदिर की निधियाँ, आभूषण और मंदिर की निधियों की गणना करने वाले व्यक्ति, जिसमें इसके न्यासी शामिल हैं।

तृतीय भाव

मंदिर में बंटने वाला भोजन और प्रसाद, इस भोजन को तैयार करने वाले व्यक्ति और मंदिर के कर्मचारी।

चतुर्थ भाव

देवता के वाहन जैसे, रथ मंदिर द्वारा शासित पशु जैसे हाथी, इमारत का प्रमुख अहाता और उसका ढाँचा, मंदिर की सम्पत्तियाँ और ईश्वरीय सान्निध्य।

पांचवाँ भाव

देवता, उसकी शक्तियाँ और उनकी संख्या, धार्मिक स्त्रोतों और मंत्रों के उच्चारण जैसे सभी पहलु।

छठा भाव

चोरियां, विवाद, न्यायिक मामले, मंदिर के शत्रु और सभी प्रकार के विद्वेषपूर्ण कार्य जैसे मंदिर को गंदा रखना, दुरात्माओं का आह्वान और अभिचार।

सातवाँ भाव

दीपक और उसकी बत्ती, जनता जो मंदिर जाती है, श्रद्धालु और उनकी श्रद्धा, मंदिर के देवता और मंदिर की मूर्ति में श्रद्धालुओं की आस्था, मन्दिर का रूप-रंग, अलंकरण, प्रकाश, अग्रभाग इत्यादि, ईश्वर को सजाने वाले आभूषण।

आठवाँ भाव

सभी बाधाएं और दुर्घटनाएं, हानियां दर्शाने वाली अप्राकृतिक घटनाएं, विरोधियों द्वारा मंदिर की आस्था को मलिन करना, 7वें भाव से दूसरे होने के कारण श्रद्धालुओं द्वारा चढ़ाया गया चढ़ावा।

नवाँ भाव

मंदिर के भाग्य और उसकी महिमा का भाव, 5वें भाव की भांति यह भाव भी वेदों के उच्चारण से संबंधित है लेकिन यह भाव अधिकाधिक धार्मिक कार्यों से संबंधित है जबकि 5वां भाव नित्य पूजाओं एवं प्रक्रियाओं को प्रदर्शित करता है। मंदिर का मुख्य कार्यालय, वाहक और प्रशासक।

दसवाँ भाव

मंदिर का कर्म स्थान जो नित्य पूजा और शोभायात्रा, उत्सवों से संबंधित पूजा के संचालन तथा मंदिर के धार्मिक कर्तव्यों को बताता है, उन सभी पुजारियों के बारे में भी, जो नित्य पूजा का संचालन करते हैं।

ग्यारहवाँ भाव

मंदिर की आय, समृद्धि और प्राप्तियों का भाव है।

बारहवाँ भाव

मंदिर के सभी व्यय, जैसे अनावश्यक वस्तुओं में अपव्यय एवं हानियों को दर्शाता है, यह भाव शुभ व्यय जैसे पुनर्निर्माण और परिवर्धन आदि को भी दर्शाता है।

विभिन्न भावों से अप्रसन्नता के कारण को जान लेने के बाद, अगला चरण उस देवता को जान लेना है जो मंदिर के साथ संबंधित है और जो अप्रसन्न है। निम्नलिखित ग्रहों से स्थिति या दृष्टि से सम्बद्ध लग्न उस देवता को दर्शाता है जो अप्रसन्न है।

लग्न से संबंधित ग्रह	*लग्न राशि*	*देवता*
सूर्य	—	शिव
केन्द्र में सूर्य	सिंह	शिव
चन्द्रमा	—	दुर्गा
केन्द्र में चन्द्रमा	कर्क	दुर्गा
मंगल	—	स्कंद
केन्द्र में मंगल	वृश्चिक	काली
शुक्र	—	लक्ष्मी
केन्द्र में शुक्र	वृष या तुला	लक्ष्मी
केन्द्र में शनि	—	शिव और विष्णु
केन्द्र में बुध	—	विष्णु
बृहस्पति	—	मन्दिर जिसमें सभी देवता हों

विभिन्न भावों और राशियों से संबंधित ग्रहों द्वारा संकेतित देवताओं का विस्तृत उल्लेख 'ज्योतिष का परिचय' पर रचित अध्याय में दिया गया है। मैंने इन देवताओं के निर्धारण को न केवल प्रश्न कुंडली में पीड़ित

ग्रहों के प्रायश्चित के लिए, बल्कि जन्म कुंडली में भी, जहां पीड़ित ग्रहों की अंतर या प्रत्यंतर दशाएं चल रही हैं, बहुत उपयोगी पाया है।

प्रश्न कुंडली में विभिन्न ग्रहों की स्थिति से, देव प्रश्न के विभिन्न कारकत्वों से संबंधित विशिष्ट शुभ या अशुभ परिणाम प्रदर्शित होते हैं। शुभ ग्रहों का स्थापन उस भाव के बल और कारकत्वों को बढ़ाता है जबकि भाव से संबंधित पाप ग्रह समृद्धि तथा ईश्वरीय शक्तियों की हानि और संबंधित भाव के कारकत्वों से संबंधित समस्याएं दर्शाते हैं।

भाव	*सूचित करता है*	*ग्रह*	*परिणाम*
प्रथम भाव	मूर्ति या देवता	शुभ	स्थित या देख रहा हो तो देवता अपने श्रद्धालुओं को अवश्य आशीर्वाद देंगे
		पाप	स्थित या देख रहा है, क्रोध या अप्रसन्नता
1, 5, 8वाँ भाव	मूर्ति	मंगल	टूटी हुई या नष्ट मूर्ति
		शनि	मूर्ति पुरानी है और देखभाल तथा मरम्मत की अपेक्षा रखती है
		राहु	कीड़ों के कारण प्रदूषण
		केतु	दुरात्माएं या अभिचार
		मांदि	शत्रुओं द्वारा निर्मित अशुभ कर्मों के श्राप
2सरा भाव	मंदिर की निधि	पाप ग्रह	मंदिर की वित्तीय स्थिति का क्षय हो रहा है
3, 8वाँ भाव	भोजन या दान	पाप ग्रह	भोजन या चढ़ावा त्रुटिपूर्ण है
		शनि	चढ़ावे की मात्रा अपर्याप्त है
		मंगल	भोजन जला हुआ या बासी है
		राहु, केतु या मांदी	भोजन में कीड़े शामिल हैं या दुष्ट व्यक्तियों ने भोजन को स्पर्श किया है
4था भाव	मंदिर की संपत्तियां	शनि	जीर्ण-शीर्ण स्थिति में मंदिर

भाव	*सूचित करता है*	*ग्रह*	*परिणाम*
		सूर्य या मंगल	मंदिर में आग
		राहु, केतु या मांदि	मंदिर से संबंधित दुष्ट व्यक्तियों का सम्मिलन या प्रदूषण
	मंदिर के वाहन	पाप ग्रह	वाहनों की उपेक्षा की गई और मरम्मत नहीं की गई
6ठा भाव	चोरियां, विवाद	पाप ग्रह या 6, 8, 12 भाव/भावेश	मंदिर की संपत्ति की चोरी
		शुभ ग्रह	कोई विवाद नहीं है या विवाद शांतिपूर्वक सुलझ जाएगा
7वाँ भाव	बत्ती और दीपक	शनि	दीपक में तेल पर्याप्त नहीं है
		मंगल	दीपक टूटा हुआ है
		राहु, केतु	दीपक स्वच्छ नहीं है
		मांदि	दीपक में तेल दूषित है
		पीड़ित चन्द्रमा	तेल शुद्ध नहीं है और अन्य तरल के साथ मिलाया गया है
	देवताओं के सजावट की मूल्यवान वस्तुएं और जवाहरात	6, 8, 12 भाव/भावेश + 9वाँ भाव/ नवमेश	मंदिर के आभूषणों या मूल्यवान वस्तुओं की चोरी मंदिर के मामलों का प्रबंधन करने वाले लोगों द्वारा चोरी
9वाँ भाव	मंदिर	पाप ग्रह	मंदिर के मामलों को नियंत्रण करने वाले प्रशासनिक व्यक्तियों के कर्म संदेहास्पद हैं, यदि अनेक व्यक्ति है तब 9वें भाव में पाप ग्रह का नक्षत्र और ऐसे व्यक्ति का जन्म नक्षत्र एक सा होगा
10वाँ भाव	पुजारी	शुभ ग्रह	पुजारी योग्य और श्रद्धालु है
		पाप ग्रह	पुजारी में श्रद्धा का अभाव है
	नित्य पूजा	पाप ग्रह	नित्य पूजा उचित ढंग से और श्रद्धा के साथ नहीं हो रही

बाधक ग्रह

उदय लग्न चर, स्थिर या द्विस्वभाव होने पर बाधक स्थान और ग्रह निम्नलिखित हैं।

लग्न की राशि	*बाधक भाव*	*बाधक राशि*	*बाधक ग्रह के रूप में इसका अधिपति*
मेष	11वाँ भाव	कुंभ	शनि
वृष	9वाँ भाव	मकर	शनि
मिथुन	7वाँ भाव	धनु	बृहस्पति
कर्क	11वाँ भाव	वृष	शुक्र
सिंह	9वाँ भाव	मेष	मंगल
कन्या	7वाँ भाव	मीन	बृहस्पति
तुला	11वाँ भाव	सिंह	सूर्य
वृश्चिक	9वाँ भाव	कर्क	चन्द्रमा
धनु	7वाँ भाव	मिथुन	बुध
मकर	11वाँ भाव	वृश्चिक	मंगल
कुंभ	9वाँ भाव	तुला	शुक्र
मीन	7वाँ भाव	कन्या	बुध

बाधक ग्रह स्थान देवता के रोष को जानने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उदाहरणार्थ, यदि बाधक ग्रह या 6, 8, 12वें भाव के स्वामी में से कोई 2सरे या 11वें भाव में स्थित है, तब मंदिर की निधि के दुरुपयोग के कारण ईश्वरीय कोप है। तत्वतः मंदिर में श्रद्धालु द्वारा चढ़ाया गया किसी भी प्रकार का चढ़ावा, उसकी इच्छाओं की पूर्ति के लिए आशीर्वाद प्राप्त करने का मार्ग है। इसलिए ये निधियां शुभ कार्यों के लिए प्रजा की संपत्ति हैं। स्वार्थ-लाभ के लिए इस धन का दुरुपयोग ईश्वरीय कोप दर्शाता है जो तदनुसार प्रश्न कुंडली में प्रतिबिंबित होता है।

स्थान देवता

भारत के गांवों और छोटे कस्बों में देवताओं के अतिरिक्त स्थानीय ग्राम देवता को भी उच्च सम्मान प्राप्त है। स्थान देवता को धर्म देवता भी कहा जाता है। 4था भाव या चतुर्थेश स्थानीय देवता या स्थान देवता है। जब कभी प्रश्न कुंडली में यह 4था भाव या चतुर्थेश बाधक ग्रह या भाव से संयुक्त है, तो यह स्थान देवता की अप्रसन्नता बताता है और उचित पूजा के द्वारा इस

अप्रसन्नता के कारण होने वाले अशुभ प्रभावों का निवारण किया जा सकता है। स्थानीय रीति-रिवाजों और धार्मिक कृत्यों के अनुसार भी प्रायश्चित किया जा सकता है।

अशुभ दृष्टि या काला जादू

इस अत्यधिक प्रतिस्पर्धा के संसार में कटु प्रतिद्वंद्विता, विद्वेष, विरोध, शत्रुता, हत्या, अशुभ दृष्टि, अभिचार, काला जादू इत्यादि सब कुछ सम्भव है। यह ज्ञात करने के लिए कि क्या बाधाएं काला जादू, अभिचार, क्षुद्राभिचार, महाभिचार आदि के कारण निर्मित हैं, तो ये निम्नलिखित योग प्रश्न कुंडली में देखने चाहिएं।

लग्न	*से दृष्ट है*	*मंगल की बाधक स्थान में स्थिति*
चर	षष्ठेश	11वें भाव में मंगल
स्थिर	षष्ठेश	9वें भाव में मंगल
द्विस्वभाव	षष्ठेश	7वें भाव में मंगल

प्रश्न कुंडली में काले जादू के अन्य योग हैं:

1. केन्द्र में मंगल
2. लग्न के साथ स्थिति या दृष्टि से संबद्ध मंगल
3. लग्न में षष्ठेश
4. लग्न, 4थे भाव, 10वें भाव में केतु
5. मांदि लग्न को देखे और मंगल या तो लग्न में स्थित हो या लग्न को देखे
6. लग्न या चन्द्रमा को शनि और मांदि संयुक्त रूप से स्थित होकर प्रभावित करें
7. केन्द्र में शनि से दृष्ट मांदि

उदाहरण संख्या : 1
मंदिर कब पूर्ण होगा?

आरूढ़ से लग्न - वृश्चिक, चौथा नवांश

अर्धनिर्मित मंदिर की निचली मंजिल परमपावन मंदिर के रूप में प्रयुक्त की जा रही है। ऊपरी भाग का निर्माण-कार्य स्थगित है।

स्थिर और शीर्षोदय लग्न स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं दिखता।

शनि (व) 7°35' केतु 13°40'	उदय लग्न	मांदि	
	उदाहरण : 1 सायं 4:46 बजे 3 नवम्बर 1996 नई दिल्ली		चंद्रमा 19°02'
			मंगल 8°29'
बृहस्पति 19°24'	लग्न 10° से 13°20'	सूर्य 17°30' बुध 18°26'	राहु 13°40' शुक्र 12°12'

लग्न चतुर्थेश शनि के नक्षत्र में है जो 5वें भाव में अत्यधिक पीड़ित है। लग्न मांदि एवं मंगल से दृष्ट है। 7वें भाव में मांदि बताता है कि दीपक में जलने वाला तेल दूषित है। यह मंदिर की प्रतिमा के लिए अनर्थकारी है जो अंततः श्रद्धालुओं और उनकी श्रद्धा को प्रभावित करता है।

वस्तुतः 7वाँ भाव जवाहरात और मूल्यवान वस्तुएं दिखाता है। जब सप्तमेश 6, 8, 12वें भाव/भावेश के साथ संयुक्त हो, जैसा इस मामले में है, जहां सप्तमेश द्वादशेश भी है, राहु/केतु अक्ष में, नीच है और शनि से दृष्ट है, तब चोरी या मंदिर के आभूषणों या मूल्यवान वस्तुओं के अनुचित उपयोग को दिखाता है। केन्द्र में स्थित मंगल लग्न को देख रहा है जो नजर लगना या काला जादू दर्शाता है। यह पुनः पुष्ट होता है, क्योंकि मांदी शनि से दृष्ट है, जो लग्न को देख रहा है और उदय लग्न मेष से षष्ठेश बुध लग्न को देख रहा है और मंगल 11वें भाव को देख रहा है।

प्रश्न मंदिर के भवन निर्माण में आने वाली बाधाओं से संबंधित है और इसीलिए चतुर्थेश कार्येश बनता है, जबकि मंगल न केवल लग्नेश बल्कि साथ ही भवन निर्माण का कारक भी है। षष्ठेश के रूप में मंगल कार्य भाव को देख रहा है जो बाधाएं, समस्याएं ओर विवादों को दिखाता है। मंगल केतु के नक्षत्र में है और चतुर्थेश कार्येश वक्री शनि के समान अंशों में है, परन्तु दोनों के बीच कोई दृष्टि नहीं है। विगत समय में इसका उत्क्रम हुआ है और इसलिए निकट भविष्य में इच्छित निर्माण संभावित नहीं है। चतुर्थेश शनि राहु/केतु अक्ष में स्थित होकर तथा षष्ठेश मंगल और द्वादशेश शुक्र से दृष्ट होकर बहुत अधिक पीड़ित है। अतः केतु न केवल चतुर्थेश शनि को पीड़ित कर रहा है बल्कि कारक मंगल को भी, क्योंकि यह उसका नक्षत्राधिपति है।

लग्न मंगल और मांदि दोनों से दृष्ट होने के कारण अत्यधिक पीड़ित है। यद्यपि यह प्रश्न की विषयवस्तु नहीं है, तथापि देवता की ईश्वरीय

शक्तियां श्रद्धालुओं की पूजा का उपयुक्त उत्तर देती नहीं प्रतीत होतीं। वास्तव में, यह ईश्वरीय कोप है जिसका कारण प्रश्न कुंडली से जानना होगा।

इस लग्न के लिए बाधक भाव और ग्रह क्रमशः कर्क तथा चन्द्रमा है। चन्द्रमा एकादशेश बुध के नक्षत्र में स्थित है और इसीलिए प्रश्न, प्रश्नकर्त्ता के लिए मंदिर के प्रति श्रद्धा या ढांचे के निर्माण की अपेक्षा बढ़ती आय का साधन अधिक है। कुंडली में बाधक ही बाधा का कारण बनता है। यहां चन्द्रमा बाधक है, दूसरे, यह अष्टमेश बुध के प्रभाव में है क्योंकि यह इसका नक्षत्राधिपति है। बाधक चन्द्रमा अष्टमेश बुध के नक्षत्र में है। द्वादश भाव में स्थित अष्टमेश बुध बाधक चन्द्रमा के नक्षत्र में है अतः इनका सूक्ष्म परिवर्तन योग है। चन्द्रमा द्वितीयेश की भांति समान अंशों में है, लेकिन दोनों के बीच कोई दृष्टि नहीं है। ये दोनों पुनः 12वें भाव से अष्टमेश/एकादशेश बुध और दशमेश सूर्य से संयुक्त हैं। संयुक्त रूप से निकटतम अंशों में स्थित ग्रह दशमेश सूर्य और एकादशेश बुध मंदिर को एक व्यापारिक परिसर का रूप बताते हैं, जो 10वें भाव में स्थित लग्नेश मंगल से पुनः पुष्ट होता है। एकादशेश और द्वादशेश के बीच परिवर्तन योग है और इसीलिए अनावश्यक वस्तुओं में व्यय, हानियों और अत्यधिक अपव्ययों के कारण मन्दिर का ढ़ांचा पूर्ण नहीं किया जा सका।

10वें भाव में पाप ग्रह सूचित करता है कि नित्य पूजा विधिवत और श्रद्धा के साथ नहीं की जा रही। 5वें भाव में अत्यधिक पीड़ित चतुर्थेश शनि के समान अंशों में मंगल, जो पुनः चतुर्थ भाव एवं चतुर्थेश दोनों को देख रहा है, असमर्थ पुजारी के राज़ खोल रहा है। 10वें भाव में मंगल के साथ 5वें भाव में शनि का निकट संयोजन पुजारी का एक कर्मचारी होना बताता है। 5वें भाव पर अत्यधिक पाप प्रभाव भी धार्मिक स्तोत्रों और मंत्रों के उच्चारण के प्रति उसकी अयोग्यता दिखा रहा है। 5वें भाव में शनि बताता है कि मूर्ति पुरानी है और मरम्मत की आवश्यकता है जबकि 5वें भाव में केतु दुरात्माओं अथवा अभिचार की उपस्थिति बताता है। लग्न का नक्षत्रेश शनि, जो कार्येश चतुर्थेश भी है, का द्वादशेश शुक्र के साथ 4°07' की दूरी पर निकटतम ताजिक इशराफ है। शनि और शुक्र दोनों पणफर भावों और द्विस्वभाव राशियों में वर्षों को दिखाते हैं और 4 वर्ष 1 माह और 12 दिन पूर्व की घटना बताते हैं जब अत्यधिक अनावश्यक और अनुचित अपव्ययों में निर्माण कार्य को रोकना पड़ा और ये बाधाएं उत्पन्न हुईं। इस प्रश्न कुंडली के ये सभी उपरोक्त तथ्य सही साबित हुए। देवता की अप्रसन्नता लग्न में स्थित या लग्न को देखने वाले ग्रह से देखी जाती हैं। यहां लग्न मंगल से दृष्ट है जो वृश्चिक लग्न होने के कारण केन्द्र में स्थित होकर काली की

अप्रसन्नता दिखा रहा है। पीड़ित शुक्र भी समान अंशों में लग्न के साथ संयुक्त है जो लक्ष्मी की अप्रसन्नता दिखा रहा है। प्रश्नकर्त्ता को यह राय दी गई कि प्रायश्चित और क्षमा के लिए देवी काली और लक्ष्मी की उचित ढंग से पूजा संचालित की जाए।

किसी भी देवता की अप्रसन्नता के प्रायश्चित का उत्तम और निश्चित तरीका उन कर्मों को बदलना है जो ऐसी अप्रसन्नता दिखाएं। यदि बाधक ग्रह या 6, 8, 12 भाव के स्वामी 2सरे या 11वें भाव में स्थित हों, तब मंदिर की निधियों के दुरुपयोग के कारण ईश्वरीय कोप होता है। इस मामले में भी, द्वादशेश शुक्र 11वें भाव में राहु और केतु के साथ निकट अंशों में नीच है और अत्यधिक पीड़ित है। क्या इन कर्मों को बदला जा सकता है। यह दृढ़ मानसिक और कायिक कर्मों का मामला है और इसीलिए कर्मों के ढांचे को बदलना तथा अनुवर्ती संभावित परिणाम निकलना कठिन हो सकता है।

इस मामले का निष्कर्ष क्या है और सुझाए गए उपाय क्या हैं?

1. क्योंकि यहां काले जादू या क्षुद्राभिचार की संभावना है, स्थिर लग्न क्षुद्र की पहचान और निवारण को कठिन बना देता है, तथापि मंदिर को स्वच्छ करने और उचित ढंग से धार्मिक कृत्यों तथा धार्मिक भक्ति से शुद्ध करने की आवश्यकता है।

2. मंदिर में नित्य पूजा को सुधारें।

3. धार्मिक स्त्रोतों और मंत्रों के उच्चारण में सुधार लाएं जिससे श्रद्धालुओं को पूजा के फलस्वरूप देवी-देवताओं का आशीर्वाद प्राप्त हो सके। मंदिर में प्राण-प्रतिष्ठा की प्रक्रिया की समय-समय पर नवीनीकरण की भी आवश्यकता है जिसे बिना किसी विलंब के कर लेना चाहिए।

4. देवी-देवता की अप्रसन्नता को ध्यान में रखते हुए काली और लक्ष्मी की पूजा विधिवत करनी चाहिए।

5. मंदिर का रूप रंग, सजावट, प्रकाश और देवताओं के जवाहरातों आदि में सुधार लाने की आवश्यकता है।

6. स्पष्टतः यह मामला प्रश्नकर्त्ता और प्रबन्धकों की विचारधारा को लाभ के स्थान पर श्रद्धा में बदलने की आवश्यकता दर्शाता है।

मार्च 1997 में प्रश्नकर्त्ता ने उपरोक्त उपायों को श्रद्धापूर्वक और विधिवत किया। वित्त का प्रबन्ध न होते हुए भी मंदिर के निर्माण का कार्य प्रारम्भ हो चुका है।

यात्रा

यह क्षेत्र प्रश्न से संबंधित है, क्योंकि प्रश्नकर्त्ता अपने प्रयासों की सफलता के लिए एक शुभ मुहूर्त में अपनी यात्रा प्रारम्भ करना चाहता है। अतः प्रश्न में मुहूर्त के सिद्धान्तों को जोड़ने की आवश्यकता है। यद्यपि यह अध्याय विशेषतः यात्रा से जुड़े प्रश्नों के सिद्धान्तों से संबंधित है।

प्राचीन समय में यात्रा का उद्देश्य व्यापार/व्यवसाय, तीर्थ यात्रा, ज्ञान एवं राजा और उसके सैनिकों की यात्रा से संबंधित था। कालांतर में एक व्यक्ति को भौतिक रूप से अपना कार्य करने के लिए यात्रा पर जाने की आवश्यकता नहीं है, जब तक अत्यंत आवश्यक न हो। इसके लिए सूचना तकनीक और संचार-साधनों की प्रगति को धन्यवाद देना चाहिए। इन दो घटकों के संयुक्त प्रभाव से यात्रा के लक्ष्य भी परिवर्तित हुए हैं। इस सबके बावजूद आजकल यात्रा बहुत आम हो गई है। फिर भी, प्रश्नकर्त्ता साधारण और दूरस्थ अथवा विशेष रूप से विदेश यात्रा की सफलता और परिणाम जानने के लिए ज्योतिषी के पास पहुंचता है।

यात्रा निवास के परिवर्तन, उत्तम संभावनाओं, विवाह, शिक्षा, चिकित्सा, नौकरी, प्रतिनियुक्ति या छोटी अवधि की यात्राएं, जैसे पर्यटन, दृश्यावलोकन, विश्राम और स्वास्थ्यलाभ के लिए की जाती हैं।

यात्रा के उद्देश्य के लिए, 12वाँ भाव विदेश स्थान है। प्राचीन समय में विदेश जाना बुरा माना जाता था लेकिन अब ऐसा नहीं है। लग्नेश या चन्द्रमा से 12वें भाव में पाप ग्रह यात्रा बताता है जबकि ऐसी स्थिति में कोई शुभ ग्रह यात्रा नहीं देता। इसी प्रकार, यदि 12वीं राशि या मीन पीड़ित है, तब भी व्यक्ति विदेश जाता है। 4था भाव प्रश्नकर्त्ता का घर है। यदि यह शुभ प्रभाव के अंतर्गत है, तब व्यक्ति प्रसन्न है, जहां कहीं भी वह है। विदेश जाने के लिए 4था भाव पाप प्रभाव के अंतर्गत होना चाहिए। यह केवल 4थे भाव के पीड़ित होने के कारण है कि व्यक्ति अपने घर के सुखों का त्याग करता है और दूर जाता है। 4थे भाव में पाप ग्रह 10वें भाव को या तदनुरूप भी देखेगा। जब भी कोई व्यक्ति अपनी नौकरी या कारोबार से चिंतित हो तो वह अपना भविष्य आज़माने कहीं और जाना चाहता है। इसी प्रकार, यदि 4था भाव स्थिर राशि है, जिसका अर्थ है कि लग्न भी स्थिर राशि होगी, तब कोई यात्रा नहीं है। विदेशी यात्रा के लिए चतुर्थेश का द्वादशेश तथा अष्टमेश का नवमेश के साथ सम्बन्ध होना चाहिए।

इस प्रकार का प्रश्न, कार्य की पूर्ति के साथ लाभ की इच्छा भी रखता है जिसके लिए यात्रा की जा रही है। 11वें भाव में सूर्य और दूसरे शुभ ग्रह, बृहस्पति, शुक्र या बुध प्राप्तियों और इच्छाओं की पूर्ति को दर्शाते हैं और व्यक्ति विदेश यात्रा को जाता है। 12वें भाव में ये ग्रह यात्रा के लिए बाधाएं बताते हैं और चर राशि में यात्रा प्रदान करना दिखाते है, यदि वे वक्री नहीं हैं। यदि वे वक्री हों तब यात्रा की योजना कार्यान्वित नहीं हो पाएगी।

लग्न, सूर्य, चन्द्रमा या अधिकतम ग्रह चर राशियों में हों, तो व्यक्ति यात्रा पर या विदेश जाता है और यदि वे स्थिर राशियों में हों, तब यात्रा नहीं होती। यदि शुभ ग्रह उपचय भावों 3, 6, 10 या 11 में स्थित हैं, तब भी यात्रा नहीं होती।

यात्रा की सफलता

यात्रा के प्रारम्भ के समय पर, निम्नलिखित योग कार्य की सफलता के लिए शुभ माने जाते हैं।

1. चर राशि में लग्न।
2. लग्न में शीर्षोदय राशि, जो ऊर्ध्वमुख है। एक ऊर्ध्वमुख राशि वह है जो सूर्य से 12वीं राशि है और उसके त्रिकोण। लग्न में एक अधोमुख राशि में यात्रा एवं कोई अन्य शुभ कार्य नहीं करने चाहिएं। एक अधोमुख राशि वह है जिसमें सूर्य स्थित है और उसके त्रिकोण। एक तिर्यंकमुख राशि भी यात्रा की सफलता नहीं दर्शाती। एक तिर्यंकमुख राशि वह है जो सूर्य से 2सरे भाव में स्थित है व उसके त्रिकोण।
3. जन्मकालीन चन्द्रमा का स्वामी यदि ज्ञात है तो बलवान होना चाहिए।
4. दिशा के साथ उदित राशि का संबंध होना चाहिए जिसकी ओर यात्री जाना चाहता है। दोनों का मिलान किया जाना चाहिए। इससे हमें यात्रा आरम्भ करने का लग्न ज्ञात करने में सहायता मिलती है। मेष से प्रारम्भ करने पर पूर्व, दक्षिण, पश्चिम तथा उत्तर दिशाएं आवंटित की गई हैं।
5. यात्रा के लिए कोई उपयुक्त एवं शुभ दिन चुनें जो यात्रा की दिशा के साथ संबंधित हो।
6. यदि दिन किसी विशेष यात्रा के लिए उपयुक्त नहीं है, तब कम से कम उपयुक्त काल होरा चुनें।

दिन	*सामान्य संकेत*	*यात्रा के लिए शुभ दिशा*	*यात्रा के लिए अशुभ दिशा*
रविवार	बाधाएं/दुर्घटनाएं	उत्तर	पूर्व
सोमवार	स्त्रियों से प्राप्तियां, स्थिति को खतरा	दक्षिण	उत्तर, पश्चिम
मंगलवार	बीमारी, आग से खतरा	पूर्व	दक्षिण
बुधवार	नए परिचय, शुभता	पश्चिम	उत्तर
बृहस्पतिवार	धन-प्राप्ति, विजय, शुभता	पश्चिम	पूर्व, उत्तर
शुक्रवार	समृद्धि, स्त्री, आभूषणों, आनन्द की वस्तुओं की प्राप्ति	उत्तर	पूर्व
शनिवार	असफलता, समृद्धि की हानि, बीमारियां	दक्षिण	पश्चिम

7. यात्रा प्रारम्भ करने के समय दिन का स्वामी लग्न से उपचय भावों में होना चाहिए।

8. लग्नेश बलवान होना चाहिए, लग्नेश या शुभ ग्रह या तो लग्न में स्थित हों या लग्न को देखते हों। दूसरे, जन्म लग्नेश और जन्मकालीन चन्द्रमा यात्रा की कुंडली में बलवान होने चाहिएं।

9. यात्रा की विशिष्ट दिशाओं के लिए निम्नलिखित तिथियों को वरीयता देनी चाहिए।

दोनों पक्षों में तिथियां	*यात्रा की दिशा*
1, 6, 11 (नंदा तिथियां)	पूर्व
2, 7, 12 (भद्रा तिथियां)	दक्षिण
3, 8, 13 (जया तिथियां)	पश्चिम
5, 10, 15 (पूर्णा तिथियां)	उत्तर

अतः रिक्त तिथियां, जो दोनों पक्षों में 4, 9 और 14 हैं, त्याग देनी चाहिएं।

10. त्याग दें :

 i) 4थे भाव में चन्द्रमा।

 ii) लग्न में षष्ठेश।

iii) यात्रा की दिशा से संबंधित ग्रह 6, 8, 12वें भावों में न हो। विभिन्न ग्रहों द्वारा आवंटित दिशाएं निम्नलिखित हैं:

ग्रह	*दिशा*	*ग्रह*	*दिशा*
सूर्य	पूर्व	चन्द्रमा	उत्तर-पश्चिम
मंगल	दक्षिण	बुध	उत्तर
बृहस्पति	उत्तर-पूर्व	शुक्र	दक्षिण-पूर्व
शनि	पश्चिम	राहु	दक्षिण-पश्चिम

iv) यदि प्रश्न लग्न, जन्म लग्न या जन्मकालीन चन्द्रमा से 1, 6, 8 भाव में हो।

v) दिक्शूल : ये वे आठ दिशाएं हैं जिनसे संबंधित प्रत्येक एक नक्षत्र उसकी नोक के रूप में कार्य करता है। दिक् का अर्थ है दिशा और शूल एक नोक है जो उस दिशा को भेदता है। दिक्शूल उस दिशा में की जाने वाली यात्रा में निराशा और असफलता दर्शाता है।

इन्हें निम्न प्रकार से सारणीबद्ध किया जा सकता है:

यात्रा के समय पर शूल नक्षत्र	*दिशाएं, जिनसे बचना चाहिए*
ज्येष्ठा (18)	पूर्व
पूर्व भाद्रपद (25)	दक्षिण-पूर्व
रोहिणी (4)	दक्षिण
उत्तर फाल्गुनी (12)	दक्षिण-पश्चिम
पुष्य (8)	पश्चिम
हस्त (13)	उत्तर-पश्चिम
श्रवण (22)	उत्तर
अश्विनी (1)	उत्तर-पूर्व

vi) नक्षत्र

दिन और रात्रि की अवधि को तीन भागों में विभाजित करें। तीनों उत्तरा, रोहिणी, विशाखा और कृत्तिका दिन के प्रथम भाग के दौरान, मूल, आर्द्रा, ज्येष्ठा और आश्लेषा दिन के दूसरे भाग के दौरान और हस्त, पुष्य और अश्विनी दिन के तीसरे भाग के दौरान

यात्रा के लिए त्याग देना चाहिए। इसी प्रकार रात्रि के तीनों भागों में भी यात्रा के लिए प्रथम भाग के दौरान मृगशिरा, रेवती, चित्रा और अनुराधा, दूसरे भाग के दौरान तीनों पूर्वा, भरणी और मघा तथा रात्रि के तीसरे भाग में स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, घनिष्ठा और शतभिषा नक्षत्रों को त्याग दें।

कुछ लोग यात्रा में निम्नलिखित नक्षत्रों को सभी दिशाओं में उत्तम परिणाम देने वाला मानते हैं। ये हैं अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, पुनर्वसु, अनुराधा, श्रवण, घनिष्ठा और रेवती। उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा और उत्तर भाद्रपद मध्यम माने गए हैं। यद्यपि वराहमिहिर के अनुसार अश्विनी, पुष्य, हस्त एवं अनुराधा भी सभी दिशाओं में यात्रा के लिए अनुकूल नक्षत्र हैं। फिर भी एक सामान्य सहमति यह है कि जन्म नक्षत्र से 25वां और 27वां नक्षत्र न केवल किसी यात्रा के लिए, बल्कि किसी भी अन्य कार्य के लिए शुभ नहीं है।

viii) 7वें भाव में पाप ग्रह होने पर या 7वाँ भाव पापकर्तरी में होने पर कभी यात्रा नहीं करनी चाहिए। ऐसे में दो लग्न पहले यात्रा प्रारम्भ करना ही उचित है।

ix) सभी शुभ कार्यों और यात्रा के लिए भद्रा या विष्टीकरण को त्याग दें।

x) शनि और मंगल के स्वामित्व वाले दिनों शनिवार और मंगलवार को त्याग दें।

xi) मिथुन या मीन लग्न में यात्रा प्रारम्भ करने से प्रायः परेशानियां होती हैं। अतः ऊपरलिखित नियमों के अनुसार यात्रा की दिशा से संबंधित लग्न चुनना चाहिए।

योगिनी

योगिनी एक भयानक क्रूर नारी सत्ता है। योगिनी तिथि से संबंधित कुछ विशिष्ट दिशाओं में निवास करती है। सभी प्रकार की यात्रा में, जहां योगिनी सामने या बायीं ओर निवास करती है, तो उस दिशा की ओर यात्रा नहीं करनी चाहिए। दूसरे शब्दों में उस दिशा की ओर मुंह करके खड़े हों, जहां योगिनी निवास करती है। उन तिथियों पर सामने या दाहिनी दिशाओं की यात्रा न करें।

दोनों पक्षों की तिथियां	*योगिनी का निवास*	*यात्रा के लिए अनुमति*	*यात्रा के लिए मनाही*
1, 9	पूर्व	पश्चिम, उत्तर	पूर्व, दक्षिण
3, 11	दक्षिण-पूर्व	उत्तर-पश्चिम, उत्तर-पूर्व	दक्षिण-पूर्व दक्षिण-पश्चिम
5, 13	दक्षिण	उत्तर, पूर्व	दक्षिण, पश्चिम
4, 12	दक्षिण-पश्चिम	उत्तर-पूर्व दक्षिण-पूर्व	दक्षिण-पश्चिम उत्तर-पश्चिम
6, 14	पश्चिम	पूर्व, दक्षिण	पश्चिम, उत्तर
7, पूर्णिमा	उत्तर-पश्चिम	दक्षिण-पूर्व दक्षिण-पश्चिम	उत्तर-पश्चिम उत्तर-पूर्व
2, 10	उत्तर	दक्षिण, पश्चिम	उत्तर, पूर्व
8, अमावस्या	उत्तर-पूर्व	दक्षिण-पश्चिम उत्तर-पश्चिम	उत्तर-पूर्व दक्षिण-पूर्व

आइए इसे एक और विधि से समझें। जिस दिशा में आपने यात्रा करनी है, आप उस दिशा की ओर मुंह करके खड़े हो। यह विश्वास किया जाता है कि जब योगिनी सामने निवास करती है, तब यह अत्यधिक विपत्तियां देती है। यदि यह पीछे निवास करती है, तब यह इच्छाओं की पूर्ति दर्शाती है। यदि यह बायीं ओर निवास करती है, तब यह अशुभ है और जब यह दाहिनी ओर निवास करती है, तब यह अत्यधिक शुभ है।

यात्रा में शुक्र की भूमिका

शुक्र की दो स्थितियां हैं।

1. जब शुक्र सूर्य से पीछे है, जैसे सूर्य से 11वें भाव में या 12वें भाव में या सूर्य की अपेक्षा शुक्र के कम भोगांश हैं, यदि वे संयुक्त रूप से स्थित हैं, तब शुक्र को पूर्व में उदित कहा जाता है।
2. जब शुक्र सूर्य से आगे है, जैसे सूर्य से 2सरे या 3सरे भाव में या अधिक भोगांश के साथ है, यदि वे संयुक्त रूप से स्थित हैं, तब शुक्र को पश्चिम में उदित कहा जाता है।

   यदि शुक्र पूर्व में उदय हो, तब पूर्व की ओर यात्रा न करें और इसी प्रकार यदि शुक्र पश्चिम में उदय हो, तब पश्चिम की ओर यात्रा न करें।

यात्रा के लिए आयन

मकर से मिथुन तक *उत्तरायण* है और कर्क से धनु तक *दक्षिणायण* है। निम्नलिखित अयनों में सूर्य या चन्द्रमा यात्रा के लिए अनुकूल दिशाएं बताते हैं।

	ग्रह	*आयन में स्थित*	*यात्रा के लिए अनुकूल दिशा*
1.	सूर्य और चन्द्रमा	उत्तरायण	उत्तर या पूर्व
2.	सूर्य और चन्द्रमा	दक्षिणायण	दक्षिण या पश्चिम
3.	सूर्य	दक्षिणायण	दिन के समय दक्षिण या पश्चिम
	चन्द्रमा	उत्तरायण	रात्रि के समय उत्तर या पूर्व
4.	सूर्य	उत्तरायण	दिन के समय उत्तर या पूर्व
	चन्द्रमा	दक्षिणायण	रात्रि के समय दक्षिण या पश्चिम

सम्मेलन की सफलता

यहां सम्मेलन का एक उदाहरण इच्छित उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफलता या असफलता की भविष्यवाणी के सिद्धांतों को विवेचित करने के लिए लिया गया है।

25 अप्रैल से 27 अप्रैल 1994 को नई दिल्ली में *'अखिल भारतीय पंचांग कर्त्ता सम्मेलन'* हुआ। एक पंचांग उस स्थान के लिए तैयार किया जाता है जहां से यह प्रकाशित होता है। यह पंचांग के तिथि नक्षत्र, वार, योग और करण नामक सभी पांच घटकों के साथ कुछ विवरण जैसे, सूर्योदय, सूर्यास्त, चंद्रोदय, चंद्रास्त, त्यौहारों, पंचक, शुभ और अशुभ योगों, मुहूर्त्तों, उस स्थान के लिए लग्नों की सारणी और अन्य संबंधित सूचनाओं के समूह को शामिल करता है, जिसकी एक व्यावहारिक ज्योतिषी को आवश्यकता है। भारत में 300 से अधिक पंचांग प्रकाशित होते हैं और परिणामस्वरूप, प्रयोग के लिए उनमें से किसी एक को विशुद्ध और प्रामाणिक मानना कठिन है। विभिन्न पंचांग कर्त्ताओं द्वारा अनुसरण किए जा रहे असंख्य अयनांशों को लेकर विवाद है। हर पंचांगकर्ता उस अयनांश पर अपना पंचांग आधारित करता है जिस अयनांश पर उसके पाठकों का विश्वास है।

यह कहा जाता है कि 1904 में एक ऐसा ही सम्मेलन हुआ था जिसमें पंचांग का मानकीकृत रूप बनाने तथा विशेषतः आयनांश विवाद का समाधान करने का प्रयास किया गया था। शनि के तीन चक्रों, राहु के पांच

चक्रों और बृहस्पति के 7½ चक्रों के बाद 1994 में ऐसे ही उद्देश्य की प्राप्ति के लिए दूसरा प्रयास किया गया।

इस सम्मेलन के एक संक्षिप्त उद्घाटन समारोह का आयोजन भारतीय विद्या भवन के ज्योतिष संस्थान, दिल्ली में हुआ। मैंने उसके प्रारम्भ होने के समय की प्रश्न कुंडली बनाई।

उदाहरण संख्या : 2
अखिल भारतीय पंचांग कर्त्ता सम्मेलन

मंगल 13°44'	बुध 3°31' सूर्य 11°14'	केतु 0°04' शुक्र 4°00'	
शनि 15°50'	उदाहरण : 2 सायं 4:20 बजे 24 अप्रैल 1994 नई दिल्ली		
	राहु 0°04'	बृहस्पति (व) 16°45'	लग्न 7°16' चंद्रमा 20°43'

शीर्षोदय लग्न सुखद उद्देश्य के प्रश्न को सूचित करता है जिसमें इच्छित कार्य की पूर्ति की आशा की जा सकती है। लग्न द्विस्वभाव लेकिन स्थिर की ओर है जो बताता है कि कुछ भी विशेष प्राप्त नहीं होगा और वर्तमान स्थिति बनी रहेगी।

लग्न द्वादशेश उच्च सूर्य के नक्षत्र में है और 8वें भाव में लग्नेश बुध के साथ स्थित है जो यह सूचित करता है कि पंचांग निर्माण-कर्त्ता विदेशियों की सायन पद्धति के प्रभाव में आए हुए हैं। 8वें भाव से सूर्य और बुध दोनों परम्परागत ज्योतिषी बृहस्पति को देख रहे हैं, जो कि वक्री है। परम्परागत ज्योतिषी भी अपनी सोच बदल रहा है, तब जब बृहस्पति द्वादशेश सूर्य के साथ इत्थसाल में है। अष्टमेष मंगल लग्न, चन्द्रमा और बृहस्पति को देख रहा है और इस सभा की इच्छाओं की पूर्ति के लिए बाधाएं पैदा कर रहा है।

बुध न केवल लग्नेश है बल्कि 8वें भाव में द्वादशेश सूर्य के साथ स्थित दशमेश भी है। पंचांग कर्त्ताओं का व्यवसाय खलबली में है और विदेशी प्रभाव के कारण पीड़ित है। लग्न में एकादशेश चन्द्रमा दिखाता है कि व्यवसायिक लाभ उनके हृदयों में सर्वप्रथम है।

लग्नेश बुध द्वितीयेश/नवमेश शुक्र के निकटतम अंशों में है जो वित्तीय तात्पर्य दिखा रहा है और राहु/केतु इस लक्ष्य की प्राप्ति में बाधाएं दिखा रहा है। लग्नेश 8वें भाव में वक्री बृहस्पति से दृष्ट होकर रद्द योग बना रहा है तथा लगभग 100 पंचांग कर्ताओं के समस्त प्रयासों को विफल कर रहा है जिस गुत्थी का समाधान करने के लिए विद्वान समस्त भारत से एकत्रित हुए थे। चन्द्रमा अष्टमेश मंगल के साथ इशराफ योग में अत्यधिक बाधाएं दिखा रहा है। मंगल न केवल अष्टमेश है बल्कि एक ऐसी राशि का स्वामी भी है जहां स्थित राहु बाधाएं दिखा रहा है और दूसरी राशि जहां स्थित उच्च सूर्य प्रभुत्व और ज्योतिष में भाग लेने वाले विद्वानों के बीच आपसी विरोध दिखा रहा है। परम्परागत पंचांगकर्त्ता बृहस्पति सूर्य के विरोध में है, जो 8वें भाव में स्थित हैं।

ज्योतिषियों का कारक बृहस्पति वाणी, बहस और विचार-विमर्श के भाव 2सरे भाव में स्थित है अतः यह सम्मेलन हुआ। बृहस्पति और 2सरा भाव न केवल सूर्य (प्रभुत्व) एवं बुध (तर्क) से दृष्ट है, बल्कि 7वें भाव से अष्टमेश मंगल से भी दृष्ट है। अतः यहां वित्तीय क्षतिपूर्ति एवं अहं की समस्या के कारण अनेक बाधाएं हैं और विचारों का द्वंद भी है। लग्नेश न केवल 8वें भाव में है बल्कि पाप कर्तरी योग में भी है। बृहस्पति की रक्षक दृष्टि है जो स्थिति को विस्फोटक नहीं होने देगी।

बृहस्पति का षष्ठेश शनि के साथ पूर्ण इत्थसाल और 8वें भाव में स्थित द्वादशेश सूर्य के साथ निकट इत्थसाल विचारों में द्वंद दिखा रहा है। लग्न और चन्द्रमा अष्टमेश से दृष्ट हैं जो स्वयं पाप ग्रहों से घिरा हुआ है और यह चन्द्रमा के दोनों ओर दृष्टि द्वारा पाप दुरुधरा योग बना रहा है।

ये सभी योग बताते हैं कि इस उच्च स्तरीय सम्मेलन में प्राप्त यथाकथित सर्वसम्मति कार्यान्वित नहीं हो पाएगी और पंचांग निर्माताओं को अपने निर्णय पर वापस जाना पड़ेगा क्योंकि वक्री बृहस्पति को इसके परिणामों को देना है। लग्न में पीड़ित एकादशेश चन्द्रमा यह सिद्ध करता है कि उद्देश्य तकनीकी सर्वसम्मति प्राप्त करना नहीं, लेकिन वित्तीय महत्त्व को सुरक्षित रखना था। चन्द्रमा मंगल के साथ निकटतम इशराफ योग में है। चन्द्र, मंगल योग, वित्तीय इच्छाओं की सुनिश्चितता बता रहा है। राहु और केतु थोड़ी देर में राशि बदलने वाले हैं और 2/8 अक्ष में बृहस्पति/बुध को पीड़ित करने वाले हैं और इसलिए जो कुछ प्राप्त किया गया है, वह अंततः कूड़े का ढेर हो जाएगा।

इस सम्मेलन की समाप्ति पर, चूंकि शाब्दिक सर्वसम्मति कठिन प्रतीत हुई। अतः सम्मेलन के विचार-विमर्शों को देखते हुए किसी विशेष अयनांश की ग्राह्यता पर प्रतिभागियों के दृष्टिकोणों को प्राप्त करने के लिए विवेकपूर्ण

प्रयास किया गया जिसमें लिखित रूप से प्रतिभागियों के विचार मांगे गए। बहुमत ने देश में प्रयोग हो रहे सर्वाधिक प्रचलित आयनांश का चयन किया। बाद में समय ने सिद्ध किया कि न तो बहुमत के निर्णयानुसार आयनांश बदला गया और न कोई मानकीकरण प्राप्त हुआ।

ग्रहीय शक्तियों ने 90 वर्षों के बाद पंचांग निर्माताओं को इस उच्च मंच पर एकत्रित तो किया, लेकिन ये शक्तियां हमारे समय के विद्वानों के बहुमत की इच्छाओं को किसी मानकीकृत प्रक्रिया में बदलने के लिए पर्याप्त बलवान नहीं थीं।

क्या संदेह या अफवाह सच है

ऐसे अनेक उदाहरण है जिसमें प्रश्नकर्त्ता पूछता है कि क्या संदेह या अफवाह सच है या नहीं, हालांकि वह संदेह या अफवाह के विवरणों का रहस्योद्घाटन नहीं करना चाहता। ऐसे मामलों में :

1. यदि लग्न में स्थिर राशि उदित होती है, तब संदेह सच है।
2. अफवाहों के विश्लेषण में हमें अवश्य जानना चाहिए कि क्या अफवाह लाभदायक या नुकसानदायक है। यदि लग्न, लग्नेश और चन्द्रमा शुभ ग्रहों के प्रभाव में है, तब अनुकूल अफवाह सच है। इसके विपरीत, जब ये तीनों पाप ग्रहों के प्रभाव में हैं, तो अनुकूल अफवाह झूठ है।
3. दूसरी ओर, यदि लग्न, लग्नेश या चन्द्रमा पाप ग्रहों के प्रभाव में है, तब प्रतिकूल अफवाह सच है, जबकि ये तीनों शुभ ग्रहों के प्रभाव में हों तो प्रतिकूल अफवाह झूठ है।
4. यदि लग्नेश वक्री है, तब अफवाह या शक सच नहीं है और उपेक्षित किया जाना चाहिए, लेकिन इसकी विपरीत स्थिति ज़रूरी नहीं कि सच हो। वह है, यदि लग्नेश मार्गी है, तब अफवाह या संदेह अनिवार्यतः सच नहीं है और तदनुरूप को पुष्ट करने के लिए उपरोक्त विवेचित स्थितियों को देखना चाहिए।
5. यदि चन्द्रमा, लग्नेश और शुभ ग्रह केन्द्रों में स्थित हैं, तब अफवाह सच है।
6. यदि चन्द्रमा और लग्नेश केन्द्रों में नहीं हैं, लेकिन केन्द्रों में पाप ग्रह स्थित हैं, तब अफवाह झूठ है।
7. यदि लग्नेश थोड़ी देर में वक्री होने जा रहा है, तब भी अफवाह झूठ है।

कारावास

कारावास या बंधन का एक शास्त्रीय योग यह है कि समान संख्या में ग्रह लग्न को घेरें। कारावास कठोर होता है यदि ये घेरने वाले ग्रह पाप ग्रह भी हों। लग्न के दोनों ओर 2सरे-12वें भाव में समान संख्या में ग्रह पाप कर्तरी योग बनाते हैं या पूर्व-पुण्यों के भावों 5वें भाव-9वें भाव को पीड़ित कर निश्चित रूप से बंधन बनाते हैं। इस सिद्धांत का विस्तार करने पर कुंडली के दूसरे भावों 3सरे भाव-11वें भाव, 4थे भाव-10वें भाव, 6ठे भाव-8वें भाव में भी ग्रहों की समान संख्या को सम्मिलित करें। केन्द्र या त्रिकोण में यदि लग्नेश और षष्ठेश संयुक्त रूप से स्थित हों और शनि से दृष्ट हों तो भी यह बन्धन योग है।

इस योजना में, लग्न पर पाप दृष्टि और सर्प द्रेष्काण में लग्न जैसे अतिरिक्त लक्षणों को भी देखना चाहिए, जो कर्क का 2सरा ओर 3सरा, वृश्चिक का पहला और 2सरा तथा मीन का 3सरा है। यदि लग्न द्रेष्काण का स्वामी शनि है या लग्न शनि से दृष्ट है, तब भी कारावास सन्निकट होता है। यदि प्रश्न लग्न या शनि, उपरोक्त के अनुसार क्रमशः चर, स्थिर या द्विस्वभाव राशियों में है तो कारावास की अवधि छोटी, लम्बी या मध्यम है।

यह सिद्धान्त स्थिर कारकों पर आधारित अन्य संबंधियों के कारावास को देखने के लिए भी विस्तृत किया जा सकता है। यदि समान संख्या में पाप ग्रह सूर्य को घेरते है, तब पिता के कारावास का भय है। सूर्य का बल पिता की विशिष्ट स्थिति या पद बताता है और ऐसे मामलों में राजनीतिक उद्देश्यों के कारण कारावास या नजरबंदी होती है। दूसरी ओर, कमजोर सूर्य दीवानी या आपराधिक मामलों में बंधन दर्शाता है जिसे कुडंली में पृथक ढंग से निर्धारित किया जाता है। सूर्य की क्रमशः चर या स्थिर राशियों में स्थिति प्रश्नकर्त्ता से उसके पिता की कारावास के समय पर उसकी निकट या अधिक दूरी बताती है।

बंधन का ढंग उदित लग्न एवं 2, 12, 5 और 9वें भावों में पाप ग्रहों के स्थापन से देखा जाता है। जो निम्नलिखित है :

लग्न राशि	*भावों में पाप ग्रह*	*कैद या बंधन का ढंग*
1, 2, 9	2, 5, 9, 12	रस्सियों से बंधा हुआ।
1, 3, 6, 7	2, 5, 9, 12	लोहे की जंजीरों या हथकड़ी से बंधा हुआ
4, 10, 12	2, 5, 9, 12	कारागार में बंदी
8	2, 5, 9, 12	हथकड़ी से बंधा हुआ या कारागार में बंदी

शास्त्रीय बंधन योग देखने के लिए विवादों, झगड़ों और मुकद्दमेबाजियों पर रचित अध्याय की उदाहरण संख्या-1 देखें जिसमें तीन अभियुक्त एक सनसनी खेज मामले में जेल में हैं जहां पत्नी और उसके परिचितों पर उसके पति को जलाने का आरोप है।

वर्षा

प्राचीन समय में जब विशुद्ध रूप से समाज कृषि प्रधान था, तब समय पर पर्याप्त वर्षा की सर्वाधिक प्रमुखता थी। कृषक को कृषि कर्मों की योजना बनाने के लिए जैसे बोआई, कटाई, आवश्यकता पड़ने पर फसलों को बचाने के लिए कृत्रिम सिंचाई इत्यादि का सहारा लेने के लिए वर्षा के आगमन, उपयुक्तता, अवधि आदि से संबंधित प्रश्नों का प्रयोग किया जाता था।

यहां तक कि आज भी उन्नत मौसम विज्ञान संबंधी पूर्वानुमानों के बावजूद ज्योतिषीय पूर्वानुमान इसकी उत्तम बहुमुखी भविष्यवाणियों के कारण नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता है। प्रश्न कुंडली से वर्षा को सूचित करने वाले योगों में कुछ निम्नलिखित हैं :

1. लग्न या 4, 7, 10 भाव में जलीय राशियों 4, 8, 12 में, शुक्ल पक्ष में शुभ ग्रहों से दृष्ट चन्द्रमा या शुक्र अच्छी वर्षा लाता है। यदि चन्द्रमा पाप ग्रहों से दृष्ट है तब वर्षा अपर्याप्त होती है। यदि चन्द्रमा पर शुभ और अशुभ ग्रहों का सम्मिश्रित प्रभाव है, तब वर्षा औसत होती है।
2. परस्पर त्रिकोणों में चन्द्रमा और शुक्र का होना तापमान में गिरावट लाता है और सामान्यतः ऐसा वर्षा के कारण होता है।
3. शुक्र से 7वें भाव में चन्द्रमा या शनि से 5, 7, 9वें भाव में शुभ ग्रहों से दृष्ट चन्द्रमा अच्छी वर्षा लाता है।
4. बुध/शुक्र, बुध/बृहस्पति या बृहस्पति/शुक्र की युति वर्षा देती है जबकि मंगल/शनि की युति केवल हवाएं लाती हैं, वर्षा नहीं।

मेरी जन्म नक्षत्र और जन्म राशि क्या है

यद्यपि यह प्रश्न नष्ट जातक के सिद्धांतों पर आधारित है, लेकिन इसे सोच समझकर विविध प्रश्नों में जोड़ा गया है क्योंकि प्रायः यह विशिष्ट प्रश्न है और इसके नियम भी विशिष्ट हैं। प्रश्न के समय पर आरूढ़ लग्न को ज्ञात कीजिए। आरूढ़ राशि जन्म लग्न दिखाती है। अब बलवान ग्रह को देखिए जो प्रश्न कुंडली में आरूढ़ को देखता है। उस ग्रह द्वारा शासित राशि उसकी जन्मराशि है जहां जन्म के समय चन्द्रमा स्थित था। यदि कोई ग्रह आरुढ़

लग्न को न देखे, तब केन्द्र में बलवान राशि ही जन्म राशि है। उदाहरणार्थ यदि बलवान बृहस्पति एक विषम राशि से आरूढ़ को देखता है, तब जन्म राशि धनु होगी और यदि यह एक सम राशि से देखता है, तब यह मीन होगी।

जन्म नक्षत्र ज्ञात करने के लिए अनेक विधियां प्रयुक्त की जाती हैं। प्रश्न के समय उन ग्रहों की संख्या देखें जो अस्त हो रहे हैं। मान लीजिए 2 अब इसे 3 से गुणा करें 2 x 3 = 6 अब इसे 27 से भाग दें। शेष संख्या जन्म नक्षत्र बताएगी। यदि लग्न चर है, तो इस शेषफल को अश्विनी से गिनिए। यदि स्थिर है तो मघा से और यदि यह द्विस्वभाव है, तब मूल से गिनिए।

जन्म नक्षत्र ज्ञात करने का दूसरा सिद्धांत प्रश्नकर्त्ता द्वारा स्पर्श किए जाने वाले शरीरांग से संबंधित है।

स्पर्श अंग	*जन्म नक्षत्र*	*स्पर्श अंग*	*जन्म नक्षत्र*	*स्पर्श अंग*	*जन्म नक्षत्र*
सिर	कृत्तिका	बायां कंधा	उत्तरा-फाल्गुनी	बायां उदर	उत्तराषाढ़ा
मस्तक	रोहिणी	हाथ	हस्त	नाभि	श्रवण
भौंह	मृगशिरा	अंगुली	चित्रा	नितम्ब	धनिष्ठा
कान	आर्द्रा	नाखून	स्वाती	गुप्तांग	शतभिषा
कनपटी	पुनर्वसु	छाती	विशाखा	दाहिनी जांघ	पूर्वभाद्रपद
ठोढ़ी	पुष्य	हृदय	अनुराधा	बायीं जांघ	उत्तरभाद्रपद
दांत	आश्लेषा	स्तन	ज्येष्ठा	घुटना	रेवती
गर्दन	मघा	उदर	मूल	टांग	अश्विनी
दाहिना कंधा	पू. फाल्गुनी	दा. उदर	पूर्वाषाढ़ा	पैर	भरणी

उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए अपनाई जाने वाली विधियाँ

इस निष्ठुर संसार में, जहां सफलता की ही पूजा की जाती है, वहां प्रश्नकर्त्ता के मन में अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए विधि अपनाने का विचार कुलबुलाता रहता है। एक व्यक्ति का मामला लीजिए जो एक अनुबंध को जीतना चाहता है, वह सोचना प्रारम्भ करता है कि क्या उसे संबंधित व्यक्ति से कार्य कराने के लिए रिश्वत या धमकी देनी चाहिए या अनुनय करना चाहिए। प्राचीन भारतीय कूटनीति में, चार विधियां विवेचित की गई हैं। ये हैं साम, दाम, दंड और भेद जिनका अर्थ क्रमशः अनुनय, रिश्वत, बल और फूट है।

उद्देश्य प्राप्ति हेतु अपनाया जाने वाला माध्यम या विधि लग्न, केन्द्रों या उपचय भावों में स्थित बलवान ग्रहों पर आधारित है जो 1, 3, 4, 6, 7, 10 और 11 भाव हैं।

बलवान ग्रह	*अपनाई जाने वाली विधि या योजना*
बृहस्पति और शुक्र	साम
चन्द्रमा	दाम
सूर्य और मंगल	दंड
बुध, शनि और राहु	भेद

उद्देश्य प्राप्ति हेतु अपनाई जाने वाली विधि उस ग्रह द्वारा शासित सप्ताह के दिन या कम से कम उस ग्रह की होरा में करनी चाहिए।

ॐ श्री गणेशाय नमः।। ॐ श्री मंगलमूर्त्तये नमः।। ॐ श्री सरस्वत्यै नमः।।

पुस्तक परिचय

प्रश्न ज्योतिष पर लिखी गई यह एक उच्च कोटि की पुस्तक है, जो प्रश्न ज्योतिष के व्यापक विषय को संपूर्ण रूप से अपने में समाए है। शास्त्रीय सिद्धान्तों को आधार मानकर इस पुस्तक में न केवल प्रश्न के संबंध में सामान्यतः उपयोग में लाई जाने वाली सभी तकनीकों पर अमल किया है बल्कि उन शोध पर आधारित अवधारणाओं को भी प्रदर्शित किया है जिन्हें लेखक ने पर्याप्त समय तक परखा है और अति उत्तम परिणाम प्राप्त किए हैं। इन सभी के अलावा इस पुस्तक में मूक प्रश्न, कर्म और दुरात्माएं, घटनाओं का समय, प्रश्न में चक्रों का प्रयोग तथा विविध विधियों के अध्यायों को विस्तार से लिया गया है। इस पुस्तक में अवधारणाओं और तकनीकों के विश्लेषणात्मक तर्कों को सरल और सुबोध भाषा में लिखा गया है तथा भरपूर उदाहरणों से समझाया भी गया है।

प्रश्न एक ऐसा विषय है जो सामान्यतः व्यापक द्वंद्वात्मक भाषांतरण से भरा पड़ा है। लेखक इस उलझे हुए जाल से बाहर निकलने में सफल हुआ है..... एक ज्योतिषी के लिए मूक प्रश्न ही प्रसिद्धि अथवा बदनामी का विषय होता है, लेखक ने इस विषय में सराहनीय एवं अत्यधिक मौलिकता का प्रदर्शन किया है। इस पुस्तक में जो बहुत ध्यान देने वाला और रचनात्मक भाग है, वह है प्रश्न के परिणामों में समय की क्रमबद्धता। दीपक कपूर ने अपने आपको ज्योतिष पर अत्यन्त उपयोगी पुस्तकों के लेखक के रूप में प्रतिष्ठित कर लिया है।

— के. एन. राव

लेखक परिचय

दीपक कपूर, एम.एस.सी., पी.जी.डी.पी.एम., डी.एल.टी., ज्योतिष विशारद, एक विख्यात ज्योतिषी हैं। वे भारतीय विद्या भवन, नई दिल्ली में ज्योतिष संस्थान संकाय के एक प्रतिष्ठित सदस्य हैं। संस्थान में वह अनेक विषयों को पढ़ाते हैं लेकिन उनकी विशेषज्ञता प्रश्न ज्योतिष में है। उन्होंने खगोल विज्ञान और गणित ज्योतिष पर एक और लोकप्रिय पुस्तक लिखी है जो हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में पहले से ही प्रकाशित है।

ISBN 81-901047-1-3 (Set)

मूल्यः (भाग 1 और 2) सैट रुपये 400/-

ॐ श्री गणेशाय नमः।। ॐ श्री मंगलमूर्त्तये नमः।। ॐ श्री सरस्वत्यै नमः।।